

फणीश्वर नाथ रेणु



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६ पटना-६

मेरा आँचल

इस पुस्तक की छपाई के लिए भारत सरकार द्वारा अपेक्षाकृत सस्ते दामों में उपलब्ध कराये गये कागज का इस्तेमाल किया गया है।

मूल्य : सजिल्द २ ००
पेपर बैक १२ ५०

© कमलेश्वरनाथ शेषु १९५४

प्रथम संस्करण १९५४
दसवीं आवृत्ति १९७५

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा लि०
८ चैन बाजार दिल्ली ६

मुद्रक प्रभोदय पाकेट बुक्स
मटुकगंज दिल्ली।

आवरण सुरेन्द्र शुक्ल

पहले सस्करण की भूमिका

यह है मैला आँचल एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है। इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिमी बंगाल। विभिन्न सीमा-रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्षिण में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा-रेखाएँ खींच देते हैं। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को—पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर—इस उपन्यास का कथा-क्षेत्र बनाया है।

इसमें फूल भी है शूल भी धूल भी है गुलाल भी कीचड़ भी है चन्दन भी, सुन्दरता भी है कुरूपता भी—मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया।

कथा की सारी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ साहित्य की सहानुभूति पर आ खड़ा हुआ हूँ; पता नहीं अच्छा किया या बुरा। जो भी हो, अपनी निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता।

—फणीश्वरनाथ 'रेणु'

पटना

९ अगस्त, १९५४

पहला खण्ड

एक

गाँव में यह खबर तुरत बिजली की तरह फैल गई—मल्टरी ने बहरा चमरू का गिरफ्तार कर लिया है और लाबिलपास के कुएँ से बास्टी खोदकर ले गए हैं।

यद्यपि १९४२ के जन आन्दोलन के समय इस गाँव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न आन्दोलन की लहर ही इस गाँव तक पहुँच पाई थी किन्तु जिले-भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहाँ तक जरूर पहुँची थी। मागलाही टीलन पर गोरे सिपाही एक मोटी की बेटी को उठाकर ले गए। इसी को लेकर सिंह और गोरे सिपाहियों में लड़ाई हो गई थी। दोनों ओर से गोलियाँ चल गई। दारोगाजी ने पूरे गाँव को घेरकर आग लगा दी गई एक बच्चा भी बचकर नहीं निकल सका। मुसहरू के ससुर ने अपनी आँखों से देखा था—ठीक आग में भूनी गई मछलियों की तरह लाशों की लाश महीनों पड़ी रही कौआ भी नहीं खा सकता था मल्टरी का पहरा था। मसहरू के ससुर का भतीजा फारबिस साहब का खानसामा है वह झूठ बोलेगा? पूरे चार साल के बाद अब इस गाँव की बारी आई है। दुहाई माँ काली! दुहाई बाबा सर्वसिद्ध!

यह सब मुअरटोली के बलिया की बदौलत हो रहा है।

बिरचीदास ने हिम्मत से काम लिया आँगन से निकलकर चारों ओर देखा और माझिकटोला की ओर दौड़ा। माझिक तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद भी सुनकर घबड़ा गए, लोबिन बाग्दी कहाँ से आया था? जरूर चोरी की बास्टी होगी! साले सब चोरी करते और गाँव का बदनाम करते।

माझिकटोले में यह खबर राजपूतटोली पहुँची—कायस्थटोली में विश्व नाथप्रसाद और तेलीटोली के बिरची का मल्टरी ने सिपाही पकड़कर ले गए हैं। ठाकुर रामकिरपालसिंह बोले 'इस बार तहसीलदारों का मजा निकलेगा। जरूर जमींदार का हमला बमूल कर गया गया है। अब घर पर भी हमला होएँ बच्चू!

यादवटोली के लोगों ने खबर सुनते ही बलिया उर्फ बालेश्वर को गिरफ्तार कर लिया। भागने न पाय! रस्सी से बाँधो' यहाँ ही कहा था कि यह एक दिन सारे गाँव को बँधवाएगा।

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद एक सेर घी पाँच सेर बासमती चावल और एक अस्सी सेवर डरत हुए मलेटरी वालों को आसी पहुँचाने चले। बिरंची को साथ ले लिया। बोले "हिसाब लगाकर देख लो पूरे पचास रुपये का सामान है। यह रुपया एक हफ्ता के अन्दर ही अपने टोला और छोबिन के टोले से वसूल कर जमा कर देना। तुम लोगों के चलते ।"

मलेटरी वाले कोठी के बगीचे में हैं। बगीचे के पास पहुँचकर विश्वनाथ प्रसाद ने जेब से पगिया टोपी निकालकर पहन ली और कालीथान की ओर मुँह करके माँ काली को प्रणाम किया 'जुहाई माँ काली !

बगीचे में पहुँचकर तहसीलदार साहब ने देखा दो बैलगाड़ियाँ हैं बस घास खा रहे हैं मलेटरी वाले जमीन पर कम्बल बिछाकर बैठे हैं। ऐं । मूड़ी फाँक रहे हैं ! और बहरा चेवक भी कम्बल पर ही बैठकर मूड़ी फाँक रहा है !

'सलाम हुजूर !"

बिरंची ने सामान सिर से नीचे उतारकर झुककर सलाम किया "सलाम सरकार !" बकरा भी मेमिया उठा।

"आ रे, यह क्या है ? आप कौन हैं ? एक गोरे साहब ने पूछा।

'हुजूर, ताबेदार राज पारबगा का तहसीलदार है मीनापुर सब्डिवि का ।"

"ओ आप तहसीलदार हैं ! ठीक बात ! हम लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का आदमी है। यहाँ पर एक मैलेरिया सेण्टर बनेगा। ऊपर से हुकुम आया है यहीं बागान का जमीन में। मार्टिन साहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को यह जमीन बहुत पहले दे दिया।

तहसीलदार साहब फिर एक बार सलाम करके बैठ गए। बिरंची हाथ जोड़े खड़ा रहा।

राजपूतटोली के रामकिरपालसिंह जब कोठी के बगीचे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि बगीचे के पश्चिम वाली जमीन की पैमाइश हो रही है कुछ लोग बरीद की कड़ी सींच रहे हैं गोगावाले एक साहब तहसीलदारसाहब से हँस हँसकर बातचीत कर रहे हैं।

और अंत में यादवटोली के लोग बालदेव के हाथ और कमर में रस्सी बाँधकर हो-हल्ला मचाते हुए आए। उसकी कमर में बँधी हुई रस्सी को सभी पकड़े हुए हैं। किसरी मुराजी को पकड़ने वालों को सरकार बहादुर की ओर से इनाम मिलता है—एक हजार, दो हजार पाँच हजार ! मैलेरिया साहब

तो देखते ही गुस्सा हो गए, 'क्या बात है ? इसको क्यों बाँधकर लाया है ? इसने क्या किया है ?"

"हुजूर, यह सुराजी बालदेव गोप है। दो साल जेहल खटकर आया है इस दाँव का नहीं, चम्पतपट्टी का है। यहाँ मौसी के यहाँ आया है। खद्दर पहनता है जैहिन्द बोलता है।"

"तो इसका बाँधा है काहे ?"

"अरे बालदेव ! साहब के किरानी ने बालदेव को पहचान लिया "अरे, यह तो बालदेव है। सर, यह रामकृष्ण कांग्रेस आफिस का कार्यकर्ता है बड़ा बहादुर है।"

यादवों के बन्धन से मुक्ति पाकर बालदेव ने साहब और किरानी को बारी बारी से 'जाम हिन्द' किया। साहब ने हँसते हुए कहा "आपका माँव में मलेरिया सेप्टर थूक रहा है। खूब बड़ा डॉक्टर आ रहा है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का तरफ से मकान बनेगा। लेकिन बाकी काम तो आप लोगों की मदद से ही होगा।"

तहसीलदार साहब ने जमींदारी शान और नशे को तजमीम करके कहा "हुजूर, जमीन एक एकड़ दम डिसमिल है।"

ठाकुर रामकिरपालसिंह को अब तक साहब को सलाम करने का भी मौका नहीं मिला था। विश्वनाथप्रसाद ने बाजी मार ली। जिन्दगी में पहली बार तिलकी को अपनी निरक्षरता पर ग्लानि हुई। सचमुच विद्या की महिमा बड़ी है। लेकिन भगवान् ने शरीर दिया है, उच्चजाति में जन्म दिया है। इसी के बल पर बहुत बाबू-बबुआन हाकिम-हुक्काम और जमघाऊँका से हेलमेल हुआ जान-पहचान हुई। मौका पाते ही सलाम करके जोर से बोले "जै हो सरकार की ! हुजूर, पबली को भलाय के वास्ते इतना दूर से कष्ट उठाकर आया है, और हम लोग हुजूर का कोई सेवा नहीं कर सके। गुसाईं जी रमैन में कहिन हैं—धन्य आय प्रभु दरसन दीन्हा । हुजूर, सेवक का नाम रामकिरपालसिंह बल्द परीवनेवाजसिंह, मोतफ्फ बाद राजपूत मोकाम बड़ुवनेरा राजपुताना हाल मोकाम मेरीगंज।"

"सिहजी हमारा कोई सेवा नहीं चाहिए। सेवा के वास्ते मैलेरिया सेप्टर घूम रहा है। इसी में मदद कीजिए सब मिलकर। यही सबसे बड़ा सेवा है," साहब हँसते हुए बोले।

बारबटोली के लोग एक-एक कर, नजर बचाकर, नौ-दो-ग्यारह हो चुके थे। उन्हें डर था कि बालदेव को बाँधकर लाने वालों का साहब सम्मान करेंगे।

साहब ने चलते समय कहा "सात दिन के अन्दर ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का

जिस समय मार्टिन पुर्णिया के सिविलसार्जन के बंगले पर पहुचा पुर्णिया टौशन पर गाड़ी पहुँची भी नहीं थी।

किन्तु मार्टिन का पंखराज घोड़ा और सिविल सर्जन साहब की हवागाड़ी अब तक मेरीगंज पहुँचे मेरी को मलेरिया निगल चुका था। डूमडबेस के पास बड़े में घुसकर, घुँघराले रेशमी बालों वाले सिर पर कीचड़ पोतते पोतते मेरी मर गई थी।

मेरी की लाश को दफनाने के बाद ही मार्टिन पूर्णिया गया सिविल सर्जन डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन और हेल्थ ऑफिसर से मिला एक छोटी-सी डिस्पेन्सरी की मंजूरी के लिए जमीन-आसमान एक करता रहा। डिस्पेन्सरी के लिए अपनी जमीन रजिस्ट्री कर दी। अधिकारियों ने आश्वासन दिलाया—अगले साल जरूर डिस्पेन्सरी खुल जायगी। ठीक इसी समय जर्मनी के वैज्ञानिकों ने एक ही चुटकी में लीश्मयुस का अन्त कर दिया। कोयले से नील बनाने की वैज्ञानिक विधि का प्रयोग सफल हुआ और नीलहे साहबों की कोठियों की दीवारें भरभराकर गिर पड़ीं। साहबों ने कोठियाँ बेचकर जमींदारियाँ खरीदनी शुरू कीं। बहुतों ने व्यापार आरम्भ किया। मार्टिन की दुनिया तो पहले ही उजड़ चुकी थी दिमाग भी बिगड़ गया। बगल में रद्दी कागजों का पुलिन्दा दबाये हुए पगला मार्टिन दिन भर पूर्णिया कचहरी में चक्कर काटता फिरता था हर मिलने वाले से कहता था "गवर्नमेन्ट ने एक डिस्पेन्सरी का हुक्म दे दिया है अगले साल खुल जायगा।" कहते हैं कि पटना और दिल्ली की दौड़ धूप के बाद एक बार वह बहुत उदास होकर मेरी बंग लौटा मेरी की कब्र पर लेटकर सारा दिन रोता रहा—डौलिप! डौक्टर नहीं आवेगा। इसके बाद उसका पागलपन इतना बढ़ गया कि अधिकारियों ने उसे कांके भेज दिया और कांके के पागलखाने में ही उसकी मृत्यु हो गई।

कोठी के बगीचे में अंग्रेजी फूलों के जंगल में आज भी मेरी की कब्र मौजूद है। कोठी की इमारत ढह गई है, नील के हौज टूट-फूट गए हैं पीपल बबूल तथा अन्य जंगली पेड़ों का एक घना जंगल तैयार हो गया है। लोग उधर दिन में भी नहीं जाते। कलमी आम का बाग तहसीलदार साहब ने बन्दोबस्त में ले लिया है इसलिए आम का बाग साफ-सुथरा है। किन्तु, कोठी के जंगल में तो दिन में भी सियार बोलता है। लोग उसे भुतहा जंगल कहते हैं। तहसीलदार का नन्दलाल एक बार इट लाने गया था ईंट में हाथ लगाते ही खत्म हो गया था। जंगल से एक प्रेतनी निकली और नन्दलाल को कोड़े से पीटने लगी—साँप के कोड़े से। नन्दलाल वहीं ढेर हो गया। बबूले की तरह उजली प्रेतनी!

मेरीगंज एक बड़ा गाँव है बारहो बरन के लोग रहते हैं। गाँव के पूरब एक धारा है जिसे कमला नदी कहते हैं। बरसात में कमला भर आती है बाकी मौसम में बड़े-बड़े गड्ढों में पानी जमा रहता है—मछलियों और कमल के फूलों से भरे हुए गड्ढे! पौष पूर्णिमा के दिन इन्हीं गड्ढा में काफी स्नान के लिए सुबह से शाम तक भीड़ लगी रहती है। रौतहट स्टेशन से हलवाई और परचून की दूकानें आती हैं। कमला मैया के महात्म के बारे में गाँव के लोग तरह-तरह की कहानियाँ कहते हैं। गाँव में किसी के यहाँ शादी-ब्याह या श्राद्ध का भोज हो बृहस्पति स्नान करके बरतन में कपड़े का बूँट डालकर, कमला मैया को पान-सुपारी से निमन्त्रित करता था। इसके बाद पानी में हिलोरें उठने लगती थी ठीक जैसे नील के हौज में नील मथा जा रहा हो। फिर किनारे पर चाँदी के बासनों कटोरों और बिलासा का ढेर लग जाता था। बृहस्पति सभी बर्तनों को धोकर ले जाता था और भोज समाप्त होते ही कमला मैया को लौटा जाता था। लेकिन सभी की नीयत एक जैसी नहीं होती। एक बार एक बृहस्पति ने कुछ बासनों और कटोरे चुरा रखे। बस उसी दिन से मैया ने बर्तनदान बन्द कर दिया और उस बृहस्पति का तो वंश ही खतम हो गया—एकदम निर्मूल! उस बिगड़ी नीयत वाले बृहस्पति के बारे में गाँव में दो राएँ हैं—राजपूत टोली के लोगों का कहना है वह कायस्थटोली का बृहस्पति था कायस्थटोली वाले कहते हैं, वह राजपूत था।

राजपूतों और कायस्थों में पुश्तैनी मन-मुटाव और झगड़े होते आए हैं। ब्राह्मणों की संख्या कम है इसलिए वे हमेशा तीसरी शक्ति का कर्तव्य पूरा करते रहे हैं। अभी कुछ दिनों से यादवों के दल ने भी जोर पकड़ा है। जनेऊ लेने के बाद भी राजपूतों ने यदुवंशी क्षत्रिय को मान्यता नहीं दी। इसके विपरीत समय-समय पर यदुवंशियों के क्षत्रियत्व को वे व्यंग्यविद्रूप के बाणों से जुझारते रहे। एक बार यदुवंशियों ने खुली चुनौती दे दी। बात तूल पकड़ने लगी थी। दोनों ओर से लोग लस हुए थे। यदुवंशियों को कायस्थटोली के मुखिया तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद मल्लिक ने विश्वास दिलाया मामले-मुकदमे की पूरी पैरवी करेंगे। जमींदारी कचहरी के वकील बसन्तो बाबू कह रहे थे यादवों को सरकार ने राजपूत मान लिया है। इसका मुकदमा तो धूमधाम से चलेगा। खूब वकील साहब कह रहे थे।

राजपूतों को ब्राह्मणटोली के पण्डितों ने समझाया—जब-जब धर्म की हानि हुई है, राजपूतों ने ही उनकी रक्षा की है। घोर कलिकाल उपस्थित है राजपूत अपनी वीरता से धर्म को बचा लें। लेकिन बात बढ़ी नहीं।

न जाने कैसे यह धम-मुड रुक गया। ब्राह्मणटोली के बूढ़े ज्योतिषीजी आज भी कहते हैं—यह राजपूतों के चुप रहने का फल है कि आज चारों ओर, हर जाति के लोग गले में जनेऊ लटकाए फिर रहे हैं। ऋषिकेश शास्त्री तो कभी नहीं सुना था। शिव हो! शिव हो!

अब गाँव में तीन प्रमुख दल हैं, कायस्थ राजपूत और यादव। ब्राह्मण लोग अभी भी तृतीय शक्ति हैं। गाँव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार इन्हीं तीनों दलों में बँटे हुए हैं।

कायस्थटोली के मुखिया विश्वनाथप्रसाद मल्लिक राज पारबंगा के तहसीलदार हैं। तहसीलदारी उनके खानदान में तीन पुश्त से चली आ रही है। इसी के बल पर तहसीलदार साहब आज एक हजार बीघे जमीन के एक बड़े काश्तकार हैं। कायस्थटोली को गाँव की अन्य जाति के लोग मालिक टोला कहते हैं। राजपूतटोली के लोग कहते हैं कैथ-टोली।

ठाकुर रामकिरपालसिंह राजपूत टोली के मुखिया हैं। इनके दादा महारानी चम्पावती की स्टेट के सिपाही थे और विश्वनाथप्रसाद के दादा तहसीलदार। कहते हैं कि जब महारानी चम्पावती और राज पारबंगा में बीचवाली मुकदमा चल रहा था तो विश्वनाथप्रसाद के दादा राज पारबंगा स्टेट की ओर मिल गए थे। स्टेट वालों की महारानी के सारे गुप्त कागजात हाथ लग गए और महारानी मुकदमा में हार गईं। काशी जाने से पहले महारानी ने रामकिरपालसिंह के नाम अपनी बची हुई तीन सौ बीघे जमीन की लिखा पढ़ी कर दी थी। रामकिरपालसिंह कहते हैं कि उनके दादा ने महारानी को एक बार डाकैतों के हाथ से अकेले ही बचाया था इसी के इनाम में महारानी ने ताम्रपत्र लिख दिया था। कायस्थटोली के लोग राजपूतटोली को सिपैहियाटोली कहते हैं।

यादवों का दल नया है। इनके मुखिया खलावन यादव का दस बरस पहले तक लोगों में भैंस चराने का था। दूध-घी की बिक्री से जमाये हुए पैसे की बात जब चारों ओर बुरी तरह फैल गई तो खेलावन को बड़ी चिन्ता हुई। महीना तहसीलदार के यहाँ दौड़ते रहे, सर्किल मैनेजर को डाली चढ़ाई, सिपाहियों को दूध-घी खिलाया और अन्त में बमनडीहा के किनारे पचास बीघे जमीन की बन्दोबस्ती हो सकी। अब तो डेढ़ सौ बीघे की जोत है। बड़ा बेटा सकलदीप अररिया कैरबाड़ी में नाना के घर पर रहकर हाई-स्कूल में पढ़ता है। खेलावन सिंह यादव को खाली यादव कहना बर्दाश्त कर लेते हैं। लेकिन यादव क्षत्रियटोली को अब गभरुटोली कहने की हिम्मत कोई नहीं करता। गाँववाली में बाकी

गाम घाम को अखाड़ा जमता है। चार बजे दिन से ही खोमन मोची ढोल पीटता रहता है—डाक दिया डाक दिया! ढोल के हर डाक पर यादवटोली के बूढ़े-बच्चे-जवान दंड-बैठक और पहलवानी के पैंतरे सीखते हैं।

सारे मेरीगंज में इस आदमी पढ़े लिखे है—पढ़े-लिखे का मतलब हुआ अपना दस्तखत करने से लेकर तहसीलदारी करने तक की पढ़ाई। नये पढ़ने वालों की संख्या है पन्द्रह।

गाँव की मुख्य पैदावार है पाट और सेवारी। रब्बी की फसल भी कभी-कभी अच्छी हो जाती है।

तीन

डिस्ट्रीबोट के सिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव के उत्साह का ठिकाना नहीं है। आफिसर बाबू ने तहसीलदार साहब और रामकिरपालसिंह के सामने ही कहा था—आप तो देश के सेवक हैं। सबों ने सुना था। दुनिया में धन क्या है? तहसीलदार साहब और सिंहजी के पास पैसा है मगर जो इज्जत बालदेव की है वे कहाँ पायेंगे। यादवटोली के लोगों ने बालदेव से उसी दिन माफी माँग ली थी 'बालदेव भाई! हम लोग मूरख ठहरे और तुम गियानी। हम कूप के बेंग हैं। तुम तो बहुत देस-बिदेस घूमे हो बड़े-बड़े लोगों के साथ रहे हो। हमारा कसूर माफ कर दो।"

उसी दिन से खेलावनसिंह यादव बालदेव को अपने यहाँ रहने के लिए आग्रह कर रहे हैं "जात का नाम जात की इज्जत तो तुम्हीं लोगों के हाथ में है। तुम कोई पराये हो? तुम्हारी मौसी मेरी चाची होती। हम-तुम भाई भाई ठहरे।"

खेलावन की बेटाबाली खुद आकर बालदेव की बुढ़िया मौसी से कह गई, 'घर आँगन सब आपका ही है। जिस घर में एक बूढ़ी नहीं उस घर का भी कोई ठिकाना रहता है। मैं अकेली क्या करूँ दूध-घी देखूँ कि गोबर-गुहाल?"

बालदेव की बुढ़िया मौसी की दुनिया ही बदल गई। कल तक घर-घर घूम कर कुटाई-पिसाई करती फिरती थी और आज पांव की मालकिन आकर उसे सारे घर की मालकिन बना गई!

सिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव गाँव के टोले में घूमता रहा। "डिस्ट्री

न जाने कैसे यह धर्म-युद्ध रुक गया। ब्राह्मणटोली के बूढ़े ज्योतिषीजी आज भी कहते हैं—यह राजपूतों के चुप रहने का फल है कि आज चारों ओर, हर जाति के लोग गले में जनेऊ लटकाए फिर रहे हैं। ऐसा तो कभी नहीं सुना था। शिव हो! शिव हो!

अब गाँव में तीन प्रमुख दल हैं कायस्थ राजपूत और यादव। ब्राह्मण लोग अभी भी तृतीय शक्ति हैं। गाँव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार इन्हीं तीनों दलों में बँटे हुए हैं।

कायस्थटोली के मुखिया विश्वनाथप्रसाद मल्लिक राज पारबंगा के तहसीलदार हैं। तहसीलदारी उनके खानदान में तीन पुश्त से चली आ रही है। इसी के बल पर तहसीलदार साहब आज एक हजार बीघे जमीन के एक बड़े काश्तकार हैं। कायस्थटोली को गाँव की अन्य जाति के लोग मल्लिक-टोला कहते हैं। राजपूतटोली के लोग कहते हैं कैथ-टोली।

ठाकुर रामकिरपालसिंह राजपूत टोली के मुखिया हैं। इनके दादा महारानी चम्पावती की स्टेट के सिपाही थे और विश्वनाथप्रसाद के दादा तहसीलदार। कहते हैं कि जब महारानी चम्पावती और राज पारबंगा में दीवानी मुकदमा चल रहा था तो विश्वनाथप्रसाद के दादा राज पारबंगा स्टेट की ओर मिल गए थे। स्टेट वालों को महारानी के सारे पुश्त कागजात हाथ लग गए और महारानी मुकदमे में हार गईं। काशी जाने से पहले महारानी ने रामकिरपालसिंह के नाम अपनी बची हुई तीन सौ बीघे जमीन की सिक्का पट्टा कर दी थी। रामकिरपालसिंह कहते हैं कि उनके दादा ने महारानी को एक बार डकैतों के हाथ से मरते से ही बचाया था इसी के इनाम में महारानी ने दानपत्तर लिख दिया था। कायस्थटोली के लोग राजपूतटोली को 'सिपैहिंयाटोली' कहते हैं।

यादवों का दल नया है। इनके मुखिया बेलाबन यादव को दस बरस पहले तक लोग ने नाम जानते होंगे। घूस-घी की बिक्री से जमाये हुए पैसे की बात जब चारों ओर बुरी तरह फैल गई तो बेलाबन को बड़ी चिन्ता हुई। महीनों तहसीलदार के यहाँ दौड़ते रहे सर्किल मैनेजर का डाली चढ़ाई, सिपाहियों को घूस-घी खिलाया और अन्त में कमला के किनारे पचास बीघे जमीन की बन्दोबस्ती हो सकी। अब तो अढ़ाई सौ बीघे की बात है। बड़ा बेटा सकलदीप मरुरिया बैरवाड़ी में नाना के घर पर रहकर हाई-स्कूल में पढ़ता है। बेलाबन सिंह यादव को लोग नया माहवर कहते हैं। लेकिन यादव क्षत्रियटोली को अब 'कुअरटोली' कहने की हिम्मत कोई नहीं करता। यादवटोली में बारहों

साल साम को अखाड़ा जमता है। चार बजे दिन से ही लोरिक मोची ढोल पीटता रहता है—दाक दिया दाक दिया! ढोल के हर ताल पर यादवटोली के बूढ़े-अधेड़-जवान उठ-बैठक और पहलवानी के पैंतरे सीखते हैं।

सारे मेरीगंज में दस आदमी पढ़े-लिखे हैं—पढ़े-लिखे का मतलब हुआ अपना दस्तखत करने से लेकर तहसीलदारी करने तक की पढ़ाई। नये पढ़ने वालों की संख्या है पन्द्रह।

गाँव की मुख्य पैदावार है धान पाट और ईखारी। रब्बी की फसल भी कभी-कभी अच्छी हो जाती है।

तीन

डिस्ट्रीबोट के मिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव के उत्साह का ठिकाना नहीं है। आदमियों बाबू ने तहसीलदार साहब और रामकिरपालसिंह के सामने ही कहा था—आप तो देश के सेवक हैं। सबों ने सुना था। दुनिया में धन क्या है? तहसीलदार साहब और तिवारी के पास पैसा है मगर जो इज्जत बालदेव की है वे कहाँ पाएँगे। यादवटोली के लोगों से बालदेव ने उसी दिन माफी माँग ली थी 'बालदेव भाई! हम लोग मूरख ठहरे और तुम गियानी। हम कूप के बेंग हैं। तुम तो बहुत देस-बिदेस घूमे हो बड़े-बड़े लोगों के साथ रहे हो। हमारा कसूर माफ कर दो।"

उसी दिन से खेलावनसिंह यादव बालदेव को अपने यहाँ रहने के लिए आग्रह कर रहे हैं 'आप का नाम जात की इज्जत तो तुम्हीं लोगों के हाथ में है। तुम कोई पराये हो? तुम्हारी मौसी मेरी चाची होती। हम-तुम भाई भाई ठहरे।"

खेलावन की बेटावाली खुद आकर बालदेव की बुढ़िया मौसी से कह गई, "घर आँगन सब अपना ही है। जिस घर में एक बूढ़ी नहीं उस घर का जो को ठिकाना रहता है। मैं अकेली क्या करूँ घूम-घी देखूँ कि गोबर-बुहारन?

बालदेव की बुढ़िया मौसी की दुनिया ही बदल गई। कल तक घर-घर घूम कर कुटाई-पिसाई करती फिरती थी और आज गाँव की मालकिन आकर उसे सारे घर की मालकिन बना गई!

मिस्तिरी लोग आये हैं। बालदेव गाँव के टोले में घूमता रहा। डिस्ट्री

वोट से मिस्तिरी भी लोग आये हैं। कल से काम शुरू हो जाना चाहिए। मलेरिया बोखार मच्छड़ काटने से होता है। मगर कुनैन खाने से जितना भी मच्छड़ काटे कुछ नहीं होगा।" तहसीलटोली (तहसिया सलियटोली) में मौसूबास के घूर के पास बालदेव की बातों को लोग बड़े अचरज से सुन रहे हैं। मांवन की औरतें भी घूंघट काढ़े, टट्टी के पास खड़ी होकर सुन रही हैं, "अब रात भर मोहैंठा जलाकर धुआं करने का झंझट नहीं काटे जितना मच्छड़!"

पोलिसटोली तन्त्रिमा छत्रीटोली मधुबंसी छत्रीटोली महजोत छत्रीटोली कुर्म छत्रीटोली अमात्य ब्राह्मनटोली धनुकधारी छत्रीटोली कुशवाहा छत्री टोली और रैदासटोली के लोगों ने बचन दिया "सात दिन तक कोई काम नहीं करेंगे। मालिक लोगों से कहिए—हलफाल कोड़-कमान बन्द रखें। करना ही क्या है? एक इसपिताल का घर, एक डाक्टर बाबू का घर, एक मनसाबर[1] और एक घर फालतू। सात दिनों में ही सब काम रैट हो जाएगा।

धनुकधारीटोली के धनुकलाल ने एक सवाल पैदा कर दिया "लेकिन हलफाल काम-काज बन्द करने से मालिक लोग मजूरी तो नहीं देंगे! एक-दो दिन की बात रहे तो किसी तरह खेपा भी जा सकता है। सात दिन तक बिना मजूरी के? यह जरा मुस्किल मालूम होता है। तहसिया और दुसाधटोली के लोगों की बात जाने दीजिए। उनकी औरतें हैं, सुबह से दोपहरिया तक कमला में काशेपानी छिहकर एक-दो सेर घोंघी मछली निकाल लाएंगी। चार सेर धान का हिस्सा लग जायगा। बाबू लोगों के पुआल के टालों[2] के पास घण्टी खरौंचकर, चूहे के मांदों को कोड़ कर भी कुछ धान जमा कर लेंगी। नहीं तो कोठी के अंधक से जमरजालू उखाड़ लाएंगी। रौतहट हाट में कटिहार मिल के दुखी लोग चार आने सेर जमरजालू हाथोंहाथ उठा लेते हैं। लेकिन और लोगों के लिए तो बड़ा मुस्किल है।

बालदेव ने निराश होकर पूछा 'अब क्या किया जाय?"

तनुकलाल के पास समस्या का समाधान पहले से ही मौजूद था। बोला "एक उपाय है, यदि मालिक लोग आधे दिन की मजूरी दे दें तो काम चल जाय।"

तनुकलाल के इस प्रस्ताव पर विचार करता हुआ बालदेव माझिटोला की ओर चला। विरजनाथ बाबू तो नाम लेने सिंघजी के बारे में कुछ कहना मुश्किल है। सिपैहिमाटोला का विरजूसिंघ कल कह रहा था 'सिंघजी इसपिताल में कोई मदद नहीं करेंगे। कहने भ इसपिताल का मालिक मक्तियार है विरज

---

१ रसोईघर। २ घास की ढेरी।

गाय और बलदेवा।"

ब्राह्मणटोली से तो कुछ उम्मीद करनी ही बेकार है। जिस दिन से अस्पताल होने की बात उन लोगों ने सुनी है, दिन-रात डाक्टर और अंग्रेजी दवा के खिलाफ तरह-तरह की कहानियाँ सुनाते फिर रहे हैं। योगेन्द्रीजी का विश्वास है कि डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं, सुई मार-कर देह में जहर दे देते हैं, आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है। हैजा के समय कूपों में दवा डाल देते हैं, पाँच-का-पाँच हैजा से समाप्त हो जाता है। कालाजुखार का नाम पहले लोगों ने कभी सुना था? पूरब मुलुक कामत कमिच्छा हासाम से कालाजुखार वाला का लहू चीरी में बन्द करके यही लोग ले आये थे। आजकल घर-घर कालाजुखार फैल गया है। इसके अलावा बिलैती दवा में पाप का खून मिला रहता है।

मंगरा मंगत की दुकान के पास ही विश्वनाथ बाबू से भेंट हो गई। तनुकलाल के प्रस्ताव को सुनते ही विश्वनाथ बाबू चिढ़ गए। 'तनुकटोली का तनुकलाल? अपने को बड़ा काबिल समझता है। हर बात में वह एक-एक 'लेकिन' जरूर लगाएगा। तुम भी तो बालदेव पूरे 'कमजोलानाथ' हो। उससे पूछा नहीं कि अस्पताल से सिर्फ मालिक लोगों की भलाई होगी क्या?"

मंगरा मंगत हमेशा सुपारी चबाता रहता है। बोलने के समय ऐसा लगता है कि वह बात को भी चबा रहा है, "अरे! ई तो एक आदमी के काम का बे-बा-से एकरा में सब के मिल के मदत करे के चाही। का हो सीमसाव?

मंगत की दुकान पर यों भी हमेशा चार-पाँच आदमी बैठे रहते हैं। विश्वनाथ बाबू की आवाज सुनकर दो-चार व्यक्ति और जमा हो गए। बूढ़े पुमरितबास को लोग जबड़ा समझते हैं। मगर वह समय पर पते की बात बता जाता है। आते ही बोला 'अरे तहसीलदार आप समझे नहीं। तनुकलाल अपने मन से नहीं बोला है, इसमें कलकत्ता है। जरा इधर एकान्त में आइए तो बतावें।" तहसीलदार और पुमरितबास मंगत की दुकान से जरा हट-जाकर बतियाने लगे। दुकान में बैठे हुए किसी ने कहकर कहा "बूढ़ा लुच्चा इसी को कहते हैं—हर बात में एकान्ती!"

मंगत ने आँख टीपकर मना कर दिया—जोर से मत बोलो बालदेव है। पुमरितबास से आश्वस्त करने के बाद तहसीलदार का मिजाज बदल गया। आकर बोले अच्छा तो बालदेव तुम जाकर तबमाटोली और पोलिया टोले वालों से कहो मैंने पचास रुपया माफ कर दिया। उस दिन आफ्टियर

बाबू को जो गाली दी गई थी सो तो तुम्हारे ही सामने की बात है। विरंची भी था। 'अब अरा सिपैहियाटोला वाली देखो ये लोग क्या कहते हैं। कोई कुछ करे, हमारा जो धरम है हम करेंगे ?"

बालदेव जब सिंघजी के दरवाजे पर पहुँचा तो सिंघजी घोड़े पर सवार हो चुके थे। शायद कटिहार जा रहे हैं। यात्रा पर टोकना अच्छा नहीं, इसलिए बालदेव चुप ही रहा। सिंघजी के दरवाजे पर पाँच-सात आदमी बैठे हुए थे। किसी ने बालदेव को बैठने के लिए भी नहीं कहा। बालदेव ने सबों को एक ही साथ 'जय हिन्द' कहा। शिवशंकरसिंह के बेटे हरगौरी ने बालदेव से पूछा "कहिए बालदेव लीडर, क्या समाचार है ?

"आप लोगों की किरपा से सब अच्छा है। बाबू साहेब आप स्कूल से कब आये ?" बालदेव ने पास पड़े हुए खाली मोढ़े पर बैठते हुए पूछा।

"सुना कि आपकी लीडरी खूब चल रही है।

"बाबू साहेब गरीब आदमी भी भला लीडर होता है ! हम तो आप लोगों का सेवक हैं।"

"आप तो लीडर ही हो गए तो मालकस कांग्रेस आफिस का चौकाबर्तन कौन करता है। हरगौरी अचानक उबल पड़ा। 'अरे भाई, सभी काशी चले जाओगे ? पखाना चाटने के लिए भी तो कुछ लोग रह जाओ। जेल क्या गये पण्डित जवाहिरलाल हो गए। कांग्रेस आफिस में झोलटियरी करते थे अब अन्धा में काना बनकर यहाँ लीडरी छाँटने आया है। स्वयंसेवक न घोड़ा का दुम !"

"बाबू साहेब मुँह खराब क्यों करते हैं ? आप विद्वान हैं और हम जाहिल। हमसे जो कसूर हुआ है कहिए।"

"उठ जाओ दरवाजे पर से। बेहमान कहीं के ! डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से अस्पताल की मंजूरी हुई है रुपया मिला है। सब चुपचाप मारकर अब बेकार बोल रहे हैं। चोर सब ! उठ जाओ दरवाजे पर से !"

हरगौरी लपककर बालदेव को धक्का देने के लिए उठा। बैठे हुए लोगों ने 'हाँ-हाँ' करके हरगौरी को पकड़ लिया। बालदेव चुपचाप बैठा रहा "जाइए, यदि मारने से ही आपका गुस्सा ठण्डा हो तो जाइए !"

हल्ला-गुल्ला सुनकर भीड़ जम गई। हरगौरी का अड़कपन किसी को पसन्द नहीं। शिवशंकरसिंह भी सुनकर दुखित हुए, 'लीडरी करे या मास्टरी तुमको किस बात की चिढ़ जली ? तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ? अच्छा बालदेव बुरा मत मानना। हँसी-दिल्लगी में पड़ा था। छोटा भाई है।"

"शिवशंकर मौसा बाबूसाहब गोली-गुलौंजि करके मारने चले। मगर हम कोई लावमान[1] बात मुँह से निकालते हैं? पूछिए सबों से। महतमाजी कहिन हैं

नीम के पेड़ पर कागा कार्र्-कार्र् कर उठा।

हरगौरी गुस्से से थर-थर काँप रहा है। ये लोग भी अजीब हैं। एक घंटा पहले बालदेव की टोकरी-भर शिकायत कर रहे थे लीडरी सटकाने की बात कह रहे थे और अभी उसका बाप भी बालदेव की खुशामद कर रहा है! ग्वाला होकर लीडरी ?

"गुजरटोली वाले हँसिया[2] लेकर आ रहे हैं एक लड़का दौड़ता-हाँफता आकर खबर दे गया। ऐं! गाँव के उत्तर म शोरगुल हो रहा है। खूँटे में बँधे हुए बैलों ने चौकन्ने होकर कान खड़े किए। गाँव के बाहर चरती हुई बकरियाँ दौड़ती-मिमियाती हुई गाँव मे भागी आ रही हैं। कुत्ते भूँकने लगे। बात क्या हुई ?

अरे बेटा रे! गौरी बेटा रे! आँगन मे आ आ बेटा रे! गुजरटोली का कलिया पगला गया है!" हरगौरी की माँ छाती पीटती और रोती हुई आई, और हरगौरी को घसीटकर आँगन म ले गई। बच्चे रोने लगे।

"अरे, बात क्या हुई ?"

"भाला निकालो छत्तर!"

"हमारी गंडासी वाली लाठी कहाँ है?"

'तीर निकाल रे!

अरे बात क्या है? हँसिया क्यों ?"

कौन किसका जवाब देता है! किसे फुरसत है! सारे गाँव में कोहराम मचा हुआ है। हरगौरी की माँ अब शिवशंकरसिंह को आँगन में बुला रही है। चिल्ला रही है 'गुजरटोली का रौदी बूढ़ा आया है। गुजरटोली में बूढ़े-बच्चे सोच रहे हैं कि हरगौरी ने बालदेव को जूते से मारा है। दुसाध का बेटा कलचरना काली किरिया[3] खाया है—हरगौरी का खून पीयेंगे। आँगन में आ जाओ मौरी के बाबू!"

"ओ!" बालदेव दौड़ा "आप लोग अकुलाइए मत। हम देखते हैं। नासमझ लोग हैं समझा देते हैं।"

'एक बार आगिए प्रेम से महावीरजी की जै!"

---

१ अपशब्द। २ काटने वाला हथियार। ३ कसम।

"जै ! जाय जाय !"

बालदेव को देखते ही यादव सेना खुशी से जयजयकार कर उठी। "बोलिए एक बार प्रेम से पन्ही महतमा की जै ! जाय जाय। ऐ ! शांती ! शांती ! चुप रहो बालदेवजी क्या कहते हैं, सुनो ! "

"पियारे भाइयो ,आप लोग जो अन्दोलन किये हैं, वह अच्छा नहीं। अपना काम देखे बिना कौआ के पीछ दौड़ना अच्छा नहीं। आप ही सोचिए, क्या यह समझदार आदमी का काम है ! आप लोग हिंसावाद करने जा रहे थे। इसके लिए हमको अनसन करना होगा। भारत-माता का गांधीजी का यह रास्ता नहीं ।

सचमुच बिज्ञानी आदमी हैं बालदेवजी। अन्दोलन अनसन और और क्या ? हिंसावाद ! किसी ने समझा ! बिज्ञान की बोली समझना सबी के बूते की बात नहीं।

"अनसन क्या करेंगे ?

"अन्ट-सन्ट ?

कलिया कहता था—उपास करेंगे बालदेवजी। कलिया को बुलाकर बालदेवजी कहते थे—कालीचरन तुम बहुत बहादुर नौजवान हो। लेकिन जोश में होस भी रखना चाहिए। हम खुस हैं, लेकिन उपास करेंगे।

"सचमुच यदि उस दिन बालदेवजी ठीक समय पर नहीं आ जाते तो कालीचरन इस पार चाहे उस पार कर देता। अरे, हरबोरिया ! कल का छौड़ा। इस्कूल में चार अच्छर पढ़ क्या लिया है साट साहेब हो गया है।

'अरे पढ़ता क्या है दाढ़ी-मोछ हो गया है और अपना सकलदीप से तो सिलास नीचे ही पढ़ता है। एकदम फेलियर है। इस साल भी फेल हो गया है। उसका बाप मास्टर को घूस देने गया था। मास्टर गुस्साकर बोला—जाओ नहीं तो तुमको भी फेल कर देंगे।

'अरे पढ़ेगा क्या ! सुनते हैं कि सालबाग मेला में साल पढ़ना म पास हो गया है।

"साल पढ़ना ?

बात बनाने में दुमरिया में कोई जीत नहीं सकता। 'साल पढ़ना नहीं समझे?

हा-हा हा-हा ही-ही ही ! साल पढ़ना !

—आर-डिग्रा डाक डिग्रा !

"चलो रे, अखाड़ा का डोल आज रहा है।

चार

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

महंथ साहेब सदा ब्रह्म बेला में उठते हैं। "हो रामदास ! आसन त्यागो जी ! लक्ष्मी को जगाओ ! सतगुरु हो ! ये कमी को बना जगाए आवें। रामदास ! हो जी रामदास !

रामदास आँखें मलते हुए उठता है बाहर निकलकर आसमान में मुरुम्मा[1] को देखता है, फिर रामडंडी[2] को जोखता है। अभी तो बहुत रात बाकी है। महंथ साहब आज बहुत पहले ही जग पए हैं। माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठंडा कर देता है। 'सरकार, रात तो अभी बहुत बाकी है।"

"रात बहुत बाकी है तो क्या हुआ ? एक दिन जरा सबेरे ही सही। सोओ मत। चूल्हे में लकड़ी डाल दो। कोठारिन को जगा दो। सतगुरु साहेब ने सपना दिया है।"

लक्ष्मी उठी। उठकर महंथ साहब के आसन के पास आई। हाथ जोड़कर 'साहेब बंदगी' किया और आँखें मलते हुए कुएँ की ओर चली गई।

लक्ष्मी के रग-रग में अब साधु-सुभाव आचार-विचार और नियम धरम रम गया है। साहेब की दया है। और यह रामदास ? पूरब जाने इसकी मति-गति कब बदलेगी ! बचपन से ही साधु की संगति में रहकर भी जो नहीं सुधरा वह अब कब सुधरेगा ? भक्ति-भाव ना जाने जोंधू पेट भरे से काम ! बस दो ही पूप हैं—सेवा मच्छी सबहु करता है और खंजड़ी बजाने में बेजोड़ है। 'अरे हो रामदास ! फिर सो गए क्या ? जंघा-घंटी में जल भर दो।"

जागहु सतगुरु साहेब सेवक तुम्हरे दरस को आया जी
जागहु सतगुरु साहेब ।
झिम झिमिक झिमिक झिम झिमिक झिमिक !
भोर भयो अब भरम भयानक भानु देखकर भाया जी,
ज्ञान मैन साहेब के मुनि गये घर-घर कीरत गाया जी।
जागहु सतगुरु साहेब

माघ के छिदरते हुए भोर को मठ से प्रातकी[3] की निर्गुणवाणी निकल कर पूरब में मँडरा रही है। बूढ़े महंथ साहब पहला पद गहते हैं। कंठहीन मुँह से

---

१ भोर का तारा। २ तीन तारा। ३ प्रभाती।

बतलाय[1] देकर इन लोगों का मोचिझका करवा लिया जाय। लेकिन सिवजी थाना-फौजदारी से बचते हैं। बात-बात में गाली और डेग-डेग पर डाली! कानून-कचहरी की धरन खाना तो अपनी कमजोरी को जाहिर करना है। समय आने पर बदला ले लिया जायगा। अकेले यादवों की बात रहती तो कोई बात नहीं थी इसमें कायस्थ समाया हुआ है। मरा हुआ कायस्थ भी खिसाता है। फिर, यह बवसायी हुश्मनी की ही है। मेरे दरवाजे पर किसी को उठ जाने के लिए कहना मेरे दरवाजे पर किसी को मारने के लिए उठना यह तो अच्छी बात नहीं।

यादव टोली में अब दोपहर से ही ढोल बजने लगता है—डाक-डिमा डाक डिमा! खोमन मोची को एक नया ग्राहक और नई बंजी मिली है। कालीथान के बड़ के पास गाय-भैंस बथान करके दोपहर से ही कुश्ती खेलने जमते हैं यादव सन्तान। बासुदेवजी ने जिस दिन अनसन किया था शाम को खेलावन यादव के दरवाजे पर कीर्तन हुआ था। बासुदेवजी का सिखाया हुआ पुरानी कीर्तन 'धन धन गांधी जी महराज ऐसा चरखा चलाने वाले' कीर्तन के बाद बासुदेवजी ने भैंस का कच्चा दूध पीकर व्रत तोड़ा था। कहते थे अब हिन्दुस्तान करने से फिर अनसन करेंगे अब के दो दिनों का! सुपजी कीर्तन जहसन का बेटा सुनरा खूब गाता है। बासुदेव जी अब कि फिर उपवास करेंगे तो सुनना। अभी और खीच रहा है। सिपैहियाटोला में तो अब दिन में ही उल्लू बोलता है। तहसीलदार कह रहे थे—राजपूतों की चिट्ठी चुल हो गई है। इसी बोला[2] दिया है। कालीचरन बहादुर है!

इसपिताल के सभी घर बनकर तैयार हो गए हैं। सिर्फ मिट्टी डालना बाकी है। बिरसा मौसी ने कहा है—संथाल्टोली की सभी औरतें आकर मिट्टी डाल देंगी आज। अकेला मिट्टी कमाती है संथालिनें! पोखता मकान की मात! अगले सनिचर को डाक्टर बाबू आएंगे। बासुदेवजी डिसटीबोर्ड से सभी सामान ले आए हैं। मैसचरमन बाबू ने बासुदेव जी से दसखत करा लिया है। मैसचरमन बाबू जरूर यादव ही होंगे। किसी दूसरी जाति का ऐसा नाम क्यों होगा—मैसचरमन बाबू! तहसीलदार के यहाँ जाकर देखो—कुरसी टीपय बड़े-बड़े बक्से में दवा बारूटी बगैरह लोटा। पानी का फक बाड़ा जायगा जैसे रौतहट के गमा म पड़ता है।

सनिच्चर को ही महंथ साहेब का भण्डारा है—पूड़ी-मिसेबी का भोज।

---

१ इत्तला। २ खिल कर देना।

सारे गाँव के औरत-मरद बूढ़े-बच्चे और अमीर-गरीब को महंथ साहेब सिखा देंगे। सपनौली हुआ है।

यादवटोली का किसनू कहता है अंधा महन्त अपने पापों का प्रायश्चित कर रहा है। बाबाजी होकर जो रखेलिन रखता है वह बाबाजी नहीं। अन्दर बाबाजी भीतर हनुमानजी! क्या कहते हो? रखेलिन नहीं दासिन है? किसी और को सिखाना। पाँच बरस तक मठ में नौकरी किया है हमसे बढ़ कर और कौन जानेगा मठ की बात? और कोई देखे या नहीं देखे ऊपर परमेसर तो है। महंथ जब लछमी दासिन को मठ पर लाया था तो वह एकदम अबोध थी एकदम नादान। एक ही कपड़ा पहनती थी। कहाँ वह बच्ची और कहाँ पचास बरस का बूढ़ा गिद्ध! रोज रात में लछमी रोती थी—ऐसा रोना कि जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाय। हम तो सो नहीं सकते थे न उठकर भैंसों को खोलकर चराने चले जाते थे। रोज सुबह लछमी दूध लेने बथान पर आती थी उसकी आँखें कदम के फूल की तरह फूली रहती थी। रात में रोने का कारण पूछने पर चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगती थी—ठीक गाय की बाछी की तरह जिसकी माँ मर गई हो! वैसा ही बदहाल है यह रमदसवा। वह साला भी अच्छा होगा देख लेना। महंथ एक बार चार दिन के लिए पुरैनिया गया था। हमने सोचा कि चार रात तो लछमी चैन से सो सकेगी। हे धर्मैया। बाघ के मुँह से छूटी तो बिलार के मुँह में गई। उसके बाद लछमी ऐसी बीमार पड़ी कि मरते-मरते बची। पाप कहाँ छिपे? रात को मिरगी आने लगी और महंथ सेवादास सूरदास हो गए। एकदम चौपट! हमारा तीन साल का बरमाहा बाकी रखा है। भंडारा करता है! हम उन लोगों को साधू नहीं समझते हैं।

महंथ सेवादास इस इलाके के जाने साधु समझे जाते थे—खभी शास्तर पुरान के पंडित! मठ पर आकर लोग भूख-प्यास भूल जाते थे। बड़ी पवित्र जगह समझी जाती थी। लेकिन जब महंथ दासिन को लाया लोगों की राय बदल गई। बमुमतिया मठ के महंथ से इसी दासिन को लेकर कितने लड़ाई झगड़े और मुकदमे हुए। बमुमतिया का महंथ कहता था लछमी दासिन का बाप हमारा गुरु-भाई था इसलिए बाप के मरने के बाद उस पर मेरा हक है। सेवादास भी दसीम्म भी लछमी का बाप जिस मठ का सेवक था वह मेरीबंध मठ के अधीन है इसलिए लछमी पर हमारा अधिकार है। अन्त में लछमी कानूनन सेवादास की ही हुई। सेवादास के वकील साहब ने समझाकर कहा था—महंथ साहब! इस लड़की का पढ़ा-लिखाकर इसकी शादी करना

पाँच

मठ पर गाँव-भर के मुखिया लोगों की पंचायत बैठी है। बालदेवजी को आज फिर 'भाखन' देने का मौका मिला है। लेकिन गाँव की पंचायत क्या है, पुरैनिया कचहरी के रामू मोदी की दूकान है। सभी अपनी बात पहले कहना चाहते हैं। सब एक ही साथ बोलना चाहते हैं। बातें बढ़ती जाती हैं और असल समस्या बातों के बवंडर में दबा जा रहा है। सिपजी चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं 'उस दिन यदि हम घर में रहते तो खून की नदी बह जाती।" काली-चरन चुप रहने वाला नहीं है 'वाह रे ! दरवाजे पर एक अंधे आदमी को बेइज्जत करना 'इन्सान' आदमी का काम है ?" तहसीलदार साहब कहते हैं "अस्पताल तो सबों की भलाई के लिए बन रहा है। इससे सिर्फ हमारा ही फायदा नहीं होगा। जोतखिदर बाबू कह गए थे कि तहसीलदार साहब जरा मदद दीजिएगा। हम अपने मन से तो अगुआ नहीं बने हैं। तुम्हीं बताओ खिसा-बन भाई !

बूढ़े जोतखीजी भविष्यवाणी करते हैं, "कोई माने या नहीं माने हम कहते हैं कि एक दिन इस गाँव में सिउ-कौआ उड़ेगा। लक्षण अच्छे नहीं हैं। गाँव का ग्रह बिगड़ा हुआ है। किसी दिन इस गाँव में खून होगा खून ! पुलिस-दारोगा गाँव की गली-गली में घूमेगा। और यह इसपिताल ? अभी तो नहीं मालूम होगा। जब कुएँ में दवा डालकर गाँव में हैजा फैलाएगा तो समझना। जिब हो ! जिब हो !"

बालदेव भाखन के लिए उठना चाहता था कि लक्ष्मी हाथ जोड़कर खड़ी हो गई, 'पंच परमेस्वर !"

मानो बिजली की बत्ती जल उठी। सन्नाटा छा गया। सफेद मलमल की साड़ी के छोर को मुंह में डालकर लक्ष्मी हाथ जोड़े खड़ी है 'पंच परमेस्वर !"

"लक्ष्मी महंथ साहब शून्य में हाथ फैलाकर टटोलते हुए कहते हैं "लक्ष्मी तुम चुप रहो।"

लक्ष्मी रुकी नहीं कहती गई "जोतखी जी ठीक कहते हैं। गाँव के ग्रह अच्छे नहीं। जहाँ छोटी-छोटी बातों को लेकर इस तरह लड़ाई होती है जहाँ आपस में मेल-मिलाप नहीं वहाँ या कुछ न हो यह थोड़ा है। गाँव के मुखिया लोग ही इसके लिए सबसे बड़े दोषी हैं। सतगुरु साहेब कहिन है—'यहाँ मेल तहाँ सरग है। मानुस जनम बार-बार नहीं मिलता है। मानुस जनम पाकर हम परमारथ के रस्ते सोआरथ देखें तो इससे बढ़कर क्या पाप हो सकता है ?

परमारथ में जो विघिन डेलते हैं वे मानस नहीं। आप लोग तो शास्तर-पुरान पढ़े हैं, धरम भाव करने वालों को पुरान में क्या कहा है, सो तो जानते ही हैं। हमारे कहने का मतलब यह है कि सबै कोई मेर भाव तेयाग के एक होकर के परमारथ कारज में सहयोग दीजिए। आप लोग तो जानते हैं—'परमारथ कारज देह धरे यह मानुस जन्म अकारथ जाय। बस हाथ जोड़कर पंच परमेस्वर से बिनै है, झगड़ा तेयागकर मेल बढ़ाइए। सतगुरु साहेब गाँव का मंगल करेंगे। आगे आप लोगों की मरजी।"

लक्ष्मी बैठ गई। उसका चेहरा तमतमा गया है, भौंह खिंच गए हैं और कपाल पर पसीने की बूँदें चमक रही हैं। पंचायत में सन्नाटा छाया हुआ है, मानो साँप फिर गया हो। बालदेवजी का भाषण देने का उत्साह कम हो गया है। वह दोहा-कवित्त नहीं जानता शास्तर-पुरान भी नहीं पढ़ा है। जेहल में चौधरीजी उसे पढ़ाया करते थे। तीसरा भाग में—'भारी बोझ गमक का लेकर एक गधा धुस पाता था' के पास ही वह पढ़ रहा था कि चौधरीजी की बदली हो गई। उसी दिन से उसकी पढ़ाई भी बन्द हो गई। लेकिन वह जकर भाषण देता। उसने लक्ष्मी की ओर देखा तो और मानो नशे में उठकर खड़ा हो गया "पियारे भाइयो!

"बोलिए एक बार प्रेम से गांधी महतमा की जै! बालदेवजी के नौजवानों ने जयजयकार किया।

"पियारे भाइयो! कोठारिन साहेब जितना बात बोली सब ठीक है। लेकिन सबसे बड़ा दोखी हम हैं। हमारे कारन ही गाँव में लड़ाई-झगड़ा हो रहा है। हम तो सबों का सेवक हैं। हम कोई बिदमान नहीं हैं, शास्तर पुरान नहीं पढ़े हैं। गरीब आदमी हैं, मूरख हैं। मगर महतमा जी के परताप से भारथ माता के परताप से मन में सेवा-भाव जन्म हुआ और हम सेवक का बाना ले लिया। आप लोगों को तो मालूम है, जयमंगलबाबू जो मेनिस्टर हुए हैं अपना दस्तखत भी नहीं जानते हैं। बहुत छोटी जात का हैं। वह भी गरीब आदमी थे मूरख थे। मगर मन में सेवा भाव था और महतमाजी उनको मेनिस्टर चुन लिए। महतमाजी कहिन है—"वैस्नव जन तो उसको कहते हैं जो पीर पराई जानता है रे! मोमेन्ट में जब गोरा मजेटरी हमको पकड़ा तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। बली माँझते थे तो मुँह में पखाब कर देता था

बालदेवजी का 'भाषण' शुरू होते ही पंचायत में फिर कानाफूसी शुरू हो गई थी। राजपूत टोली के लोग और भी जोर-जोर से बातचीत करने लगे। बालदेव के भाषण के इस रोमांचक अंश ने जरा असर किया। मुँह में पखाब

करने की बात सुनते ही पंचायत में फिर सन्नाटा छा गया। बालदेव ने झट अपनी कमीज खोल की चारों ओर घूमकर पीठ दिखलाते हुए उसने अपना भाषण जारी रखा "आप लोगों को विसवास नहीं हो तो देख सकते हैं!"

'अरे बाप! पीठा-बाप की तरह देह हो गया है। घाव है!"

"देखिए आप लोग यादवटोली का एक नौजवान कहता है 'हम लोग गांधीजी का बी करते हैं तो आप लोगों के कान में जाम मिर्च की बुकनी पड़ जाती है। देखिए!

"अरे भाई! यह सब महतमाजी का परताप है। कौन सह सकता है। जब गुड़ बंजन लड़े तो मिसरी नाम धरावे।

" लेकिन पियारे भाइयो हमने मारब माता का नाम महतमाजी का नाम लेना बन्द नहीं किया। तब मलटरी ने हमको नाखन में सूई बढ़ाया तिस पर भी हम इसविस[1] नहीं किये। आखिर हारकर बेरुआना में डाल दिया। आप लोग तो जानते ही हैं कि सुराजी लोग जेहल को क्या समझते हैं— जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करने को जायेंगे। मगर जेहल में अंगरेज सरकार हम लोगों को तरह-तरह की तकलीफ देने लगा। भात में कीड़ा मिला देता था बात-बात का तरकारी देना बा। बस हम लोगों ने भी अनसन शुरू कर दिया। पियारे भाइयो! पाँच दिन तक एकदम निरजला अनसन। उसके बाद कलक्टर, इसपी अब गए आया। माँग पूरा कर दिया खाने को दूध-हलवा दिया। हम लोग बोले—दूध-हलवा अपने बाल-बच्चों को खिलाओ हम लोगों को बढ़िया चावल दो। मा पियारे भाइयो! सेवा-व्रत जब हम लिया है तो इसका छोड़ नहीं सकते। 'अधी होकर पुलिस चलावे पर डंडा का परिवाह नहीं! आप लोग अपन गाँव में सेवा नहीं करने दीजिएगा हम पलपटी पकड़े जायेंगे। वहाँ आसरम है घर-घर चरखा करघा चलता है। घर घर में मौरत-मरद पढ़ते हैं। महतमाजी जमाहिरलाल रवीन्नर बाबू और दूसरे बड़े-बड़े लीडर लोग साल में एक बार जरूर आते हैं। चौधरीजी हमको बार बार खबर भेज देते हैं। बालदेव अपने गाँव में चले आओ। हम कहे कि चौधरीजी आप हमारा गुरु है, आपका बचन हम नहीं काट सकते। लेकिन अपना गाँव तो उन्नति कर गया है। जो गाँव उन्नति नहीं किया है हम वही सेवा करने। हम मेरीगंज का पलपटी की तरह बनाना चाहते हैं। हम अपने में गाँव में झाड़ू देंगे मैला साफ करेंगे। हम लोगों का सब किया हुआ है।

---

१ बी-बपड़।

महत्मा जी खुद मैला साफ़ करते थे। जहाँ सफ़ाई रहती है, वहां का आदमी भी साफ़ रहता है। मन साफ़ रहता है। साहेब लोगों को देखिए, उनके देश का बाल-बिरिछ भी साफ़ रहता है। कोठी के बगीचे में कलस्टर के पास को देखिए, एकदम बगला की तरह उजला है। लेकिन आप लोग हमको नहीं चाहते हैं तो हम चले जायेंगे। आप लोगों को विसवास नहीं हो जो पढ़ना जानते हैं, इस चिट्ठी को पढ़ लीजिए कि इसमें क्या लिखा हुआ है। टैप में छापी किया हुआ है। दो साल पहले की चिट्ठी है।

कौन पढ़ेगा! बड़े मौके से सभी इसकुलिया अंगरेजिया लोग भी घर में ही हैं। पढ़ो जी कोई। खेलावन ने अपने लड़के सकलदीप से कहा "आओ पढ़ो।" लेकिन वह बड़ा शरमीला है। 'हरगौरी पढ़ो जी!"

पासवानटोले के रामचंदर का भतीजा मेवालाल उठकर खड़ा हुआ बालदेव के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ने लगा।

'जरा जोर से पढ़ो। बला साफ कर लो। थर-थर क्यों कांपते हो?"

"सेवा में बालदेवसिंहजी। महाशय! आपको विदित हो कि कस्तुरबा स्मारक निधि की एक अस्थायी कमेटी गठन करने के लिए कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष बैठक ता० ८-१२-४५ को पूर्णिया धर्मशाला में होगी। इस बैठक में बिहार के मूतपूर्व प्रीमियर भी उपस्थित रहेंगे। इस महत्वपूर्ण बैठक में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। आपका विश्वनाथ चौधरी।"

अरथ भी समझा दो मेवालाल। अरे नहीं अरथ क्या समझाएगा! टैप में छापी किये हुए खत का अब अरथ समझाएगा?

चौधरीजी भी बालदेवजी से राय लिये बिना कुछ नहीं करते हैं। यह अपने गाँव का भाग है कि बालदेवजी जैसा हीरा आदमी यहाँ आकर रहते हैं। अपना गाँव भी अब सुधर जायगा अवश्य। सुनो सिवजी क्या कहते हैं।

'बालदेव! तुम यहाँ से चले जाओगे तो यह मेरीगंज गाँव का दुरभाग होगा अरथ की बात होगी। गाँव में तो लड़ाई-झगड़े लगे ही रहते हैं। दो हंडी एक जगह रहे तो खनखन होना जरूरी है। तुम लोगों का काम है, गाँव में मेल-मिलाप बढ़ाना गाँव की उन्नति करना। इसमें जो बाधा डालता है वह अधर्मी है। तुम लोग देश के सेवक हो। खल और कुटिल लोगों को सुमारग पर चलाना तुम्हीं लोगों का काम है। गोसाईंजी ने रमैन में पहले खल और कुटिल की ही वन्दना की है। तुम गाँव से मत जाओ। तहसीलदार और हम तो छोटे बड़े भाई हैं। बचपन से साथ खेले-कूदे, लड़े-झगड़े और फिर मिल गए। आओ जी तहसीलदार भाई, लोग तो हम लोगों के खानदान को बदनाम करते ही हैं

कि कायस्थ और राजपूत में मिलकर महारानी चम्पावती के इस्टेट को ही पार कर दिया। अब हम लोग फिर एक बार मिल जावें।" सिंहजी ने अपना लम्बा-चौड़ा वक्तव्य समाप्त करते हुए पंचायत में बैठे लोगों की ओर देखा।

पंचायत में ज़ोर का ठहाका पड़ा। लोग हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

'एकदम 'डम भोलानाथ है सिंहजी! मन में कोई छल-पाँच नहीं रखते। सादा दिल के आदमी हैं।

सिंहजी ने तहसीलदार को हाथ पकड़कर उठा लिया। दोनों गले मिलने लगे।

"बोलिए एक बार प्रेम से गन्धी महात्मा की जै!"

"जै! जै!"

अब मंडारा जमेगा। दो दिन से तो ऐसा मालूम होता था कि लोगों के पक्ष में परोसी हुई पूड़ी-जिलेबी अब नहीं तब गई। उस दिन कीर्तन और नाच करेंगे। अबकी चौकीदार क्या कहता था महतमाजी का झंडा पताका नहीं उड़ाना होगा वह मार खाएगा अब। उसको कहो अपने नाना दारोगा साहेब से पूछे कि राज किसका है। अनशन करने से खाट हाकिम कम्पाउंडर सब डर जाता है।

सारी पंचायत में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनके ऊपर मेल-मिलाप की खुशी का उल्टा असर हुआ है। खेलावनसिंह यादव को सिंह ने किस चालाकी से एक किनारे किया है इस कोई नहीं समझ पाए, लेकिन खेलावन ने सब समझ लिया। खेलावन की चर्चा भी नहीं की सिंह ने। और इस तहसीलदार को तो देखा मुग़ल बिरयिट की तरह रख बदल लिया। लड़ाई-झगड़ा यादवटोली से था और गले मिले तहसीलदारजी। खेलावन को सत्यरसा[1] नहीं समझना। सब चालाकी समझता है। दुनिया की ज्ञान-गवेषी बघारता है यादव मगर इतना भी समझ में नहीं आया कि सिंह तहसीलदार से क्या सिद्ध रहा है। मेल-मिलाप तो यादवटोली के मलिया में होना चाहिए। सुराजी हाथ से क्या हुआ जात सुभाव नहीं छूटत। अपना माल आदर में अपने यहाँ रखता है खिलाता-पिलाता है और समय पड़ने पर सब काम आएगा समझे।

जातगोत्रा खेलावन के देहर का बलदेव ही सब-कुछ समझ रहा है। माटी कमेड़ी पर क्रोध हुआ है। "खेलावन बाबू सकमर्दीप बबुआ की जनमपत्री कार्यालय में बनकर आ गई क्या अरा एक बार हम भी देखते। आज तक हम जो कहता किये हैं उसका कोई के पंडितों ने भी कभी नहीं काटा।

---

१ सात बप तक माखालिग रहनेवाला।

"कल सुबह से आइएगा जोतखी काका ! आप तो बहुत दिन से आये भी नहीं हैं। सकलदीप तो हाईस्कूल में संस्कृत भी पढ़ता है। जरा आकर देखियेगा तो संस्कृत में उसका जेहन कैसा है ?

ठीक दोपहर से पंचायत की बैठक शुरू हुई, शाम को खत्म हुई। बहुत दिन बाद गाँव-भर के लोग पंचायत में बैठे थे। बहुत दिन बाद फिर मेल-मिलाप हुआ।

कल ही मदारा है। सुबह से ही इसपिताल के सामने की जमीन को साफ़ करके जाफरी से घेरना होगा शामियाना टाँगना होगा सजाना होगा। इलाकाई लोग सुबह से ही आ जायेंगे। आजकल दिन छोटा होता है। बिजी होते-होते शाम हो जायगी। डॉक्टर साहब को लाने के लिए चार बैलगाड़ियाँ जायेंगी टीशन—मैसचरमन बाबू ने बालदेवजी से कहा है। कल भोर को ही इसपिताल में सब-कोई जमा होंगे काम का बँटवारा होगा। इतने बड़े भोज को सँभालना खेल नहीं।

सभी बारी-बारी से महंथ साहब को साहब बंदगी करके विदा हुए। बालदेवजी को महंथ साहब ने रोक लिया है। "बालदेव बाबू तुम जरा ठहर जाना। कल फिर समय नहीं मिलेगा। अभी एक बार हिसाब-किताब कर लेना अच्छा होगा। थोड़ी देर बैठ के बीजक बाँचो हम डाकडाक[1] से हो आयें। कहाँ हो रामदास ! गंगासागर में जल भर दो !"

बालदेव धूनी के पास बैठकर बीजक के पन्ने उलटता है—

"बीजक बताबे चित्त को
जो चित्त मुप्ते होय
सब्द बताबे जीव को
बूझे बिरला कोय ॥

लछमी लालटेन जलाकर सामने रख गई। अक्षर स्पष्ट हो गए—'सतो सारे जग बौराने। लछमी के शरीर से एक खास तरह की सुगन्ध निकलती है। पंचायत में लछमी बालदेव के पास ही बैठी थी। बालदेव को रामसागर मेला के दुर्गा मंदिर की तरह गंध लगती है—मनोहर सुगन्ध। पवित्र गंध। औरतों के देह से तो हल्की महसूस प्याज और लाल की गंध निकलती है।

---

१ सिंघ-सिंघा।

८.

वासुदेवजी को रात में नींद नहीं आती है।

मठ से लौटने में देर हो गई थी। सोचकर सुना खेलावन भैया की तबियत खराब है आँगन में सोये हैं। यदि कोई आँगन में सोया रहे तो समझ लेना चाहिए कि तबियत खराब हुई है बुखार हुआ है या सरदी लगी है अथवा सिर दर्द कर रहा है। जिसको आँगनवाली[1] ही नहीं वह आँगन में क्यों सोएगा? आँगन में सोने का अर्थ है आँगनवाली के हाथों की सेवा प्राप्त करना। खाने के समय भौजी से मालूम हुआ पेट में बात हो गया है। कड़वा तेल गरम कर पेट सहारते समय वो-गो बोलता था।

भौजी भी बहुत अनमनी थी। और दिनों की तरह बैठकर बातें नहीं की भौजी ने। भौजी बोरसी[2] के पास बैठकर हुक्का पीती रहती थी वासुदेव जेल की गप सुनाता रहता। वासुदेवजी आज पंचायत की गप भौजी को सुनाते, लेकिन आज गप जमाने का लक्षण नहीं देखकर वासुदेव भी सोने चले आए।

नींद नहीं आती है। जेल का वो ठंडी कम्बल आज बड़ा गरम लग रहा है। सहर की धोती मैली हो जाने पर बहुत ठंडी हो जाती है। बार-बार लछमी दासिन की याद आती है। आते समय कह रही थी—आज यहीं परसाद पा लीजिए वासुदेवजी! परसाद! लछमी के सरीर की सुगन्ध! आज माँ की भी याद आती है। गाँव के लोग वासुदेव को 'दुखरा' कहते थे। सुनकर माँ बहुत गुस्सा होती थी। बाप के मरने से कोई दूखर नहीं होता। बाप मरे तो कुमर, माँ मरे तब दूखर! मेरा वासुदेव तो कुमर है मेरा वासुदेव दूखर नहीं। ऐसा लगता है माँ ने अभी कुछ ही पीठ सहलाई है।

माँ के मरने के बाद वासुदेव बहुत दिन तक मलोची नवरत की भैंस चराता था। मलोची मलत की याद आते ही वासुदेव का देह सिहर उठता है। कैसा पिशाच था बुड्ढा! बूढ़ी तो भौंरा की खटाँस की 'सेकसियारी' की तरह हरदम खेंक-खेंक करती रहती थी। दिन-भर भैंस चराकर आने के बाद वासुदेव की उँगलियाँ मलत का देह टीपने-टीपते दर्द करने लगती थी? आँखें नींद से बन्द हो जाती थी। लेकिन जरा भी ढुलके कि चटाक। उस बूढ़े की उँगलियों की चोट बड़ी कड़ी होती थी। वासुदेव ने बचपन से ही मार खाई है—बाप की छड़ी और माटी की मार। बापट मूली चमड़ी की चोट ज्यादा लगती है। लेकिन

---

१ पत्नी। २ अँगीठी। ३ अलाव। ४ औरत।

रूपमती का कलेजा मोम का था। वैसे बेदर्द माँ-बाप की बेटी वैसी दयालु कैसे हुई, समझ में नहीं आता है। बूढ़े-बूढ़ी को रात में नींद नहीं आती थी। आध पहर रात को ही भैंस चराने के लिए जगा देता था। आध पहर रात होते ही पीपल के पेड़ पर ब्रह्मदैत्य अपनी मनहूस बोली में कनकना उठता था और इधर बूढ़ा ठीक उसी तरह की आवाज में चिल्ला उठता 'रे दुखना भोर हो गई, भैंस खोल!' रूपमती कभी दुखना नहीं कहती थी। छोटा-सा नाम 'बलगी' उसी का दिया हुआ है। चार सेर सुबह और तीन सेर शाम को दूध होता था लेकिन बुढ़िया कभी सितुआ-भर घोल भी नहीं खाने देती थी। रूपमती रोज चुराकर माय के नीचे दूध की छाली रख देती थी। बूढ़ा-बूढ़ी का जमाया हुआ पैसा आखिर ब्रह्मदैत्य ही ले गए। इस बार रूपमती को देखा था। बहुत दिन बाद ससुराल से आई थी। तीन बच्चे हैं बड़ी बेटी ठीक रूपमती जैसी है। ठीक वैसी ही हँसी!

याद आती है मासेजी की! मासेजी—रामकिसून बाबू की इसतिरी! पहले-पहल सभा हुई थी जमनपटी में। सभा में रामकिसून बाबू उनकी इस तिरी चौधरीजी और तैयारीजी आये थे। अजबत रूप था रामकिसून बाबू का! बड़ी-बड़ी आँखें! माखन देते थे जैसे बाघ परजे! सुनते हैं जब वोकालत करते थे तो बहस करने के समय पुरानी कचहरी की छत से पलस्तर झड़ने लगता था। क्या मजाल कि हाकिम उनके खिलाफ राय दे दें! लेकिन महतमाजी का उपदेश सुनकर एक ही दिन में सब-कुछ छोड़-छाड़ दिया। इसतिरी के साथ गाँव-गाँव घूमने लगे। मासेजी के पाँव की चमड़ी फट गई थी। खून से पैर लथपथ हो गए थे। लाल उड़हुल? मासेजी का दुख देखकर, रामकिसून बाबू का माखन सुनकर और तैयारीजी का गीत सुनकर वह अपने को रोक नहीं सका था। कौन सँभाल सकता था उस टान को! लगता था कोई खींच रहा हो। 'गंगा रे जमनवाँ की धार नयनवाँ से नीर बही। फूटल मारबिया के माम भारथ माता रोई रही।" मासेजी के पाँव की चमड़ी फट गई थी भारथ माता रो रही थी। वह उसी समय रामकिसून बाबू के पास जाकर बोला था—मेरा नाम मुखजी में लिख लीजिए। उस दिन की सभा में तीन आदमियों ने नाम लिखाया था—बासदेव बालदास और चुमी मुसाई। चौधरीजी उसे जिला आफिस में ले आए थे। मासेजी बराबर ऑफिस आती थी। कभी गुस्सा होते नहीं देखा मासेजी को जब बोलती थी तो हँसकर। एक बार देहात से लौटते समय उसको बुखार हो गया था देह जल रहा था सिर फटा जा रहा था कोई होश नहीं। रात में आँख खुली तो जी

बड़ा हल्का मालूम हुआ। 'कैसे हो बालदेव भाई ? कौन बाबन ? चरखन उलटाकर देखा मासेजी पास ही कुरसी पर बैठी हुई हैं। 'कैसे हो बोलो ? बुखार था तो देहाव क्यों नया था ? 'सोमो । माथे पर हाथ रखते हुए मासेजी बोली थीं 'बुखार उतर गया है। मासेजी के हाथ रखते ही नींद आ गई थी। दूसरे दिन बालदेव ने कहा 'मासेजी को कैसे ही मालूम हुआ कि तुमको बुखार है कैसे ही मुझे खेकर ऑफिस आई। 'अंतर' लगाकर बुखार देखते ही चिल्लाने लगी—पानी लाओ। पंखा दो। उसी समय से माथे पर पानी की पट्टी देती रही रात बजे तक। भगवान् भी कैसे हैं, अच्छे आदमी को ही अपने पास बुला लेते हैं। दो-तीन साल के बाद ही रामकिसुन बाबू एक ही दिन के बुखार में सरकवास हो गए। हे भगवान् ! उस दिन मासेजी की ओर कौन देख सकता था ! देखने की हिम्मत नहीं होती थी। मासेजी का उस दिन का रूप 'मंगा रे जमुवा की धार नयनवां से नीर बही। फूटल बारहिया के माय मारब माता रोई रही ! सचमुच सबों के भाग फूट गए। सराध के दिन से बिना ऑफिस का नाम हो गया 'रामकिसुन आश्रम। सराध के दूसरे दिन ही मासेजी ननौजी चली गई। गाड़ी पर चढ़ने के समय पैर छूकर जब परनाम करने लगा था तो मासेजी एकदम फूट-फूटकर रो पड़ी थीं—ठीक देहाती औरतों की तरह। बालदेव को मासेजी ठाकुर कहती थी 'हमार ठाकुर रे ! धरती पर लौटते हुए बालदेव को उठाते हुए मासेजी बोली थी 'महतमाजी पर भरोसा रखो। वह सब भला करेंगे। महतमाजी का रास्ता कभी मत छोड़ना। पता नहीं मासेजी कहाँ हैं !

आँसू का बरस बूँदें बालदेव की बाँह पर ढुलककर गिरीं। माँ कपसती मासेजी और लछमी दासिन ! मासेजी जैसा ही लछमी भी भाखन देना जानती है। लछमी भाखन दे रही है।

'बिसाल मेला ! जहाँ तक नजर जाती है आदमी-ही आदमी दिखाई पड़ते हैं। बाँस के घेरे को तोड़कर लोग मंच की ओर बढ़े आ रहे हैं। मंच पर बालदेव के बगल में लछमी बैठी हुई है। लछमी के भी पैर की चमड़ी छप गई है। मंच की सुनहरे चादर पर लहू की बूँदें टप-टप गिर रही हैं। लछमी भाखन दे रही है। कौन हुरदौरी ? हुरदौरी लछमी के मुँह में माया भाखने के लिए आप बढ़ रहा है। लछमी माया नहीं पहचानती है। माया लेकर बालदेव को पहचानती है—मेंढ़ के कुश की माया ! फूल से लछमी के शरीर की सुगंधी निकलती

---

१ अगवानीदार।

है। भीड़ मंच की ओर बढ़ी जाती है। हरगौरी आगे बढ़ आया है लक्ष्मी को पकड़ रहा है। बालदेव चिल्ला रहा है, लेकिन आवाज नहीं निकल रही है। लोग हल्ला कर रहे हैं। बहुत जोर लगाकर बालदेव चिल्लाता है—हरगौरी बाबू!

'यही महात्मा की थी!

'जी!

बालदेव हड़बड़ाकर उठता है आँखें मलते हुए बाहर निकल आता है। सवेरा हो गया है। गाँव-भर के लोगबागों को बटोरकर, जुलूस बनाकर, कालीचरण जयजयकार करता हुआ आ रहा है। वाह रे कालीचरण! बुद्धिमान है बहादुर भी है और बुद्धिमान भी। यह पुलोमराम कब बनाया था? रात में ही आयद! जाकर मेरीगंज भी चलनपटी की तरह नाम करेगा। और मोर का सपना?

"खेलावन भैया कैसी तबियत है?

"तुम रात में कब लौटे? कहाँ देर हुई, सिपैहियाटोली में? कायस्थ-राजपूत की जोड़ी मिल गई, अब क्या है सुराज हो गया। लेकिन भाई बालदेव हम ठहरे सीधे-सादे आदमी। कक्किया पर नजर रखना। उसमें और भी बहुत गुन हैं सो तो तुमको मालूम ही हो जायगा। किसी किस्म का उपद्रो करेगा तो हम जिम्मेदार नहीं हैं। पीछे यादवटोली के मुखिया के ऊपर बात नहीं आवे। हाँ भाई, कायस्थ और राजपूत का क्या विसवास?"

खेलावन किसके ऊपर अपने दिल का बुखार उतारे, समझ नहीं पा रहा था। भैंस-चरवाहा भैंस दूहने के लिए बरतन ले आया था। खेलावन आज भी अपने ही हाथों भैंस दूहता है। उसका कहना है भैंस के बन में चार आदमी के हाथ लगे कि भैंस सूखी। चरवाहा पर बिगड़ पड़ा "सामा! अभी भैंस बियाई भी नहीं है दूहने के लिए हल्ला मचा रहा है! पूड़ी-जिलेबी क्या अभी ही बँट रही है? जीभ से पानी बिर रहा है! परनाम जोतखी काका!"

जोतखी जी कान पर जनेऊ टाँगे हाथ में लोटा लटकाए इधारे की ओर जा रहे थे। खेलावन ने टोका "आइए, यहीं पानी मैंयवा देते हैं।"

"खेलावन बाबू गाँव में तो सुराज हो गया देखते हैं। अच्छा-अच्छा! देखिएगा गाँव के लौंडे सब आज फुच्च-फुच्च कर रहे हैं। 'छः गते चलि गेते उतराई जम जोर धन खन बौराई। ऐसा ही सिमरबनी में भी हुआ था। हमारे मामा का घर सिमरबनी में ही है। आज से दस-बारह साल पहले की बात कहते हैं। हम मामा के यहाँ गये थे। मामा के बड़े पुत्र का जन्मयज्ञोपवीत था। प्रातःकाल

उठके देखते हैं कि गाँव भर के लौंडे इसी तरह झंडा-पताका लेकर 'इनकिलास जिन्दाबाद' करते हुए गाँव में घूम रहे हैं। मामा से पूछा कि मामा बात क्या है ? तो मामा बोले कि गाँव के सभी लड़कों ने मोसटियरी में नाम लिखा लिया है। 'इनकिलास जिन्दाबाद' का अर्थ है कि हम जिन्दा बाद हैं। जिन्दा बाद भी उसी काम को देखा। इस्कूल से पश्चिमी कंट्रोली तैयारी नीमक कानून बनाने वाला था। बड़े-बड़े चूल्हे पर, कड़ाहियों में चिकनी मिट्टी और पानी डालकर खौला रहे हैं। खूब बीच-बीच झंडा-पताका। पूछा कि यह क्या है भाई, तो कहा कि नीमक कानून बन रहा है। हम भी खड़ा होकर तमाशा देखने लगे। इसी समय हल्ला हुआ दारोगा आ रहा है। इस्कूल के हाता से एक टोला बाजा और चार-पाँच लाल पगड़ी बाजा निकला। बस फिर क्या था जिन्दा बाद आ गया जो जिस मुँह से खड़ा था उधर ही भागा। एक दूसरे के ऊपर गिर रहा है। कहीं झंडा कहीं पताका और कहीं इनकिलास जिन्दाबाद। दारोगा साहब तैयारी को पकड़कर ले गए। इसके बाद गाँव के घर-घर में घुसकर तलाशतलाशी। गाँव के सभी जिन्दाबाद गाँव में घुस गए। सुनने में आया कि जब कंट्रोली राज हुआ तो फिर घर-घर में मोसटियर बरबराने लगा। फिर इनकिलास जिन्दाबाद। पुलिस-दारोगा को देखकर और जोर से चिल्लाते थे सब। लो भाई, चिल्लाओ तुम्हारा राज है अभी। पुलिस-दारोगा मन-ही-मन गुस्सा पीकर रह गए। पिछले मोमेंट में जिन्दाबादों ने जोश में आकर अड़यड़ा बाजा दिया कव्वाली लूट लिया। दूसरे ही दिन चार लौरी में भरके गोरा मलेटरी आया और सारे गाँव को झला-पका लूट-पीटकर एक ही घंटा में ठंडा कर दिया। पचास आदमी को गिरिफ्तार किया। दो को तो मारते-मारते बेहोस कर दिया। एक को कीरीच भोंक दिया। अंगरेज बहादुर से यही दुम्बी-तिम्बी कोय पार पावेगे। बड़ा-बड़ा घोड़ा बह जावे तो मटकोड़ी कूते कितना पानी। अंगरेज बहादुर ने अभी फिर ढील दे दिया है। खूब उछल-कूद कर रहे हैं। इस बार बिदेसिया ता लोपसहित कबूतराय ।

"नहीं जोतखी काका अब वैसा नहीं हो सकता" बालदेव इससे आगे नहीं सुन सका। "पिछले मोमेण्ट में सरकार का धक्का खूब खाया है। सिमरबनी के बारे में आप जो कह रहे हैं सो आप इधर सिमरबनी गये हैं ? नहीं। तब क्या देखिएगा ! एक बार वहाँ जाकर देखिए—इसपिताल इस्कूल लड़की-इस्कूल चरखा सब्बर गायबरोजी क्या नहीं है वहाँ ? घर-घर में ए-बी-सी पास ! सिवानन्द बाबू को जानते हैं ? उनका बेटा रमानन्द इस साल फ आप बेकार न था अब हाकिम हो जायेगा। पक्की बात !

खेलावन भी कुछ कहना चाहता था कि चरवाहे ने पुकारा "पाँड़ा मैस पी रहा है।"

खेलावन मैस दूहने चला गया। बालदेव के पास बेकार बहस करने के लिए समय नहीं है। चाँद में जयजयकार हो रहा है—'गन्ही महतमा की जै!

सात

प्यारू को सबों ने चारों ओर से घेर लिया। डागदर साहेब का नौकर है। डागदर साहेब कब तक आएँगे? तुम्हारा क्या नाम है? कौन जात? धुसाव मत कहो गहलोत बोलो बहलोत! जनेऊ नहीं है?

बालदेवजी प्यारू को भीड़ से बाहर ले आते हैं। 'भाई, तुम लोगों ने आदमी नहीं देखा है कभी? जाओ अपना काम देखो! हलवाईजी लोगों के पास कौन है?"

बालदेवजी सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं। रामकिसून आसरम में सीखकर ओप इसी तरह सबों के नाम के साथ 'जी' लगाकर बोलते हैं—'डागदरजी' 'टेकेदारजी' 'हरिजनजी'!

पूछताछ के बाद मालूम हुआ प्यारू डागदर साहेब के पास नौकरी करने आया है। रौतहट टीसन में जो हेमापोथी डागदर साहेब थे प्यारू उनके यहाँ पाँच साल नौकरी कर चुका है। डागदर साहेब देस चले गए। सुना कि मेरीपंज में एक डागदर बाबू आ रहे हैं। सो प्यारू डागदर बाबू के पास नौकरी करने आया है।

चूड़ा पूड़ का जलखै[1] करके प्यारू बालदेवजी से कहता है "डागदर बाबू का सामान कहाँ है? टेबल-कुरसी लगाना होगा। अलमारी को झाड़ना पोंछना होगा। पानी के डोल के पास एक बोल[2] रखना होगा एक साबुन और एक गमछा। डागदर बाबू आते ही पहले साबुन से हाथ धोएँगे।"

सचमुच प्यारू डॉक्टर का पुराना नौकर है। टेबल-कुरसी ठीक से लगा दिया है। तीन पैर वाली लोहे की सीढ़ी पर पानी का डोल रख दिया सीढ़ी में ही लगी हुई बोल कड़ी में लक्समुनियाँ[3] का कठौत लिख दिया है। डोल में कल

---

१ जलपान। २ कटोरा। ३ लक्समुनियम।

बना हुआ है। कल टीपने में पानी गिरने लगता है। बक्से से चमड़ा निकालकर यही लगा दिया है। खस्सी बकरी की अंतड़ी का मोटरी हिस्सा जैसा रोयाँदार होता है वैसा ही गमछा है। साबुन? साबुन नहीं है? अरे, कपड़ा धोने वाला साबुन नहीं चमकौआ साबुन चाहिए। मगत की दूकान में चमकौआ साबुन कहाँ से आवेगा? रूपिहार में मिलता है। तहसीलदार साहब की बेटी कमली जब चमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा बाँध गमगम करने लगता है। तहसीलदार साहब कहते हैं कमली दीदी से साबुन माँगकर ला दो। 'सचमुच प्यारू पुराना बागडरी नौकर है। बड़े मौके से वह आ गया नहीं तो इतना इन्तजाम कौन करता? बला शुक्र मना है अब डाक्टर बाबू भी आ जावेंगे। तहसीलदार साहब कहते हैं 'मुलुआ उगने के पहले ही बैलगाड़ियों को रवाना कर दिया है। साथ में गया है जमभू चौकीदार।

सारा गाँव महक रहा है। मेले में ठीक ऐसी ही महक रहती है। तहसीलदार साहब के मुहाल में हलवाई लोग सुबह से ही पूड़ी-जिलेबी बना रहे हैं। पूड़ी बनाकर ढेर लगा दिया है। बाँध के बच्चे सुबह से ही जमा हैं। राजपूत और कायस्थों के बच्चे दूसरे टोले के बच्चों को उधर नहीं आने देते हैं—'भागो यहाँ से, यहाँ आवना!

सिपजी खुद जाकर खेलावनसिंह यादव को पकड़ लाते हैं। "तहसीलदार, देखो इसके पेट में बाल उखड़ गया है। लोग खाने के पहले ही अजरबी हो गई है। अरे भाई, औरतों की तरह रूठने से क्या छावना! तुम्हीं कहो तहसीलदार, हम ठीक कहते हैं या नहीं! खड़ो झगड़ो और फिर गले-मले मिलो। यह रूठने का क्या माने? हमको तो बालदेव से मालूम हुआ। जाकर देखा तो कामतबुद्धी इसके कान में मन्तर पढ़ रहा है। ऐ बालदेव सुनो डाक्टर साहेब आएँ तो पहले इसी का इलाज कराओ। कहना कि आठवाँ महीना है।

हा हा हा हा हा हा हा!

"रामकिरपाल भाई लड़कों के सामने भी आप दिल्लगी करते हैं? अच्छा हाथ छोड़िए। सब कोई तो हैं ही फिर हमारे नहीं रहने से कौन काम हरज हो रहा था?

सिपजी मजेदार आदमी हैं। सुबह से ही सबों को हँसा रहे हैं। खेलावन यादव रूठे थे उसको भी पकड़ लाए। आतंकीजी नहीं आये। दोनों

---

१ विवाहादि में बच्चों का मेला।

दाँत में दर्द है। सिवजी कहते हैं, "पता नहीं उनके पेट के दाँत में दर्द है शायद। सुनते हैं आजकल डाक्टर लोग पत्थर का नकली दाँत लगा देते हैं। डाक्टर साहेब से कहकर ओतलीजी का दाँत बनवा दो भाई! अभी सभापाती[1] में लड़की वाले दाँत को हिला-डुलाकर देखते हैं थोड़ो!"

"डाक्टर साहेब आ रहे हैं।"

"आ रहे हैं? कहाँ?"

'पछियारीटोला के पास पाँचों बैलगाड़ियाँ आ रही हैं। सपमू चौकीदार आगे-आगे दौड़ता हुआ आ रहा है। डाक्टर साहेब टोपा पहने हुए हैं।"

अगमू आ गया। 'कन्धे पर क्या है बक्सा?"

कामकाज छोड़कर सभी जमा हो गए—डॉक्टर साहब आ रहे हैं।

"हेंट आइए!" अगम कहता है डाक्टर साहब बोले हैं इन्तजाम से रखना। ठेस नहीं लगे। बेतार का खबर है।

बालदेवजी कहते हैं 'रेडी' है रेडा! अब सुनिएगा रोज बर्मा-कलकत्ता का गाना। महतमाजी का खबर, पटना का माल सब आएगा इसमें। तार में ठेस लगते ही गुस्सा कर बोलेगा—बेकूफ। बिना मुँह धोये पास में बैठते ही पूछ देगा—क्या आपने आज मुँह नहीं धोया है?"

"मुकम बात!"

डाक्टर साहेब!

सभी हाथ जोड़कर खड़े हैं। डाक्टर साहब भी हँसते हुए हाथ जोड़ते हैं। बालदेवजी 'जय हिन्द' कहते हैं। देवारेवी कलिया भी आजकल 'जय हिन्द' कहता है। प्यारू शामियाने में कुर्सी लाकर रखता है डाक्टर साहब के हाथ से टोप ले लेता है। डाक्टर साहब के चेहरे का रंग एकदम साफ है। 'शाप्टेव'! मोंछ नहीं है क्या? नहीं मोंछ सफाचट कटाए हैं।

बालदेवजी हाथ जोड़कर पूछते हैं रास्ते में कहीं तकलीफ तो नहीं हुई?

सब तैयार है भोजन कर लिया जाये। इनका नाम विश्वनाथप्रसाद है यह पारबंगा के तहसीलदार हैं। इनका नाम रामकिरपालसिंह है सिपै राजपूत टोली के मालिक हैं। इनका नाम खेलावनसिंह यादव है यादव टोले के 'मड़र' हैं। इसका नाम कालीचरन है बड़ा बहादुर लीडरमान है। और ये लोग 'इलकुलिया' हैं। 'आइये बाबू साहब' आप लोग डाक्टर साहेब से बतिया लीजिये। इस गाँव के महतो साहेब ने इसपिताल होने की खुशी में गाँव वालों

---

१ रेडियो।

को आज भण्डारा दिया है।"

डाक्टर साहब हाथ जोड़कर सबों को फिर नमस्कार करते हैं। कहते हैं, "हम अभी नहीं जायेंगे। सबको सिमाइए!"

सचमुच प्यारू पुराना नौकर है। देखो डाक्टर बाबू ने सबसे पहले साबुन से हाथ धोया।

मठ के महंथ साहेब कोठारिन लछमी दासिन रामदास और दो मुट्ठी आये हैं। महंथ साहेब की बैलगाड़ी के आगे एक साधु तुरही फूंकता हुआ आ रहा है। प पु पु पु ऽऽ पू पु पु! और तुरही की आवाज सुनते ही गांव के कुत्ते दल बांधकर भोंकना शुरू कर देते हैं। छोटे-छोटे नवजात पिल्ले तो भोंकते-भोंकते परेशान हैं। नया-नया भोंकना सीखा है न!

सबसे पहले कालीथान में पूड़ी चढ़ाई जाती है। इसके बाद कोठी के आंगन की ओर दो पूड़ियां फेंक दी जाती हैं आंगन के देव-देवी और भूत-पिशाच के लिए। इसके बाद साधु और ब्राह्मन भोजन! बालदेवजी ने बहुत कहा लेकिन डाक्टर साहब नहीं माने। प्यारू ठीक कहता था डाक्टर लोग हलवाई की बनाई हुई पूड़ी-जिलेबी नहीं खाते हैं। 'कम के चूल्हे पर प्यारू डाक्टर बाबू के लिए भात बना रहा है। जल्दी से खिचड़ी[1] खतम हो तो बैठार के खबर का गाना सुनें। क्या? आज गाना नहीं होगा? हां भाई कल-परसों की बात है। इतना जल्दी कैसे होगा।' फिर कटिहार अंकछाड़ में रेलगाड़ियों और मिलों का अभी इतना शोरगुल होता होगा कि यहां तक खबर आ भी नहीं सकेगी।

"खिचड़ी! खिचड़ी!"

"हर टोले के लोग अलग-अलग पंगत में बैठो। अपने-अपने बगल में एक फालिल पत्ता रखना भाई! अपने-अपने घर की जनाना लोगोंके लिए। कम बेस नहीं।

मुसरटोली के रौदी मुखिया को सभी मिलकर खिला रहे हैं। रौदी गांव भर में घूमकर यही देखता है। उसका चाल चलन, उसकी बोली-बानी सब कुछ औरतों जैसी है। सिर और छाती पर से कपड़ा जरा-सा भी सरक जाने पर, औरतों की तरह सजाकर ठीक कर लेता है। सबों से बातें करते के समय मजाक है औरतें उसके सामने किसी भी किस्म का पर्दा नहीं करतीं। हाट जाते और लौटते समय वह औरतों के झुंड में ही रहता है। अभी सब मिलकर

---

१ खाना-पीना।

रौदी बूढ़ा को चिढ़ा रहे हैं—"तुम्हारा हिस्सा आँगन में मैंय दिया जावेगा। देखो बालदेव ने तुम्हारा पत्ता कपा दिया है।

"दूर! मुँहझौंसे! बूढ़े-पुराने से हँसी-दिल्लगी करते लाज नहीं आती? हम पूछते हैं तुम लोगों से कि तुम लोग अपनी बूढ़ी दादी और नानी से भी इसी तरह हँसी-मसखरी करते हो? इस पोल के लौंडे-छौंडे बिगड़ गए हैं। और सारा दोख इसी लिपरा का है। जहाँ बूढ़े ही बदमाश हों तो लौंडों का क्या हाल! हम कह देते हैं, हाँ सुन रखो! हाँ।

महंथ साहब रात में भोजन नहीं करते हैं।

"सतगुरु हो! डाक्टर साहेब आपको कितना मुसहरा मिलता है? दो सौ? हाँ यहाँ ऊपरी आमदनी भी होगी! मगर आमदनी तो ऊपरी आमदनी है। बहुत अच्छा हुआ। बाबाजी तो अवतारी पुरुष हैं। डाक्टर साहेब! आज से करीब पाँच साल पहले एक बार हमारी आँखें आईं, उसके बाद दो महीने तक आँखों में काली छाई रही। पुरनिया के सिविलसार्जन साहेब को पचास रुपैया फीस देकर दिखलाया। बहुत दिनों तक इलाज भी करवाया। मगर बेकार। अब तो आप आ गए हैं। अपने घर के डाक्टर हुए!

लक्ष्मी दासिन टकटकी लगाकर डाक्टर साहब को देख रही है। कितना सुन्दर पुरुष है! बेचारे का इस देहात में मन नहीं लग रहा है। नौकरी कोई भी हो आखिर नौकरी ही है। मन घर पर टँगा हुआ होगा। बीबी-बच्चों की याद आती होगी। कुछ दिनों में मन लग जायेगा। फिर बाल-बच्चों को भी ले आवेंगे। अचानक वह पूछ बैठती है "आपके घर पर और कौन-कौन है डाक्टर बाबू?

"जी" डाक्टर ने जरा हकलाते हुए कहा "जी मेरा कोई नहीं। माँ-बाप बचपन में ही गुजर गए।

लक्ष्मी समझ लेती है कि यह सवाल पूछना उचित नहीं हुआ। उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि उसने ऐसा प्रश्न किया ही क्यों! मेरा कोई नहीं!

"लक्ष्मी! रामदास को बुलाओ। अच्छा तो डाक्टर बाबू, अब आज्ञा दीजिए। आप भी भोजन करके आराम कीजिए। कभी मठ की ओर भी आइयेगा। सतगुरु साहेब कहीन है—'परस परस सतसंग ते छूटे मन का मैल!"

लक्ष्मी हाथ जोड़कर नमस्कार करती है।

डाक्टरटोली के लोग बालदेवजी से पूछते हैं 'डाक्टर बाबू का नौकर तो हुसाव है। और डाक्टर बाबू कौन जात है? हुसाव का बनाया हुआ खाते हैं?"

बोलिए प्रेम से महात्मा गान्ही की जै !

मंडारा समाप्त हो गया। कोई 'तरुटी' नहीं हुई। सबको 'पूर्ण' हो गया। जो भूख-चूक से छूट गए हैं उनका हिस्सा कल के आएगा।

बालदेवजी अबसू चौकीदार और बिरंची के साथ हसपिताल में ही सोएँगे। आज पहली रात है !

आठ

लछमी का भी तो इस संसार में कोई नहीं !

जी भरा कोई नहीं ! लछमी सोचती है उसका दिल इतना नरम क्यों है ? क्यों वह डाक्टर को देखकर पिघल गई ? यह अच्छी बात नहीं। सतगुरु, मुझे बल दो।

सतगुरु के सिवा कोई भी उसका नहीं। माँ की याद नहीं आती। पसरहा मठ के पास अपनी झोपड़ी की याद आती है। सुबह होते ही बाबूजी कंधे पर चढ़ा कर मठ पर ले जाते थे। महंथ रामगुलाम कितना प्यार करते थे—'आ गई लछमी ! के मिसरी खाएगी ? चाह पीवेगी ? भंडारी एक कटोरे में चाह चूड़ा दे जाता था। बाबूजी बैठकर महंथ साहेब के लिए गाँजा तैयार करते थे। एक चिलम दो चिलम तीन चिलम ! पीते-पीते महंथ साहेब की आँखें लाल हो जाती थीं। कभी-कभी बाबूजी भी थर-थर काँपने लगते थे। भंडारी रोज आकर देता था—'खा लो रामचरन भाई ! नशा टूट जायगा। बाबूजी को महंथ साहेब बहुत मानते थे। कोई काम नहीं। दिन भर महंथ साहेब की धूनी के पास बैठे रहो गाँजा तयार करो चिलम चढ़ाओ। मठ पर ही हमारा खाना-पीना होता था।

यौवन में जब हँसा फैला तो बाबूजी को महंथ साहेब ने कहा—'रामचरन ! तुम मठ पर ही रहो। उन दिनों दिन भर में कभी चिलम ठंडी नहीं होने पाती थी। एक दिन महंथ साहेब का कलेजा जल गया। न जाने कैसे चिलम की आग बीजक पर गिर पड़ी ! महंथ साहेब ने रोते हुए कहा था—'रामचरन साहेब करोप कीहिन है हंड भोगना पड़ेगा। मर्मघात होगा। दूसरे ही दिन मठ के एक साधु का पेट-माहु चलने[1] लगा। तीसरे दिन उस साधु ने देह 'तेयाग' दिया

१ कै-दस्त होना।

तो महंथ साहेब बीमार पड़े। बाबूजी ने महंथ साहब की बड़ी सेवा की। मरोर रमायने के पहले महंथ साहब ने कहा था—'रामचरण एक बार आखरी चिलम पिलाओ बेटा! बाबूजी चिलम तैयार करने के लिए घूनी से आग ले ही रहे थे कि घूनी में ही उल्टी होने लगी। महंथ साहब ने शाम को और बाबूजी ने सुबह को काया बदल लिया। भंडारी ने दूर से ही बाबूजी का दरसन कर लिया था। भंडारी ने कहा था "मरे हुए आदमी के पास नहीं जाना चाहिए!"

"लछमी! ओ लछमी!

"आई! लछमी भुनभुनाती उठती है। उस दिन बीरक ठुकर कसम खाये थे और आज फिर पुकारने लगे। सतगुरु हो तुम्हारी चुमाहट कब होगी? बुला लो सतगुरु अपने पास दासी को!

"लछमी!"

"महंथ साहब चित्त को शान्त कीजिए। सतगुरु का ध्यान कीजिए। माया

"सब माया है लछमी। लेकिन एक बार पास आओ।

अंधा आदमी जब पकड़ता है तो मानो उसके हाथों में मकरमच्छ का बल आ जाता है। अंधे की पकड़। लाख जतन करो मट्ठी टस-से-मस नहीं होगी!

हाथ है या लोहार की 'संड़सी'! दंतहीन मुँह का दुर्गन्ध! आर!

"महंथ साहेब! महंथ साहेब सुनिए!" रामदास धूनी के पास ही है। "महंथ साहेब! अरे रामदास! रामदास! बम्बी उठो जी! महंथ साहेब को क्या हो गया!"

महंथ साहब को सतगुरु ने अपने पास बुला लिया।

सुबह को सारे गाँव के लोग जमा होते हैं। "महंथ साहेब सिद्ध पुरुष थे! इच्छा-मृत्यु हुई है! रात को बैठकर, गाँव के बूढ़े-बच्चों को बिलाकर आये और रात में ही चोला बदल लिये। दुनिया में ऐसी मरनी मरों को नसीब नहीं होती। पियारी महातमा थे!

रामदास कहता है "भंडारा से लौटकर जब सरकार आए और आसन पर 'बमान' जमा के बैठे तो देह में 'जोत' निकलने लगा। हम महमरी जमान जमे तो हमारे से मना कर दिया। हम धूनी के पास बैठकर दबन रहे। सरकार के देह का जोत और तेज हो गया और सरकार एकदम बच्चा हो गए। जोत की चमक से हमारी आँखें बन्द हो गईं। हम वहीं धूनी के पास लेट गए। कोठा लिपती जब झम्मा करने लगी तो आँखें खुलीं।

लछमी कुछ नहीं बोलती। मायजी का माटी देने की रीत भी नहीं

मालूम ? जटा बड़ा लिया और हाथ में कमंडल ले लिया हो गए साधू !
"चरन दास ! पहले बीजक पाठ होगा, तब माटी ! इसके बाद सभी संतन के गोर[1] पर माटी दी जायेगी। इतना भी नहीं जानते ?"

"माया जाल निरंजने सुर नर दुख परहरणा
सरबे लोक बनाय जेन सतगं
हिया लोकिता ।"
नमोस्तु सतगुरु साहेब को
चरन कमल धरी सीस !

सबसे पहले रामदास माटी देता है ! उसके बाद कलमी बाभिन मुट्ठी भर माटी महंथ साहेब की सफेद चादर पर डाल देती है। फिर फूलों की माला। साधु लोग कुदाली से गोर में मिट्टी भरने लगते हैं। चरनदास कहता है, "महंथ साहेबको लपाकर इस महंथा को माटी दिया है ! माटी देना भी नहीं जानते ?

गाँव के 'कीरतनिया लोग' समवेत शुरू करते हैं—

" हाँ रे, बड़ा रे जतन से सुगा एक है पोसल
माखन दुधवा पिआवे ।
हाँ रे, से हो रे दुखना बिरिछी चढ़ि बैठल
पिंजरा रे धरती लोटाये ।"

गोर के बाद रामदास खँजड़ी बजा-बजाकर 'निरगुन' गाता है—

"कहँवा से हँसा आओल कहँवा समाओल हो राम
कि आहो रामा हो कौन गह कमल मोकाम कवन लपटाओल हो राम !"
डिम डिमिक डिमिक
"सुर पुर से हंसा आओल नर पुर समाओल हो राम
कि आहो रामा हो काया बड़ कमला मोकाम मायहि लपटाओल हो राम !"

"अँ हो सतगुरु की अँ हो ! महंथ साहेब की अँ हो ! सब संतन की अँ हो !"

मठ सूना लगता है। जीवन में आज पहली बार लछमी समझ रही है महंथ साहेब की कीमत को। नेत्रहीन हो गए वे कुछ देख नहीं सकते थे बिना रामदास के सहारे के एक पग चल भी नहीं सकते थे किन्तु ऐसा लगता था कि मठ भरा हुआ है। बिना महंथ के मठ और बिना प्राण के काया !

काँचहि बाँस के पिंजड़ा
जा में बिरमे न बाती हो,

---

१ समाधि ।

अरे हंसा उड़ल आकाश
कोई संगी न साथी हो !

जो भी हो संसार में सबसे बढ़कर लक्ष्मी को ही प्यार करते थे महंथ साहेब। चढ़ती जवानी में सतगुरु साहेब की दया से माया को जीतकर ब्रह्मचारी रहे। बढ़ोती में तो आदमी की इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं माया प्रबल बात को नहीं सँभाल सकती हैं। इसीलिए तो साधु-ब्रह्मचारी लोग बुढ़ापे में ही माया के बस में हो जाते हैं। यह तो महंथ साहेब का दोस नहीं। उसका भाग ही खराब है। यदि यह नहीं होती तो महंथ साहेब सतगुरु के रास्ते से नहीं डिगते। यह ध्रुव सत्त है। दोस तो लक्ष्मी का है। एक ब्रह्मचारी का धरम भ्रष्ट करने का पाप उसके माथे है। अब उसका अपना कौन है? कोई नहीं!

"महंथ साहेब! महंथ साहेब हमको छोड़कर आप कहाँ चले गए? दासी के अपराध को छिमा करना गुरु! जीवन में तुम्हारी कोई सेवा सुखी मन से नहीं कर सकी। मरने के समय भी तुमको सुख नहीं दे सकी प्रभू! छिमा करो!"

जिन्दगी-भर के जमे हुए आँसू आज निकल आना चाहते हैं रोके रुकते नहीं।

'आर्यहित्व कोठारिन जी!"

"दया सतगुरु के! बालदेवजी बैठिए!"

बालदेव जी सब भूल गए। लक्ष्मी को सांत्वना देने के लिए रास्ते में जितनी बातें सोची थी दोहा कवित्त सब भूल गए। उसे मायेजी की याद आ जाती है। मायेजी का यह रूप 'गंगा रे जमुनवाँ की धार मवनवाँ से नीर बही।

बालदेव जी की बड़ी हुई डाढ़स की बाँध इस तरह बाढ़ में नहीं टिक सकेगी। बालदेवजी की भी आँखें छलछला जाती हैं। फल्गू में भी बाढ़ आती है। वह दिल को मजबूत करके कहते हैं "कोठारिनजी सब परमेसर की माया है। हानि-लाभ जीवन-मरन जस-अपजस विधि हाथ। हम तो सूरज उगने के पहले ही डाक्टर साहेब के साथ बाहर निकल गए थे। डाक्टर साहेब को बाँध की चौहद्दी दिखलानी थी। दक्खिन संथालटोली से सुरु करके दुसाधटोली तक घनी-कूची अबबाद-पिछबाद देखते-देखते हत बज गए। वहीं मालूम हुआ कि महंथ साहेब इंतकाल कर गए हैं। डाक्टर साहेब का भी मन उदास हो गया। वे इसपिताल लौट गए। बाकी टोलों को कल देख आज रौतहट हाट में डोम भी दिखा देना है—इसपिताल खुल गया है। आमन माघी को भेजकर हम यहाँ आये हैं।"

लक्ष्मी के आँसू थम चुके थे। बालदेव जी ठीक समय पर आ पए। महंथ साहेब बालदेवजी को बहुत प्यार करने लगे थे। पाँच-सात दिनों की जान-पहचान में ही महंथ साहेब ने बालदेवजी को अच्छी तरह पहचान लिया था। रुपैया को बजाकर देखा जाता है और आदमी को एक ही बोली से पहचाना जाता है। महंथ साहेब कहते थे 'शुद्ध विचार का आदमी है। सरकार बहुत अच्छा है।" इसके पहले महंथ साहेब ने किसी पर इतना विश्वास नहीं किया था। मठ में रोज तरह-तरह के साधु-संन्यासी आते थे। महंथ साहेब रोज यह कहना नहीं भूलते थे—'लक्ष्मी! इन लोगों का कोई विश्वास नहीं। रमता जोगी है। इन लोगों से ज्यादे मिलना-जुलना अच्छा नहीं! नई उमर के साधुओं को पैर की आहट से ही वे पहचान लेते थे। उनके अंतर की दृष्टि बड़ी तेज थी। पिछले साल एक दिन सत्संग में एक नौजवान साधु आकर बैठ गया। रास में आया था बराहछत्तर[1] जा रहा था। उसके नैन बड़े चंचल! सत्संग में बैठकर लक्ष्मी की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। महंथ साहेब 'साहेब बचन' सुना रहे थे। आखर[2] कहते-कहते अचानक रुक गए। बोले—'हो नौगछिया के नौजवान उदासी जी! अरे साहेब बचन पर धेयान दीजै जी! लक्ष्मी के सरीर पर क्या नैन पड़ाए हैं? माटी का सरीर तो मिथ्या है, साहेब बचन सत्त! बेचारा बिना 'बालभोग' किये ही आसन छोड़कर चला गया था। लेकिन बालदेवजी पर उनका बड़ा विश्वास था। असल तेवारी यही लोग हैं लक्ष्मी!

बालदेवजी को देखते ही लक्ष्मी का दुख आधा हो गया। बालदेवजी कहते हैं "बड़े भाग से ऐसे लोगों का दरसन मिलता है। हमको तो दरसन मिला लेकिन सेवा का अवसर नहीं मिला। हमारा अभाग है।"

"बालदेवजी आप तो दास हैं?"

"जी! मेरी माँ भी दास थी। मांस-मछली छूती भी नहीं थी।

"तब तो आप 'बरबराश' हैं। फिर कंठी क्यों नहीं ले लेते?"

बालदेवजी पतले होंठों पर हँसी लाकर कहते हैं, "कोठरिनजी असल चीज है मन। कंठी तो बाहरी चीज है।"

दूसरा साधु होता तो कंठी को बाहरी चीज कहते सुनकर गुस्सा हो जाता। रामदेव मुसाई होते तो तुरत चिमटा लेकर खड़े हो जाते गाली-गलौज करने लगते। लेकिन लक्ष्मी शांत होकर कहती है "कंठी बाहरी चीज नहीं है बालदेवजी। मन है यह। आप विचारकर देखिए। जैसे आपका यह खद्दर कपड़ा है। बस्तर

---

१ बराहक्षेत्र एक तीर्थस्थान। २ पंक्ति।

और मारकीन कपड़ा पहनने वाले मुसलमान भी मुझे ही महात्माजी के पंथ को मानें लेकिन आप उन्हें सुराजी तो नहीं कहिएगा ?"

लछमी की बातों का जवाब देना सहज नहीं। जब-जब लछमी से बातें होती हैं बालदेवजी को नई बातों की जानकारी होती है।

"आप कहती हैं तो ले लेंगे कंठी।

"किससे लीजिएगा ?"

"आप ही दे दीजिए।"

लछमी हँस पड़ती है। घोकाकुल वातावरण में लछमी की मुस्कराहट जान डाल देती है। कितने सूबे हैं बालदेवजी ! मुझे पुरुष बनाना चाहते हैं !

"नहीं बालदेवजी मैं आपको आचारजजी से कंठी दिलाऊँगी। आचारजजी काशीजी में रहते हैं। मैं आपको अपना बीजक देती हूँ। इसका रोज पाठ कीजिए। बीजक पाठ से मन निरमल होता है अंतर की ज्योति चमकती है।"

बीजक ! एक छोटी सी पोथी ! 'अजान' का अक्षर ! बालदेवजी का दिल धक-धक कर रहा है। लछमी कहती है, "सब हाथ का लिखा हुआ है। उस बार काशीजी से एक विद्यार्थीजी आये थे। बड़े जतन से लिख दिया था। मोती जैसे अक्षर हैं।"

बीजक से भी लछमी के देह की सुवास्ती निकलती है। इस सुगन्ध में एक नशा है। इस पोथी के हरेक पन्ने को लछमी की उँगलियों ने परस किया है 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय ढाई आखर प्रेम का पढ़ा सो पंडित होय।

लछमी को देखने से ही मन पवित्र हो जाता है।

नौ

डॉक्टर प्रशान्तकुमार !

जात ?

नाम पूछने के बाद ही लोग यहाँ पूछते हैं—जात ? जीवन में बहुत कम लोगों ने प्रशान्त से उसकी जाति के बारे में पूछा है। लेकिन यहाँ तो हर आदमी जाति पूछता है। प्रशान्त हँसकर कभी कहता है—"जाति ? डाक्टर !"

"डाक्टर ! जाति डाक्टर ! बंगाली है या बिहारी ?

"हिन्दुस्तानी" डाक्टर जवाब दे देता है।

जाति बहुत बड़ी चीज है। छुआ-छूत नहीं मानने वालों की भी जाति होती है। सिर्फ हिन्दू कहने से ही पिंड नहीं छूट सकता। ब्राह्मण हैं? कौन ब्राह्मण! गोत्र क्या है? मूल कौन है? शहर में कोई किसी से जात नहीं पूछता। शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना! लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।

प्रशान्त अपनी जाति छिपाता है। सच्ची बात यह है कि वह अपनी जाति के बारे में कुछ नहीं जानता। यदि उसे अपनी जाति का पता होता तो शायद उसे बताने में झिझक नहीं होती। तब शायद जाति-पाति के भेद-भाव पर से उसका भी पूर्ण विश्वास नहीं हटता। तब शायद ब्राह्मण कहने में वह गर्व अनुभव करता।

हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखाने के दिन भी प्रशान्त को कुछ ऐसी ही समस्याओं का सामना करना पड़ा था। रात भर वह जगा रह गया था।

प्रशान्तकुमार, पिता का नाम अनिलकुमार बनर्जी हिन्दू, ब्राह्मण। सब झूठ! बेचारा डॉ० अनिलकुमार बनर्जी नेपाल की तराई के किसी गाँव में अपने परिवार के साथ सुख की नींद सो रहा होगा। प्रशान्तकुमार नामक उसका कोई पुत्र हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखा रहा है ऐसा वह सपना भी नहीं देख सकता। लेकिन प्रशान्त अपने तथाकथित पिता डॉ अनिल कुमार को जानता है। मैट्रिक परीक्षा के लिए फार्म भरने के दिन डॉ अनिल उसके पिता के रिक्तकोष्ठ में आकर बैठ गए थे।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी सुन रहा है। घर की नौकरानी गाम का माझी और पड़ोस का हलवाई भी उसके जन्म की कहानी जानता था। लोग बरबस उसकी ओर उँगली उठाकर कहने लगते थे—'उस लड़के को देखते हो न? उसे उपाध्याय जी ने काली मंदी में पाया था। बंगालिन डाक्टरनी ने पाल-पालकर बड़ा किया है। फिर लोगों के चेहरों पर जो आश्चर्य की रेखा खिंच जाती थी और आँखों में जो करुणा की हल्की छाया उतर आती थी उसे प्रशान्त ने सैकड़ों बार देखा है। एक आवारिस लाश को भी लोग वैसी ही दृष्टि से देखते हैं।

प्रशान्त अज्ञात कुलशील है। उसकी माँ ने एक मिट्टी की हाँडी में डालकर बाढ़ में उमड़ती हुई कोसी मैया की गोद में उसे सौंप दिया था। नेपाल के प्रसिद्ध उपाध्याय-परिवार ने नेपाल सरकार द्वारा निष्कासित होकर, उन दिनों महरमा अंचल में आश्रम आश्रम की स्थापना की थी। एक दिन उपाध्यायजी बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए रिलीफ की नाव लेकर निकले आज की आधी

के पास एक मिट्टी की हाँडी देखी—नई हाँडी ? । उनकी स्त्री को कौतूहल हुआ 'जरा देखो न उस हाँडी में क्या है ? नाव झाड़ी के पास पहुँची पानी के हिलोर से हाँडी हिली और उससे एक डोड़ा साँप बर्तन निकालकर 'फों-फों' करने लगा । साँप धीरे-धीरे पानी में उतर गया और हाँडी से नवजात शिशु के रोने की आवाज आई, मानो माँ ने बच्ची देना बन्द कर दिया । बस यही उसके जन्म की कथा है जिसे हर आदमी अपने-अपने ढंग से सुनाता है ।

आदर्श आश्रम में एक दुखिया युवती थी—स्नेहमयी । स्नेहमयी को उसके पति डॉ० अनिलकुमार बनर्जी ने त्यागकर एक नेपालिन से शादी कर ली थी । उपाध्यायजी के आदर्श आश्रम में रहकर वह हिरण खरगोश मयूर और बन्दर के बच्चों पर अपना स्नेह बरसाती रहती थी । तरह-तरह के पिंजड़ों को लेकर वह दिन काट लेती थी । उस दिन जब उपाध्याय-दम्पति ने उसकी गोद में सोया हुआ शिशु दिया तो वह आनन्द-विभोर होकर चीख उठी थी—'प्रशान्त ! आमार प्रशान्त ! उस दिन से प्रशान्त स्नेहमयी का एकलौता बेटा हो गया । कुछ दिनों के बाद नेपाल सरकार ने निष्कासन की आज्ञा रद्द करके उपाध्याय परिवार को नेपाल वापस किया—आदर्श आश्रम के पशु-पक्षियों के साथ । स्नेहमयी और प्रशान्त भी उपाध्याय-परिवार के ही सदस्य थे । उपाध्यायजी ने नेपाल की तराई के विराटनगर में आदर्श-विद्यालय की स्थापना की । स्नेहमयी उसी स्कूल में सिलाई-कटाई की मास्टरनी नियुक्त हुई ।

स्नेहमयी के स्नेहांचल में पलते हुए किशोर प्रशान्त पर कर्मठ उपाध्याय परिवार की छाया नहीं पड़ती तो वह सितार के झंकार और रवीन्द्र-संगीत के बसंत-बहार के दायरे से बाहर नहीं जा सकता था । उपाध्यायजी का ज्येष्ठ पुत्र बिहार विद्यापीठ का स्नातक था और मँझला देहरादून के एक प्रसिद्ध अँग्रेजी स्कूल का विद्यार्थी । पुत्री शान्तिनिकेतन में शिक्षा पा रही थी । छुट्टियों में जब वे एक जगह इकट्ठे होते तो शान्तिनिकेतन में शिक्षा पाने वाली बहन चर्खा चलाना सीखती विद्यापीठ के स्नातक आश्रम भजनावली की पंक्तियों पर राजनैतिक सुर चढ़ाते और अँग्रेजी स्कूल का स्टूडेण्ट सेवादल के कवायदों के हिन्दी कमाण्ड के वैज्ञानिक पहलू पर बहस करता—'एटेन्शन में जो फ्रेज है वह सावधान' में नहीं ! एटेन्शन सुनते ही लगता है कि दर्जनों जोड़े बूट चटक उठे ।

ऐसे ही वातावरण में प्रशान्त के व्यक्तित्व का विकास हुआ ।

हिन्दू विश्वविद्यालय से आई० एस-सी पास करने के बाद वह पटना मेडिकल कॉलेज में शामिल हुआ । माँ की इच्छा थी कि वह डाक्टर बने । लेकिन अपने प्रशान्त को वह डाक्टर के रूप में नहीं देख पाई । स्वाधीनता करते-करते

काशी की किसी गली में वह हमेशा के लिए खो गई ! एकबार लाहौर से प्रशान्त के नाम पर एक मनिआर्डर आया था—विजया का आशीर्वाद भेजकर ! भेजने वाली थी—श्रीमती स्नेहमयी चौधरा । एक माँ ने जन्म देते ही कोशी मैया की गोद में सौंप दिया और दूसरी ने जनसमुद्र की लहरों को समर्पित कर दिया !

डाक्टरी पास करने के बाद जब वह हाउस सर्जन का काम कर रहा था १९४२ का देशव्यापी आंदोलन छिड़ा । नेपाल में उपाध्याय-परिवार का बच्चा-बच्चा गिरफ्तार किया जा चुका था । अँग्रेजी सरकार को पूरा पता था कि उपाध्याय-परिवार हिन्दुस्तान के फरार नेताओं की सिर्फ मदद ही नहीं करता है गुप्त आंदोलन को सक्रिय रूप से चला भी रहा है । मँझला पुत्र बिहार की सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्त्ता था वह पहले ही नजरबंद हो गया था । प्रशान्त भी तो उपाध्याय-परिवार का था वह कैसे बच सकता था उसे भी नजरबन्द कर लिया गया । जेल में विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के निकट-सम्पर्क में रहने का मौका मिला । सभी दल के लोग उसे प्यार करते थे ।

१९४६ में जब कांग्रेसीमंत्रिमंडल का गठन हुआ तो एक दिन वह हेल्थ मिनिस्टर के बँगले पर हाजिर हुआ । वह पूर्णिया के किसी गाँव में रह कर मलेरिया और काला आजार के संबंध में रिसर्च करना चाहता है । उसे सरकारी सहायता दी जाय । मिनिस्टर साहब ने कहा था—"लेकिन सरकार तुमको विदेश भेज रही है । स्कालरशिप ?"

"जी मैं विदेश नहीं जाऊँगा" पूर्णिया और सहरसा के नक्शे को फैलाते हुए उसने कहा था । "मैं इसी नक्शे के किसी हिस्से में रहना चाहता हूँ । यह देखिए, यह है सहरसा का यह हिस्सा जहाँ हर साल कोशी का तांडव नृत्य होता है । और यह पूर्णिया का पूर्वी अँचल जहाँ मलेरिया और काला आजार हर साल मृत्यु की बाढ़ ले आते हैं ।"

मिनिस्टर साहब प्रशान्त को अच्छी तरह जानते थे । इस विषय पर प्रशान्त से तर्क में जीतना मुश्किल है । "लेकिन सवाल यह है कि ?"

"सवाल-जवाब कुछ नहीं । मुझे किसी मलेरिया सेण्टर में ही भेज दीजिए !"

"मलेरिया सेण्टर में ? लेकिन तुम एम० बी० बी० एस० हो और मलेरिया-कालाआजार सेण्टरों में एक एम० पी० डाक्टर लिये जाते हैं ।"

"जबतक मैं यह रिसर्च पूरा नहीं कर लेता मैं कुछ भी नहीं हूँ । मेरी डिग्री किस काम की ?"

बहुत मेहनत से नई और पुरानी फाइलों को उलटकर और पूर्णिया डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सेक्रेटरी से लिखा-पढ़ी करके मिनिस्टर साहब ने मि० मार्टिन की दी हुई जमीन के बारे में पता लगाया। बीस-बाईस वर्ष पहले मिनिस्टर साहब पूर्णिया में ही वकालत करते थे। पहले मार्टिन को उन्होंने देखा था।

अंत में केन्द्रीय सरकार से सलाह-परामर्श के बाद एक दिन प्रेस-नोट में यह खबर प्रकाशित हुई कि पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक गाँव में मलेरिया स्टेशन खोला गया है ('दि स्टेशन विल अण्डरटेक मलेरिया ऐण्ड काला आजार इन्वेस्टिगेशन इन ऑल ऐस्पेक्ट्स—प्रिवेन्टिव क्यूरेटिव ऐण्ड इकोलॉजिकल)।

प्रशान्त के इस फैसले को सुनकर मेडिकल कालेज के अधिकारियों अध्यापकों और विद्यार्थियों पर तरह-तरह की प्रतिक्रिया हुई। मणडूर सर्जन डॉ० पटवर्धन ने कहा "बेवकूफ है!"

ई० एन० टी० के प्रधान डाक्टर नायक बोले "पीछे आँखें खुलेंगी।"

मेडिसन के डाक्टर सरकार की राय थी "जानकारी का शौक भी एक खतरनाक रोग है। मालूम?"

लेकिन प्रिंसिपल साहब खुश थे "तुमसे यही उम्मीद थी। मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूँ! जब कभी तुम्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो हमें लिखना।"

प्रशान्त का मन भर आया था।

मद्रास के मेडिकल गजट ने सम्पादकीय लिखकर डॉ० प्रशान्त का अभिनन्दन किया।

और जिस दिन वह पूर्णिया आ रहा था स्टीमर खुलने में सिर्फ पाँच मिनट की देरी थी उसने देखा एक युवती सीढ़ी से धड़ी-धड़ी उतर रही है। कौन है? ममता! हाँ ममता ही थी।

आते ही बोली "आखिर तुम्हारा भी माथा खराब हो गया! तुमने तो कभी बताया नहीं। बलिहारी है तुम्हारी! ओह, प्रशान्त तुम कितने बड़े हो कितने महान्! मैं तो अभी आ रही हूँ बनारस से। आते ही चुन्नी ने तुम्हारी चिट्ठी दी।

रूमाल से फूल और बेलपत्र निकालकर प्रशान्त के सिर से छुलाते हुए ममता ने कहा था "बाबा विश्वनाथजी का प्रसाद है। बाबा विश्वनाथ तुम्हारा मंगल करें। पहुँचते ही पत्र देना।"

दस

डॉक्टर पत्र लिख रहा है—

"ममता

"तुमने कहा था पहुँचते ही पत्र देना । पहुँचने के एक सप्ताह बाद पत्र दे रहा हूँ । तुम्हारे बाबा विश्वनाथ ने मेरे आने से पहले ही अपने एक दूत को भेज दिया है । प्याक सचमुच देवदूत है । इसलिए तुमको चिंता करने की आवश्यकता नहीं । सात ही दिनों में यह दो बार रूठ चुका है—'कहने को तो डाक्टर हैं, मगर समय पर नहीं खाने-पीने से देह पर कितना खराब असर होता है नहीं जानते ?" इसी से प्याक का पूरा परिचय तुम्हें मिल गया होगा ।

'यह एक नई दुनिया है । इसे पत्र देहात कह सकती हो । डाँव का चौकी हर सप्ताह में एक बार हाजिरी देने जाने पर आता है वही मेरी डाक लाएगा और ले जाएगा ।

'काम शुरू कर दिया है । सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है । अभी जलरक्त सर्वे कर रहा हूँ खून लेकर परीक्षा कर रहा हूँ । प्याक कहता है यहाँ कौओं को भी मलेरिया होता है ।

" यहाँ नदियों और तालाबों में कमल के पत्ते भरे रहते हैं । कहते हैं, फूलों के मौसम में छोटी-छोटी बड़हियाँ भी किस्म-किस्म के कमल और कमलिनी से भर जाती हैं । लेकिन यहाँ के लोगों को तुम लोटस ईटर्स नहीं कह सकती हो ! पत्तों की परीक्षा कर रहा हूँ । यहाँ की घण्टी बारहों महीने भीगी रहती है शायद !

"पाँव के लोग बड़े सीधे दीखते हैं सीधे का अर्थ यदि अपढ़, अज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं ये । यहाँ तक सांसारिक बुद्धि का सवाल है, ये हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे । और तारीफ यह है कि तुम ठगी जाकर भी उनकी सरलता पर मुग्ध होने के लिए मजबूर हो जाओगी । यह मेरा सिर्फ सात दिन का अनुभव है । संभव है, पीछे चलकर मेरी धारणा बदल साबित हो । मिथिला और बंगाल के बीच का यह हिस्सा वास्तव में मनोहर है । औरतें साधारणतः सुन्दर होती हैं, उनके स्वास्थ्य भी बुरे नहीं ।"

"डाक्टर साहब !"

"कौन ?"

"विश्वनाथप्रसाद ।

"आइए ! कहिए क्या है ?

"डाक्टर साहब जरा एक बार मेरे यहाँ चलिए। मेरी लड़की बेहोश हो गई है।"

"बेहोश ! क्या उम्र है ? इससे पहले भी कभी बेहोश हुई थी ?"

"जी ! दो-तीन बार और ऐसा ही हुआ था। उम्र ? यही सोलह-सत्रह साल पर छीजिए। जरा जल्दी ।"

'चलिए।"

बंद कमरे में एक चारपाई पर, नीली रजाई में लिपटी हुई युवती का गोरा मुखड़ा बाहर है। बाल खुले और बिखरे हुए हैं। आँखें बंद हैं। कोठरी में लालटेन की मद्धिम रोशनी हो रही है—रोशनी कम और धुआँ ज्यादा।

डाक्टर खिड़कियाँ खोलने के लिए कहता है और जेब से टार्च निकालकर युवती के चेहरे पर रोशनी देता है। चेहरा ठीक है। साँस ? ठीक है। नाड़ी भी दुरुस्त है।

डाक्टर आँखों की पलकों को उलटता है, मानो कमल की पंखड़ियाँ हों—

—ब्लाइंड ! पेट ? कब्ज तो नहीं ?

कोई जवाब नहीं देता है। घूँघट काढ़े खड़ी औरतों के घूँघट आपस में मिलते हैं। एक अधेड़ स्त्री आगे बढ़ आती है। युवती की माँ है। 'जी कब्जियत नहीं है।

घर की नौकरानी पर्दा नहीं करती है। कहती है, 'डाक्टर बाबू, डर कपाकर देखिए न !"

डर, अर्थात स्टेथस्कोप। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि इससे डाक्टर रोगी के अन्दर की सारी बातों को जान लेता है—क्या खाया है, पेट में पचा है या नहीं सब।

'सूई दीजिएगा ?

"हूँ !"

डाक्टर सिरिंज ठीक करता है। युवती आँखें खोल देती है—

"सूई ? नहीं सूई नहीं। माँ ! अरे बाप !"

अच्छा सूई नहीं देंगे। कैसी तबियत है ? अच्छी बात। हूँ। क्यों बेहोश हो गई ? हाँ बेहोशी कैसे हुई ? डर क्या था। हूँ ! काहे का डर क्या था ? तब ? इसके बाद ? देह घूमने लगा। ठीक है। अब कैसी है ? डर तो नहीं लगता ? क्या भेज दूँगा अब डर नहीं लगे।

"क्या ? दवा नहीं। माँ मैं दवा नहीं पिऊँगी।"

'वाह, सुई भी नहीं और दवा भी नहीं ? मीठी दवा ?"

सभी हँस पड़ते हैं। मुनरी के मुरझाये हुए ज़रा होंठों पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। आँखों की पलकें ज़रा उठकर मानो डाक्टर को डाँट देती हैं—"हट ! दवा भी कहीं मीठी होती है !"

बाहर आकर डॉक्टर तहसीलदार से कहता है, "घबराने की बात नहीं दवा भेज देता हूँ। इसके पहले कितनी देर तक बेहोश रही थी ?"

"करीब एक घण्टा। ओतवौवी से एक बार जन्तर बनवा के दिया। झाड़ फूँक भी करवा कर देखा। डॉक्टर साहब बस यही मेरा बेटा यही मेरी बेटी सब कुछ यही है।"

"ठीक हो जावेगी।"

सेण्टर में आकर डॉक्टर सोचता है क्या दिया जाय ! मीठी दवा ! कामिनेटिव मिक्सचर या डोमाइड ! 'अजी तुम्हारा क्या नाम है ?"

'मेरा नाम ? जी नाम रामजीत।"

'तहसीलदार साहब के यहाँ कितने दिनों से नौकरी करते हो ?"

"बहुत दिन से। सड़कैया से। एक ठो बीड़ी है तो दीजिए डाक्टर बाबू।"

"ब्याह रामजीत को बीड़ी पिलाओ।"

ब्याह बीड़ी दियासलाई दे जाता है। बीड़ी सुलगाकर रामजीत अपने आप कहता है, "डाक्टर बाबू ! तहसीलदार को दिन-दुनियाँ में बस यही एक बेटी है। कितना मानत मनौती के बाद कमला मैया ने निहोरा भी तो बेटी ही हुई। मगर !"

रामजीत बीड़ी की राख झाड़कर चुप हो जाता है। डाक्टर ने अनुभव किया है रामजीत ने 'मगर' पर आकर पूर्ण विराम दे दिया है।

"मगर क्या ?

'यही देखिए न ! तीन जगह बातचीत चली मगर पहली जगह से तो पान देने की बात भी पक्की हो गई थी। ठीक तिलक-पान के दिन लड़के की माँ मर गई। दूसरी जगह बातचीत ठीक हुई तो उसके घर में आग लग गई। तीसरे लड़के को 'मैया' हो गया इन्तकाल हो गया। अब कोई लड़का वाला तैयार ही नहीं होता है। हजार, दो हजार, पाँच हजार रुपैया भी कबूलते हैं, मगर । आखिर में एक 'पछरिया कैथ' को बरजमैया रखने के लिए लाये बस उसी दिन से कमली को मिरगी आने लगी। लोग तो कहते हैं कि कमला मैया नहीं चाहती हैं कि कमली की शादी हो। कमला मैया भी कुमारी ही थीं न ! अब

आप सभी हैं। किसी तरह कमली दैया को आराम कर दीजिए डागदर बाबू। जो बख्शीश मौपिएगा तहसीलदार दे देंगे।"

"देखो रतजीत तीन खुराक दवा है। मीठी दवा है। तुम्हारी कमली दैया आराम हो जायेंगी। कल सुबह फिर एक बार खबर देना। समझे।"

"तीन खोराक! खाएगी क्या?"

"अभी? अभी रोटी दूध।"

"रतजीत!" एक आदमी दौड़ा हुआ आता है।

'कौन रामदेव क्या है?"

'कमली दैया फिर बेहोश हो गई। तहसीलदार साहेब कहिन हैं कि डागदर बाबू फिर एक बार जरा तकलीफ करें।"

डॉक्टर घड़ी देखता है। भी बजकर दस मिनट। कुछ ही देर में समाचार होंगे। डॉक्टर कुछ सोचकर कहता है 'रतजीत! वह बक्सा उठाओ! के चलो।

"बैठार का खबर?

"हाँ तुम्हारी कमली दैया का इलाज बैठार से ही होगा।"

कमला फिर पहले की तरह बेहोश पड़ी हुई है। उसकी आँखें बन्द हैं। बाल बिखरे हुए हैं। डॉक्टर को रोग का निदान मिल गया है। वह अपने बैग से बीसी सिरिंज वगैरह निकालता है।

"सूई? सूई नहीं।" कमला फिर होश में आती है।

"बगैर सूई के आपका रोग आराम नहीं होगा।" डॉक्टर सिरिंज ठीक करता है।

"दया दीजिए डॉक्टर साहब! मैं सूई नहीं खूँगी।"

"फिर डर लगा था!"

"हाँ।"

'रतजीत दवा की बीसी कहाँ है? लाओ बक्सा यहाँ लाकर रखो। हाँ पी लीजिए। ठीक है। कैसी है दवा? मीठी है न?"

डॉक्टर पोर्टेबल रेडियो को खोलकर मीटर ठीक करता है—"यह ऑल इण्डिया रेडियो है। रात के सवा नौ बजे हैं। अब आप हिन्दी में समाचार सुनिए।"

"डर लगता है। माँ!"

"देखिए, डर की कोई बात नहीं। सुनिए।"

"मुझे उठा लो माँ!"

'उठिए मत । लेटी रहिए ।"

" अब आप सविता देवी से एक मैथिली लोकगीत सुनिए ।"

माइले हम ना बियाहेब अपन गौरा के
माँ बुढ़ना होइत जमायब माई !

"जो माँ !" कमला खिलखिलाकर हँस पड़ती है, "बाबी का गीत हो रहा है ।"

हम ना बियाहेब अपना गौरा के

कोठरी और आँगन में घूँघट काढ़े औरतों की भीड़ लग जाती है । कमला पर डोमाइन का असर हो रहा है, उसकी आँखों में नींद झाँक रही है ।

डॉक्टर लौटकर खत को पूरा करने बैठ जाता है । सुबह सात बजे से ही रोगियों की भीड़ लग जाती है । मगमू चौकीदार कल हाजिरी देने आयेगा । पाँच बजे भोर को ही आकर वह पुकारेगा । डॉक्टर लिखता है—

"पत्र अधूरा छोड़कर एक केस देखने गया था । केस अजीब है । केस-हिस्ट्री और भी दिलचस्प है । तुम्हारी दीक्षा रहती तो आज खुशी से नाचने लगती हिस्टीरिया ओबिया काम-विकृति और हठ-प्रवृत्ति जैसे शब्दों की लड़ी लगा देती । दीक्षा से भेंट हो तो कहना—मैंने अपने पोटेबल रेडियो से उसके दिमाग को झकझोरकर दूसरी ओर करने की चेष्टा की है ।

ग्यारह

नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरवरिया से
नहीं तोरा पास म तीर जी !

एक सखी ने पूछा कि हे सखी तुम्हारे पास में न तीर है न तलवार ।

नहीं तोरा आहे प्यारी तेग तरवरिया न
कौनहि चीजवा से मारलू बटोहिया के
परली लोटाबेला बेपीर जी ई ई ई ।

यह सुनकर जो औरत तरांगिन पर मोहित थी बोली—

सासू मोरा मरे हो मरे मोरा बहिनी से
मरे ससुर जेठ मोर जी !
मरे हजार सब कुछ पलिबरवा से

फली पहली परेम के डोर की !

इतना कहकर वह सदाशिव के पास आई और पानी पिलाकर प्रेम की बातें करने लगी।

'आजु की रतिया हो प्यारे, यहीं बितावो जी !

तन्त्रिमाटोली में सुरंगा सदाशिव की कथा हो रही है। मेंहदूदास के घूर के पास लोग जमा हैं। पुर्णिया टीसन से एक मेहमान आया है रेलवे में काम करता है। तन्त्रिमाटोली के लोग कहते हैं—खलासीजी ! खलासीजी सरकारी आदमी हैं। खलासीजी यदि साल पत्ता दिखला दें तो डाकगाड़ी भी रुक जाय। रुकेगी नहीं ? साल पत्ता देखते ही रेलगाड़ी रुक जाती है। साल ओढ़ना ओढ़कर गाड़ी पर चढ़ने जाओ तो ! गाड़ी रुक जायगी और ओढ़ना अपने हो जायगा। खलासीजी बहुत गुनी आदमी हैं। पक्का ओझा हैं। चक्कर पूजते हैं। भूत-प्रेत को पेड़ में कीली ठोककर बस में करते हैं। बाँझ स्त्रियों को पुख्ताक[1] कर देते हैं। कुमर विजयमान लोरिक और सुरंगा सदाशिव का गीत जानते हैं। पढ़ा कितना तेज है ! उस बार गुरुजी हुलमाल[2] में खलासीजी ने लिख दिया था—"हैंसनवाड़ी के जमींदार के लड़के ने रेल का लैन उखाड़ा है। बस फाँसी हो गई ! हैंकोर्ट और लन्दन तक फाँसी बहाल रही। लेकिन मेंहदूदास को कौन समझाये ? बेचारे खलासीजी एक साल से दौड़ रहे हैं मेंहदूदास की बेवा बेटी फुलिया से चुमौना[3] की बातचीत पक्की करने के लिए। हर बार खलासीजी छोरी में मोरंगिया (मैपाकी) बाँधा लाते हैं तन्त्रिमाटोली के बच्चों को पिलाते हैं, सुरंगा सदाशिव बाते हैं गाँव के बीमार लोगों को झाड़-फूँक देते हैं। उस बार उचितदास की डेरावाली को पुख्ताक कर दिया मरने के चार दिन पहले बूढ़ा उचितदास सन्यास का मुँह देख गया। लेकिन मेंहदूदास को कौन समझाये ? फिर खलासीजी लेन-देन की बात भी करते हैं। एक कौड़ी नकद न देंगे जाति-बिरादरी को एक साल भोज कबूलते हैं। और क्या चाहिए ? सरकारी आदमी जमाई होगा। कभी तीरथ करने के लिए जायेंगे तो रेल में टिकस भी नहीं लगेगा।

रमबूदास की स्त्री तन्त्रिमाटोली की औरतों की सरदारिन है। हाटबाजार जाने के समय मालिकों के खेतों में धान रोपने और काटने के समय और गाँव में शादी-ब्याह के समय टोले-भर की औरतें उसकी सरदारी में रहती हैं। रामबूदास और मालिकटोले के सभी बाबू-बबुआन से मुँहामुँही बात करती है किसकी

---

१ दोहदा। २ आन्दोलन। ३ सगाई।

का अभाव हँसकर देती है और समय पड़ने पर हाथ चमका-चमकाकर झगड़ा भी करती है। एक बार तो सिपजी की भी सीधी सटका दिया था—'मुँह बुझा हो क्या है चाट लगी हुई है। सिर के बाल खारा हो गए हैं, मन का रंग नहीं उतरा है। हमारा मुँह मत खुलवाइए सिपजी। उससे सभी डरते हैं। न जाने कब किसका भेद खोल दे। सभी उसकी खुशामद करते हैं टोले-भर की जवान लड़कियाँ उसकी मुट्ठी में रहती हैं। उससे कोई बाहर नहीं। खलासी जी इस बार लालबाग मेला से उसके लिए असली बिलट का कंघना ले आये हैं। चाँदी की तरह चमक है।" "मौसी किसी तरह फुलिया से चुमौना ठीक कर दो।"

अरे सूते से देबौ हे प्यारे खाली पलंगिया से
आये से पूजा बिलसी पान की !

खलासीजी आज दिल खोलकर गा रहे हैं। उन्हें आज ऐसा लग रहा है कि वे खुद सदाशिव हैं। लेकिन न तो उसकी फुलिया उसे रहने के लिए विनती करती है और न मेहपुवाल चुमौना की बात मंजूर करता है। "अरे सूते से देबौ हो प्यारे खाली पलंगिया से !"

फुलिया क्या करे ? माँ-बाप के रहते वह क्या बोल सकती है ! अन्दर-ही-अन्दर मन जलकर खाक हो रहा है, लेकिन मुँह नहीं खोल सकती। बोल क्या कहेंगे ! रामदास की स्त्री फुलिया के जलते हुए दिल की बात जानती है। उस दिन फुलिया कह रही थी—"मामी काली किरिया किसी से कहना मत। खलासीजी इतने दिनों से दौड़ रहे हैं। बाबा कोई बात साफ-साफ नहीं कहते हैं। आखिर वह बेचारा कब तक दौड़ेगा ? यहाँ नहीं तो कहीं और दूँगा। दुनिया में कहीं और लछिमा की बेटी नहीं है क्या ? जब एक दिन दुख हो जायेगा तो सहदेव मिसर देह पर माछी भी नहीं बैठने देगा। तब करो खुशामद लकलट्टी चमाइन की और बिलाय की माँ का ! मुसम्मर चमाइन और ऐंड़ी से पेट को आँटा की तरह गथवाओ। उस बार पोलसीजी का बेटा लामलरैन मै क्या दिया ? अन्त में लकलट्टी को बामिन बकरी देकर पीछा छुड़ाया "

याद जो आवे हे प्यारी सोहरी सुरतिया से
बाले करेजवा में तीर की !

खलासीजी का तीर खाया हुआ दिल तड़प रहा है। फुलिया क्या करे ? लेकिन रामदास की स्त्री का मुँह कौन बन्द कर सकता है ? "अरे फुलिया की माय ! तुम लोगों को न तो लाज है और न शरम। कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारी वाली साड़ी चमकाओगी ? आखिर एक हद होती है किसी बात की ! मानती हूँ कि जवान बेटा बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना मत

छूटो कि देह का खून भी सूख जाय।

"अरे हाँ-हाँ बेटा-बेटी केकरा भी डारो करे मंगरो! चालनी कहे सूई से कि तेरी पेंदी में छेद! हाथ में कंघना तो चमका रही हो खलासी को एक पुड़िया सिन्दूर नहीं जुटता है?" फुलिया की माँ ने जब से रमजूदास की स्त्री के हाथ कंघना देखा है उसका कलेजा जल रहा है। मेंहदूदास पर गुस्सा करने से कोई फायदा नहीं। खलासी की बुद्धि ही मारी गई है। रमजू की स्त्री को कुटनी बहाल किया है, कंघना दिया है। रमजू की स्त्री काली माई है जो लोग उसकी बात को मान लेंगे!

"मुँह सँभालकर बात कर मँगड़ी! बात बिगड़ जायेगी। खलासी हमारा बहन-बेटा है। बहन-बेटा समझकर गाली देती है? पाली हमारे देह में नहीं लगेगी। तेरे देह में तो लगी हुई है। अपने सास भतीजा देवरा के साथ गाली तू और पाली देती है हमको? सरम नहीं आती है तुझको! बेसरमी बलजरी! भरी पंचायत में जो पीठ पर झाड़ू की मार लगी थी सो भूल गई? गुजरटोली के कलवा के साथ रात-भर मैस पर रसलीला करती थी सो कौन नहीं जानता है? तू बात करेगी हमसे?"

"ऐ, सिवना की रखेली! सिवना के बथान का बर्मी आम का स्वाद भूल गई। बरबत्ता में रात-रात-भर छुपाचोरी मैं ही खेलती थी रे? कुरमौला बच्चा जब हुआ था तो कुरमौला सिवना से मुँह-देखौनी में साड़ी मिली थी सो कौन नहीं जानता?"

" एतना बात सुनते ही बथानिन फिर मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ा ।"

मेंहदूदास के घूर के पास होने वाली पुरैना सदानिन्द की कथा में औरतों के झगड़े से कोई बाधा नहीं पहुँचती है। औरतों के झगड़े पर यदि मर्द लोग ऑख-कान देने लगें तो हुआ! औरतों के झगड़े का क्या? अभी झगड़ा किया एक-दूसरे को गालियाँ सुनाईं, हाथ चमका-चमकाकर, गला फाड़-फाड़कर एक-दूसरे के गड़े हुए मुर्दे उखाड़े गए, जीभ की धार से बेटा-बेटी की बर्दन काटी गई, काली माई को काला पाठा कबूला गया हाथ और मुँह को कोढ़-कुष्ठ से गलाने की प्रार्थना की गई और एक-दो घंटे के बाद ही सफाई। मेल-मिलाप हो गया। एक-दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर गुड़गुड़ाने लगी। साग माँगकर ले गई और बदले में शकरकन्द भेज दिया—"कल साम को मालिक के खेत से अँधेरे में उखाड़ लाया है खड़क से। मालिक देखते तो पीठ की चमड़ी खींच लेते।

पहले झगड़ा का तिरपनेस तो ही औरतों से होता है। झगड़े के सिलसिले

में एक-एक कर पास-पड़ोस की औरतों के प्रवेश आते-जाते हैं और झगड़ने वालियों की संख्या बढ़ती जाती है। झगड़े से उनके कामकाज में भी कोई बाधा नहीं पहुँचती है। काम के साथ-साथ झगड़ा भी चल रहा है। जब सारे गाँव की औरतें झगड़ने लगती हैं, तब कोई किसी की बात नहीं सुनती सब अपना-अपना दुखड़ा रोने लगती हैं। लेकिन फुलिया आज झगड़े में हिस्सा नहीं ले रही है। वह टट्टी की आड़ में खड़ी होकर सुरंगा सवाशिव की कथा सुन रही है। 'जलासी-जी के गले में जादू है! ओझा गुनी आदमी है! कथा और गीत में फुलिया यह भी भूल जाती है कि सहदेव मिसर शाम से ही कोठी के बगीचे में उसके इन्तजार में मच्छड़ कटवा रहा है। 'जलासी के गले में जादू है!

"भाभी!"

"क्या है रे? बोल ना! सहदेव मिसरवा के पास जावेगी क्या?

"नहीं भाभी एक बात कहने आई हूँ। काली किरिया किसी से कहना मत। *'जलासी जी तो तुम्हारे मुहाल में सोते हैं न? काली किरिया!*"

सुरंगा सवाशिव की कथा समाप्त हो गई है। झगड़ा लंकाकांड तक पहुँचकर शेष हो गया है। सहदेव मिसर मच्छड़ों से कब तक देह का खून चुसवाते। साला जलतिया! साली हरामजादी! 'अच्छा कल देखूँगा।

गाँव में सन्नाटा छाया हुआ है और रमजू की स्त्री के मुहाल में सुरंगा कह रही है सवाशिव से "अभी नहीं जब बाबा चुमौना के लिए राजी नहीं होवे तब मैं तुम्हारे साथ भाग चलूँगी।"

"उनको राजी कैसे किया जाय? कौन एक मिसर है सुना है।" सवाशिव बेचारा कहता है।

"सब झूठी बात है। तुम बालदेवजी से कहो।

"कौन बालदेव! पुरैनियाँ आलरन वाला?"

"हाँ। सभी उनकी बात मानते हैं? बाबू-बबुआन भी उनके बाहर नहीं। तुम घबड़ी मत करना जो हिम कहना।"

"लेकिन वह तो हम पर बड़ा नाराज है। देस पुरोहित[1] के किरिस में नाम दे दिया है।"

" माँ के लिए नाक की बुलाकी ले आना असली पीतल की बुलाकी।

---

१ देशद्रोही।

बारह

मठ पर आचारजगुरु आने वाले हैं नये महंथ को चादर-टीका देने के लिए। मुजफ्फरपुर जिला का एक मुखी आया है—कर्पूरीचरण। आचारजगुरु मुजफ्फरपुर जिले के पूरबी मठ पर भंडारा में आये हैं। कर्पूरीचरण खबर लेकर आया है—आचारजगुरु आ रहे हैं। मठ के सभी सेवक सती आस-पास के बाबू बबुआन लोगों को पहले ही खबर दे दी जाए।

रामदास को महंथी की टीका मिलेगी। महंथ सेवादास का एकमात्र चेला यही है। रामदास सोचता है यदि खंजरी बजाना नहीं जानता तो आज तक बेलाही के जमींदार के भैंस की पूँछ हाथ से नहीं छूटती। महंथ साहब उसकी खंजरी सुनकर मोहित हो गए और वह रात को ही महंथ साहब के साथ भागकर मेरीगंज मठ पर आ गया। पंद्रह साल पहले की बात! पंद्रह साल बाद रामदास का भाग्य खिला है। 'जै हो सतगुरु साहेब की!

नियमानुसार सभी पंचों की उपस्थिति में नया महंथ एक एकरारनामा लिख देगा—हमेशा 'कंठीटाबंद' रहकर सतगुरु के स्वरूप की रक्षा करेंगे। किसी तरह का मादक द्रव्य नहीं सेवन करेंगे। बाकी रखैलिन नहीं रखेंगे आदि-आदि। इसके बाद आचारजगुरु एक मुरुतहाल[1] पर दस्तखत करके नये महंथ को देंगे। फिर चादर-टीका की विधि। दही की टीका और सिर पर दूब धान। बस नये महंथ साहेब उस दिन से नौ सौ बीघे की पलटी[2] के एकमात्र मालिक हो जाएँगे।

कर्पूरीचरण तो आचारजजी का संदेशा लेकर आया था किन्तु मेरीगंज मठ पर एक ही रात रहने के बाद उस पर महंथी का मोह सवार हो गया। नौ सौ बीघे की काश्तकारी। कलमी आम का बाग। इस बीघे में सिर्फ केला ही लगा हुआ है। एक-एक घौर में हजार केले फले हैं। हजरिया केला। दो कोड़ी गाय चार गुजराती भैंस और सबसे कीमती सम्पत्ति—अमूल्य धन—लछमी दासिन। लछमी दासिन कहती है महंथ साहेब को बस यही एक चेला है—रामदास! तो कानूनन रामदास ही होने वाला अधिकारी महंथ है। रामदास! काठ का उल्लू रामदास! सतगुरु हो! यह अँधेर है। रामदास महंथ नहीं हो सकता। ड्राइवर की तरह तो भूपत है, वह महंथ होगा? नहीं ऐसा नहीं हो सकता। और यह लछमी? आपमतलबी औरत!

---

१ महंथी का दस्तावेज। २ छोटी जमींदारी।

लक्ष्मी ने सरसिंघदास की आँखों में न जाने क्या देखा है कि उसकी आशा से भी वह अचकर चलती है रात में किवाड़ मजबूती से बंद करके सोती है। किवाड़ की छिटकिनी लगाने के बाद एक आलम्ब किवाड़ से सटा देती है। सरसिंघदास को शायद बहुमूत्र की बीमारी है रातभर में दस-ग्यारह बार पेशाब करने के लिए उठता है। हर बार धूनी के पास सोया हुआ रामदास उसे टोकता है—'कौन ?" सरसिंघदास किसी बार जवाब नहीं देता। कल रात एक बार गुस्से में जवाब दिया— महंथ होने के पहले ही अंधे हो गए क्या ? देखते नहीं हो ? जैसा गुरु वैसा चेला ! रामदास भुनभुनाकर रह गया था। सुबह को सत्संग के समय ही लक्ष्मी बरस पड़ी थी—'क्यों आप वैसी भाखा बोले थे ? महंथ होने के पहले ही अंधे हो गए ! जैसा गुरु । गुरु-निंदा सुनहि जो काना । मैं गुरु-निंदा नहीं सुन सकती नहीं सह सकती। रामदास को आप क्या समझते हैं ? वह इस मठ का अधिकारी महंथ है। आपके जैसे एक कौड़ी बिस्टा[1] साधुओं को वह राज परसाद देता। बात करना भी नहीं आता है ? आने दीजिए आचारजजी को।

रामदास भी सुना देता है—'रात में हम छोड़ दिया लेकिन अब बोलोगे तो सीधे पच्छिम का रास्ता दिखा देंगे। हाँ समझे रखो !

मक्कारी तो लक्ष्मी का खैलाड़ है। कल से ही उसने बदमाशी शुरू की है। दाल की कटोरी में सिर्फ पानी रहता है। आलू की भुजिया पूछता नहीं देता। घी माँगने पर कहता है—"दाल घी से बर्बाद है। रोगी होने के लिए हाथ मल दिया जाता है। दूध में पानी मिलाकर देता है। बाबाजी को पहले रोटी चुपड़ देता था कल से सिर्फ चुड़ा काढ़कर रख देता है।

बिस्टा साधू ? इसकी यह हिम्मत ! उसे बिस्टा साधू कहती है ? अच्छा ! अच्छा !

लक्ष्मी पहले से ही ना उसे नहीं जानती। कैसे जान सकती है ? वह कभी पहले यहाँ आया नहीं। पुपड़ी मठ में भी तो कभी कोई मरती यहाँ नहीं आया। मालमलिया कहाँगिन भी तो नहीं आई है यहाँ। सम्भव है उस बार अपनी बेटी रुपिया का लालने के लिए यहाँ भी पहुँची हो। ठीक है। रुपिया। रुपिया को पहली बार जब देखा था तो उसके मन की ऐसी ही हालत हुई थी। रामदास के पास हमेशा पर्स रहता था। लेकिन रुपिया असहज थी। एक ही बुखार में आप से आ गई थी। लक्ष्मी तो पुरानी है खेली खिलाई है। मगर गुरु

---

१ आवारा।

थाई हुई है। यदि वह रविया को लेकर नौटंकी कम्पनी में नहीं शामिल होता तो रविया हाथ से नहीं निकलती। नौटंकी कम्पनी के मालिक की ही बात रहती तो वह सह के सरंगा या हारमोनियम और मयाड़ा वाले भी रविया को कभी फर्शत नहीं देते थे। कभी ताल का रिहलसल करना है तो कभी नाच सिखाना है। रविया सासी भी कुली ही थी। वह भी तो बरफ गई थी।

सरसिंघदास अपने सिर के घाव पर हाथ फेरकर मफलर से ढक लेता है—साले मयाड़ची ने ठीक सामने कपाल पर ही डंडा चलाया था।

मठ लौटने पर महंथ साहेब ने खड़ाऊँ से मरम्मत की थी। लेकिन सात दिन से उपवास किये हुए शरीर में इतना दम कहाँ था जो मानते! सिर का घाव ताजा ही था। महंथ साहेब की खड़ाऊँ चुरु की खड़ाऊँ थी। महंथ साहेब के पैर पर वह लेटा रहा था। वे बहुत दयालु पुरुष थे। सरसिंघदास उनका एकलौता चेला था। चुरु में छिमा कर दिया। महंथ साहेब के शरीर त्यागने के बाद पुपड़ी मठ की महंथी उसे ही मिलती लेकिन रामबरन कोयरी ने उसकी मती फेर दी थी। सरसिंघदास नेपाली गाँजा में बड़ा नफा होता है। दस रुपये का लाओ और चार सौ बनाओ। नेपाल में चार आने सेर गाँजा मिलता है। बरहछत्तर मेला के समय चलो!"

महंथ साहेब ने जब शरीर त्याग किया तो वह जेल में था। महंथ साहेब ने मरने के समय जीवनदास को चेला बनाकर 'भीख' सिख दिया। नहीं तो वह भी एक मठ का महंथ होता। तब लछमी उसे बिलटा साधू नहीं कह सकती। तब तो पैर पखारकर, पैर के धोवन चरणोदक पीती। लेकिन वह लछमी को चरणोदक पिलाकर छोड़ेगा।

"रामदास!

"क्या है? रामदास मत बोलिए, अधिकारीजी कहिए।"

'कोठारिन से कहा कि सरसिंघदास आज आ रहे हैं।

"आ रहे हैं तो आइए।

'तुम कोठारिन से कहा।"

"तुम-ताम मत करो। कोठारिनजी से क्या कहेंगे राह-खर्च कल ही कोठारिनजी ने दे दिया है।"

रामदास झोली से एक पाँच रुपये का नोट निकालकर सरसिंघदास के आगे फेंक देता है।

"हम पूछना चाहते हैं कि कोठारिन ने हमारा अपमान काहे किया? हमको बिलटा काहे बोली? हमारे अवतार पुरु को काहे गाली दिया?"

"अचारज गुरु को कब गाली दिया है ?"

"दिया है। बोली नहीं थी पूजा बिदाई लेने के समय अचारज गुरु हैं बेर बखत पड़ने पर सीधा जवाब मिलता है। आज अचारज गुरु हुए हैं, कल तक तो भुतमाई थे। यह गाली नहीं तो और क्या है ?"

"संसार में सत्त का भी लेस जरा रहने दीजिए साधू महाराज" लक्ष्मी अन्दर से निकलकर कहती है, 'साधू का काम झूठ बोलना नहीं है। छि: छि: !

"छि: छि: क्या ? हमको बिलटा नहीं कहा है मा मा बाप तुमने ?"

"रामदास !" लक्ष्मी गरज उठती है 'गरदनियाँ देकर निकाल दो इसको। यह साधू नहीं रक्षस है। इसके सिर पर माया सवार है। इससे पूछो आज सबेरे जब मैं स्नान कर रही थी तो बाँस की टट्टी में छेद करके यह क्या देखता था ? शैतान !

लक्ष्मी फुफकारती हुई अन्दर चली जाती है।

रामदास उठकर कर्पिंगदास के गले में हाथ लगाकर धक्का देता है। कर्पिंगदास सीढ़ी पर गिर पड़ता है। नाक से खून निकल रहा है।

"जयहिन्द रामदासजी ! क्या है ? क्या हुआ ? वासुदेवजी कुछ देखकर घबरा जाते हैं।

"कुछ नहीं पछरिया साधू है। काया में कहीं साधू सुभाव नहीं। कोठारिन-जी से बतदुट्टी[1] करता था।"

"तो मारपीट क्यों हुई ? शांती से सब काम करना चाहिए। हिंसाबाद नहीं करना चाहिए।"

"रामदास ! वासुदेवजी को अन्दर मदद दो !"

कर्पिंगदास नाक का खून पोंछते हुए देखता है—वासुदेव नाम का यह खम्बड़धारी आदमी अन्दर जा रहा है—सीधे लक्ष्मी की कोठरी में ! 'जय हिन्द वासुदेवजी !

'जायद यह खम्बड़धारी और लक्ष्मी एक ही आसनी पर बैठे हैं। एकदम आसपास—देह से देह सटाकर ! 'अच्छा !

---

१ बाद-विवाद।

तेरह

गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

सिर्फ जोतखीजी नहीं गाँव के सभी मातबर लोग मन-ही-मन सोच-विचार कर देख रहे हैं—गाँव के ग्रह अच्छे नहीं !

तहसीलदार साहब को स्टेट के सर्किल मैनेजर ने बुलाकर एकान्त में कहा है "एक साल का भी खजाना जिन लोगों के पास बकाया है उन पर चुपचाप नालिश कर दो। बकाया-बकाया' से नोटिस ५८ भी तामील करवा लो। कुर्की और इश्तहार निकास करवाकर खरबमीन पर चपरासी को ले जाने की जरूरत नहीं। कचहरी में ही बैठकर गाँव के चमार से अँगूठा का टीप लेकर बोझ बजाने की रसीद बनवा लो। गाँव के एक-दो बवाहों को भी ठीक करके रखो। स्टेट से उनको भत्ता मिलेगा। इन कांग्रेसियों का कोई ठीक नहीं।"

सिपजी यादव टोला के लड़कों का सीना तानकर चलना बरदाश्त नहीं कर सकते। जोतखीजी ठीक कहते थे—बार-बार लाठी-भाला दिखलाते हैं। होसला बढ़ गया है। अब तो राह चलते परनाम पाती भी नहीं करते हैं यादव लोग ! कलिया कभी-कभी चिढ़ाने के लिए नमस्कार करता है। देह में आग लग जाती है सुनकर। लेकिन सिहजी क्या करें ? राजपूतटोली के नौजवान लोग भी ग्वालों के दल में ही धीरे-धीरे मिल रहे हैं। अखाड़े में ग्वालों के साथ कुश्ती लड़ते हैं। रोज शाम को कीर्तन में भी जाने लगे हैं। हरदीपी ठीक कहता था—यदि यही हालत रही तो पाँच साल के बाद ग्वाले बेटी माँगेंगे। तब काली कुर्ती वालों के बारे में जो हरदीपी कहता था उन लोगों को बुला लिया जाय ? कहता था लाठी-भाला सिखाने वाला मास्टर आवेगा। संजोवकजी या तनचालक जी क्या कहता था सो आवेंगे। हिन्दू राज—महाराणा प्रताप और शिवाजी का राज होगा। हरदीपी आजकल बड़ी-बड़ी बातें करता है !

मण्डारा के दिन सिपजी रूठे हुए खेलावनसिंह यादव को घर से जबर्दस्ती खींचकर ले गए थे लेकिन खेलावनसिंह का मन रूठा ही हुआ था। जोतखी काका रोज आते हैं। उन्होंने कहा है सकलदीप का बलारह साल की उम्र में माता या पिता का बिजोग लिखा हुआ है। सकलदीप का यह सत्रहवाँ साल जा रहा है। सकलदीप की माँ बेटे का गौना करवाने के लिए रोज तकादा करती है। बेटे को बोकीस बनाने की इच्छा रखकर काली माई पूरी नहीं होने देगी। गौना

के बाद फिर क्या पड़ेगा ! माता-पिता का वियोग ? बासदेव को सारी दुनिया की भलाई तो सूझती है, मगर जिसका नमक खाता है उसके लिए एक तिनका भी तो तोड़े। दिन-भर तहसीलदार के यहाँ बैठा रहता है और शाम को कीर्तन ! कमला किनारे वाले एक कमरा में कलरू पासवान के बाबा का नाम कायमी बटैयादार की हैसियत से दर्ज है। बासदेव ने कहा कि कलरू से कह-सुनकर सुपुर्दी लिखवा दो या रजिस्ट्री करवा दो तो कान ही नहीं दिया। हल्लाबाद बोलाय तबमा कल से हल जोतने नहीं आता है। कहता है, पिछले साल का बकाया साफ कर दीजिए तो हम उठावेंगे। बासदेव टुकुर-टुकुर देखता रहा कुछ बोला भी नहीं उल्टे हम से बहस करने लगा गरीब लोगों का धरमाहा नहीं रोकना चाहिए भाई साहब !

जोतखीजी की अठारह साल की नवयौवना कनचीरावाली के पेट में राज खाने के बाद दर्द हो जाता है। पिछले एक साल से वह खाने के बाद पेट पकड़कर सो जाती है। इस साल तो और भी दर्द बढ़ गया है। डागडरी दवा ? नहीं नहीं। डाक्टर तो पेट टीपेगा जीभ देखेगा आँख की पपनियाँ उलटाकर देखेगा पेशाब और पाखाना के बारे में पूछेगा शायद स्तन भी जाँच करे। इधर वह रोज कहती है डागडर बाबू ने कोबरीटोला की छोटी चम्पा को एक ही इंजक्शन में आराम कर दिया है। इसी तरह उसके पेट में भी दर्द रहता था। औरत को समझाना बड़ा कठिन काम है। सभी औरतें एक समान। जो जिद पकड़ेंगी पकड़े रहेंगी। जोतखीजी को अपनी चार स्त्रियों का अनुभव है। पहली बेचारी का तो सिर्फ मेला बाजार देखने का शौक था। कोई भी मेला नहीं छोड़ती थी वह। जहाँ मेला आया कि जोतखीजी के तीसों दिन परमानन्द झा की खुशामद करने में ही बीतते थे। परमानन्द की मैलागाड़ी पर ही मेला जायगी। परमानन्द बेचारा खुद गाड़ी हाँककर मेला ले जाता था कभी भाड़ा नहीं लिया। आखिर बेचारी की मृत्यु भी मेले में ही हुई। उस साल अर्द्धोदय के मेले में वह जाड़ों का हैजा फैला था। दूसरी को हुक्का पीने की आदत थी। डाक्टर का हुक्का पीना ? लेकिन जोतखीजी क्या करते—औरत की जिद ! अब वह बीमार पड़ती थी तो बहुत बार जोतखीजी को ही हुक्का तैयार कर देना पड़ता था। पुरानी खाँसी से खाँसते-खाँसते वह भी मर गई। तीसरी को इस बात की जिद लग गई थी कि वह गाँव के लड़कों से हँसना-बोलना बन्द नहीं करेगी। और कनचीरावाली को डागडरी दवा की जिद लगी गई है। एकमात्र पुत्र रामनाथ-धन तो सुपुत्र निकला। विद्यापति गाथ करता है। तबमा पासवानों के गाथ रहता है। मगरे डाक्टर मरडी में उसकी विद्यापति फैल गई है। कई बेरी

देता ही नहीं। ओतलीजी क्या करें? हाथ की उर्ध्व-रेखा तो साफ तर्जनी में चली गई है, लेकिन कुंडली के दसम घर में शनि है। समझाते-समझाते थक गया कि अपना नाम रामनारायण मिश्र कहा करो लेकिन वह भी गँवार की तरह नाम तरैम ही कहता है। रामनारायण के साथ कलकीराखाली को एक दिन इसपिताल भेज दें? घर पर बुखाने से तो भागकर फौज लेगा।

कर्पिचन्दास बाबा के घर घर में आकर पंचों से कह रहा है—आचार्य बुरा आ रहे हैं। मठ का अधिकारी महंथ वही है उसी को चादर-टीका मिलनी चाहिए महंथ की रखैलिन या दासिन को मठ के मामले में कुछ बोलने का अधिकार नहीं। रामदास तो गँवार है। इतने बड़े मठ को चलाना मूरख आदमी के बूते की बात नहीं। वह बीए पास है। अंग्रेजी में ही बीअक बाँचता है। इसीलिए तो बाबड़ी केश रखता है धोती कुर्ता पहनता है और आधी मूँछ कटाता है। मठ पर एक स्कूल खोलेंगे। गाँव वालों की सफाई करेंगे। आप लोग बुद्धिमान आदमी हैं खूब विचारकर देख सकते हैं। दासिन रखैलिन मठ को बिगाड़ देती है साधू-धरम को भ्रष्ट कर देती है। आप लोग खूब विचारकर देख सकते हैं।

तन्त्रिमाटोले में पंचायत हुई। बन्दिश हुई है—तन्त्रिमाटोले की कोई औरत अब बाबूटोला के किसी आँगन में काम करने नहीं जायगी। बाबू-बबुआन लोग खाम को माँघ में आवें कोई हर्ज नहीं किसी की अन्दर हवेली में नहीं आ सकते। मजबूरी में जो एक आध सेर मिले उसी में सबों को सन्तोष करना होगा। बाकाई आमदनी में कोई बरकत नहीं। अनोखे और उचितराम छड़ीदार हुआ है। जिसे खाम से बेखाम देखेगा बाँस की छड़ी से पीठ की चमड़ी उधेड़ देगा।

तंत्रिमा लोगों की इस बंदिश के बाद गहलोत छत्री कुर्मी छत्री पोलियाटोल धनुखधारी और कुशवाहा छत्रीटोले के पंचों ने भी ऐसी ही व्यवस्था की है। सिर्फ जनेऊ लेने से ही नहीं होता है, करम भी करना होगा। जाये तो कोई बाबू कभी संथालटोली में खाम या रात को! उनकी औरतों से कोई दिल्लगी भी कर सकता है! संथालों के तीर पर जहर का पानी चढ़ाया रहता है।

कुर्मी छत्रीटोले के लौजमानों ने कल रात को शिवशंकरसिंह को बेपानी कर दिया। खबरी मुसम्मात का घर तो टोले के एक छोर पर है न सिपैहिया टोली की बाँसवाड़ी के ठीक बगल में! लेकिन शिवशंकरसिंह को क्या मालूम कि बाँस की झाड़ियों में छोकरे पहले से ही छिपे हुए हैं! खबरी मुसम्मात को दस रुपये जरिमाना हुआ है। जहाँ से दे देना तो होगा ही, नहीं तो हुक्का पानी बंद। शिवशंकरसिंह ने रुपया लेकर दे। इसी बार छाकवाण मेला में

पंचसैट[1] खरीद होगा। बिना पंचसैट वाली पंचायत की क्या कीमत ? डेट के दाम में बीस रुपया और कम है। एक दिन फिर खाँसबाड़ी में एक घंटा मच्छड़ कटवाना होगा और क्या ?

कालीचरन का अखाड़ा आजकल खूब जमता है। शाम को कीरतन भी खूब मचता है। नया हरमुनियाँ खरीद हुआ है। गंगाजी के मेले से बंगतीरिया होकर लाया गया है। खूब बजहता है।

बालदेवजी को कीरतन तो पसन्द है, लेकिन अखाड़ा और कुश्ती को वे खराब समझते हैं। शरीर में ज्यादा बल होने से हिंसाबाद करने का खौफ रहता है। असल चीज है बुद्धि। बुद्धि के बल से ही यही महत्मागांधी ने अंग्रेजों को हराया है। गांधीजी के देह में तो एक चिड़िया के बराबर भी मांस नहीं। कांग्रेस के और लीडर लोग भी दुबले-पतले ही हैं।

लेकिन कालीचरन का अखाड़ा बन्द नहीं हो सकता। ढोल की आवाज में कुछ ऐसी बात है कि कुश्ती लड़ने वाले नौजवानों के खून को गर्म कर देती है।

डाक डिमा डाक डिमा !

सोमन गोंसी ने ढोल पर लकड़ी की पहली चोट दी कि देह कसमसाने लगता है।

डिमा डिमा डिमा डिमा !

अर्थात्—आजा आजा आजा आजा !

सभी अखाड़े में आये। काछी और जाँघिया चढ़ाया एक मुट्ठी मिट्टी लेकर सिर में लगाया और 'भगवती' कहकर मैदान में उतर पड़े। कालीचरन 'आ-आ-अली' कह कर मैदान में उतरता है। चम्पावती मेला में पंजाबी पहलवान मुश्ताक इसी तरह 'आली' (या अली) कहकर मैदान में उतरता था—

तब ढोलन ताल बदल देता है—

चटवा भिड़वा, चटवा भिड़वा !

आजा भिड़वा आजा भिड़वा !

अखाड़े में पहलवान पैंतरे भर रहे हैं। कोई किसी को अपना हाथ भी छूने नहीं देता है। पहली पकड़ की ताक में है। यह पकड़ा

धागिड़ागि धागिड़ागि धागिड़ागि !

कसकर पकड़ो कसकर पकड़ो !

चटाक चटवा चटाक चटवा !

---

१ बेंट्रोमैक्स।

'उठा पटक दे उठा पटक दे !

भिड़ भिड़ भिड़ जा भिड़ जा भिड़ जा !

'वह जा वह जा वाह बहादुर !

पटक तो दिया अब चित्त करना बोल नहीं ! मिट्टी पकड़ लिया है। सभी दाव के पेंच और काठ उसको मालूम है !

हाफ डिब्बा तिरकिट डिब्बा !

'दाव काट बाहर हो जा !

वाह बहादुर ! दाव काटकर बाहर निकल आया। फिर, बा-चट भिड़ जा ! जा जा भिड़ जा !

ढोल के हर ताल से पैंतरे दाँव-पेंच काट और मार की बोली निकलती है।

कालीमान में पूजा के दिन इसी ढोल की ताल एकदम बदल जाती है। आवाज भी बदल जाती है—बाघिड़ भिड़ा बाघिड़ भिड़ा !

'जै जगदम्बा ! जै जगदम्बा !

बाँध की रक्षा करो माँ जगदम्बा !

चौदह

चढ़ती जवानी मोरा अंग अंग फड़के से

कब होइहैं मरना हमार रे मजरिया ऽ ऽ ऽ !

पक्की सड़क पर गाड़ीवानों का दल मजरिया का गीत गाते हुए गाड़ी हाँक रहा है। "जा जा ! चल बढ़के। दाहिने हाँ हाँ घोड़ा देखकर भी भड़कता है ! खाला !"

हमरा रेपाये खेमा देहरी बैठाई पहले

फिरहु न भिहले उदेस रे मजरिया ऽ ऽ ऽ !

मनरिया के दिल की हूक गाड़ीवानों के गले से कूक बनकर निकल रही। मजरिया ? कमली की कोई चीज नहीं किससे दिल की बात कहे ? मजरिया को मनरिया को तो पाती हो चुकी है कमली का तो हाथ भी पीला नहीं हुआ है। 'प्रेमसागर' में मन नहीं लगता है—श्री सुखदेव जी बोले फिर गया एक दिन कृष्ण कन्हैया बनी बनैया कदम के बिरिख पर बैठक

बंसी बजाये रहे थे। श्रीहरिण लीला की तस्वीर को देखकर कमली का जी न जाने कैसा-कैसा करने लगता है! वह 'प्रेमसागर' बंद कर देती है।

'सुबह प्यारू आया था। कितना गो आदमी है प्यारू! आज क्या बना था प्यारू? डाक्टर साहब आज ठीक समय पर खाये थे या सीधी बोतल लेकर पड़े हुए थे? प्यारू हँसकर हमेशा की तरह जवाब देगा "अरे, क्या पूछती हो दैया! इस आदमी का हमको कोई ठामपता[1] नहीं लगता है। रोज कहेंगे कि प्यारू आज खाना बना जल्दी बनाओ और खाते फिर वही रात में प्यारू बजे और दिन में दो बजे। आज बंधा का झोल बना था। झोल क्या खायेंगे? मिर्च-मसाला छूत भी नहीं है। खाने का तो कोई सौख नहीं है जो बना दो खा लेवे। और सीधी बोतल? क्या पूछती हो दैया! कल से मच्छड़ खटमल और तिलचट्टे के पीछे पड़े हुए है। आज संथाल्टोली के जोसिया मांझी को कह रहे थे—चार खरगोश और एक हरिन चूहा पकड़ कर दे आओ। पूरा इनाम मिलेगा।

प्यारू को पाँच भर की औरतें प्यार करती हैं। पाँच-भर में उसकी मामी मौसी नानी दादी और काकी है। सभी जवान लड़कियों को वह 'दैया' कहता है।

'डाक्टर की मुस्कराहट बड़ी जानलेवा है। जब आवेगा तो मुस्कराते हुए आवेगा—डर लगता है? हाँ हाँ डर लगता है तो तुमको क्या? तुमको तो मजा मिलता है न! मुस्कराए जाओ। चले में झाला लटकाए फिरते हैं बाबू साहब! छाती और पीठ में लगाकर लोगों के दिल की बीमारी का पता लगाते हैं। झूठ! इतने दिन हो गए, मेरे दिल की बात मेरी बीमारी को कहाँ जान सके! या जान-बूझकर अनजान बनते हो डाक्टर! तुम्हारी मुस्कराहट से तो यही मालूम होता है। अच्छा डाक्टर! सच सच बताना तुम क्यों मुस्कराते हो? तुम मुझे अच्छा करने के लिए इस पाँव में क्यों आये? नहीं नहीं तुम नहीं आते तो पागल हो जाती। रोज सपने में कमला नदी की बाढ़ में मैं बह जाती थी। बड़े-बड़े साँप! तरह-तरह के साँप काटने दौड़ते थे। तुम आये मैं डूबते-डूबते बच गई। मेरी आँखों की पपनियाँ उलटकर देखो मेरी पीठ पर आला लगाकर देखो मेरे दिल की बात सुनो। तुम डाँटते हो बड़ा अच्छा लगता है! तुम मुझे सुई से डराते हो चिढ़ाते हो। कितना अच्छा लगता है सच! फिर मीठी दवा मत दूँगा? हाँ जी भेज देना पूछते हो क्या?

---

१ ठौर ठिकाना।

तुम्हारी बोली क्या कम मीठी है ! लेकिन तुम एक बार डाक्टर आया करो। नहीं आओगे तो मुझे डर लगेगा। सिपैंहियाटोली की कुसमी कहती थी डाक्टर मुझसे भी पूछता था—मीठी दवा चाहिए क्या ? मैं नहीं विश्वास करती डाक्टर ऐसा नहीं है। कुसमी झूठ बोलती है मीठी दवा और किसी को मिल ही नहीं सकती है। डाक्टर खबरदार ! कुसमी बड़ी चालबाज लड़की है। बहुतों को बदनाम किया है उसने। हरदीरी उसका मौसेरा भाई है लेकिन जाने दो क्या करोगे सुनकर ? उसकी ससुराल फारबिसगंज में है। घर वाला एक मारवाड़ी का सिपाही है। रात भर सिपाही पहरा करता है और कुसमी बैसकोप देखने जाती है।

'श्री सुखदेवजी बोले कि हे राजा ! एक दिन यसुमती सभी सखिनों को बुलाए।'

"कमली !

'मां !

'पढ़ना बन्द करो। डाक्टर बाबू ने मना किया है न ! दवा पी लो। मैं तुम्हारी किताब बक्से में बन्द कर ताला लगा दूंगी। हां ऐसे तुम नहीं मानोगी।

'पढ़ने से क्या होगा मां !"

"कम्मो की बात तो सुनो जरा ! पढ़ने से क्या होगा सो तो डाक्टर से पूछना !

"डाक्टर बाबू से ? मां तुम्हारा डाक्टर क्या है जानती हो ? माटी का महादेव !"

मां ठठाकर हंस पड़ती है 'एक-एक बात पकड़कर निकालती है तू। मजाक ठहर। आज आने दे डाक्टर बाबू को।

मां-बाप के नैनों की पुतली है कमला ! तहसीलदार साहब बेटी की इच्छा के खिलाफ कुछ भी नहीं कर सकते। मां कमला की हर आवश्यकता को बिना मुंह खोले ही पूरा कर देती है। बाप ने खूब पढ़ाया-लिखाया है रामायण महाभारत अलिफ-दमयन्ती सावित्री-सत्यवान पार्वती-मंगल और शिवपुराण। कमला रोज शिव पूजती है—ओं शिवशंकर सुखकर साध वरदायक महादेव !

'महादेव ! मिट्टी का महादेव !

"मां चुप रहो। कमली मां से झिझककर हाथों से मुंह बन्द कर लेती है। "पूछो न अपने डाक्टर से आशीष पाकर क्या करेंगे !

डाक्टर कोई जवाब नहीं देता है सिर्फ मुस्कराता है। फिर गम्भीर होता

हुए कहता है, "अब तो मूई बेमी ही पड़ेगी दवा से बेहोशी तो दूर हो गई, लेकिन पागलपन !"

सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं तहसीलदार साहब माँ और प्यारू। कमली का चेहरा लाल हो जाता है। 'मैं आज खून का दबाव नहीं जाँच कराऊँगी। नहीं-नहीं ठीक है। हाँ मैं पगली हूँ !"

"दीदी !" तहसीलदार साहब बेटी को दीदी कहकर पुकारते हैं "जाओ डाक्टर साहब को देर हो रही है।"

ब्लड प्रेशर जाँच करते समय डाक्टर गम्भीर होकर यंत्र की ओर देखता है। कमली तिरछी निगाहों से चोरी-चोरी डाक्टर को देखती है—हाँ जी मुझे पगली कहते हो ! लेकिन मुझे पगली बना कौन रहा है ?

गाँव में सिर्फ तहसीलदार साहब चाय पीते हैं बढ़िया चाय की पत्ती का व्यवहार करते हैं। डाक्टर यहाँ हर शाम को चाय पीने आता है। कमला की माँ का अनुरोध है—रोज शाम को चाय पी जाइए।

तहसीलदार साहब कहते हैं डाक्टर तो अपने खजाँची की तरह हो गया है। डाक्टर को भी तहसीलदार साहब से घनिष्ठता हो गई है। तहसीलदार साहब से घर-घर और जिले की बहुत-सी नई-पुरानी बातें सुनने को मिलती हैं।

राज पारबंगा स्टेट के जनरेल मैनेजर डफ साहब वैसा आदमी है। आजकल एकदम हिन्दुस्तानी हो गया है। धोती-कुर्ता पहनता है। कभी-कभी रोटी का टीका भी लगाता है। राज पारबंगा के कुमारजी डफ की मुट्ठी में हैं। डफ साहब की बेटी अब तक खेली कुमारजी डफ साहब को नहीं हटा सकते हैं। महारानी चम्पावती जाति की मुसहरनी थीं। राजा भूपतसिंह को 'मेम रानी' से दो लड़के हैं। बड़ा ऐयाश है राजा भूपत ! पालो का जब्बड़[1] शिकारी ! डार्जिलिंग रेस में हर साल उसका घोड़ा जीतता है। साजरुक भी बाईस घोड़े हैं। बड़ा ऐयाश ! पुरुवाह में बनारस इलाहाबाद और लखनऊ से इतनी बाईजी आती हैं कि तीन दिन तीन रात महफिल जमी रहती है एक मिनट भी बन्द नहीं होती। पैरिस की शराब पीता है। असल राजा तो यही है। राज पारबंगा वाला तो मक्खीचूस है। जिला का सबसे बड़ा किसान है लोमा बाबू ! तीस हजार बीघा जमीन है ! खुद्दा इस्टेट के मुख्तारी बाबू भी किसान ही हैं। उनकी बात निराली है। दाता कर्ण हैं। बारफट में सबसे ज्यादे रुपया दिया और बाँधल के सहायताश्रम में भी सबसे ज्यादे रुपया दिया और इसीको

---

१ अजगरलती।

कहते हैं पुर्णिया का इन्साफ! दिल खोलकर दान देने का सुफल क्या मिला है जानते हैं? लोगों ने झूठ-मूठ अफवाह फैला दिया है कि मोट बनाता है। अरे भाई, मोट तो बनाती है उसकी कोशी गंगा किनारे की हजारों बीघा जमीन जिसमें न हल चलता है न बैल न मेहनत न मजदूरी! बाढ़ का पानी हटा और कीचड़ वाली धरती पर बना लेवाड़ी मटर, सरसों उरद वगैरह छींट दिया। बस छींटने में जितनी मेहनत लगे। कोशी और गंगा के पानी से नहाई हुई धरती माता दिल खोलकर अपना धन लुटा देती है। जिला कांग्रेस के सबसे बड़े लीडर हैं शिवनाथ चौधरीजी। 'अजी आप तो जानते ही हैं उनको! वह भी बड़े किसान हैं। पूर्णिया कचहरी में जो बकालत सीसी बाबू कर गए, वह अब कोई वकील क्या करेगा! हाईकोर्ट के बारिस्टर भी उसके बराबर हुए सिर्फ को नहीं काट सकते थे। लेकिन फौजदारी कचहरी में कभी पैर नहीं रखते थे। एक बार राजा भूपत बस हजार फीस देने वाला खूनी केस था। सीसी बाबू ने अपना प्रण नहीं तोड़ा कचहरी नहीं गये। कागज पढ़कर सिर्फ एक जगह एक लाइन काट दिया और एक जगह एक अक्षर जोड़ दिया। राजा भूपत बेदाग छूट गया। अब तो न वह अयोध्या है और न वह राम।

"बाबा!"

दीदी!"

"डाक्टर साहब आज यहीं खाएँगे।

'प्याज से कपड़ा मोल लेना चाहती है?

'प्याज से कह दिया है।

"तब डाक्टर साहब! हमारी तो कभी हिम्मत नहीं हुई। दीदी कहती है यदि खरमा हो तो ।"

अजी कपड़ा की बात नहीं। बात यह है कि मैं

"सिर्फ मछली नहीं खाते" कमली बीच में ही बोल उठी "उबली हुई चीजें खाएँगे। यही न?

डाक्टर समझ रहा है—रोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। दीमा रहती तो तुरन्त कुछ कह देती। शायद कहती 'मानसिक संक्रमण' अथवा 'प्रत्यावर्तन' के मोड़ पर रोग पहुँच गया है।

पन्द्रह

सुमरितदास को लोग लबड़ा आदमी समझते हैं लेकिन समय पर वह पते की बातें बता जाता है। आजकल उसका नाम पड़ा है—बेतार का खबर। संक्षेप में 'बेतार'। बात छोटी या बड़ी कोई भी नई बात बेतार तुरत घर-घर में पहुँचा देता है। तहसीलदार का वह रोटिया[1] बभाह है। पचाही देते-देते वह बूढ़ा हो गया है बमूल तबाहा के समय तहसीलदार के साथ रहता है। किसी को बाकिब खारिज करवानी है किसी रैयत की जमीन में लाट लगा है या किसी को बन्दोबस्ती लेनी है तहसीलदार से पहले सुमरितदास से बात करे। वह रैयतों को एकान्त में ले जाकर कहेगा—तहसीलदार तो हमारी मट्ठी में हैं। हमको पान-सुपारी खाने के लिए कुछ दो या नहीं दो तुम्हारी मर्जी लेकिन तहसीलदार साहब को तो 'बाबिब जो है सो !

रैयतों से छोटी-छोटी चीजें तहसीलदार साहब खुद कैसे माँग सकते हैं? वह सुमरितदास ही माँगता है—कद्दू, झींगा बैंगन करैला बदूतर, हरी मिर्चा साग मूली और सरसों का तेल। यह सब तो सुमरितदास अपने लिए लेता है। लेकिन चीजें लेते समय सुमरितदास रैयत से एकान्त में कहता है अरे भाई ये सब चीजें मैं जाकर क्या करूँगा? न घर है न घरनी न चुल्हा है न चौका। एक पेट के लिए मँगनी क्या करूँ? यह सब तो ।" कभी एक पैसे की सरकारी तहसीलदार साहब के यहाँ खरीदी नहीं आती। सुमरितदास मगर मँगनी करेगा। आज उसकी हालत खराब हो गई है तो क्या वह खानदान की इज्जत को भी लूटा देगा! उसके परदादा के दरवाजे पर हाथी झूमता था। सब करम का फेर है। सुमरितदास के पेट में कोई बात नहीं पचती। कालीचरन कहता है—मुँह में दाँत है नहीं बात अटके भी तो कैसे? बेतार!

बेतार को बहुत-सी बातें मिल गई हैं। पहली बात तो यह कि पश्चिम के मठ पर आचारज बुरे आ रहे हैं सुमरितदास को कमलनैन साहब ने भी महंथ मान लिया है। दूसरी बात यह कि कल से तहसील खुलने वाला है बीच में मंगला पड़ गया था। तहसीलदार साहब ने कहा है—एक मुश्त दिन है।

तहसीलदार साहब के सलाम के साथ ही पोस्ट के और सिपाहियों का सलाम

---

१ पचाही की रोटी खानेवाला। २ खलिहान।

खुलता है। तहसीलदार साहब का जमाहार बड़ा जमाहार कहलाता है। 'जरी बहार' से बचकर भी दो हजार मन धान होता है।

हाँ तीसरी बात तो कहना भूल ही गया बेचारा! वह लौटकर सुना जाता है "कपड़ा तेल और चीनी की पुर्जी बाँटने का काम बालदेव को मिला है। नाम तो उसमें डागडर बाबू का भी है लेकिन डागडर बाबू कहते हैं—हमको फुर्सत नहीं। हमसे कहते थे कि हमारा काम आप ही कीजिए दासजी! हम बोले कि हमको भी फुर्सत कहाँ है।

आचारज हुए के आने की खबर का कोई मोल नहीं भी हो बाकी दो बातें यदि सच हैं तो वास्तव में कीमती हैं।

बात सच है। बालदेवजी भी कहते हैं बात ठीक है।

जमाहार! साल-भर की कमाई का लेखा-जोखा तो जमाहार में ही होता है। दो महीने की कटनी एक महीना मड़नी फिर साल-भर की खटनी। दवनी मड़नी करके जमा करो साल-भर के खाये हुए कर्ज का हिसाब करके चुकाओ। बाकी यदि रह जाय तो फिर सादा कागज पर अंगूठे की टीप लगाओ। सफाई करनी है तो बैल गाय भरना रखो या हलवाहा परवाहा दो। फिर कर्ज खाओ। जमाहार का चक्र चलता रहता है। जमाहार में बैलों के मुण्ड से दवनी मड़नी होती है। बैलों के मुँह में जाली का 'जाब' लगा दिया जाता है। गरीब और बेजमीन लोगों की हालत भी जमाहार के बैलों जैसी है। मुँह में जाली का 'जाब'। लेकिन जमाहार का मोह! यह नहीं टूट सकता। मुखड़ा जगते ही जमाहार जम जाता है। सूई की तरह चुभने वाली माघ के भोर की ठण्डी हवा का कोई असर देह पर नहीं होता। ओस और पाले से तो देह शून्य हो जाता है। जब हाथ से अपनी नाक भी नहीं छूई जाती है तब घूर में फिर से सूखे पुआल डालकर नई आग पैदा की जाती है। घूर में सकरकन्द पकता रहता है। घूर के पास वह धर्मात्मा की बागी जिसकी रहती है वह प्रातकी पाता है—'हरि बिनु के पूरिहै मोर सुआरथ हरि बिनु के। अथवा 'निरबल के बल राम हो सन्तो निरबल के बल राम!

दिन-भर धान झाड़-फटककर जमा किया। फिर धान के बोझे छीट दिये गए और धान से फिर दवनी मड़नी शुरू हो गई। शाम को घूर के पास 'लोरिक' या कुमर 'बिरजेभान' की गीत-कथा होती है—

अरे राम राम रे धैया रे इसर रे महादेव
बाम ठाढ़ी देवी दुरगा दाहिन बोले काग।
अपन मन म साच करैये मालिक मरदार

बात से नहीं माने और कलोजिया भुवार ।

कपड़ा तेस और चीनी की पुर्जी कमलडाहा के कमलदी बाबू बाँटते थे। मेरीगंज से कमलडाहा दस कोस है। दस कोस जाना तो कोई बड़ी बात नहीं लेकिन पुर्जी पाना बड़े भाग की बात समझी जाती है। कमलदी बाबू कुंजड़ा हैं ईमन की बिक्री से ही जमींदार हुए हैं मुखौश के लीडर हैं। कटिहार पूर्णिया मोटर रोड के किनारे पर ही घर है। हमेशा हाकिम-हुक्काम उनके यहाँ आते रहते हैं। महीने में साठ मुर्गियों का खर्च है। लोग कहते हैं कि नये इसडियो जब आये तो सारे इलाके में यह बात मशहूर हो गई कि बड़े बड़े हाकिम हैं किसी के यहाँ न तो जाते हैं और न किसी का पान ही खाते हैं। लेकिन कमलदी बाबू भी पीछा छोड़ने वाले आदमी नहीं। इसडियो का ड्राइवर मुसलमान है। उसको कुरान की कसम देकर पान-सुपारी खाने के लिए दिया। बस एक बार कटिहार से लौट रहे थे इसडियो साहब ठीक कमलदी बाबू के घर के सामने आकर मोटरगाड़ी खराब हो गई। इस बखे रात को इसडियो साहब और कहाँ जाते? उसके बाद से ही कमलदी बाबू आँख भूँकुर[1] विशेक करने लगे। एक बार परैनिया मिटिन में कंमरेडी सुधाय बाबू ने हाकिम से कहा—पबलिक बहुत शिकायत करती है। कमलदी बाबू ने हँसते हुए पूछा—'हिन्दू पबलिक या मुसलमान?" हाकिम की समझ गए—कमलदी बाबू कौमी हैं, इसीलिए लोग झूठ-मूठ दोस लगाते हैं। 'अब तो बालदेवजी पुर्जी बाँटे। बालदेवजी को बिलैती कपड़ा से क्या फरक? खद्दर को छोड़कर दूसरे कपड़े को छूता भी नहीं। 'छूते है? छूने में हर्ज नहीं।

'जै हो पन्ही महतमा की जै हो! 'कल कमहार खुलेगा पिछले साल तो कमहार खुलने के दिन जालिमसिंह का नाच हुआ था। जालिमसिंह सिपैहिया ने एक डोमिन से शादी कर ली थी। 'लेकिन इस बार कीरतन होना चाहिए। गुरुजी कीर्तन! बेचारे कहते हैं—इस बार बिदापत नाच होगा। डागडर बाबू बिदापत नाच देखेंगे। तहसीलदार साहब तो हँसते-हँसते लोट पोट हो गए। कितना समझाया कि डागडर बाबू यह तो बहुत पुराना नाच है। खाली बिन्दा[2] होता है। डागडर बाबू कहने लगे—'बिदापत ही करवाइए। पासवानटोली के सिवदू पासवान को खबर दे दी गई है। सिवदू नाच का सुपरभैजर है। सुपरभैजर अर्थात् म्यूजिक डायरेक्टर।

कालीचरन का कीरतन नहीं होगा? अच्छा कोई बात नहीं डॉक्टर

---

१ कौंचिक।

साहब को एक दिन कीरतन सुना देंगे।

वासुदेवजी को आकर बाबू की बुद्धि पर अचरज होता है—विदापत नाच क्या देखेंगे? बड़ा खराब नाच है। कोई भला आदमी नहीं देखता। खराब-खराब गीत गाता है। नाच ही देखने का मन था तो तहसीलदार साहब से कहकर सिमरबनी गाँव की ठेठर कम्पनी को बुला लेते। आने-जाने और पचीस आदमी के खाने का खर्चा क्या तहसीलदार साहब नहीं दे सकते थे? गाँव वाले देखते तो आँखें खुलतीं। सिमरबनी की ठेठर कम्पनी मशहूर है, महावीर बध दुर्योधन का पाठ लेकर हाथ में तरवार लेकर मरजते हुए निकलता है तो एक कोस तक उसकी बोली साफ सुनाई पड़ती है—"बस बन्द करा दो यह मूरख बाबा हमको अच्छा नहीं लगता।"

धिना धिना धिना निना निना।
धिन तक धिना धिन तक धिना।

विदापत नाच का मृदंग 'जमीनका' दे रहा है—चलो! चलो! चलो!

धिनक धिनक धा तिरकिट धिना।
धिनक धिनक धा तिरकिट धिना।

गाँव-भर के लोग तहसीलदार साहब के जम्हार में जमा हुए हैं। शामियाना तान दिया गया है। शामियाना खचमखच है। डॉक्टर बाबू सिंहजी और खेलावनसिंह यादव कुर्सी पर बैठे हैं। कालीचरन अपने दल के साथ है। जोतखीजी नहीं आये हैं। सिंहजी ने कहा—"आज भी उनके दाँत में दरद है भाई!" सभी ठठाकर हँस पड़ते हैं। सभी जोतखीजी के नहीं आने का कारण जानते हैं—उनका बेटा नामकरण भी विदापत नाच का समाजी है। 'बामन नाचे तेली ताधा देखे! कुपुत निकम्मा रामानारायण! छिः छिः!

वासुदेवजी नहीं आये हैं। कोई भला आदमी नहीं देखता विदापत नाच! अब मृदंग पर 'चलती' बज रहा है—

तिरकिट धिना तिरकिट धिना!
धिन तक धिना धिन तक धिना
धिनक धिनक धा
धिक धिक तिना!

'ओ ! होय! नाचकजी!"

विदूषक[1] आया। भीड़ में हँसी की पहली लहर खेल जाती है—सैकड़ों

---

१ विदूषक।

मुक्त हृदयों की हँसी। पावक की झनकार।

मुँह पर कालिख-चूना पोतकर, फटा-पुराना पाजामा पहनकर सोकाय दास बिकटा बन गया है। यह अनमजात बिकटा है। भगवान ने उसे बिकटा ही बनाके भेजा है। ऊपर का ओंठ त्रिभुजाकार कटा है। सामने के दाँत हमेशा निकले रहते हैं और शीतला माई ने एक आँख ले ली है। बात गढ़ने में उस्ताद है।

"ओ! होप! हो नायक जी!

"क्या है?"

"अरे यह फटंग फटंग क्या बज रहे हैं?"

"अरे, मृदंग बज रहा है। यह करताल है यह झाल है।"

'सो तो समझा। यह पड़िप पड़िया मनपतबंधा क्या बजाते हैं?"

"साथ होगा साथ विद्यापति साथ!

"ओ हम समझे कि 'जीलामी' का ढोल बोल रहा है।"

बिन ताक बिधा बिन ताक बिधा!

आहे! उतपहि राज से आवेल हे नटुकवा कि आहे मैया

कि आहे मैया सरोसती हे परबमे बसोनि हे तोहार!

हमहूँ मूरख गँवार कि आहे मैया

सरोसती मूरख आखर आहिके आहे मैया

कंठे सोहे हे बास!

"ओ आ हम नायकजी!" बिकटा जोर से चिल्ला उठता है। ताल भी कट चुका है। ठीक ताल काटने के समय बिकटा को चिल्लाना चाहिए, इसलिए मृदंग के ताल का ज्ञान बिकटा को होना ही चाहिए।

"तुम कैसा बकूफ हो जी!

"अरे हो नायकजी! यह आप लोग किसका बन्दना कर रहे हैं?

हा हा! हा! हा हा हा! हँसी की दूसरी लेकिन हल्की लहर।

"बेकूफ! सुनते नहीं हो सरोसती माता का बन्दना है!"

'यह सुरस्तु सुरस्ती 'सुर सुरसरसती माता को तुम बन्दना है? हमको तुम बकूफ कहते हो? बेकूफ तो तुम खुद हो। अरे, सरस्वती का बन्दना तो पढ़ने पहिले आप करता है।"

हा! हा! हा! हा! भीड़ में खिलखिलाहट।

"ना हम पाठ सिखना करेंगे?

"छोड़ तुम गोटी चलानी या हो बिम चलानी यी भी पूरी चंदारा

में हुई थी जिसको खाकर हमारा पेट दस दिन खराब रहा था। बिना किसी मिलावट के तुम भी खाँटी बेवकूफ मालूम होते हो। इतना भी नहीं जानते? सुनो! जरा ध्यानसे कहो—बिलक बिल्ला सिरकिट बिल्ला!"

"अरे बाल बंदो भाव बंदो साग बंदो बथुआ!

"वह तो हुआ कल्ली सरकार! अब जरा पक्की सुनिए—

"अरे चूड़ा बंदो मूआ बंदो रोटी बंदो मड़ुआ!"

"हा! हा! हा! हा! हा!

"अब फल मेवा सरकार!

"अरे भुजिया बंदो घुमर बंदो और बंदो अलुआ!"

"हा! हा! हा! सैकड़ों खिलखिलाहट!

"हुक बंदो बैंक बंदो और बंदो पइसा!

"अब सबसे बड़ा भगवान!

बिकटा मुँह बनाता है।

"चटाक पटपट बड़त सिर पर मारब बाप के मूतबा।

सबसे बड़ि के तोहरे बंदो मालिक बाबूक मूतबा!"

बिकटा खेलावन के पैर के सलमशाही जूते को प्रणाम करता है।

डाक्टर साहेब तो अचरज से मुंह हो गए हैं एकदम खो गए हैं नाच में। इस बार नाच जमेगा। आखिर यह सब पुरानी चीज है क्यों भाई! सब बात तो ठीक ही कहता है।

'बिला बिला बिला बिला। समाजी लोगों ने शुरू किया।

आहे लेस परवेश परम सुकुमारी हे,

हँस गमन बिरखामान दुलारी हे।

मृदंग के ताल पर दसे पाँचों लटबा आता है। ताल पर ही चलकर सबसे पहले मृदंग को प्रणाम करता है, फिर साज-करताल की ओर अन्त में मूछदीन सिंह पासवान का पैर छूकर प्रणाम करता है। पोलिटाटोली के छीतनदास का बेटा चलित्तर लड़कियों की तरह लम्बा बाल रखता है। नाच में बुलाक भी इसका पहने रहता है। यह लटबा है। अभी साज-पोशाक पहनकर एकदम नायिका की तरह लग रहा है छौड़ा। 'कान में कनफूल किसका है? कमली दीदी का? 'वाह रे छौड़ा आज यदि यह कान का कनफूल बख्शीस में जीत ले तो समझें कि असल बिरपतिया का बेटा है। मृदंग बजाता है छितरदास! क्या कहा—असल बिरपतिया? हम सहरसा के बैजू मिरदंगिया का बेटा हैं। जानते नहीं बैजू मिरदंगिया एक बार अपने समाजी

के साथ कहीं से लादकर ला रहा था। चोर लोग जानते थे कि मैनू मिरदंगिया का समाजी एक-एक सौ रुपैया नकद बोली कुर्ता बनवा बनारस लेकर घर लौटता है। बस टूट्टी पाखर के पेड़ के पास चोरों ने घेर लिया मैनू मिरदंगिया को। वह पीछे पड़ गया था—दिसामैदान के लिए लावर। मैनू मिरदंगिया ने क्या किया? बोलो तो! नहीं जानते? हा-हा! मिरदंग पर थाप दिया। दाहिने पूरे पर अंगुलियाँ फिरकी की तरह नाचने लगी—धुकिट किना ना किना ना किना-ना ना। तो मृदंग के पूरे की सूखी चमड़ी मानो जी उठी साफ आदमी की तरह बोली निकली—'टूट्टी पाखर तर चोर घेरलक हो चोर घेरलक! 'लिवटदास का समाजी है खेल नहीं। साथ बेटा!

धिरिलापि धिरिलापि धिरिलापि धिनता!
आहे तन मन बदन मदन सहजोर है,
आहे दामिनी ऊपर

"है रे! है रे! है रे!" विकटा कलेजा पकड़कर मुँह बनाता है।

'धिनक धिनक ता धिनक धिनक ता
आहे दामिनी ऊपर उमलय चान है।

विकटा मूर्छित होकर गिर पड़ता है—"अरे बाप!"

"अरे क्या हुआ?"

"अरे बाप!

'अरे! बोलो भी तो? क्या हुआ?"

"अच्छा नायकजी एक बात बताइए। जरूरी बताइए। आसमान का चान यदि धरती पर उतर आया है तो धरती के चान को ऊपर जाना पड़ेगा?

"अरे धरती पर भी कहीं चान होता है?"

"सुनिए जरा इसकी बोली! इसीलिए न कहा था कि खाँटी चमारी बी हो। अजी हमारी एक ही बिजली बत्ती खराब है, तुम्हारी क्या बातों खराब है? आजकल रेलगाड़ी में सुनते हैं कि बत्ती नहीं जलती। पहले बिजलौट तब तो बिलेक मारकेट।" हा! हा! हा! हा! मामा कटिहार वाली के यहाँ बराबर जाता है। रेलगाड़ी की भी पक्की निकालता है। अंध भंप आदमी सारी दुनिया का अंग-अंग देखता है। सुना क्या कहता है, धरती का चान किसको बनाता है?

"अरे मधुआ नायकजी धरती का चान अपनी छतीसों कन्या के साथ तुमको सामने खड़ा है चौरसिया बन हो क्या? जरा छट्ठम सैट जमाकर देखो।

हा! हा! हा! हा! साला अच्छत बात बनाता है!

"छट्ठम सैट नहीं जानते ? देखो पंचम सैट तो यही है जो ममी पंच परमेसर के बीच में बज रहा है। छट्ठम सैट तुम्हारे घर में आजकल बजता है। तेल मिलता ही नहीं—एक पटुआ के सठी में आग लगाकर हाथ में लेकर खड़ा रहो भकभक मैसबत्ती की-सी रोसनी होने लगेगी। हम आजकल यही करते हैं।

'अच्छा आप ही कोन देखिए पंच परमेसर, हमसे ग्यारे सुघर यहाँ कोई है ?

"नहीं नहीं आप तो कामदेव के औतार हैं," सिवजी कहते हैं।

'हा ! हा ! हा ! हा! हा ! हा ! नाचो रे चक्कितरा ! बाद मोहड़ा' पड़ा है ! की खोल के नाच बटा !

धिनाधि धिन्ना तिरनाधि तिन्ना
धिनक धिनता तिटकत ध-ध-धा !
माहे चम्पु खेलि सुखधाम चम्पु !
माहे कन्हैया यहाँ खेलि है,
रास रचामोस है ! चम्पु हे चम्पु !
धिन्ना तिन्ना ना धि धिन्ना !
माहे तिर धिरलावन कुंज पश्चिम में
कान्हु चरावत धेनु,
माहे मुड़की पै टेढ़े किरीकी के जोटे,
माहे बज धिहे
धिरिनाधि-धिरिनाधि धिरिनाधि
माहे ! बज धिहे रहको लि जावे चम्पु हे चम्पु !

लछमाटोली की औरतों के घिरोह में बैठी फूलिया का भी ऐंठता है 'बजे धिहे रहको लि जावे !

बहरीतरार बाहव की हवेली की सामने वाली खिड़की खुली हुई है। कमली सीटी भी देख रही है। नहीं देखेगी तो बखसीस कैसे देगी ?

"देख बेटा ! खिरकी की तरह नाच ! पुरइन के फूल की तरह घाँघरी खिल जाय !"

"अरे हो नायकजी ! एक बात तो बताइए। वह हमको छोड़कर कहाँ जा रही है ? चम्पु चम्पु—वही मेला-समाजा है या भोज है ? या कपड़ा की पूर्जी बटती है ?"

"अजी वह तुम्हारे ही पास जा रही है। तुम्हीं किसुनकन्हैया हो न ! तुम्हारे

---

१ मोर्चा ।

रूप पर मोहित हो गई है।"

"ओ! यही तो हम भी कहते थे कि हमको छोड़कर कहाँ जा रही है! हम कन्हैया हैं, लेकिन कन्हैया के बाप का नाम तो नन्द था और हमारे बाप का नाम उजाड़ दास।"

हा-हा! हाहा! हाहा!

"अरे उस्मू! तुम्हारे बाप का नाम उजागिरदास था। तुम इसको खराब करके काहे बोलते हो?"

"उजागिरदास तो माय-बाप ने रख दिया था। लेकिन जिस मालिक के यहाँ भैंस-गाय चराने के लिए मजदूरी होते थे वही उनको कुछ दिन बाद मार-पीटकर निकाल देता था। मेरे बाबूजी गाय-भैंस लेकर जाते थे और मालिक के ही हरे भरे खेत में छोड़कर सो जाते थे—मिहनत किया है लछमी ने बैठ के! मालिक लोग दूध-घी खा-खाकर जिस भैंस के दूध से मोटे हो गए हैं, इस उपजा में तो इनका भी हिस्सा है। खाओ लछमी! इसलिए लोगों ने उनका नाम उजाड़ दास रख दिया।"

मटबा अब पाँवा में दम मार आया है। अब देखना नाच जमाएगा छौड़ा आज।

बिरजाभि बिधा

आहे कुंज भवन से निकसल हो
आहे ठाढि रोकल बिरजारी!

"हाँ चोरी-चोरी घर से निकलकर कोठी के बागान में जाजापी रसलीला करने तो रोकेगा नहीं? अच्छा किया है। बिकटा अपने-आप बड़बड़ाता है।

मटुआ दोनों हाथ जोड़कर फन काढ़े मैहुअन साँप की तरह हिल्ल-डुल्ले कमर के सहारे बैठ रहा है। धरती पर बाँधनी पूरैन के पत्ते की तरह बिछी हुई है। मिनती करती है। हे रे! हे रे! वाह रे छौड़ा! नाम रख लिया चाँद का!

आहे, एकहि न-प-र बसू माधव हो
आहे जनि कर बटमा-मा-री!
आहे छोड़ू छाड़ू अनुपति बाँचर हो
हो माधव न-ब सारी।

"हाँ मैया! कोना-कनटरोल का जमाना है। कपड़ा नहीं मिलता है। जरा हाथियारी में!"

अरे भगवान हाथ अबल मरि हो!

"ओह बड़ी कुलमंती बनी है ! कछनछ किरिया खाये कुलमंती मोर मन नहि पतियाये ।" बिकटा बीच-बीच में टोकता रहता है ।

आजु परेम रस सय मोह हो
आहे पंच झाड़ू सटकारी !

"सब यही चुटैलक रे किसना ! माहि रे बाप !" बिकटा चिल्लाता है ।

आहे संग के सखि अनुमाइल हो
आहो कान्हा ह-म-हू एकसरि नारी !

"है रे ! है रे ! एकसरि नारि रे !"

अनहि विद्यापति गाओल हो सुनु कुलमंती नारी
हरि के संग किछु डर नाहि है ।

"हाँ हरि के संग काहे दोस होगा । जितना दोस हम सब लोगों के साथ । अपने जैसे रसलीला हमरे बेला में पंचायत का झाड़ू और जूता ।

क्या है ? क्या हुआ डाक्टर साहब का नैपड़ा नौकर आकर क्या बोलता है ? कमली दीदी ने कनफूल दे दिया ? रे ? वाह रे छौड़ा ! नाम किया ! जीओ रे चलित्तर ! जीओ !

बिकटा भी क्यों पीछे रहे ? वह भी आज 'पै-पै' कर देगा । साथ जमा है आज ! "अरे होय मालकजी ! हमारे दुख को देखने वाला सुनने वाला कोई नहीं ।"

"क्या हुआ ?

"लेकिन कहें कैसे ?" बिकटा तहसीलदार की ओर उँगली उठाकर डरने की मुद्रा बनाता है ।

"अरे ! हम समझ गए । तो कहो न भाई," तहसीलदार समझ जाते हैं । "दुनिया में सिर्फ हम ही एक तहसीलदार-पटवारी हैं ? बात तो तुम ठीक ही कहोगे । सुनते हैं डॉक्टर साहब अब यह तहसीलदार का बिकट करेगा ।

"मालकजी ! हमको धीरज बँधाने वाला कोई नहीं । सुनते हैं कि बगल उत्तर में सरकार बहादुर कोसी मैया को बाँध रहा है, लेकिन हमारे दिल को बाँधने वाला कोई नहीं !"

"अरे कहो भी तो !"

"अच्छा तो सुनो ! पचास साल पहले से सुरू करते हैं, सर्वे सिटलमेंट[1] साल से ।"

---

१ सर्वे सेटलमेंट ।

'सुनो ! सुनो ! बकर कोई नई बात बोड़ा है। यह भी बकसीस वसूल करेगा।

"बजाने कहो—शाकधिन-शाकधिन !"

अरे केना के बाँधबै रे धीरजा केना के बाँधबै रे,
अरे मुहूँ मेल पटवारी रे धीरजा केना के बाँधबै रे !

"सर्त बद होने लगा !"

दस हाथ के लम्बा बनैबके
पाँचे हाथ नपाई !

'पाँच हाथ पार ? हा हा हा !

बल्ली-कुची सेहो नपबकै
डीप-डाप सेहो नपबकै
बाट-बाट सेहो नपबकै
डबर-पोखर सेहो नपबकै ।

"तब ?"

हाथी बस मजबेसन बैठबकै
जम्मा भेलै माटी रे धीरजा के बाँधबै रे !

"इधर जमीदारी सिपाही ऊपर पर का कहू लसर का धीरा बकरी का पाठा और चार जोड़ा कबूतर सिरिफ तकबाना में ही साफ कर गया।

"तब ?"

चारो बेंच पटवारी के डेकिये
छोटा बेंच चौकीदारी ।
बाकी पोड़ेक सिआई बे रहलै
कहल' देखक मुपाई रे धिरजा ।

"आखिर

कहे कबीर सुनो भाई साधो
सब दिन कपी बेपारी
खँजड़ी बजाके गीत गबैछी
फटकनाथ धिरधारी रे धिरजा ।

ओ-हो-हा-हा सी-सी-सी 'हा-हा ! 'शामियाना फट जायगा। कबाब कर दिया साले ने। अलबत्त जोड़ा। वाह ! 'वाह रे लोकायतवाह !

डॉक्टर तहलीलदार से पूछता है "गीत तो विद्यापति का लगता है। किसी की रचना लिखने की है ?"

"आप भी डॉक्टर बाबू क्या पूछते हैं" तहसीलदार साहब हँसते हैं। "इनकी रचना के लिए भी कोई तुलसीदास और वाल्मीकि की जरूरत है? खेतों में काम करते हुए तुक पर तुक मिलाकर गढ़ लेता है।"

डॉक्टर साहब ने बिकटा को क्या दिया? पंचटकिया नोट? बाजी मार लिया बिकटा ने भी।

आहे परबस समाअम पहुसंग हे
बिरलापि बिरलापि!

मुसम्मात उसने के बाद नाच खतम हुआ। खूब जमा। अब खुलेगा अखाड़ा।

बिछावन पर लेट कर डॉक्टर सोचता है—कोमल पदों की पंक्तियाँ! अपभ्रंश शब्द भी कितने मधुर लगते हैं! 'पिया महुरे दूमरी के फूल रे पियवा महुरे। 'चाँद बयरि भेल बासव मलकी बयरि महाजाल तिरिया बयरि पुहु लोचन—दिखने के भेद बताएँ। 'भोमरा-भोंमरी 'रोई-रोई कजरा बहावल आमे तिमक बहि गेल। 'चान के उमयल देखल सखनि मे 'झट बोले गइली हम बाबा की पोखरिया 'पोखरि में चान केकि करे।

डॉक्टर सोचता है—विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था—'विद्यापति कवि के गान कहाँ है?" बहुत दिनों बाद मन में उमड़े हुए उस प्रश्न का जवाब दिया—जिन्दगी भर बेपानी खटने वाले अपढ़ मैथार और अर्धनग्नों ने कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में जिन्दगी के मधुरस बरसा रहे हैं। 'ओ कवि! तुम्हारी कविता ने मचलकर एक दिन कहा था—चलो कवि वनफूलों की ओर!

'वनफूलों की कलियाँ तुम्हारी राह देखती हैं।

सोलह

मुसम्मात दुलरी!

टसका कटपीस—एक थान।

छींट—डेढ़ थान।

मलेछिया साटिन—एक थान।

साड़ी—एक गट्ठा।

मामलेबाजी कपड़े की पूरी बाँट रहे हैं। रौतहट दीवान के हुसराज बच्च-

राज मरवाड़ी के यहाँ कपड़ा मिलेगा।

खेलावन यादव के दरवाजे पर आई होने को भी अवश्य नहीं। सुबह से पूर्जी बाँट रहे हैं, दोपहर हो गई। साड़ी नहीं है! नहीं? बालदेवजी! हमको एक साड़ी चौथ की मावे एकदम नमन हो गई है बालदेवजी!

बालदेवजी कहते हैं, "देखिए! मौजे-भर में सिरफ सात साड़ियाँ दी गई थीं। चार कर्दी हैं, वह तो मालिक लोगों के घर में पहनने की चीज है। चौदह रुपये जोड़ी। बाकी तीन साड़ियों को हमने इस तरह बाँट किया है, ऐसे लोगों को दिया है जो एकदम बेपरदे

"बेपरदे तो सारा गाँव है बालदेवजी!"

खेलावन यादव कहते हैं "इतने दिनों से जब कमलदी बाबू पूर्जी बाँटते थे उस समय गाँव की औरतें बेपरदे और नमन नहीं थी क्या? भाई, जितना है उसी में इलाहाज से बाँट-बखरा कर लो।

कालीचरण सिद्ध कर रहा है पूर्जी पर दो बज्र डीट और सिख दीजिए हरमुनियाँ का खोल बनवाएँगे। बालदेवजी नहीं मानते। आदमी के पहनने के लिए कपड़ा नहीं हरमुनियाँ-खोलक को चपकन सिलाकर पहनावेगा? देखो तो भला!

बालदेवजी का रहा चलना मुश्किल हो गया है। कपड़ा की बेमबरी किसी है कि बलावे है! दिसा-मैदान जाते समय भी लोग पीछा नहीं छोड़ते हैं। आपहिन्द बालदेवजी! आवे के तो आपके ही पास। दुलारी का गौना है। अच्छा-अच्छा चलिए, हम दिसा से आते हैं। कपड़ा अब कहाँ है? रिजरव[1] में भी नहीं है। सिरिफ कफन और बराब का कपड़ा है। उसी में से? कैसे देवे? कफन और बराब का कपड़ा गौना में?

बालदेवजी को क्या मालूम कि दुलारी का गौना पाँच साल पहले हो चुका है और उसके तीन बच्चे भी हैं।

लछमी दासिन ने रामदास को भेजा था "आचारजजी आ रहे हैं। आपको तो आजकल छुट्टी ही नहीं रहती है। उपर जाते भी नहीं। कंठी लेने की बात हुई थी? तो आपकी क्या राय है? आचारजजी आ रहे हैं। आदर-दीक्षा के लिए आदर के अलावे पूजा-बिदाई के लिए भी एक जोड़ी धोती चाहिए—बिना कोर की महीन मारकीन की या मलकिलाठ की धोती। और कौशलिया को भी कपड़ा नहीं है।"

---

१ रिजर्व।

बड़ी मुश्किल है ! रिपरब में थोड़ा कपड़ा है सो शादी-बिहा और सराध के लिए। कैसे दिया जाय ? अो ! आचारजजी महंथ साहेब के सराध में ही आये हैं। तब ठीक है। 'सिरिमती' नहीं सिरिमती नहीं। बासिन अछमी कोठारिन —मनकिलाठ दस गज ! फैन मारकीन दस गज। चहर, एक !

रामदास याद दिला देता है, "संघोटा-कोपीन के लिए भी एक गज।

बड़ी मुश्किल है ! बालदेवजी को अब रोज दस-पंद्रह बार से ज्यादे झूठ बोलना पड़ता है। क्या किया जाय ? बड़ा संकट का काम है। 'इधर बिसा कांग्रेस की मिटिंग भी है। मेनिस्टर साहब आ रहे हैं। गाँव से झंडा-पताखा और जत्था भी के जाना होगा। बिसा सिक्रेटरी गंगुलीजी ने चिट्ठी दी है। परचा भी आया है।

चलो ! चलो ! पुरैनियाँ चलो ! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं। औरत-मर्द बाल-बच्चा झंडा-पताखा और मुनकिसान जिन्दाबाद करते हुए पुरैनियाँ चलो !

'रेलगाड़ी का टिकस ? कैसा बेकूफ है ! मेनिस्टर साहब आ रहे हैं और गाड़ी में टिकस लगेगा ? बालदेवजी बोले हैं मेनिस्टर साहब से कहना होगा कोटा में बहुत कम कपड़ा मिलता है। 'चलो-चलो पुरैनियाँ चलो। मुरकना उपते ही कालीथान के पास जमा होकर जुलूस बनाकर चलो !

'बोलिए एक बार—काली माय की जय !"

"जय ! जय !"

"बोलिए एक बार परेम से—जयी महतमा की जै !"

"जय ! जय !"

फरर र र र, पेड़ पर घोंसलों में सोये हुए पक्षी पंख फड़फड़ाकर उड़े। कालीचरन कहता है यदि मुनेश्वा रहता तो अँधेरे में भी अभी एक-दो हरिजन को मारकर गिरा देते। वासुदेव कहता है—चुप रहो। बालदेवजी ने नहीं सुना नहीं तो अभी फिर अनसन।

विनती करो। कितनी औरत कितने मरद ? अभी बच्चों को मत लो झंझट होगा। कालीचरन और दूबर सबों का देह छू-छूकर गिनते हैं। कालीचरन कहता है—पाँच कोरी चार औरत। दूबर हिसाब करता है—चार कोरी दस मरद। 'मातबर लोग काहे जायेगा ? मातबर लोग तो हमेशा मवारी करते हैं। 'बालदेवजी ने आज फिर एक नई बात कही—गद्दारी ! गद्दार ! मवारी ?

जुलूस में जाने के लिए बालदेवजी को दो ही मील जाना है। एक भीमक फागुन के समय का सीखा हुआ—'आओ वीरो मरद बनो अब जेहल तुम्हें मरना

होगा। दूसरा विवाहित मोमेंट के समय जेहल में सुना था—'जिन्दगी है किरानी की किरानी में लुटाये जा'। लेकिन यह तो सोशलिस्ट पार्टी वाला गाता है। पुराना ही ठीक है—आओ वीरो मरद बनो ! आज बालदेव जी खुद आये हैं सुमरा भी मीत का आदर करता है

तंत्रिमाटोली के मंगसू तसमा को कँपकँपी छप आती है। जेहल ! अरे बाप ! ये लोग जेहल से आ रहे हैं। पन्द्रह साल पहले उसको चोरी के केस में सजा हुई थी। जेल के जमादार की पेटी की मार वह आज भी नहीं भूला है। चार हौदा[1] पानी रोज भरना पड़ता था। नहीं ! वह पेशाब करने के बहाने पीछे रह जाता है और नजर बचा कर घर की ओर भागता है। सब पचला क्या है !

सहर पुरैनियाँ ! यही है सहर पुरैनियाँ—पक्की सड़क हवागाड़ी घोड़ागाड़ी और पक्का मकान ! 'एक रत्ती चिनगी चिनगक जाये सहर पुरैनियाँ भूटक जाये ? क्या है बोलो तो ? 'आग ! गाँव के बच्चे आज भी बुझौवल बुझाते समय सहर पुरैनियाँ का नाम लेते हैं। मेरीगंज के इस जुलूस में चार आदमी ऐसे भी हैं जो सहर पुरैनियाँ पहले भी आये हैं। बहुत तो आज ही पहली बार रेलगाड़ी पर चढ़े हैं। कलेजा धकधक करता है। जिसके हाथ में बन्दी महतमा का झण्डा रहता है उससे बाट बाबू चिकिहर बाबू, टिकस नहीं माँगता है। सचमुच में रेलगाड़ी 'जै जै काली दो दो पैसा' कहते हुए दौड़ती है ! जै जै काली ? यही है कालीपुल। बालदेवजी दिखलाते हैं—यही कालीपुल है। पुल बाँधने के समय पाँच आदमी की बलि दी गई थी। बाप रे ! पाँच ? जै काली ! गौमर फागुन के समय इसी पुल के नीचे पुलिस के सिपाहियों ने आड़े की रात में मोकटिदरों को आकर, पानी में जिला-भिजाकर पीटा था। पानी में डुबा देता था सिर को हाथ से दोबे रहता था। दम फूलने लगता था नाक में पानी चला जाता था। यह है इसपिताल। अपने गाँव का इसपिताल तो इसके सामने बुधरू[2] है। जेहल ? यही जेहल ? जेहल नहीं ससुराल यार हम बिहा करने को आयेंगे आओ वीरो जेहल मरो। पुलिया पुरैनियाँ टीसन से ही कुछ दूर रही है खलासीजी तो काला कुरता पहनते हैं। यह है कचहरी। यही कर-कचहरी में लोग घर-मुकदमा करने के लिए आते हैं ! इसी तरह उपसर्ग लगाकर सब बोलते हैं—कर-कचहरी घर-खजाना घर मजमिल घर कटहट, घर चुमौना घर-जमीन घर-पंचायत घर-फौजदारी घर-बरात घर-मुकदमा या घर-महाजन !

---

१ हौज। २ बरबा।

शहर के लोग भी अचरज से इस जलसे को देख रहे हैं। इनकिलाब जिन्दाबाद ! कचहरी के मोड़ पर, पान की दूकान पर बैठे हुए मौलवी साहब हँसते हैं—"सब कपड़ा लेने आये हैं ! आओ-आओ मिलेगा कपड़ा। इनकिलाब बोलता है। मतलब भी समझता है या ।"

झण्डा ? बड़ा झण्डा आसमान में फहरा रहा है यही है रामकिसुन आश्रम। ऐ। यहाँ सब कोई खड़े हो आओ। कपड़ा ठिकाने से पहन लो। उस कल के पास आकर मुँह धो लो। डरते हो काहे ? बालदेवजी हैं। यहाँ से तितरबितरी होकर चलना होगा। बालदेवजी सबसे आगे रहेंगे। सबसे पहले कालीचरन नारा लगायेगा —इनकिलाब तब तुम लोग एक साथ कहना—जिन्दाबाद। वैसे घबड़ा जाता है। कालीचरन कहेगा—अंग्रेजी राज तुम लोग कहना—नाश हो। लगाओ नारा कालीचरन ! कालीचरन छाती का जोर लगाकर चिल्लाता है—"इनकिलाब !"

"नाश हो जिन्दा नाश !"

"ऐ ! ठहरो नहीं हुआ।"

विश्वनाथ चौधरीजी पंचायतीजी संथालजी साथ बाबू, सभी आश्चर्य से देखते हैं। चौधरीजी बालदेव पर बड़े खुश हैं। साथ बाबू कहते हैं ऐसे ही सभी वर्कर अपने एरिया में वर्क करें तब तो ? दो महीने में इतने गाँव को अकेले ही आरगेनाइज कर लिया है। वर्किंग मेम्बर कितना बनाया है ? पाँच सौ ? तब तो तुम आप जिला कमिटी के मेम्बर हो गए। पंचायतीजी तो बालदेव को पहले से ही आप कहते हैं अब साथ बाबू भी आप कहते हैं।

चौधरीजी कहते हैं 'अरे बालदेव चरखा सेक्टर खुलवाओ। रचनात्मक काम कुछ होता है या नहीं ?"

खादी भंडार वाले शशीम बाबू कहते हैं, "खादी भंडार में खाँटी धाव का भी भेजो देहात से बालदेव !"

सचमुच बालदेवजी गियानी आदमी है बड़े आदमी हैं। जिस तीड़ीवाली चौकी पर बाबू खबआन खाव टोपी पहनकर बैठे हैं, उसी पर बालदेवजी भी बैठे हैं। अरे, यह कौन है ? बौना ? डेढ़ हाथ का आदमी ! देखने में चार साल के लड़के जैसा लगता है। दाढ़ी-मूँछ देखो ! आवाज कितनी भारी है ! भुपुलका[1] में तो सबों की बोली भारी मालूम होती है। किसी की बात समझ में नहीं आती है। न जाने कौन देश की बोली बोलता है—हिन्दुस्तान आजादी और गांधीजी

---

१ लाउड-स्पीकर का ऑपा।

को छोड़कर और कोई बात नहीं बूझी जाती है। 'ताली काहे बजाया ? बस खेला खतम ? मेनिस्टर साहेब कहाँ हैं ? कौन ? वही दुबला-पतला बड़ी-बड़ी मोंछ वाला आदमी ? बोलता था एकदम परेम से 'आस्ते-आस्ते। माथा की टोपी भी सम्हड़-सम्हड़। उस बार गाँव में दारोगा साहेब आये थे हैजा था ? सारे देह में चमोटी लपेटा हुआ था। मेनिस्टर साहब ऐसे ही हैं ? यह कैसा हाकिम !

कालीचरण कहता है, "मेनिस्टर साहब नहीं यह रविश्वर बाबू थे। सुराजी कीर्तन में रोज सुनते हो नहीं 'देसवा के खातिर मजकलहक भइले फकीरवा हो दीन भेलै रविश्वर परसाद देसवासियो ! 'देस के खातिर अपना सब हक हिस्सा, जमीन-जमीन माल मवेशी बेंचाकर फकीर हो गए। 'आहा-हा !

हूँ ! आजकल मेनिस्टर से भी ज्यादे खातिर वाला आदमी है। ठीक है होगा नहीं ? देस के खातिर अपना मजकलहक खाने बिलकुल हक खतम कर दिया।

चौधरीजी ने बालदेवजी को दस रुपैया का नोट दिया है—"सबों को जल-पान करा देना।

जै जै ! चलो ! चलो !

कालीचरण कहाँ है ? बालुदेव भी नहीं है। नहीं नहीं कौन्से समय सारा कहाने की जरूरत नहीं। लेकिन कालीचरण और बालुदेव कहाँ रह गए ? भीड़ में से किसी ने कहा—वे दोनों एक पैजामा वाला सुराजी बाबू के साथ न जाने कहाँ जा रहे थे। बोला कल जरूरे। 'पैजामा वाला सुराजी बाबू ? लेकिन बिना पूछे क्यों गया ? सहर वाली बात है। बालदेवजी कालीचरण पर आजकल खुश नहीं कालीचरण भी आजकल बालदेवजी से अलग-अलग रहता है।

"कालीचरण नहीं कॉमरेड कालीचरण। कॉमरेड माने साथी। हम सभी साथी आप भी साथी। यहाँ कोई सीनियर नहीं। सभी सीनियर, सभी साथी हैं। अच्छा कॉमरेड आपके गाँव में सबसे ज्यादे किस जाति के लोग हैं ? 'यादव ! ठीक है। भूमिहार ? 'एक घर भी नहीं ? खूब ! जलूस में जितने आदमी थे सब क्या बालदेवजी से प्रभावित हैं ? माने इन्फ्लुएंस्ड कोलोअर, यानी आँख मूँदकर विश्वास करने वाले तो नहीं ? अन्ध-भक्त तो नहीं ?"

"जी अपना बल तो महंथ सेवादास था सो मर गया। उसकी कोन्हारिन सती ।"

" ठीक है। अच्छी बात। आज साथी बातें समझ गये न ? कैसरी

की जिल्द से बाइए। कुछ फिटजेरल्ड दे दीजिए इनको राजबल्ली। अरे कॉमरेड सैनिकजी को इधर भेज दीजिएगा। 'ये हैं कॉमरेड रंगाप्रसादसिंह यादव सैनिकजी और बाप लोग हैं कॉमरेड कालीचरण और 'क्या नाम? हाँ वासुदेवजी। आज मेरीगंज से रामहरूम आश्रम में जो जुलूस आया था इन्हीं लोगों की सरदारत में। पार्टी प्लेज पर साइन कर दिया है। मेरीगंज में सबसे ज्यादे यादवों की आबादी है। यहाँ आपका जाना ही ठीक होगा। यहाँ आर्गेनाइज करने में कोई दिक्कत नहीं होगा। 'यही बस वासुदेव है एक। 'अच्छा कॉमरेड कालीचरण! आपको और भी कुछ पूछना है? सोशलिस्ट पार्टी के जिला-मन्त्रीजी पूछते हैं।

"जी यदि हम कोई काम करने जायँ इस पब्लिक की भलाई का काम और उसको कोई 'हिंसावाद' कहकर रोके तो हम क्या करेंगे?" कालीचरण को बस यही पूछना है।

जिला-मन्त्रीजी कुछ सोचने लगते हैं। लेकिन कॉमरेड राजबल्लीजी को कुछ सोचने में समय नहीं लगता बस तुतलाने में कुछ देरी लगे तो लगे—"अ-अ-अरे! काम-काम-रेड उससे साफ स-स-साफ-साफों में कह दीजिए कि फो-फो-फो-फो ट्वेन्टी-टी-टू के मुमवेंट में अहिंसा के भरोसे रहते तो आ-आ-आ-आ-आजादी नहीं होती। उससे साफ साफ-साफ-साफों में कह दीजिए कि तुम रि-रि-रि-ऐक्शनरी हो! डि-डि-डि-डिम-डिमोरलाइज्ड हो। यह के जाइए, 'आ-आ-आ-आपके आपजेक्टिव ए ए ह उत्पादक भौतिकवाद' 'स-स-समाजवादी ही क्यों' दो किताबें। इसमें सब-कुछ लिखा हुआ है। 'लाल प-प-पताका' की एक कापी ले जाइए! इसका ग्राह-ग्राह-ग्रा-ह-ग्राहक बनाइए। लाल झण्डा के लिखा है न?"

लाल झण्डा!

उठ मेहनतकश जब होश में आ
हाथ में झण्डा लाल उठा
जुल्म का सामोलिधान मिटा
उठ हाथ में ला बेदार हो जा!

कॉमरेड कालीचरन और कॉमरेड वासुदेव! सुसज्जित पार्टी। रास्ते में कालीचरन वासुदेव को समझाता है, 'यही पार्टी असल पार्टी है। बरस पार्टी है। 'किरान्तीदल' का नाम नहीं सुना था? 'बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंह यह गाना नहीं सुने हो? यही पार्टी है। इसमें कोई डीटर नहीं। सभी साथी है, सभी लीडर है। सुना नहीं! हिंसावाद तो बुरबुआ लोग

"अरे सूअर के बच्चे तुं यहाँ खड़ा होकर क्या करता है ?" 'खट् खटाक् ! लछमी बस्ती से किवाड़ बन्द कर लेती है।

"अच्छा कल देखना तुझ बाल पकड़ मठ से घसीटकर नहीं निकाला तो कसम बुद्ध भगवान्‌की !"

महंथिनबहास एकान्त में एक बार लछमी से कहना चाहता है, 'तुम घबड़ाओ मत लछमी ! सहज तो मैं ही बनूँगा। तुम मठ में ही रहोगी। तुमको मठ से कोई निकाल नहीं सकता। तुम निराश मत होओ ! लेकिन मौका ही नहीं मिलता है। सायद सुबह ही लछमी कहीं चली न जाय।

आचारज बुद्ध के जमाने अधिकारी को भी रात-भर नींद नहीं आई, "दुर्दैवी जिंदा में कब्रस्तान के नीचे भी घुसकर तमुरे मच्छर काटे हैं हो।

सुबह को लछमी बालदेवजी के पास आती है। बालदेवजी कुरजी बाँध रहे थे। सारी बात सुनकर बोले कोठारिनजी आचारज बुद्ध तो सभी मठ के नेता हैं। वे जो करेंगे वही होगा। इसमें हम लोग क्या कर सकते हैं? बड़ा धरमसंकट है ! किसी के धरम में लात घुसाना अच्छा नहीं है। तीसर पहर ठीक होगा ? हम आवेंगे।"

लछमी दासिन को बालदेवजी पर पूरा भरोसा था। तहसीलदार साहब घर में नहीं हैं। डॉक्टर साहब घर-पंचायत में नहीं आते हैं। सिवजी सुनकर चुप हो गए। खेलावनजी ने बालदेवजी पर ही बात फेंक दी—आने बालदेव ! सतबुद्ध हो ! कोई उपाय नहीं।

"साहेब बन्दगी कोठारिनजी !

कौन ! कालीचरन बहुआ ! क्या सतबुद्ध क !"

"हाँ ठीक कब होगा ? कीरतन नहीं करवाइएगा ?"

लछमी दासिन कालीचरन को रो-रोकर सुनाती है, 'काली बाबू ! ऐसी खराब-खराब गाली ! उफ ! सतबुद्ध हो ! मैं अब कहाँ जाऊँगी ? कौन सहारा है मेरा ?

"अच्छी बात ! आप कोई चिन्ता मत कीजिए। बालदेवजी क्या करेंगे वह तो बुरबुआ है। खट्ट मत।

लछमी देखती है कालीचरन को उस बार परयागजी के आदमियों ने जो मूर्ति देखी थी ठीक वही।

घर पर सभी साधु-सती बाबू-बबुआन दान-मेलजाल गामियान में हैं। कलमिपत्तान में सिर्फ दो औरतें छिपकर रही हैं। अखरौटी मुँह को भी मुखड़ा दिखा है। मालुमी की माता के बहन है—मांडवकरन। सुमेर बलमदर की अ

लँगोटी और कोपीन देह पर चादर नहीं है। चादर तो आचारज गुरु देंगे। आचारज गुरु का मुन्शी एकरारनामा और मुरुहाल लिख रहा है। लक्ष्मी एक किनारे चुपचाप बैठी है जमीन पर। रामदास के सारे देह में हल्दी-चूना लगा है। बालदेवजी को लक्ष्मी पर बड़ी दया आ रही है। लेकिन क्या किया जाय!

"सभी साधु-सती सेवक-सेवकान सुन लीजिए!" आचारजजी का मुन्शी दखीम पढ़ता है। "लिखितं लरसिंघदास चेले मोहरबनदास मोहका जात बैरागी फिरके । अब आप लोग इस पर दस्तखत कर दीजिए। लक्ष्मी फूट-फूट कर रो पड़ती है। सतगुरु हो।

"तैं चुप रह हरामजादी! चुप रहती है या लगाऊँ डंडा! मामा बाबा चिल्लाते हैं। "तैं चुप!"

जो दस्तखत करना जानते हैं दस्तखत कर रहे हैं। बालदेवजी ने भी दस्तखत कर दिया। उनका हाथ जरा भी नहीं काँपा। कालीचरण दखीम हाथ में लेकर उठता है—"आचारजजी! आप कहते हैं महंथ सेवादास बिना चेला के मरा है। आप क्या गाँव के सभी लोगों को उल्लू ही समझते हैं?"

"कालीचरण!" बालदेवजी मना करते हैं 'बैठ जाओ।"

"कालीचरण!" खेलावन यादव डाँटते हैं।

लेकिन कालीचरण आज नहीं रुकेगा। कोई हिताबाद कहे या अनशन करे! वह भी भाषण दे सकता है।

" हम जानते हैं और अच्छी तरह जानते हैं कि रामदास इस मठ का चेला है महंथ सेवादास का चेला है। उसको महंथी की टीका न देकर, आप एक लम्बरी बदमास को महंथ बना रहे हैं। मठ में हम लोगों के बाप-दादे ने जमीन दान दी है यह किसीकी बपौती संपत्ति नहीं ।

"तेरी जात को मच्छड़ काटे चुप साले! कुत्ते के बच्चे! अभी कुल्हाड़े से तेरा ! तेरी माँ को ।

"चुप रह बदमास!" कॉमरेड बालुरेब उछलकर खड़ा होता है।

'पकड़ो सैतान को! कॉमरेड सुन्दर चिल्लाता है।

"भागने न पावे!

"मारो!"

ले-ले! पकड़-पकड़! मार-मार, हो-हो! रुको ऐ बालुरेब! ऐ सुन्दर! ऐ!

मामा बाबा दाढ़ी छुड़ाते हैं, जटा छुड़ाते हैं थप्पड़ों की मार से आँखों के

आगे चुपचाप उड़ते मजर आ रहे हैं। गाँजे का नशा उतर गया है। आखिर दाढ़ी और जटा नोंचवाकर, कुश्ताड़ा छोड़कर ही भागते हैं। पकड़ो पकड़ो! छोड़ दो छोड़ दो! अब मत मारो! नामा बाबा आगे आ रहे हैं। मजबूत लगाया हुआ लंबा-चौड़ा शरीर, बिखरी हुई जटा! दौड़ते समय उनकी मूरत और भी भयावनी मालूम होती है। गाँव के कुत्ते पागल हो जाते हैं। भौ! भौ! नामा बाबा के पीछे दर्जनों गँवार कुत्ते दौड़ रहे हैं। अधिकारी महंथ सरसिंघदास तो चार घंटे में ही चें बोल जाते हैं—"नहीं लेंगे महंथी छोड़ दीजिए हमको!"

"छोड़ दो! छोड़ दो! कालीचरन हुक्म देता है। सरसिंघदास भी भागते हैं।

पंचों को मकवा मार गया है साधुओं की हालत खराब है। पंचों के मुँह पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। और सबों के बीच कालीचरन हाथ में दतौन लेकर सिकंदरशाह बादशाह की तरह खड़ा है। पलक मारते ही क्या-से-क्या हो गया! जैसे रामलीला का बनुसजग हो गया।

"अब आचारजजी आपसे हम अरज करते हैं कि मुरलीधर पर रामदासजी का नाम चढ़ाकर महंथी का टीका दे दीजिए।

आचारज सब काँपते हुए कहते हैं "बे-बचा! हम तो सतगुरु की दया से हमको तो लोगों ने कहा कि मेवादास को कोई चेला ही नहीं था। अब रामदास उसका चेला है तो वही महंथ होगा। मलगीजी लिखिए मुरलीधर! मैं आपका पादर, यही का बरतन!

रामदास नहा-धोकर, देह में हल्दी चूने के साथ को छटा आया है। नयी का टीका कपाल पर पड़ते ही सारे देह की अपूब निकल गई। सतगुरु हो! सतगुरु हो!

पूजा-बिदाई लिये बिना ही आचारजजी आसन छोड़ रहे हैं। पंचायत के साथ भी चुपचाप अपने अपने घर की ओर वापस होते हैं। लछमी हाथ में पूजा-बिदाई की थाली लेकर खड़ी है— बचुप हो प्रभु! खामि का अपराध छिमा करो प्रभु!

"खामी बाबू!

बावनदासजी उधरकर देखते हैं। लछमी कालीचरन को बचाकर अन्दर ले आ रही है। कालीचरन ने अन्याय किया है पाप अन्याय किया है विश्वासघात किया है। इस पाप का दिन रात अनुताप करना पड़ेगा।

सेवादासजी जाति बिरादरी की पंचायत बटोरकर सब बदमाशों का ठीक करेंगे। हे भगवान! साधुओं के शरीर पर हाथ उठाना!

'काली बाबू तुम देवता हो।

कालीचरण कुश्ती लड़ता है। उस्ताद ने कहा है "कुश्ती लड़ने वालों को औरतों से पाँच हाथ दूर रहना चाहिए। वह पाँच हाथ से ज्यादे दूरी पर खड़ा है।

अट्ठारह

"क्या नाम ?

'सनिच्चर महतो।"

"कितने दिनों से खाँसी होती है ? कोई दवा खाते थे या नहीं ? क्या थूक से खून आता है ? कब से ? कभी-कभी ? हूँ ! एक साफ़ शिशी में रात-भर का थूक जमा करके ले आना। उधर जाओ। जोर से साँस लो। एक-दो-तीन बोलो। जोर से। हाँ ठीक है।

"क्या नाम ?"

"डासू सोरेन।

पेट देखें ! हूँ ! तिल्ली है। सूई लगेगी। सूई के दिन पुरवी लेकर आना। कम खून देने के लिए सुबह ही आ जाना। समझे !"

"क्या नाम ?"

निरमला।

"डागदर बाबू !" एक बूढ़ा हाथ जोड़कर आगे बढ़ आता है। गिड़गिड़ाता है—"हमारी बेटी है। आज से करीब एक साल पहले भोंमरा ने एक आँख में ढोंटा मारा। इसके बाद दोनों आँखें आ गईं। बहुत किस्म की जड़ी-बूटी दवा करवाये लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अब तो एकदम नहीं सूझता।"

बला की खूबसूरत है यह निरमला। धूप की तरह रंग है चेहरे का। विशुद्ध सिंदूरिया की सुन्दरता। मौरे ने मस्ती नहीं की थी। आँख देखें ! और आप बढ़ आइए। आह ! एक क्रूर आईडोन के बमेर दो सुन्दर आँखें सदा के लिए ज्योतिहीन हो गईं। अब तो इलाज से परे है।

डॉक्टर ने आँखों की पपनियाँ उलटकर रोशनी की हल्की रेखा भी खोजने की चेष्टा की। ऊँहूँ ! पुतलियाँ कफन की तरह सफ़ेद हो गई हैं। वह सोचता है यदि दुनिया में इन पुतलियों में रंग भरा जा सकता ! हो कोई विधाता ही

अब इन आँखों को सुन्दर बना सकता है, ज्योति दे सकता है।

"डाक्टर बाबू! रोहिणी कहती है। आवाज में कितनी मिठास है! बहुत नाम सुनकर आई हूँ। बहुत उम्मीद लेकर आई हूँ बाईस कोस से। भगवान आपको यश दें!

प्रकाश दो! प्रकाश दो! अँधेरे में घुटता हुआ प्राणी छटपटा रहा है आत्मा विकल है—रोशनी दो! डॉक्टर क्या करे? डॉक्टर को भावुक नहीं होना चाहिए।

"घबराइए नहीं दवा दे रहा हूँ। यहाँ ठीक नहीं होगा तो पटना जाना पड़ेगा।"

हाँ दूसरा रोगी! क्या नाम है?

"रामचरित्तर साह।"

"क्या होता है?"

"जी! कुछ खाते ही कै हो जाता है। पानी भी

"कब से?"

"सात दिन से।

"अरे! सात दिन! जरा इधर आओ।"

"जी? बेमारी तो घर पर है।

"घर कहाँ?"

"जी सरसौनी बिजलिया। यहाँ से कोस बीस है।

हठात् सभी रोगी एक बार छूट जाते हैं, पूँगार जानवर को देखकर जिस तरह पाल-बैलों का झुण्ड भड़क उठता है सभी के चेहरे का रंग उतर जाता है। औरतें अपने बच्चे को आँचल में छिपा लेती हैं। सब की डरी हुई निगाहें एक ही ओर लगी हुई हैं।

डॉक्टर उठकर देखता है—एक अधेड़ स्त्री। भैंस महिषा!

"कहिए क्या है?

"डाक्टर बाबू! यह मरा माली है बस यही एक माली! मेरी आँखों का जोत है यह। एक साप से पानाल के साथ खून आता है। इसको बचा दीजिए डाक्टर बाबू! यह नहीं बचेगा।

"घबराइए नहीं। इधर आओ तो बाबू! क्या नाम है? गनेस! वाह! जरा पेट दिखलाए तो गनेशजी!

बलदा की मादी दवा लेकर चली जाती है। गणिया का मुंह फिर डोर के सहारे का घेर लेता है।

बिचाय की माँ कहती है, "पारबती की माँ थी। डाइन है! तीन कुल में एक को भी नहीं छोड़ा। सबको खा गई। पहले भतार को इसने बाद देवर, देवरानी बेटा-बेटी सबको खा गई। अब एक नाती है उसको भी चबा रही है।"

बिचाय की माँ ने ऐसा मुँह बनाया मानो वह भी कुछ चबा रही हो। डॉक्टर बिचाय की माँ को देखता है। काली मोटी मर्दी और झपड़ालू यह बुढ़िया बिचाय की माँ जो बेवजह बकती रहती है चिल्लाती रहती है।

'यह डाइन नहीं? सुमरितदास उस दिन कहता था— 'बिचाय की माये तो अनाथा डागदर है। पाँच महीने के पेट को भी इस सफाई से गिरा देती है कि किसी को कुछ मालूम भी नहीं होता। यह डाइन नहीं और मनेश्वर की नानी डाइन है? आश्चर्य!

'मनेश्वर की नानी! बुढ़ापे में भी जिसकी सुन्दरता नष्ट नहीं हुई, जिसके चेहरे की झुर्रियों ने एक नई खूबसूरती ला दी। सिर के सफेद बालों के घुँघराले लट! होठों की लाली ज्यों-की-त्यों है। ठुड्डी में एक छोटा-सा गड्ढा है और नाक के बगल से एक रेखा निकल नीचे ठुड्डी को छू रही है। सुन्दर दन्त-पंक्तियाँ!

जवानी की सुन्दरता आग लगाती है, और बुढ़ापे की सुन्दरता स्नेह बरसाती है। लेकिन लोग इसे डाइन कहते हैं। आश्चर्य!

"कहाँ रहती है?"

"इसी गाँव में। कालीचरण का घर देखा है न! उसी के पास। बैस बनिया है। कितना ओझा-गुनी थक गया इसको बस नहीं कर सका। जितिया परब[1] की रात में कितनी बार लोगों ने इसको कोठी के जंगल के पास बोदी में बच्चा देकर, नंगा नाचते देखा है। बैजू भैंसवार ने एक बार पकड़ने की कोशिश की थी। ऐसा झरका बान[2] मारा कि बैजू के सारे देह में फफोले निकल आए। दूसरे ही दिन बैजू मर गया।

रोज रात में डॉक्टर केस-हिस्ट्री लिखने बैठता है। अभी उसके हाथ में कालाजार के पचास ऐसे रोगी हैं, जिनके लक्षण कालाजार के निदान को गलत साबित हो सकते हैं।

एक (क) मेवी मण्डल उम्र १८, हिन्दू (मई) गाँव मेरीगंज पोलिया टोली। दाहिनी दाँत और मसूड़े में दर्द। दबाने के समय खून निकलना। मुँह महकना। देह में प्रोटीन भोजन की कमी। बुखार नहीं। निदान पायोरिया। दवा कारबोमिक की गुल्ली। विटामिन सी का इंजेक्शन।

---

१ जीतपर्वणी। २ अग्निबाण।

(ख) पखाना बन्द होने के बाद शाम को सिर दर्द की शिकायत। बुखार ९९. रात में पसीना। कैलसियम पाउडर।

(ग) पाँच दिन के बाद पेट खराब हो गया है। बुखार १००। कामिनेन्टिक मिक्सचर। कालाजाजार के लिए खून लिया गया।

(घ) फ्लोकुलेशन टेस्ट का फल (++) कालाजाजार! चिकित्सा नियोस्टबोसन का इन्जक्शन।

दो (क) तेरही उम्र १७ हिन्दू (औरत) बाँध पासवानटोली मेरीबंध।

शरीफ हड्डियों के इर्द गिर्द में दर्द। कभी-कभी नाक से खून गिरता है। बुखार नहीं। (थर्मामीटर से देखा ९९.५)। मूत्र नहीं। रोग अनुमान सोलिया साठ।

दवा विटामिन बी का इंजेक्शन। मांसिध का तेल। डब्ल्यू० आर० के लिए खून लिया।

(ख) डब्ल्यू आर० (गरमी) (—) गरमी नहीं।

(ग) एक सप्ताह बाद नाक से खून गिरा। पेट खराब हुआ। कालाजाजार के लिए खून लिया।

(घ) अल्डेहाइड टेस्ट का फल नलैहाइडक। फिर खून लिया।

(ङ) ब्रह्मचारी-टेस्ट का फल (+)

चिकित्सा—यूरिया स्टिबामाइन (ब्रह्मचारी)।

तीन (क) रामेश्वर का बच्चा उम्र २ महीने। नाभी में पाक। दूध पीता है दूध फेंकता है। माँ को कैलसियम पाउडर।

(ख) एक सप्ताह बाद सारे देह में चकत्ते। अनुमान एकजिमा।

(ग) चार दिन के बाद चकत्तों में पानी भर गया है। डब्ल्यू० आर० के लिए माँ का खून लिया। फल (—) नहीं।

(घ) कालाजाजार के लिए माँ का खून लिया। फल (—) नहीं। कालाजाजार के लिए बच्चे का खून लिया। फल (+++) कालाजाजार।

और इस बच्चे की यदि मृत्यु हुई तो जरूर किसी डाक्टर के मत्थे दोष मढ़ा जायगा। देह में फफोले! मलेरिया की नाभी पर ही संदेह किया जायगा। मलेरिया की नाभी! न जाने क्यों कह मलेरिया की नाभी में कोई प्यारा-सा सम्बन्ध जोड़ने के लिए बेचैन हो गया है। कमली कहती है "मौसी! मौसी न बहुत गुस है। मीठा न बड़ी अच्छी चीज बनाती है—रसगुल्ला खाने पर। बमीता कितना सुन्दर कपड़ा है पर्व-त्योहार और शादी-ब्याह में दीवार पर कितना सुन्दर चित्र

बनाती है—कमल के फूल पत्ते और मयूर ! ओह कितना सुन्दर पूरबी है !
वह भी उस मौसी कहेगा ।

"मौसी !"

'कौन ?

"मैं हूँ । डॉक्टर । गनेश कहाँ है ?"

'डाक्टर बाबू ! आप ? आइए बैठिए । गनेश सो रहा है । मैं तो अकचका गई किसन मौसी कहकर पुकारा ! बूढ़ी की आँख छलछला आती है ।

मौसी ! सुना है तुम एक खास किस्म का हलवा बनाती हो ? मौसी हँस पड़ती है 'मरे दुर ! किसने कहा तुमसे ? पगली कमली ने कहा होगा जरूर ।

कमली कैसी है अब ? इधर तो बहुत दिन से आई ही नहीं है । पहले तो रोज आती थी ।"

"अच्छी है । अच्छी हो जायगी । मौसी ! एक बात पूछूँ ? तुम्हारी कोई बहन माँ बेटी या और कोई महरमा इलाके में हनुमानगंज के पास कभी रहती थी ? डॉक्टर अपने बेतुके सवाल पर खुद हँसता है ।

महरमा इलाके में हनुमानगंज के पास ? रहो याद करने दो । नहीं तो ? क्यों क्या बात है ?

"यों ही पूछता हूँ । ठीक तुम्हारे ही उमर की एक मौसी यहाँ थी है ।" बात को बदलते हुए डॉक्टर कहता है "मुझे एक फूल की डाली दो न मौसी !

उफ ? मजबूत दाहन है यह बढ़िया । इसी मुस्कराहट में जादू है । स्नेह की बरखा करती है । ऐसी आकर्षक मुस्कराहट ?

गनेश बड़ा भोला-भाला लड़का है ? बड़ा खूबसूरत ? गोरा रंग लाल ओंठ और घँघराले बाल उसे नानी के पक्ष से ही मिले हैं । बड़ा अकेला लड़का मालूम होता है । मौसी कहती है, "किसके साथ खेले ? गाँव के बच्चे अपने साथ खेलने नहीं देते । मेरे ही साथ खेलता है ।

"गनेशजी जरा पेट दिखाइए तो ! मौसी ! कल इसे सुबह न आना तो ! खत्म होगा । हाथ मुरझाए रहते हैं ।"

गनेश को मच्छर एक मामा मिल गया ।

'मजबूत ऐसा हलवा कभी नहीं खाया मौसी ! विश्वास करो । गनेश को भी दो । कोई हरज नहीं ।"

मामा देखा ! गनेश बच्चे में स्टेथस्कोप लगाकर हँसता है ।

"वाह ! मेरा भानजा डॉक्टर बनेगा ।"

डॉक्टर जब मौसी के घर से निकला तो उसने सत्य किया कालीचरण के

कुएँ पर पानी भरने वाली स्त्रियों की भीड़ लग गई है। सभी औरतें पहले मुँह बाये आश्चर्य से डॉक्टर को देखती हैं—"इस डॉक्टर को बाल से घेरा है सायद।"

'लाल सलाम!' कालीचरण मट्ठी बाँधकर सलाम करता है, और डॉक्टर को एक कागज परचा देते हुए कहता है, "कॉमरेड मन्त्रीजी आपको पहचानते हैं डॉक्टर साहब! हाँ कृष्णकान्त मिश्रजी!"

आइए! आइए! जरूर आइए!
कमाने वाला खाएगा इसके चलते जो कुछ हो।
किसान राज कायम हो।
मजदूर राज कायम हो।

प्यारे भाइयो! ता० को मेरीगंज कोठी के बगीचे में किसानों की एक विशाल सभा होगी। सोशलिस्ट पार्टी पूर्णिया के सहायक मन्त्री साथी रंगाप्रसाद सिंह यादव सैनिकजी।

"परसों सभा है। आइएगा। लाल सलाम!

उन्नीस

चलो! चलो! सभा देखने चलो।

सोशलिस्ट पार्टी की सभा की खबर से संथालटोली को विशेष रूप से भाव दिया है। गाँव में अस्पताल खुलने की खुशखबरी की कोई खास प्रतिक्रिया संथाल पर नहीं हुई थी। गाँव के लड़ाई-झगड़े और मेल-मिलाप में भी उन्हें कुछ लेना-देना नहीं। लेकिन यह सभा? जमीन जोतने वालों की? कर्तव्यनिष्ठ और मेहनती संथाल किसानों के दिमाग की मशीन से उलझी हुई गुत्थी का सही सुलझाव! जमीन जोतने वालों की सभा!

"जमीन किसकी? जोतने वालों की! जो जोतेगा वह बोयेगा जो बोयेगा वह काटेगा। कमाने वाला खायेगा इसके चलते जो कुछ हो! कालीचरण समझा रहा है।

चारों ओर स्वस्थ सुडौल स्वच्छ और सरल इन्सानों की भीड़। श्याम मुखड़ों पर सफेद मुस्कराहट भाला वाले बालों में सींग के कंघे के सैकड़ों टुकड़े! किसी मौसी का जवान बेटा मंगर मौसी कालीचरण के बालों को बाँधने की कड़ी न बाँधने की चप्पा करता है

ओहिरे ओहबे सोहिर बोयबे

सनिचरा मुरम् कालीचरन की हर बात पर खिलखिलाकर हँसती है—हें हें हें हें हें हें ! छरहम के सुर में हँसती है सनिचरा । तीतर की आवाज की तरह हें हें हें हें ! पीछे की ओर झूलता हुआ रंगीन आँचल रह-रह कर चंचल हो उठता है, मानो नाचने के लिए मोरनी पंख तौल रही हो । उसके चरण थिरकने के लिए चंचल हो उठे हैं ।

मानर की मन्द आवाज रिम रिम ता धिन-ता !
डिग्गा की अटूट ताल ता डिग्गा ता डिग्गा !
उन्मुक्त स्वर लहरी ओहिरे ओहबे सोहिरे बोयबे !
धरती की छप पर पायलों का घुम घुम छन्न छन्न !

ता डिग्गा ता डिग्गा
रिम रिम ता धिन-ता !
चल चल रे समा देखे ता ।

चार पुश्त पहले की बात ! संथाल परगना के तीन पहाड़ी अंचल की पथरीली माटी का मोह तोड़कर, उजाड़-बाबड़ पहाड़ी रास्ते को तय करके जब इनके पूर्वज इस गाँव की नरम माटी पर आकर बसे थे ! गाँववालों ने जमींदार के पास आकर फरियाद की थी हुजूर ! बाघ ! जंगली लोग हैं । सुनते हैं तीर-धनुष से जान मार देने पर भी सरकार बहादुर इनको कुछ नहीं कर सकता है । इन्हें हरगिज नहीं बसाया जाय हुजूर !

लेकिन जमींदार ने समझाकर कहा था ऐसी बात नहीं । ये बड़े मिहनती होते हैं । बरमपुर इलाके में आकर देखो राजा अष्टमीनारायणसिंह ने इनसे हजारों बीघा जंगल आबाद करवा लिया है परती और भीठ जमीन से ही देबू बाबू को दो हजार मन गेहूँ उपजाकर संथालों ने दिया है । मालूम ?"

जमींदार ने गाँव वालों को विश्वास दिलाया था कि इन्हें गाँव से भगना ही पड़ेगा । सभी जमींदारों ने इन्हें जंगलों में ही बसाया है ।

उसके बाद से ही बबूल झरबेर और साँहुड़ के पेड़ों से भरे हुए जंगल हर साल साफ होकर आबाद होते गए । आज जहाँ सैकड़ों बीघे जमीन में मोती के दानों से भरी हुई गेहूँ की बालियाँ पुरवैया हवा में झूम रही हैं, धरती का यह टुकड़ा सब के कारबार और नक्शे में जंगल के नाम से दर्ज है, जिस जंगल में बाघ का शिकार खेलने के लिए जिले-भर के राजा और जमींदार जमा होते थे । गाँव के नई उम्र के लड़के तो विश्वास नहीं करते ।

नीलाई साहबों के नील के हौज ज्यादातर इन्हीं मूक हंगामों के काले खंडहर

के पसीने से भरे रहते थे।

सारंगी के कोड़ों की मार खाकर जमींदारों की कचहरियों में दिन भर मोनछिया बाँधी[1] की सजा भुगतने के बाद गाम का मोहन की आखरी बंगी बजी और सब कष्ट दूर हो गए।

रिंग रिंग ता घिन-ता
धा धिग्गा धा धिग्गा !

सोने के अनाज से भरे हुए, धरती के गुप्त भण्डार का उद्घाटन करने वालों पर धरती माता का क्रोध होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि आज जमीन के मालिकों से जमीन के व्यवस्थापकों से और धरती के स्वाभाविक धरती पर इनका किसी किस्म का हक नहीं जमने दिया है। जिस जमीन पर इनके झोंपड़े हैं वह भी उनकी नहीं। हल में जुता हुआ बैल दिन भर सेत खाम[2] करता है इसलिए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल किया जाय ? यह कैसी बात है ?

१९४७ के कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल के समय इस जिले में एक अंग्रेज कलक्टर आया था। उसने इस व्यवस्था को अन्याय समझ सुधारने की चेष्टा की थी। जिले-भर के भूमिहार जमींदार और राजा पकड़ गए थे। जिले के अधिकांश सेना भूमिहार और जमींदार थे। अंग्रेज कलक्टर पर इलजाम लगाया गया—सवाल को उभारकर, जिले में अशान्ति फैलाकर, कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल को असफल बनाने का षड्यन्त्र करता है ! 'कांग्रेस सन्देश' के सम्पादकीय में संथालों के प्रति थोड़ी समवेदना प्रकट की थी। बेचारे विद्यालंकार सम्पादक को उसी दिन मालूम हुआ था कि विद्या का अलंकार कितना बेमानी है। जिला-बन्दी में आँखें लाल करके कहा था 'विद्यापीठ का शास्त्र यहाँ काम नहीं देगा। विद्यापीठ में गधे के सर पर सींग तो नहीं जम सकती है।

जमींदारों ने अपने भाई के लठैतों को जगह जगह संथालों की सहजहाली फसल पर हमला कर लाल टोपी पर चढ़ाई करवाकर, रुपये लाठी के हिसाब से बटोरे हुए लठैतों को संथालों के तीरों से जख्मी करवाकर, सबक सिखाने पैसा कर दिया था—संथालों के तीर जख्म का मरहम कारण है यह अंग्रेज कलक्टर। इसी के बाद वह से दूर रहे हैं।

अंग्रेज कलक्टर की तुरत बदली हो गई। बदले में संथाल सरकारी दोस्ती में घायल हुए और सैकड़ों ने बिहार के विभिन्न जेलों में सश्रम कारावास में काम करते करते सारी उम्र बिता दी। इनके बारे किसी कौन चूं करता है ! सेकिन मालदार

---

१ एक बड़ी सजा। २ आलसी। ३ पाजी करना। ४ मेहतर समाज।

और हिम्मा की आवाज कभी मन्द नहीं हुई, बाँसुरी कभी मन्द नहीं हुई और न उनके होठों में ही जंग लगी। आज भी कभी-कभी बनैले जानवरों के शिकार के समय सूरज की किरणों में चमकदार चकाचौंध पैदा कर देते हैं इनके तीर।

मलेरिया और कालाआजार की भीड़ा भूमि में भी ये सबल और स्वस्थ रहकर क्रीड़ा करते हैं। हड्डियों पर कलापूर्ण ढंग से उतराकर बैठाये गये मांस का उभार कभी सूखा नहीं ताजे फूलों की पंखड़ियों जैसे उनके ओठ कभी म्लान नहीं हुए और न किसी संक्रान्ति के पेट में कभी सिकुड़ी आंत के पड़े जाने की बात ही सुनी गई। अस्पताल खुलने से उनका क्या फायदा होगा? लेकिन जमींदार! जानने वालों की?

"चलो! चलो! सभा देखने चलो!
किसान राज कायम हो!
मजदूर राज कायम हो!
गरीबों की पार्टी सोशलिस्ट पार्टी
सोशलिस्ट पार्टी जिन्दाबाद!

" यह जो लाल झण्डा है, आपका झण्डा है जनता का झण्डा है अवाम का झण्डा है इन्कलाब का झण्डा है। इसकी खातिर उठते हुए आफताब की लाली है, यह खूने आफताब है। इसकी लाली इसका लाल रंग क्या है? रंग नहीं! यह गरीबों महरूमों मजलूमों मजदूरों मजदूरों के खून में रँगा हुआ झंडा है! कॉमरेड मैतिकजी भाषण दे रहे हैं।

"हें! खून में रँगा हुआ झंडा! बादरदाम ने कालीचरन के बहुत से हाथ में झण्डा दिया था। बादरदाम वैष्णव है मांस-मछली छूता भी नहीं और यह आदमी के खून में रँगा हुआ झंडा? उसका धरम भ्रष्ट कर दिया कलिया ने। छि-छि! यह हाथ में झंडे का बाँस नाम कहा है? वह अचानक ही झंडे के बाँस को छोड़ देता है! 'आदमी के खून में रँगा हुआ झंडा!

जानकी कहता है "पताका पतन अशुभ अमंगल और अनिष्ट की सूचना है।

मैतिकजी अपना भाषण जारी रखते हैं। भाषण के बीच में एक जान से फिर गुल मचा पड़ता है— जिस तरह सूरज का डूबना एक महान् सत्य है पूँजीवाद का नाश होना भी उतना ही सत्य है। क्षितिज की चिमनियाँ शाम उगलेंगी और उस पर मजदूरों का कब्जा होगा। जमीनों पर किसानों का कब्जा होगा। चारों ओर लाल झंडा फहरा रहा है। उद्घोष किसानों के मजबूत हाथों! बगावत का शंख फाड़ियों उठा! अग्नि का मशाल सबके हाथ में है!

"कॉमरेड एक बार प्रेम से—सोशलिस्ट पार्टी की जै! यही पार्टी असली

है। किसानों की पार्टी परीबों की पार्टी। सभा-स्थल पर ही तीन सौ मेम्बर बन गए। संथालटोली का एक आदमी भी बैर-मेम्बर नहीं रहा। अब लाल! सिर्फ सरदारदुखू का तेरह साल का लड़का रह गया है। वह रोता है सरदार दुखू सैनिक जी के पास जाकर अपील करता है 'इसका नाम मेम्बरी में नहीं लिखा जायगा? क्यों? उमेर कम नहीं देखिए, इसको मोंछ का रेख आ रहा है।"

बालदेवजी कुछ बोलने को हाथ उठाते हैं। बासुदेव तुरत उठकर कहता है "बालदेवजी आपका विश्वास हम लोग बहुत खो चुके हैं। आप पूंजीवार हैं। हम सभा में आप नहीं बोल सकते।"

जनता ने भी विरोध किया बैठ जाइए, बैठ जाइए! जाइए, कपड़ा की पुर्जी बांटिए, चीनी बितरण कीजिए।

'अरे बाप! कितना टीन छाजा कहां गेलाजी से? एक हजार टीन छाजा बितरण कर दिया मंत्रिस्टर कालेबी ने! इसीलिए तो देहात से हुक्का उठ रहा है। अब लाल बीबी न पीएं तो क्या करें! हुक्का के तम्बाकू के लिए छाजा गुड़ कहां से आएगा। सब बितरण हो गया। अन्याय है!

तहसीलदार साहब को तो सेवाजी ने भरी सभा में बेइज्जत कर दिया बदबख्त गाली देते हैं सेवाजी। जमींदार के दुम ये तहसीलदार! मुफ्तखोर!

मगर तहसीलदार साहब हँसते ही रहे थे। उस रात को बिरापत गांव के बिरटा की मेहनी सुनने के समय जैसी मंद मुस्कराहट उनके चेहरे पर थी अब भी है।

कालीचरण अब सेवालालसिंह के कम्पनी से बाहर है। कालीचरण बारह मुक्त-बटेक है। बूढ़ा मुरुक मुड़ारु तक सेवालाल का बैल चराता था और उसका बेटा सीधर हो गया। सुरिन्द्र सीधर! इसको बाघ में खाने का कोई हथियार भी नहीं। मेंचूठे का दांत भी कभी नहीं घिसा इसने!

सिंहियाटोली का एक बच्चा भी इस सभा में नहीं था। उनके टोले में कटिहार से काली टोपी वाले दल के सजोदारजी आये हैं। लाठी भाला दरेनि देते हैं। छोटी जाति के लोगों की सभा में वे नहीं आ सकते।

कालीचरण ने सैनिकजी के रहने का प्रबन्ध मठ पर किया है। महंथ रामदास जी तो नाम के महंथ हैं मठ की असल मालिकन तो लछमी है। पचहत्तर बीघा खेत को जोतकर गाजा बना है मालपुआ की खोपी सुबन्ध हवा में फैल रही है।

लछमी पूरनी! कापी बाबू! सेवाजी डोमपाल में आकर स्नान नहीं करेंगे?"

सैनिकजी के साथ में 'लाल पताका' साप्ताहिक पत्र के संपादक भी बिरवाजी

जी भी आये है। दुबले-पतले है दिन-भर खाँसते रहते हैं आँख पर बिना फ्रेम वाला चश्मा लगाते है। दिन-भर सिगरेट पीते रहते हैं शायद इसीलिए चिन नारीजी नाम पड़ा है। डॉक्टर ने अंडा खाने के लिए कहा है। बिना अंडा खाये इतना परम अखबार कोई कैसे निकाल सकता है? लेकिन मठ पर अंडे का प्रबन्ध कैसे हो सकता है?

लक्ष्मी के अतिथि-सत्कार को भूलना असम्भव है। चिनगारीजी रात में सोते समय सैनिकजी से कहते हैं, "मैं लक्ष्मीजी पर एक मुक्त छन्द लिखना चाहता हूँ

" ओ महान् सत्यपुर की सेविका
"वाणिका पवित्र धर्मपन्थ की
ओ महान् मार्क्स के दर्शन की दर्शिका
सुवर्णमे प्रियवर्णिनी
तुम स्वयं इन्द्रपुत्र गौतिकवाद की
तिनचिलिस हो !"

○

बोस

कमली डॉक्टर को पत्र लिखती है—

'प्राणनाथ ! सुना कल नहीं आये। क्यों नहीं आये? सुना कि रात में ।

कमली डॉक्टर को रोज पत्र लिखती है। लिखकर पाँच-सात बार पढ़ती है, फिर फाड़ डालती है। उसकी अलमारी के एक कोने में फाड़ी हुई चिट्ठियों का ढेर लग गया है। पत्र लिखने और लिखकर पढ़ने के बाद उसको बड़ी शान्ति मिलती है। जी बड़ा हल्का मालूम होता है, और नींद भी अच्छी आती है।

" सुना कि रात में तुम मेहँजन साँप से बाल-बाल बच गए। भगवान को इसके लिए लाख-लाख धन्यवाद !

रात में डॉक्टर मेहँजन साँप से बाल-बाल बच गए। मेहँजन नहीं घोड़-करैत। मेहँजन और करैत का दायरा। घोड़े से ज्यादा तेज भाग सकता है। घोड़-करैत का कटा हुआ आदमी मोटा सुअर का मैंस भी नहीं देख सकता। आधी रात को सन्नाटा और घुप्प अपने-अपने पिंजरों में बकरा-कर शोर मचाने लगे। डॉक्टर

"कमला ! इधर देखो कमला !"

"डॉक्टर मुझे बचाओ !"

"कमला आँखें खोलो !

कमला ने आँखें खोल दी। उसका सिर डॉक्टर की गोद में है। माँ हाथ में कम्बल लिये खड़ी है, भय से माँ का मुँह पीला हो गया है, लेकिन डॉक्टर साहब मुस्करा रहे हैं।

'डाक्टर साहब इसकी बीमारी का तो टेर पता ही नहीं चलता है।

"लेकिन रोग तो धीरे-धीरे घट रहा है। बेहोशी हुई पर पाँच मिनट में ही स्वस्थ भी हो गई। इसी तरह एक दिन बड़ से बड़ रोग दूर हो जायगा। कमला को ही चाय बनाने दीजिये। आओ कमला !"

कमला उठकर इस तरह दौड़ी मानो कुछ हुआ ही नहीं था। डॉक्टर कमला की किताब हाथ में लेकर उलटता है—सत्य-दमयन्ती ! अग्निविहारिणी कुमारी कमलादेवी। दूसरी जगह कुमारी का नाम दिया गया है और नाम के अन्त में बनर्जी जोड़ दिया गया है—कमलादेवी बनर्जी। डॉक्टर जल्दी से पृष्ठ उलटता है—आर्ट पेपर पर सत्य-दमयन्ती की तस्वीर। सत्य के नीचे नीली पेंसिल से लिखा है 'अगाध' और दमयन्ती के नीचे काले पेंसिल से कमला। डॉक्टर के ललाट पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें चमक उठती हैं। उन्हें आता है एक बार ममता के साथ डॉक्टर स्टेशन से लौट रहा था। रिक्शा पर बैठते के समय एक भिखारी ने कह दिया था—'सुहाग जोड़ी कायम रहे सुहाग अचल रहे माँ का बाल-बच्चा सलामत रहे' ममता ने ऊँचे से रुकने भिखारिन की ओर डॉक्टर की ओर देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ी थी और डॉक्टर के ललाट पर इसी तरह पसीने की बूँदें चमक उठी थी।

डॉक्टर साहब कमला के लिए एक अच्छा-सा वर ढूँढ़ेंगे। आपके दरवाजे पर आकर कार्यों-कार्यों माँ कहकर-कहकर सिर पर चूँदर सरकाकर चप हो जाती है। महाजीन्दार साहब आ गए। रजवाड़ा के हाथ में एक बड़ी राइ मछली है।

'यह सलमाना कहाँ मिला' डॉक्टर साहब हँसते हैं।

दरवाजा पार पर आकर सीधे आज माँ रह के महाजीन्दार साहब के माथे पर बैठते हुए कहा।

कमला चाय ले आई।

"डॉक्टर साहब आज पार की मछली खाना है" महाजीन्दार साहब ने चाय की प्याली में चम्मच घोल हुए कहा।

'मतलब ?

"यह तहसीलदारी पाप की गठरी ही तो थी। यह नया सर्किल मैनेजर आते ही आप बेगाब' करने लगा। 'लाल पताका' अखबार ने ठीक ही लिखा था 'राय पारबंदा के मीनापुर सर्किल का नया मैनेजर साहिरशाह का मतीजा है। अब आप ही बताइए डॉक्टर साहब कि जिन रैयतों के यहाँ सिर्फ एक ही साल का बकाया है उन पर नालिश कैसे किया जाय ? फिर चुपचाप डिग्री जारी करवाकर नीलाम करो और जमीन खास कर लो। इतना बड़ा अन्याय मुझसे तो अब नहीं होगा। जमाना कितना नाजुक है, सो तो समझते हैं नहीं। मैंने साफ इनकार कर दिया तो कड़ककर बोले 'नहीं कर सकते तो इस्तीफा दे दो। धंधा-रोजगार से भी बढ़कर ऐसे पुण्य का अवसर बार-बार नहीं मिलता। तुरत इस्तीफा दे दिया। साथी बिरादरी तो खुशामी करते ही बीत गई। कमला की माँ आज सत्य नारायण भाने हैं। कमला से कहो डॉक्टर साहब को निमंत्रण दे दे।

तहसीलदार साहब की एडिसनता ने डॉक्टर को एक बार फिर मल-मलमली की याद दिला दी। कमली मुस्करा रही है। माँ कहती है, 'बउर सिर्फ-मलाला की मछली कमली ही बना सकती है।

डॉक्टर महसूस करता है कमला के निमंत्रण को अस्वीकार करने की हिम्मत उसमें नहीं। कमला कमली। कमला की आँखें !

चाँद बयरि भेल बादल मछली बयरि महाजाल
बिरिया बयरि हुए लोचन

इक्कीस

रात का तीसरा-टोली में सहदेव बिसर पकड़े गए !

यह सब मलाही की करतूत है। 'अपनी आदमी' के सिवा ऐसा आत्म-घातक बात का और कौन कर सकता है ? पूरब-पुरैनी से बाघ साथ छोटे लोगों के टोले में जाते हैं। खेती-बारी के समय आज का ही जना को ठीक करना होता है, सूरज उगने से एक घंटा पहले ही खेत पर मजदूरों को पहुँच जाना चाहिए। इस

---

१ परदेशी। २ मजदूर।

लिए सभी बड़े किसान धान का खेत को ही अपने-अपने जनों को रह आते हैं। तंत्रिमाटोली में जब से खलासी का आना-जाना शुरू हुआ है तभी से नई-नई बातें सुनने को मिल रही हैं। देखा-देखी दूसरे टोले में भी नियम-कानून पंचायत और बैठिक हो गई है। बेचारे सहदेव मिसर को रात-भर तंत्रिमा लोगों ने बाँधकर रखा। कुसिया के घर में घुसा था तो कुसिया ने हल्ला क्यों नहीं किया? जिसके घर में घुसा उसकी नींद भी नहीं खुली माँ-बाप को आहट भी नहीं मिली और उसका कुत्ता भी नहीं भूँका। बीच के लोगों का बेतार से खबर मिल गई। यह खलासी की बदमाशी है। यही हालत रही तो छोटे लोगों के टोले में जन के लिए जाना मुश्किल हो जायगा। कौन जाने किस पर कब झूठ-मूठ कौनसी तोहमत लग जाय? पंचायत होनी चाहिए। राजपूतों ने यदि इस पंचायत में ब्राह्मणों का पक्ष नहीं लिया तो ब्राह्मण लोग ग्वालों को राजपूत मान लेंगे।

"हमको कुछ नहीं मालूम" कुसिया पंचों के बीच हाथ जोड़कर कहती है। "जब आँगन में हल्ला होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं।"

सहदेव मिसर के पास मेंहगूदास के मँगूठे की टीप है —सादा कागज पर। मेंहदू की टीक' सहदेव के हाथ में है। सहदेव जो चाहे कर सकता है। दोनों भायें और चारों बाजे बल ही मूँछें ले पोलकर के जायगा। इसके अलावा साल-भर का खरचा भी तो सहदेव ने ही बाँध दिया है। एक आदमी की मजदूरी से तो एक आदमी का भी पेट नहीं भरता है। लेकिन अब कुसिया के हाथ में ही सहदेव मिसर की इज्जत और अपने बाल की दुनिया है उसकी आँखों में जरा भी हेर-फेर हुआ कि सहदेव की इज्जत धूल में मिल जायगी और उसके बाल की दुनिया भी उजड़ जायगी।

पंचायत में लोग आ-आ के छोटे-बड़े सीम बना हुए हैं। तहसीलदार साहब दुर्गिनियाँ गये हैं। पंचायत में मरदे मिपजी बोल रहे हैं। बाभनी टोली वाले संयोजक भी हैं। बाभनेदली भी हैं। बाभीकरन बिना बुलाए ही आया है। मिपजी अकेले ही सिर-बहस कर रहे हैं। तहसीलदार साहब रहते तो बाड़ी सहूलियत होती मिपजी को।

"बात पूछने पर एक घर में तो अलाव मिलता है। हाँ जब आँगन में हल्ला होने लगा तब तुम्हारी नींद खुली। खुन सौंजिए सभी पंच लोग। अच्छा जब तुम्हारी नींद खुली तो तुमने क्या देखा?

"सहदेव मिसर को आँगन में आकर सभी हल्ला कर रहे थे।"

---

१ बतिया।

"अच्छा तुम बैठो। कहाँ सहदेव मिसर ? अब आप बताइए कि मँहगू दास के यहाँ उतनी रात को आप क्यों गये थे ?

"रात में हमारे पेट में जरा दर्द हुआ। लोटा लेकर बाहर निकले। जब बिसा-मैदान से हम लौट रहे थे तो देखा कि कमला किनारे वाले खेत में किसी का बैल गेहूँ चर रहा है। इसीलिए मँहगू को बुलाने गया था।"

"क्यों ?"

"कमला किनारे वाली जमीन का पहरा करने के लिए मँहगूदास को ही दिया है।

"अच्छा तब ?

'जब हम जा रहे थे तो रविया और सोनमा को आपके खेत में सकरकन्द उखाड़ते पकड़ा। दोनों का डाँट-डपट दिया। मँहगूदास को बुलाकर जैसे ही हम उनके आँगन से निकल रहे थे कि रविया सोनमा मेतरा और मकछेदिया ने हमको पकड़ लिया और हल्ला करने लगे।"

'क्या बताएँ हमारा पाँच बीघा सकरकन्द इन्हीं लोगों ने चुराकर खतम कर दिया। अच्छा आप बैठ जाइए। कहाँ मँहगू ?

'जी सरकार, मँहगू बूढ़ा हाथ जोड़कर खड़ा होता है।

'सहदेव मिसर ने तुमको बुलाकर बुलाया था ?

"जी सरकार !"

"अब पंच लोग फैसला करें कि असल बात क्या है।

कालीचरण कैसे चुप रह सकता है ! पंचायत में एकतरफा बात नहीं होनी चाहिए। रविया और सोनमा पार्टी का मेम्बर है। यह तो पंचायत नहीं मुँहदेखी है। कालीचरण कैसे चुप रह सकता है—खिचड़ी जरा हमको भी कुछ पूछने दीजिए।"

पंचायत के सभी पंचों की निगाहें अचानक कालीचरण की ओर मुड़ गईं। खिचड़ी खुशी से लाल हो गए। लेकिन पंचायत में गुस्सा नहीं होना चाहिए। राजपुरटोली के नौजवान आपस में कानाफूसी करने लगे। संथोलक जी ने पाकेट टटोलकर देख लिया—सीटी लाना भूल तो नहीं गए हैं ? बालदेवजी एतराज करते हैं—"कालीचरन को हम लोग पंच नहीं मानते।"

"तो पहले इसी बात का फैसला हो जाय कि पंचायत के कितने लोग हमको पंच मानते हैं और कितने लोग नहीं। एक आदमी के चाहने और न चाहने से क्या होता है ! अच्छा पंच परमेसर ! क्या हमको इस

पंचायत में बैठने वालों और राय देने का हक नहीं ? क्या हम इस गाँव के बाशिन्दे नहीं हैं ? कालीचरण खड़ा होकर कहता है। 'यदि आप लोग हमको पंच मानते हैं तो हाथ उठाएं।

गुमसुम बैठे हुए सैकड़ों मूक जानवरों के सिर में मानो अरना भैंसा[1] के सींग जम गए। सैकड़ों हाथ उठ गए।

'आधों हाथ नहीं एक हाथ ! ठहरिए, गिनने दीजिए। एक दो तीन चार, पाँच एक सौ पाँच।

बावनदास जी ने हाथ नहीं उठाया।

'एक सौ पाँच। अब जो लोग हमको पंच नहीं मानते हाथ उठाएँ। एक दो तीन चार, पाँच पन्द्रह।

"सिर्फ पन्द्रह ! सिपाही को विश्वास नहीं होता है। खुद गिनते हैं। राजपूत और ब्राह्मण टोली के लोग कहाँ चले गए ? जातवीरी के अलावा सामन्तों ने भी बलिया के पक्ष में ही हाथ उठाया है ?

"फुलिया ! कालीचरण की बोली सुनकर डर जाता है। फुलिया फिर खड़ी होती है।

'देखो यह पंचायत है। पंचायत में परमेसर रहते हैं। पंचायत में झूठ बोलने से हाहाकार हमेशा फैल जाता है। सच-सच बताओ ! सच्ची बात क्या है

"

'बोलो !"

"महन्थ जिसर हमारे घर में घुस गे।

"तुमने हल्ला क्यों नहीं किया ?

बोलने लगे का कोई बात नहीं।

बाबा के डर से।

"बाबा के डर से ?

'हाँ बाबा महन्थ जिसर का कब्जा मानते हैं।"

बैठ जाओ। भैरव !

भैरव हाथ जोड़कर फिर खड़ा होता है।

'क्या बात है ?"

---

१ जंगली।

"

"फुलिया जो कहती है ठीक है ?

"डरो मत ! जो बात है बताओ !

'कौन घाट ऐसा है जिसमें हवा नहीं लगती है और पत्ता नहीं झड़ता है !"

"दूसरा की बात मत कहो अपनी बात बताओ !"

'अकेले हमको क्या दोख देते हैं ? साँझ भर का यही हाल है। कौन घर ऐसा है

"मैं तुमसे पूछता हूँ।

पहले तुम अपनी माँ से जाकर इमान-धरम से पूछो कि तुम किसके बेटा हो जोतखीजी हिम्मत करके कहते हैं। क्रोध से उनकी आँखें लाल हो उठी हैं।

"जोतखी काका हमको अपने बाप के बारे में मालूम है।"

"जोतखीजी अपनी स्त्री से पूछें कि उनके पेट में किसका बच्चा है" बासुदेव चिल्लाकर कहता है।

"कौन नहीं जानता कि जोतखीजी का नोकर "

"चुप रहो सुन्दर !" कालीचरन लोगों को शान्त करता है, "चुप रहो ! गाली ! गाली !

'टू टू टू सपोजकजी सीटी फूँकते हैं।

एक दर्जन से भी ज्यादा नौजवान राजपूतटोली के हाथ में लाठी लेकर दौड़ आये और पंचायत को चारों ओर से घेरकर खड़े हो गए।

"सिंघजी इस लाठी वाले नौजवानों को आपने बुलाया है ? तो आप पंचायत नहीं दंगा करवाना चाहते हैं ? कालीचरन पूछता है।

सिंघजी कहते हैं अब यह पंचायत नहीं हो सकती। 'पादीजी से कहो मुआफ होना है ?"

सिंघजी राजपूतटोली के पंचों के साथ उठ खड़े होते हैं। काली टोपी वाले जवान सिंघजी को सपोजकजी को और राजपूतटोली के पंचों को चारों ओर से घेरे में लेकर फौजी कवायद करते हुए चले जाते हैं।

जोतखीजी के साथ ब्राह्मणटोली के पंच लोग भी चूहेदानी में फँस गए हैं। कवायद बाबू का सहारा है। बालदेवजी भी हैं। लेकिन कालीचरन का घुस्सा ?

'ना पंचायत का यह फैसला है कि मेरीगुदाम अपनी बेटी फनिया का घुमौना

खलासी के साथ बगा दे और आज से सभी टाले के लोग बाबू लोगों पर मजर रखें।"

पंचायत के सभी पंच एक स्वर से कालीचरन की राय का समर्थन करते हैं। जानधारी भी हाथ उठाते हैं और बासदेवजी भी। यह तो निर्णय बात है इसमें डिबेट करना अच्छा नहीं।

"सहदेव मिसर के पक्ष वाले कागज पर मेरा अँगूठा का टीप है। यदि उसे मजर मालिस कर दे तब" मेहगूदास गिड़गिड़ाकर कहता है।

"सहदेव मिसर अब मुकदमा करेंगे सभी पंच तुम्हारी गवाही देंगे। वह एक पैसा भी तुमसे नहीं पा सकते।

बार्डर्स

सागर हो! मनसुख हो!

गन्धर्व रामदास भी ऊँघते खाँसते और जमाही लेते हुए समय महंथ सेवादास को ही कहकर ही पुकारा बजाते हैं 'मनसुख हो मनसुख हो' कहते हैं और सोए स्वप्न ही बन्द हो जाती है।

भजन कीर्तनघाट और मनसंग का अब लछमी ही संचालिनी है। महंथ रामदासजी पढ़ना-लिखना नहीं जानते मनसुख-भजन की गम्भीरता की तह तक नहीं पहुँच सकते लेकिन गद्दी पर तो उनका पूरा अधिकार है। वो तो गद्दी अंदाड़ी भी बजाता है लेकिन कीर्तनिया लछमी दासिन उसके साथ पर गड़बड़ करती है। सब महंथ रामदासजी मदारी के हाथ के बन्दरी के खेल हैं। लछमी मजाकदार गाने लगती है

सखी हो कब बाँहियाँ धर आवली
छाई बिरानी आस!
सखी हो किं अँगना सोया वे?
को कब करे सिंगार! हो सखी वो कब धर सिंगार!

वो कब करे सिंगार? कवि रामदास के आँख में नींद का खुमारी है और वह ध्यान में डूब गये हैं। कवि कहना है—'जब घर चढ़ने वाले द्वारा पर्याप्त धन ले जाय। पर्याप्त धन मतलब रामदास का गाँजा खर्ची का धन नहीं। पर्याप्त धन से उनका भी मन भर जाता है अर्थात् वह धन

करें ? एक दिन मुँह से निकल गया था 'लछमी ! जरा इधर आना तो।" बस चार घंटे तक कोठारिन ने सतगुरु वचनामिरित की झड़ी लगा दी थी— 'मंतर जोति सबद इक मारी हरि ब्रह्मा तावे बिपरारी। ते तिरिये मंगलिप अनंता तउ न आने मारि न बंता। महंथ साहेब आप अपने चित्त को मत विचलित कीजिए। यह आपके पूर्व जन्म का पुण्य है कि आपको महंथी की पदवी मिली है, नहीं तो आपके जैसे लोगों को भैंस चराने के सिवा और कोई काम भी नहीं मिल सकता। आप मेरे गुरु बेटा हैं मैं आपकी गुरु मा।

एक-डेढ़ महीने में ही महंथ रामदासजी का कलेवर बदल गया है। लछमी बड़े जतन से सेवा करती है। दूध मक्खन और ताजे फलों के सेवन से महंथ साहब के श्यामल मुखमंडल पर भी लाली दौड़ गई है। पेट जरा बाहर की ओर निकल रहा है और तन का ताप भी कभी-कभी मन को बड़ा बेचैन कर देता है। लछमी सतगुरु वचनामृत बरसाकर शांत करने की चेष्टा करती है। सतगुरु वचनामृत से भी बढ़कर तन के ताप को शीतल करती है कालीचरन की याद! कालीचरण रोज मठ पर एक बार, थोड़ी देर के लिए ही जरूर आता है। कभी पार्टी के लिए चंदा ऑफिस-घर बनाने के लिए बाँस-खड़ माँगने आता है। लछमी कहती है—'कालीचरन असल निपाती आदमी है। गाँव के सभी बड़े लोग सिर्फ कहने को बड़े हैं। काली बाबू का सुभाव जरा तिक्त है लेकिन दुनिया के साथ अब इतने कुटिल हो गए हैं कि सीधे लोगों की यहाँ गुजर नहीं। फिर सुभाव में जरा कड़ापन तो पुरुष का लक्षण है।

महंथ रामदास को पहले कालीचरन पर बड़ा संदेह था। जब वह मठ पर आता तो महंथ साहब छिपकर लछमी और काली की बातें सुनते थे बाँस की टट्टी में छेद करके देखते थे। लेकिन कालीचरन हमेशा लछमी से चार हाथ दूर ही हटकर खड़ा रहता था। उसकी बोली में भी माया की मिलावट नहीं रहती थी। लछमी से बातें करते समय कभी उसकी पलकें शरमाकर झुकती नहीं थीं। बहुत कम लोगों को ऐसा देखा है रामदास ने। कालीचरन को वह अपनी सुरक्षित पाटी से अवश्य है। साफ लड़ा और सुरक्षित पाटी को वह औरत की तरह प्यार करता है। उस पर संदेह करना बेकार है। लेकिन वासदेवजी? वह तो आजकल आते ही नहीं। उनकी नजर बड़ी मैली है।

लछमी वासदेवजी को भूली नहीं है। कहती है, साधु सुभाव के पुरुष हैं क्षिमा का चित्त दुखाना नहीं चाहते। वासदेवजी मठ पर नहीं आते हैं कहते हैं लछमी डाकिन ने हिमाबाद करवाया है मठ पर मठ पर नहीं आयेंगे। बहुत रोष है वासदेवजी। मरुभ भाव है। उनसे क्षिमा माँगना होगा।

टोली सक्रिय नाम अड्डा सक्रिय और अब यह चरखा सक्रिय !"

"हाँ सब जमाने में तो रोज नई-नई बात आती। सुनते हैं आपने सोशलिस्ट पार्टी को काफी मदद दी है। लेकिन कोंग्रेसजी ! वही महात्मा का रास्ता ही सबसे पुराना और सही रास्ता है। नई-नई पार्टी खुल रही है, मगर किसी का रास्ता ठीक नहीं। सब हिमालय के रास्ते पर हैं।"

"मलमूत्र हो ! मलमूत्र हो ! कोंग्रेस इसको जो पसन्द हैसा है, देकर विदा करो। मलमूत्र हो !" मलेंद्र मालव दर्द से छटपटाते हैं। बालदेवजी की मलहर बड़ी मैली है। दस रुपये का एक नोट निकालकर देते हुए लक्ष्मी कहती है "आज कल तो हाथ एकदम खाली है। आप तो आजकल इधर का रास्ता ही भूल गए हैं। इसमें जो अपराध हुआ है क्षमा कीजिए।"

"नहीं कोंग्रेसजी आजकल छुट्टी ही नहीं मिलती है कभी। कपड़े की पुर्जी कौन्सिल का काम क्या मिला ? एक आदमी में जान कौन कई है। कांग्रेस का भी कोई काम नहीं कर सकता हूँ। उधर दूसरी पार्टी वालों को मौका मिल गया है। कालीचरन दिन रात रटता है। हमारे कांग्रेस के मिम्बरों को भी सोशलिस्ट पार्टी का मिम्बर बना लिया है। इसलिए शिवनाथ बाबू को बुला रहे हैं। चरखा सक्रिय रहेगा। एक पुराना कार्यकर्ता बालदास भी आ रहा है। पुराना तो नहीं है मेरे ही साथ जुलूसी में नाम लिखाया था। बालदास बौना है, सिर्फ दो हाथ ऊँचा। बैरागी है। आएगा तो यहाँ से आएँगे। जयहिंद !

जै हिन्द !"

बालदेवजी को फिर लक्ष्मी के देह की सुगन्ध मिली। कितनी मनोहर !

लक्ष्मी देखती है बालदेवजी आजकल बहुत दुबले हो गए हैं। बालदेवजी के दिल में जरा भी मैल नहीं। कितने सरल हैं ! न जाने क्यों लक्ष्मी का जी आज बालदेवजी को देखकर इतना चंचल हो रहा है। बालदेवजी अच्छे साधु हैं।

बिरह की जोरी लाकड़ी
असुवन जल उपजावे।
दुख से दबाई बाहिरो
अब सकची जरि जावे।

तेईस

गाँव के लोग अर्थशास्त्र का सामान्य सिद्धान्त भी नहीं जानते। 'सफाई' और 'डिमान्ड' के चोरख-धन्धे में वे अपना दिमाग नहीं खपाते। अनाज का दर बढ़ रहा है, खुशी की बात है। पाट का दर बढ़ रहा है, बढ़ता जा रहा है, और भी खुशी की बात है। पन्द्रह रुपये में साड़ी मिलती है तो बारह रुपये मन धान भी तो है। हल का फाल पाँच रुपये में मिलता है बस रुपये में कड़ाही मिलती है तो क्या हुआ? पाट का भाव भी तो बीस रुपये मन है। खुशी की बात है।

अनाज के ऊँचे दर से गाँव के तीन ही व्यक्तियों ने फायदा उठाया है—तहसीलदार डाक्टर ने सिंघजी ने और लेखानन्दसिंह यादव ने। छोटे-छोटे किसानों की जमीनें कौड़ी के मोल बिक रही हैं। मजदूरों को सवा रुपये रोज मजदूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का भी पेट नहीं भरता। पाँच साल पहले सिर्फ पाँच आने रोज मजदूरी मिलती थी और उसी में घर भर के लोग खाते थे।

तहसीलदार डाक्टर ने दान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा दिया है। दरवाजे पर दर्जनों बेकार हैं, लेकिन इस साल सब खाली। चमगादड़ों के अड्डे हैं। सरकार यादव वंश-रक्षणी का कानून बना रही है।

कपड़े के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न हैं। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आँगन में काम करते समय एक कपड़ा कमर में लपेटकर काम चला लेती हैं बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं।

शिवनाथ चौधरी सभा में खादी के अर्थशास्त्र पर प्रकाश डाल रहे हैं। आँकड़े देकर साबित कर रहे हैं कि यदि घर का एक-एक व्यक्ति चरखा चलाने लगे तो गाँव से गरीबी दूर हो जायगी अन्न-वस्त्र की कमी नहीं रहेगी।

चरखा सेण्टर खुल गया है। अब गाँव में गरीबी नहीं रहेगी। पटना से दो मास्टर आये हैं—चरखा मास्टर और करघा मास्टर। एक मास्टरनी भी आई है—औरतों को चरखा सिखाने के लिए। औरतें ये कहती हैं, 'चरखा हमार भतार पूत चरखा हमार नाती चरखा ए बबीछन मौरा हमार सुखे हाथी।

चरखा की बबीछन हाथी? ये गांधीजी की बै!

वैनिकजी और चिनवारीजी की तरह गरम भाषण शिवनाथ चौधरीजी नहीं देते हैं, लेकिन बात पक्की कहते हैं। एकदम हिसाब से सब बात कहते हैं। खूब ज्ञान की बात कहते हैं। कल का पिसा हुआ आटा नहीं खाते हैं। चीनी नहीं पूरा खाते हैं। त्यागी आदमी हैं। चौधरीजी के साथ में दरभंगा जिले के तमोड़िया

टीपन से रमसर्यामा बाबू आम है। सुबह है पानी म ही बीमारी का इलाज करने है। आज मे पसाई हुई चीज नही खाते है। साप की हरी पत्तियाँ चबाकर खाने है। बहुत है इसमे बहुत तारत है। यह भी मसल्ल खाया है। देह म बिल हड्डियाँ बारी बच गई है मास का लव भी नही। रिम झिम म करीब पन्द्रह बार साप मे लोटा लेकर मैदान की ओर जाते है।

सारा कागज काला एक चहरम बाँट हुआ है। चहरम पर महत्मागा की छापी है और नीचे लिखा है

बापू कहत है जो पहले सो गाये
जो गाये सो पहले।

सोसलिस्ट पार्टी वालो ने भी चहरम बाँट दिया था। लेकिन वह साथ एव का था और उसमे एक दोहा जमान का

जा जोतेगा सो बोयेगा।
जो बोयेगा सो काटेगा।
जो काटेगा वह बाँटेगा।

बालदेवजी की जगह पर बीमगाड आया है। यही पूर्णिमा सभा म रविशकर बाबू के सामने मालूम होता था। बालदेवजी को पुरी बाँटने म दहटी नही मिलती है, इसीलिए पबलि का काम करने के लिए बोलदास का यहाँ भेजा गया है। बड़ा दक्षपुर है बोलदास। कहते है जब उस के मालट म होम कचहरी पर झडा फहराने जा रहे थे तो मजिस्टरी मे धर लिया था। बोलदास एक अलेक्सी के पैसे हर बैर के बीच से उस बार बच गया और कचहरी के हाता म झडा फहरा दिया

रहीम म हलवादजी के मुरछा को मजर कर बराबर जिम दण्ड चलाया था उसी दण्ड।

"इस आर्यावर्त मे केवल आर्य अर्थात् सब हिन्दू ही एक सकल है काली टोपी वाले सपाजवादी बौद्धिक क्लास म रोज कहते है। 'मखना मे हमारे आर्यावर्त की सस्कृति धर्म कला-कौशल का नष्ट कर दिया है। अभी हिन्दू सस्कृति सकल्प सस्कृति की पुजारी हो गई है। शिवाजी महाराणा प्रताप ।" बौद्धिक क्लास। सोसलिस्ट पार्टी का बालदेव कहता है बड़ किसान। बालदेव ही सही खाली डाली बात बहुत म जवान भी बूढ़ किसान हो कहत है। लाठी आता और तलवार हाथ म देते ही सब गरज हो जाता है राजपूत नौजवानो का। उस दिन हरखौरी कह रहा था—"मजावादी"। मखना पर

---

१ परवा। २ तसवीर।

मुझे क्रोध नहीं होता। यमना का पक्ष लेने वाले हिन्दुआ की तो गरदन उड़ा देने को जी करता है।" संथोषकजी जरा दूर हट गए थे नहीं तो हरगौरी ने इस तरह तलवार चलाई थी कि संथोषकजी की गरदन ही धड़ से अलग हो जाती।

'आरजावत ! मेरीगंज का ही नाम अब शायद आरजावत हो गया है ! लेकिन इस गाँव में तो एक भी मुसलमान नहीं !

गाँव-भर के हलवाहों चरवाहा और मजदूरों का नेता कालीचरन है। छोटा नेता वासुदेव सबों को समझाता है भाई, आदमी को एक ही रंग में रहना चाहिए। यह तीन रंग का झंडा काढ़ा सादा पोढ़ा लाल और पीला यह तो खिचड़ी पार्टी का झंडा है। कांग्रेस तो खिचड़ी पार्टी है। इसमें जमींदार है सेठ लोग हैं और पार्लिमेंट मारने के लिए थोड़ा किसान-मजदूरों को भी मेम्बर बना लिया जाता है। गरीबों का एक ही रंग के झंडे वाली पार्टी में रहना चाहिए।"

तहसीलदार साहब भी कांग्रेसी हो गए हैं।

उन्होंने चरखा सेण्टर के लिए अपना गुहाल घर दे दिया है खद्दर पहनने लगे हैं। बोम्बे की सारी दिलचस्पी तो लूट-बेईमानी करने ही भुला गई। आखिरी उम्र में पुण्य भी करना चाहिए। तहसीलदार साहब चरखिया मेम्बर नहीं बने हैं। चरखिया मेम्बर तो सभी बनते हैं। तहसीलदार साहब चार-सौ-टकिया मेम्बर बने हैं। वैसा नहीं ? गिरधारी बाबू ने रसीद काटकर दिया और तहसीलदार साहब ने तुरत मंगाया[1] तम्बाकू के पत्ते के बराबर चार नम्बरी नोट निकाल कर दे दिया। खद्दर करना या गोट ! अब सोशलिस्ट पार्टी का चलना मुश्किल है। पार्टी में एक भी बसी आदमी नहीं है। मठ की कोठारिन कब तक पार्टी चलाएगी।

दफा ४ की नोटिस आई है।

जिला कांग्रेस के मंत्रीजी ने नोटिस भेज दिया है। सोशलिस्ट पार्टी को आर-जबर्दस्ती जमीन पर कब्जा करने का कहती है। कांग्रेस के मंत्रीजी ने दफा ८ कानून पास करके नोटिस भेज दिया है। बामनदासजी हाट में नोटिस बाँट रहे हैं दफा ८० कानून पास हो गया। अधिया बर्दाश्त करने वाले किसान अपनी जमीन नकदी करने से पहली पंचायत में हाथ धो लें। नया कानून पास हो गया। हिसाबाद करने की जरूरत नहीं। पुर्णिया कचहरी में दफा ८० का हाकिम आ गया है। इन्साफ है दो बरस जमीन नकदी हो जायगी।

बालिश्त भर कहते हैं बामनदासजी। यदि बिना तूलकलाम किये ही जमीन

---

१ तम्बाकू की एक किस्म।

नक्षली हो रही है या सोशलिस्ट पार्टी में जाने की क्या जरूरत है ? कांग्रेस का राज है, जिस चीज की जरूरत हो कांग्रेस के मंत्रीजी से कहो। कानून बना देंगे। तब एक बात है। इस तरह छिटपुट होकर कहने से कांग्रेस के मंत्री भी कुछ नहीं कर सकते हैं। सबों को एक जगह मिलना चाहिए, मिलकर एक ही बात बोलनी चाहिए। दस मिलकर करेंगे काम हारा-जीतो क्या है राम ! मस्ती तो पब्लिक की ही है कांग्रेस में तो कोई सुप्रसिद्ध में तो कांग्रेस काली टोपी में इस तरह तितिर बितिर रहने से पब्लिक की कोई भलाई नहीं हो सकती। वासुदेव भी ठीक कहते हैं !

"फोर्टी थ्री टी० ऐक्ट ? सोशलिस्ट पार्टी के दिग्गज मंत्रीजी कॉमरेड कालीकरण को समझाते हैं "फोर्टी थ्री टी ऐक्ट तो का" नया कानून नहीं। यह तो पुराना कानून है। कांग्रेस के मंत्री ने परचे बँटवाए हैं ? ठीक है। आप भी बाँध के किसानों से कहिए कि जितने बड़े किसान हैं, सबों की जमीन पर पाया कर दें। कोई किसी के खिलाफ तबाही नहीं है। कानून से क्या होता है ? असल चीज है साबित करना। सबूत पक्का होना चाहिए। तबाही के इजहार में भी खास देर-अंधेर नहीं हो। यह तो तभी हो सकता है जब सभी गरीब एक झण्डे के नीचे एक पार्टी में एक मुख में बोल जावें। सहसीलदार साहब कांग्रेसी हो गए हैं। बस उन्हीं की जमीन पर किसानों द्वारा धावा करवा दीजिए। रब्बी फुल आपका। तब देखिएगा कि कांग्रेस के मंत्रीजी की नोटिस-जारी की क्या कीमत है ! 'लाल-पताका' के इस अंक में बिसवारीजी का इस सम्बन्ध में एक विशेष आर्टिकल है प्यारे कोयी को जाइए इस बार।

" दफा ४ जायदाद और बटैयादारी करने वालों को जमीन पर सदा अधिकार दिलाने का कानून है। लेकिन कानून में छोटा-सा छेद भी रहे तो उससे हाथी निकल जा सकता है। जितने दफा ४ के हाकिम नियुक्त हुए हैं, सभी या तो जमींदार अथवा बड़े-बड़े किसानों के बेटे हैं। उनसे गरीबों की भलाई की आशा बेकार है। लेकिन एकता की शक्ति कानून से भी बढ़कर है। सोशलिस्ट पार्टी के लाल झण्डे के नीचे होकर हम प्रतिज्ञा करें कि जमींदारों और बड़े किसानों के पक्ष में बाँध का एक कंकड़ भी तबाही नहीं देगा। 'लाल पताका' जमींदारों को विश्वास दिलाता है ।

कहना वाजिब है !

"बात वाजिब नहीं यह बात का बतंगड़ है !

जोशलीजी सभी बात में मीन-मेख निकालते हैं "दो मन की लड़ाई में दूब के सिर आफत। कांग्रेस और सुशासित अपने में लड़ रहा है। दोनों अपना

अपना मेम्बर बनाना चाहता है। चक्की के दो पाट में गरीब लोग ही पीसे जायेंगे।"

'गरीब पीसे नहीं जायेंगे गरीबों की भलाई होगी। एक पार्टी रहने से काम नहीं होता है। जब दो दलों में मुकाबला और डिक्टिस[1] होता है तो फायदा पब्लिक को ही होता है। उस बार रौतहट मेला में बिदेसिया नाच वाला आया था। मन लगाकर नाचो नाच करता था और न गाता ही अच्छी तरह पाता था। तीसरे दिन बलवाही नाच[2] का भी एक दल आ गया। दोनों में मुकाबला हो गया। साम से ही दोनों दलों ने नाच शुरू किया कितना पबलम कौवाली खेमटा और बारह गया इसका ठिकाना नहीं। सूरज उगने तक दोनों दल वाले नाचते ही रहे। तब मेला मनेजर बाबू ने दोनों दलों के लोगों को समझा-बुझाकर नाच बन्द करवाया था।

चलित्तर कर्मकार आया है।

किरंती चलित्तर कर्मकार! जाति का कमार है, घर सेमापुर में है। मोमेंट के समय पोरा मजेस्टरी इसके नाम को सुनते ही पेसाब करने लगता था। बम पेस्तौल और बन्दूक चलाने में मसहूर! मोमेंट के समय जितने सरकारी गवाह बने थे सबों के नाक कान काट लिये थे चलित्तर ने। बहादुर है। कभी पकड़ाया नहीं। कितने सीआईडी को जान से खतम किया। बरमपुर के बड़े-बड़े लोग इसके नाम से थरथर काँपते थे। ज्यों ही चलित्तर का घोड़ा दरवाजे पर पहुँचा कि 'सीधी सटक'। दीजिए चंदा। पचास! नहीं पाँच सौ से कम एक पैसा नहीं लेंगे। न? है? चाबी लाइए तिजोरी की। नहीं? ठायँ। ठायँ! दस खूनी केस उसके ऊपर था लेकिन कभी पकड़ा नहीं गया। आखिर हारकर सरकार ने मुकदमा उठा लिया। किरंती चलित्तर कर्मकार कालीचरन के यहाँ आया है? बस तब क्या है? करैला चढ़ा नीम पर। चलित्तर भी सोशलिस्ट पार्टी में है? तब तो जरूर बम पेस्तौल की ट्रेनिंग ही देने आया है। बम पेस्तौल के सामने काली टोपी वालों की साठी क्या करेगी? हाथी के आगे पिद्दी!

चरखा-कर्मा लाठी-भाला और बम-पेस्तौल! तीन ट्रेनिंग!

---

१ प्रतियोगिता। २ बाउल सुर में गीत गाकर नाचने वाला दल।

हो रे, अब ना जीयब रे सैयाँ
छतिया पर लोटल केश
अब ना जीयब रे सैयाँ !

महँगी पड़े या अकाल हो पर्व-त्योहार तो मनाना ही होगा। और होली ? फागुन महीने की हवा ही बावरी होती है। आश्विन कार्तिक के मैलेरिया और कालाजार से टूटे हुए शरीर में फागुन की हवा संजीवनी फूँक देती है। रोगे को जीव तो खसे फाग। दूसरे पर्व-त्योहार को तो टाल भी दिया जा सकता है। दीवाली में एक-दो दीप जला दिये बस छुट्टी। लेकिन होली तो मुर्दा दिलों को भी गुदगुदी लगाकर जिन्दादी है। भीरे हुए आम के बाग से हवा आकर बच्चे बूढ़ों को मतवाला बना जाती है। आवल का आटा गुड़ और तेल ! पूआ पकवान के इस छोटे से आयोजन के लिए मालिकों के दरवाजे पर पाँच दिन पहले से ही भीड़ लग जाती है। बजार के मुँह बोल दिये जाते हैं। मालिक बही खाता लेकर बैठ जाते हैं पास में कजरौटी खुली हुई रहती है। बाल नापने वाले बाल की डेरी से बाल नापता जाता है। बाहरबास को एक मन ! सोनाये तथमा को तीन पनरी। सादा कागज पर अँगूठे का निशान देते जाओ। मार्च महीने में यदि पाँच बाल चुका दोगे तो दुबोड़ा यानी एक मन का डेढ़ मन। यदि अगहनी कमल म चुकाओगे तो डेढ़ मन का तीन मन। सीधा हिसाब है। बाँध के सभी बड़े-बड़े किसानों का अपना-अपना मजदूर टोला है—सिवजी का तथमा और पासवान टोला तहसीलदार साहब का पोखिरियाटोला बालुकटोला कुर्मीटोला और सिंगोहरटोला सेखावत बाबू का बुआरटोला और कोयरीटोला। संथालटोली पर किसी का खास अधिकार नहीं।

इस बार तहसीलदार साहब को छोड़कर किसी ने मजदूरों को बाल नहीं दिया। अँगूठे का निशान नहीं हुये और बाल देंगे ? बाप-दादे के जमाने में अँगूठे का निशान देते आ रहे हैं कभी बेईमानी नहीं हुई। हम बाल बेईमानी कर लेंगे ? कालीचरण ने टीप देने को मना किया है तो कालीचरण से ही बाल लो। तहसीलदार का नये टीप की जरूरत नहीं। पुराने टीप ही इनमें है कि कोई हेर-फेर नहीं कर सकता। दूसरे किसानों के मजदूरों का भी तहसीलदार साहब ने इस बार बाल दिया है लेकिन कालीचरण को जमानतदार रखकर। बाल बनूरवा देना कालीचरण का काम होगा। जरै, दुबोड़ा नहीं तो सवैया ही

सही। जो भी हो तहसीलदार के दिल में दया-धर्म है। बाकी मालिक सोप तो पिशाच हैं पिशाच !

एक ओर लौटल बारी रे बिहउवा !

फगुआ का हरएक पीत देह में सिहरन पैदा करता है। फुलिया का चुमौना खलासीजी से हो गया है। खलासीजी बिदाई कराने के लिए आये थे। लेकिन फुलिया इस होली में जाने को तैयार नहीं हुई। खलासीजी बहुत बिगड़े बरसा देकर चार दिन तक बैठे रहे। आखिर में लड़कर जाने लगे। फुलिया ने रमजू की स्त्री के आँगन में खलासीजी से भेंट करके कहा था— 'इस साल होली नैहर में ही मनाने दो। अगले साल तो ।

नयना मिलानी करी के रे सैयाँ नयना मिलानी करी के !
अबकी बेर हम नैहर रहबो जो दिल चाहे से करी ले !

दोपहर से शाम तक रमजूदास की स्त्री के आँगन में रहकर फुलिया ने खलासीजी को मना लिया है। होली के लिए खलासीजी ने एक रुपया दिया है।

बेचारा सहदेव मिसिर इस बार किससे होली खेलेगा ? पिछले साल की बात याद आते ही फुलिया का देह सिहरने लगता है। भाँग पीकर बुत था सहदेव मिसर। एक ही पुआ को बारी-बारी से दाँत से काटकर दोनों ने खाया था। अरे, जात धरम ! फुलिया तू हमारी रानी है, तू हमारी आसि तू ही धरम सब कुछ।" बाबू को डाक पीने के लिए टेक रुपया दिया था और माँ को अठन्नी।

रात भर सहदेव मिसर जगा रह गया था। फुलिया के देह के पोर-पोर में मीठा दर्द फैल रहा है। जोड़-जोड़ में दर्द मालूम होता है। कोई बाँहों में जकड़कर मरोड़े कि जोड़ की हड्डियाँ पटपटाकर चटक उठें और दर्द दूर हो जाय। सहदेव मिसर को खबर भेज दें ! लेकिन गाँव वाले ? ऊँह होली में सब माफ है। वह आवेगा ? नाराज जो है !

अरे बाँहियाँ पकड़ि झकझोरे स्याम रे
फूटल रेसम चोड़ी चूड़ी
मसकि गई चोली भीजावल साड़ी
आँचल उड़ि जावे हो
ऐसो होरी मचावो स्याम रे !

कमली की आँखें लाल हो रही हैं पिछले साल होली के ही दिन वह बेहोश हुई थी। इस बार क्या होगा ? वह बेहोश नहीं होगी इस बार। इस बार डॉक्टर है उसे बेहोश नहीं होने देगा। लेकिन सुबह से ही डॉक्टर बाहर है। रानी देखने गया है रामपुर। यदि वह आज नहीं आया तो ? नहीं, वह

करके आएगा। माँ ने एक सप्ताह पहले ही निमन्त्रण दे दिया है। रंग अबीर,

गुलाल ! पिचकारी !

"माँ !"

"क्या है बेटी ?

"तुम्हारा डॉक्टर आज नहीं आवेगा ?

"क्यों क्या बात है बेटी ?"

"मेरा जी अच्छा नहीं।"

"ऐसा मत कहो बेटी दिल को मजबूत करो। कुछ नहीं होगा।"

आजु ब्रज में चहुदिस उड़त गुलाल !

चारों ओर गुलाल उड़ रहा है। डॉक्टर को कोई रंग नहीं देता है। रामपुर में भी किसी ने रंग नहीं दिया। रास्ते में एक जगह कुछ लड़के पिचकारी लेकर खड़े थे लेकिन डॉक्टर को देखते ही सहम गए। 'रंग नहीं पोवर है। रंग के लिए इतने पैसे कहाँ ! डॉक्टर को लोग रंग नहीं देते। वह सरकारी आदमी है, सरकारी वर्दी पहने हुए हैं। सरकारी वर्दी पर रंग देने से जेल की सजा होती है। डॉक्टर सरकारी आदमी है बाहरी आदमी है। वह गाँव के समाज का नहीं।

यह डॉक्टर की ही गलती है। शुरू से ही वह गाँव से गाँव वालों से अलग अलग रहा है। उसका नाता सिर्फ रोग और रोगी से रहा। उसने गाँव की जिन्दगी में कभी घुलने-मिलने की चेष्टा नहीं की। लेकिन डॉक्टर को अब गाँव की जिन्दगी अच्छी लगने लगी है गाँव अच्छा लगने लगा है और गाँव के लोग अच्छे लगते हैं। वह गाँव को प्यार करता है। उसे कोई रंग क्यों नहीं देता ? वह रंग में पोवर में कीचड़ में सराबोर होना चाहता है !

"अर र र र ! कोई बुरा न माने होली है !"

डॉक्टर के सफेद कुर्ते पर लाल-गुलाबी रंगों की छींटे सरसराकर पड़ती है।

"ओ कालीचरन !

"बुरा मत मानिए डॉक्टर साहब होली है।"

डॉक्टर मनीबेग से दस रुपये का नोट निकालकर कालीचरन को देता है—होली का चन्दा ! रंग और अबीर का चन्दा !

होली है ! होली है ! होली है !

बलेसर हाथ में पिचकारी लिये मौसी का आँचल पकड़कर खड़ा है। मौसी हँसकर कहती है," सुबह से ही रंग खेलने के लिए जिद कर रहा है। मेरी एक साड़ी को तो रंग से सराबोर कर दिया है। अब जिद पकड़ा है कि गाँव के लड़कों के साथ खेलेगा।"

"आओ भैया गनेश ! काली चरन गनेश का हाथ पकड़कर ले चलता है। गनेश खुश होकर डॉक्टर पर रंग की पिचकारी से फुहारें बरसाता हुआ काली चरन के साथ आ जाता है। मौसी खुश है।

"जुगजुग जियो काली बेटा !"

"बड़ा मस्त नौजवान है," डॉक्टर कहता है।

"कमली पाँच बार पुछवा चुकी है—डॉक्टर साहब लौटे हैं या नहीं। मुझे धमकी दे गई है—आज डॉक्टर को तुम नहीं छिना सकती। आज मेरे यहाँ निमन्त्रण है।

डोल-डाक झाँझ-मृदंग और डम्फ !
होली फगुआ भड़ौवा और जोगीड़ा !

काली चरन का दल बहुत बड़ा है। दो ढोल एक डाक है, झाँझ-डम्फ। सभी अच्छे गाने वाले भी इसी के दल में हैं। सुन्दरलाल मुखीलाल देवीदयाल और जोगीड़ा कहने वाला महन्था। मिडिल में पढ़ता है पढ़ने में बड़ा तेज है। दोहा कवित जोड़ने में उसकी चाँदी की चकती लिखी है। पाँच के छोटे-छोटे दल भी काली चरन के दल में मिल गए हैं।

जोगीड़ा सर र र
जोगीड़ा सर-र र
जोगीजी ताल न टूटे
तीन ताल पर ढोलक बाजे
डाक बिना बिम बिम्मक बिम्मक
जोगीजी !
होली है ! कोई बुरा न माने होली है !
बरसा में बहुरे जब आते हैं भर
बैंग हमारों उसमें करते हैं टर
वैसे ही राज आज कांग्रेस का है
लीडर बने हैं सभी कल के पीड़ जोगीजी सर र र
जोगीजी ताल न टूटे
जोगीजी तीन ताल पर ढोलक बाजे
जोगीजी डाक बिना बिम !
बसो काबो खम्भड़ पहनो रहे हाथ में लोली
बिन बहाड़े करो बकैती बोल सुराजी बोली जोगीजी सरर र !

सिर्फ जोगीड़ा ही नहीं। महंथ ने नया फगुआ गीत भी जोड़ा है। कलकत्ते

झूमा—रह में चलते हुए गाने के लिए।

आई रे होरिया आई फिर से !
आई रे !
बावन बीघा राज मझाइर
चरखा चलावे बाबू राजेन्दर
बूंअड़ काटा मजहाई रे ! होरिया आई फिर से !
बीर जमाहिर शान हमारो
बलकम है अभिमान हमारो
जयप्रकाश बैसो भाई रे ! होरिया आई फिर से !

होली है ! होली है ! होली है !

कोदरीटोला का बूढ़ा कलक्ट महतो कहता है "अरे आगहर साहेब ! अब क्या खोक होली खेलेंगे ! ! होली का जमाना चला गया। एक जमाना था जब कि गाँव के सभी बूढ़ों को नंगा करके नचाया जाता था एकदम नंगा। उस बार राज के मनेजर जनसन साहेब के साथ तीन-चार साहेब आये थे। कासा बकसा में खोज लगाकर छापी लेते थे। बाद में खानसामों से मालूम हुआ कि विलैत के बजट में छपी हुआ था। एकदम नंगा !"

कामरेड बालुदेव 'मेंढ़ोवा' गाने के लिए कह रहे हैं, अब एक नया मेंढ़ोवा हो। एकदम नया ताजा माल ! जर्मनवाला !"

ताक धिना ताक धिना।

अरे हो बुड़बक बमना अरे हे बुड़बक बमना
घुम्मा खेबे में जात नहीं रे जावे।
सुपति मउनियाँ खावे डोमनियाँ माँगे सियाह से पनियाँ
कुआँ के पानी न पावे बेचारी दौड़ल कमला के किनरियाँ
छोड़ी डोमनियाँ अब बनली मटिनियाँ आँधी के मारे सिपनियाँ
हेकरे खातिर दौड़ले दौड़हवा छाड़के घर में बभनिया।
आलहा चुनियाँ तेली तेलनियाँ के पीये न सूअल पनियाँ
मटिनी के जोबना के पंजा अमुनुवाँ में डूबली लखा के सहुनियाँ।
दिन भर घुआ घर आसन लखा के पाँचा पुरान बेंचनिया
एस के सतमाटोली के गलियन में जोतलीजी पतरा गननियाँ।
अहुआ बमना घुम्मा खेबे में जात नहीं रे जावे !

कोई बुरा न माने होली है ! होली है !

तहसीलदार साहब की इयोढ़ी पर पैर रखते ही डॉक्टर के मुँह पर बुलाक

मल दिया गया। डाक्टर की आँखें बंद हैं लेकिन स्पर्श में ही वह समझ गया है कि गुलाब किसने मला है। कमली! 'वसन्तोत्सव की कमली' डाक्टर याद करने की चेष्टा करता है एक बार किसी चित्रकार का 'मैथिली' शीर्षक चित्र किसी मासिक पत्रिका में देखा था! कौन था वह चित्रकार!

'डाक्टर बेचारे के पास न अबीर है और न रंग की पिचकारी। यह एकतरफा होली कैसी? लीजिए डाक्टर बाबू अबीर लीजिए। और इस बाल्टी में रंग है।" माँ बहुत दुखी है आज। पिछले साल होली के दिन इसी आँगन में मातम हो रहा था और इस साल उसकी बेटी चहकती फिर रही है। दुहाई बाबा भोलानाथ!

बेचारा डाक्टर रंग भी नहीं लेना जानता हाथ में अबीर लेकर खड़ा है। मुँह देख रहा है कहाँ लगावे!

"जरा अपना हाथ बढ़ाइए तो।"

'क्यों?"

'हाथ पर गुलाल लगा दूँ?"

"आप होली खेल रहे हैं या इन्जक्शन दे रहे हैं? चुटकी में अबीर लेकर ऐसे खड़े हैं मानो किसी की माँग में सिन्दूर देना है!" कमली खिलखिलाकर हँसती है। रंगीन हँसी!

डाक्टर अब पहले की तरह कमली की बोली को एक बीमार की बोली समझकर नहीं टाल सकता है। कमरे में लालटेन की हल्की रोशनी फैली हुई है सामने कमली खड़ी हँस रही है। ऐसी हँसी डाक्टर ने कभी नहीं देखी थी। यह स्वस्थ हँसी है—विकारशून्य! कमली का अंग-अंग मानो फड़क रहा है। डाक्टर अपने दिल की धड़कन को साफ-साफ सुन रहा है। उसके ललाट पर आज भी पसीने की बूँदें चमक रही हैं। सामने दीवार पर एक बड़ा आईना है। डाक्टर उसमें अपनी सूरत देखता है ललाट पर पसीने की बूँदें मानो दूल्हे के ललाट पर चन्दन की छोटी-छोटी बिंदियाँ सजाई गई हैं! डाक्टर को मदभूमि के माधव मालती की याद आती है। होली को पहले मदनमहोत्सव कहा जाता था। आम की मंजरियों से मदन की पूजा की जाती थी। इसी मदनोत्सव के दिन माधव और मालती की आँखें चार हुई थी और दोनों प्रेम की डोरी में बँध गए थे। जहाँ राधेश्याम जैसे होरी!

डाक्टर अबीर की पूरी झोली कमली पर उलट देता है। सिर पर लाल अबीर बिखर गया—मुँह पर, बालों पर और नाक पर। कहते हैं सिंदूर लगाते समय जिस लड़की के नाक पर सिंदूर लगकर बिखरता है वह अपने पति की बड़ी

दुलारी होती है।

ऐसी मचायो होरी हो
कनक भवन में श्याम मचायो होरी !

पचीस

बावनदास आजकल उदास रहा करता है।

"बालजी, चुन्नी धुसाई का क्या समाचार है ?" रात में बालदेवजी सोने के समय बावनदास से बातें करते हैं।

"चुन्नी धुसाई तो सोशलिस्ट पार्टी में चला गया।

बालदेवजी आश्चर्य से मुँह फाड़कर देखते ही रह जाते हैं

'बालदेवजी भाई, मजाक की बात नहीं। भगवान् जो करते हैं अच्छा करते हैं।

"याद है बालजी चम्पानगर्टी की सभा ठैयारीजी का लेक्चर और तमुकलाल का गीत। याद करके आज भी रोंवां कांप उठता है। 'अंधा रे अन्धनी की धार ।"

"लेकिन भारतमाता अब भी रो रही है बालदेव। बावनदास को पीर आ रही है।

बालदेवजी चमक उठते हैं। भारतमाता अब भी रो रही है ? ऐं ? क्या कहता है बावनदास ?

बावनदास करवट लेते हुए कहता है, "बिलैती कपड़ा के बिकेटिंग के जमाने में बापसम-सावरमप के मोका पर बिकेटिंग के दिन क्या हुआ था सो याद है तुमको बालदेव ? बालमन मड़वाड़ी के बेटा सागरमल ने अपने हाथों सभी मोल-टिपरों को पीटा था जेहल में बोलटियरों को रखने के लिए सरकार को खर्चा दिया था। वही सागरमल आज नरसतनपर बाला कांग्रेस का सभापति है। और सुनोगे ? पुरुषोत्तम कायथ को जानते ही न ? वही जुआ कम्पनी वाला एक बार नेपाली कड़ाकियों को बुलाकर लाते समय था जोखनी में पकड़ा गया था। वह कट्टर बाला का सिकरेटरी है। भारतमाता और भी जार-बेजार रो रही है।

बालदेवजी का आश्चर्य हटता है। वह बावनदास से बहस करना चाहता

है। लेकिन बावन तो छर्पटा लेने लगा। 'वासदेवजी के समझ में कोई बात नहीं आ रही है। 'मारवमाता बार-बेबार ये रही है ?

बावनदास चुन्नी मुसाई और वासदेवजी ! तीनों ने एक ही दिन इस संसार के माया-मोह को त्यागकर गुरुजी में नाम लिखाया था।

वृहस्व चुन्नी मसाई ! चार बीघ जमीन दो-चार आम-कटहल के पेड़ एक गाय और दो छोटे-छोटे लड़कों का एकमात्र अभिभावक। स्वभाव से धर्मभीरु। चन्दनपट्टी में सभा देखने गया। तैयारीजी ने माथन दिया और तनुकलाल ने गीत गाया। सभी रोने लगे। चुन्नीदास के मन का मैल भी आँसुओं की धारा में बह गया। उसी दिन गुरुजी में नाम लिखा लिया। चर्खा-कर्घा झंडा-तिरंगा और खद्दर को छोड़कर सभी चीजें मिथ्या हैं। मुरेठी बाना विदेशी बैकाठ !

अरे देसवा के सब बन-बान विदेसवा में जावै रहे।
महँगी पड़त हर साल इसक अकुलाय रहे।

मुहाई गाँधी बाबा ! 'गाँधी बाबा अकेले क्या करें। देश के हरेक आदमी का कर्तव्य है ।

का करें गाँधीजी अकेले तिलक परलोक बसे
कवन सरोजनी के साथ अबहिं परदेस रही।

मुहाई गाँधी बाबा। चुन्नीदास को अपने शरण में ले लो प्रभू ! 'विदेशी कपड़ा बैकाठ 'नीमक कानून 'जेल। माँगा-बाद छोड़िए प्यारे भाइयो जेल। व्यक्तिगत सत्याग्रह 'जेल। १९४२ 'जेल। सब मिलकर दस बार जेल-यात्रा कर चुका है चुन्नी मुसाई !

और वह सोशलिस्ट पार्टी में चला गया ?

बावनदास !

पूर्व जन्म का पक्का बबवा सिरजनहार की मर्जी। प्रकृति की भूल अथवा बायलाएड बायमस और प्युटिटिरी ग्लैण्ड के हेर-फेर ! डेढ़ हाथ की ऊँचाई ! साँवला रंग मोटे होंठ, अचरज में डाल देने वाली दाढ़ी और चौंका देने वाली मोटी भौंरी आवाज। ऊँचाई के हिसाब से आवाज दसगुना भारी। अजीब चाल मानो लड़क रहा हो। अजात दुश्मनील। जन्मजात साधू। जिस ओर होकर गुजरता लोगों की निगाहें बरबस अटक जातीं। फिर ताज्जुब की हँसी-मुस्कराहट। पीछे-पीछे बच्चों का हुजूम तमाशा कुत्ते भूँकते इन्सान हँसते ! मर्मभेदी बोलें छिप जातीं अथवा छिपा दी जातीं। 'और जब भगवान् ने उसे चलता-फिरता तमाशा ही बनाकर भेजा है, लोग उसे देखकर खुश हो लेते हैं तो क्यों न वह पारिश्रमिक माँग ले। 'दे-दे मैया कुछ खाने को ! भगवान् भला करेंगे।

सेताराम सेताराम !

बलमपट्टी की उस सभा में तैयारीजी के भाषण और तनुकलाल के गीत ने इस डेढ़ हाथ के आदमी को भी झकझोर दिया था। न जाने पूर्वजन्म के किस पाप का फल भोग रहा हूँ। क्या होगा यह शरीर रखकर ? चढ़ा दो बापी बाबा के चरण में भारतमाता की खातिर !

मरे देसवा के खातिर मजहरुलहक भइलै फकिरवा से
हीन भइलै राजेन्द्रप्रसाद वेमवामियो !

और वह तो फकीर ही है। 'धूमी गुसाईं ने नाम लिखा दिया ? मेरा भी नाम लिख लिया जाये। 'रामकिसुन बाबू की स्त्री उसे देखते ही चिल्ला उठी थी—भगवान् ! बावन भगवान्। 'उन्होंने पुलिस आने के लिए कहा था।

सेताराम ! सेताराम ! बन्देमहातरम् ! बन्दमहातरम् !

जिले की राजनीति के जनक रामकिसुन बाबू के बंगले पर वह जिस समय हाजिर हुआ उस समय पुलिस की मोटी खड़ी थी। दारोगा साहब इन्तिजार कर रहे थे। रामकिसुन बाबू अपनी आभारानी को जरूरी हिदायतें दे रहे थे।

बन्दे महातरम ! बन्दे महातरम् !

'तुमि जाओ ! आमार जन्ये भेवो ना। जोई दुमाको भगवान् आमार काछे निजेई एसे गेछेन। आभारानी की आँखें आनन्द से चमक उठी थी।

आभारानी ने बावनदास को 'भगवान्' छोड़कर किसी दूसरे नाम से कभी नहीं पुकारा।

कुछ दिनों बाद आभारानी भी गिरफ्तार हुईं। बावन भी पकड़ा गया। पुलिस ने एकाध डंडा लगाकर उसे भगा देना चाहा पर पहले ही डण्डे की चोट को आभारानी ने झपटकर अपने शरीर पर ले लिया तो पुलिस के पाँव के नीचे की मिट्टी खिसक गई थी। "आमार भगवान् के मारो ना। 'खून से लथपथ खादी की सफेद साड़ी। पत्थर को भी पिघला देने वाली करुणा से भरी बोली आमार भगवान् ! बावन के पूर्वजन्म के सारे पाप मानो अचानक ही पुण्य में बदल गए। भूखे ढूँठ में नई कोंपल लग गई। उसके मुँह से मोटी आवाज निकली थी—"माँ !"

माँ ! महात्मा गाँधीजी भी आभारानी को माँ ही कहते। १९३४ में भूकम्प-पीड़ित क्षेत्रों के दौरे पर जब बापू आये थे साथ में थे रामकिसुन बाबू आभारानी और बावनदास। बावनदास के बिना आभारानी एक डग भी कहीं नहीं जा सकती। गाँधीजी हँसकर बोले थे माँ तुम्हारे भगवान् से ईर्ष्या होती है।" अन्तहीन

पोपले मुँह की वह पवित्र हँसी, बच्चों की हँसी जैसी !

फुलकाहा बाजार ! लोगों की भीड़ । ऊँचा मंच 'महात्मा गाँधी की जय ! रह-रहकर आकाश हिल उठता है । जय ! फिर आकाश हिलता है । रेलमपेल ! पुष्पवृष्टि ! चरखधारि ! सीटी स्वयंसेवक । कॉलेंटर डाओ चेप चेप !

मंच पर आगे-आगे रामविलास बाबू मामाराजी के कन्धे का सहारा लिये गाँधीजी । वही गाँधीजी ! वे ! वे ! मामाराजी हाथ का सहारा देकर फिर किसको मंच पर चढ़ा रही हैं ? कौन है वह ? अरे बावनदास ! बौना ! गाँधीजी तर्जनी से सबों को शान्त रहने के लिए कह रहे हैं ।

लोगों की भीड़ में बावनदास खँजड़ी बजाकर गाता है 'एक राम-नाम धन छाँपा जग में कछु ना बाँचा हो । आकाश दूर तक नहीं पहुँचती । लेकिन बावनदास ! डेढ़ हाथ ऊँचा यह 'डेर-आदमी' कितना बड़ा हो गया है ! महात्मा जी भीख माँगते हैं । हरिजनों के लिए दान दीजिए ! रुपये की थैली सोने की अँगूठी चेन बुताम हार, कंगन अठन्नी चवन्नी दुअन्नी इकन्नी पत्थर का टुकड़ा । किन्तु सब-कुछ देकर भी बावनदास से बड़ा होना असम्भव !

बावनदास को मानो कुबेर का भण्डार मिल गया ठँठ के दरिद्र नारायण हो गए बापू !

१९३७ । पण्डित जवाहरलाल नेहरू चुनाव के तूफानी दौरे पर आए हैं । बावनदास को देखकर ताज्जुब की मुद्रा बनाकर कुछ देर तक देखते ही रह गए । फिर ललाट पर बल और भाल पर अँगुली डालते हुए, पागुलीजी से अंग्रेजी में बोले 'आई कान्ट रिमेम्बर दि नेम ऑफ दैट बुक । (मुझे उस किताब का नाम याद नहीं आ रहा है) ।

'दिस बॉक दि गोल्डन रिवर ! पागुलीजी ने छूटते ही बता दिया । फिर दोनों एक हो ' ५० पड़े ।

अब बावनदास भजन ही नहीं गाता विश्वास देना भी सीख गया है । वह बोलने को उठता है । माइक-स्टैंड काफी ऊँचा है । ऑपरेटर हैरान है । पत्नी-बाजी में वह क्या करे ? कभी ऊँचा कभी नीचा करता है, फिर भी बावनदास से काफी ऊँचा है माइक-स्टैंड । नेहरूजी बड़ी फुर्ती से उठकर आते हैं माइक खोलकर हाथ में ले लेते हैं । झुककर बावनदास के मुँह के पास ले जाते हैं "बोलिए !" जनता हँसती है । बावन खप पसरा जाता है । नेहरूजी मुस्कराकर उसके सर में माला डाल देते हैं "बोलिए ?!" प्रेस रिपोर्टरों के कीमती कैमरों के बटन एक ही साथ 'क्लिक-क्लिक कर उठे थे । 'मैसनम हेराल्ड के मुखपृष्ठ पर बड़ी-

का अंग्रेजी फल 'मनफोरमा' पाँचू राउत का बकरा रोज आकर टप-टप फूलों को खा जाता है। बावन के पैर थरथराते हैं। वह आगे बढ़ना चाहता है। वह जानता है! वह इस औरत के कपड़े को फाड़कर चिन्दी-चिन्दी कर देना चाहता है। वह अपने तेज नाखूनों से उसके देह को चीर-फाड़ डालेगा। वह एक चीख सुनना चाहता है। वह अपने जबड़ों से पकड़कर उसे झकझोरेगा। वह मार डालेगा इस अजान मोटी औरत को। वह खून करेगा। ऐं! सामने की खिड़की से कौन झाँकता है? गांधीजी की तस्वीर? दीवार पर गांधीजी की तस्वीर! हाथ जोड़कर हँस रहे हैं बापू! बाबा! अधकटी हुई आम पर एक घड़ा पानी! बाबा छिमा! छिमा! दो घड़े पानी! दुहाई बापू! पानी पानी पानी! शीतल जल! ठण्डक!

बावन आँखें खोलता है। रामकिसुन बाबू पानी की पट्टी दे रहे हैं। माँ पंखा झल रही है। गांधुलीजी चुपचाप खड़े हैं और बकरायी हुई तारावतीजी कह रही हैं, "चीख सुनकर मेरी नींद खुली तो देखा यह धरती पर छटपटा रहा है।

दूसरे दिन आमारानी एक गिलास टमाटर का रस देते हुए बोली थी "भगवान् आज बेके तोमाय रोज एक गिलास ऐई रस आर दुवे दुध खेते हबे।"

लेकिन बावन तो सात दिनों का उपवास-व्रत से चुका था। आत्मशुद्धि, इन्द्रियशुद्धि प्रायश्चित! आमारानी हारकर ता हले आमिये जाबो ना' धमकी देकर चली गई। तब बावन ने गांधुलीजी के पास जाकर धीरे-धीरे सारी कहानी सुना दी—"गांधुलीजी! आप माँ को समझा दीजिए। मैं व्रत तोड़ नहीं सकता। कठ माया मे!

गांधुलीजी ने हँसते हुए आमारानी से कहा था "भगवानेर व्रत भंग हउवा अर्थमय। कारण भूखार। तबे आपनार भाग्य भालो जे बेचारा के मूरछासेर कथा जने पड़े नि नईले एतक्षन आर भगवानेर चोख थाकतो ना।" (भगवान् का व्रत-भंग होना असम्भव है। आपका भाग्य अच्छा है कि उन्हें मूरछा की बात याद नहीं आई, वरना अब तक भगवान् की आँख नहीं रहती।)

आमारानी अवाक होकर गांधुलीजी की ओर देखती रह गई थी, "की जानी बापू!"

देवताओं और मन्दिरों के नगर, बनारस में रहकर भी आमारानी को सबसे पहले अपने 'भगवान्' की याद आती है। कभी-कभी गांधुली जी के नाम मनी आर्डर आता है "भगवानेर कापड़ेर जन्य। भगवानेर दूधेर जन्य।

और यही बावनदास कहता है भारतमाता बीमार पड़ी है! बालदेवजी को लछमी दासिन की याद आती है। वह भी रो रही थी।

लेकिन कालीचरन ? सोसलिट पार्टी ।

वासुदेव विराग नहीं होगा । उसे नींद नहीं आ रही है । बहुत खटमल हैं । हाँ वह कल बावनदास से पूछेगा यदि घर में खटमल ज्यादा हो जायें तो क्या घर में ही आग लगा देनी चाहिए ?

छब्बीस

बाबू हरसौरीसिंह राज पारबता के नये तहसीलदार बहाल हुए । 'बेठार का खबर' सुमरित दास सबों से कहता है 'देखो-देखो कायस्थ के झूठे पत्तल में राजपूत खा रहा है । तहसीलदार विश्वनाथ बाबू को राज पारबंगा के कुमार साहेब ने बुलाकर बहुत समझाया-बुझाया लेकिन तहसीलदार ने कहा बूक फेंककर चाटना आदमी का काम नहीं । तहसीलदारी में अब क्या मजा है ! अब तो यह सूखी हड्डी है ।

वास्तव में अब तहसीलदारी में कोई मजा नहीं रह गया है । जमाना बदल गया है । तहसीलदार साहब के बाप देवनाथ मस्सिक सिर्फ पाँच रुपये माहवारी पर बहाल हुए थे । लेकिन ऊपरी आमदनी ? तीन साल बीतते-बीतते अस्सी बीघे बनहर[1] जमीन के मालिक बन गये थे । आदमी की ऊपरी आमदनी ही असल आमदनी है । और तहसीलदारी रोब का क्या पूछना ! तहसीलदार के खेत में मजदूरी करने वालों को कभी मजदूरी नहीं मिलती थी । राजपारबंगा के राजा तो तिरहुत में रहते थे उन्हें किसी ने कभी देखा भी नहीं । असल राजा तो बूढ़े देवनाथ मस्सिक ही थे । उस समय कटिहार शहर ठिकाने से बसा भी नहीं था । बूढ़े तहसीलदार साहब अपने सलीमशाही जूतों के तल्ले में ही कोठियाँ पुर्तनियों से ठुकवाकर मँगाते थे और तीन महीने में ही कोठियाँ झड़ जाती थीं । सुनते हैं वे बोलते बहुत कम थे काम से कुछ कम सुनते थे और जब बोलते थे तो 'मारो साले को दस जूता । कमला नदी के बबूल में जो पड़ता है, उसी में जाल पातकर रखा था । जितने तहरीर, तकबाला या मजदूरा देने में देर की उसे पहले में चार घंटा तक खड़ा करवा दिया । पाँव के अँगूठे से लेकर जाँघ तक मोटे-मोटे जोंक घुंघरू की तरह लटक जाते थे । 'यह जमाना तो

---

१ उपजाऊ ।

बूढ़े तहसीलदार के साथ ही पढ़ा गया।

"जब नीलकोठी के साहबों के भी जुल्म से ऊब कर जगह-जगह किसानों ने बलवा करना शुरू किया तो जमींदारों ने अपने तहसीलदार और पटवारियों को खुश रख के हिफाजत की ज्यादा जोर-जुल्म मत करो!"

विश्वनाथ बाबू ने भी अच्छी तरह ही सिखाया। रैयतों पर विशेष जोर-जुल्म करने की कभी जरूरत नहीं पड़ी। उनके पूर्वजों ने रक्तों के सिर और सिमाने पर तहसीलदार की ऐसी धाक जमा रखी थी कि उन्हें विशेष कुछ नहीं करना पड़ता था। कहावत मशहूर थी कमजोर घोड़ा मुहब्बत भी खा सकता है पर तहसीलदार नहीं। हर बार जमाबंदी के पहले असरफ मैनेजर इफ साहब का सीमा आता था। सीमा आने के पहले ही कैथर बीघ-जमीन वाले आदमी भी गाँव छोड़कर मेपाल के जिले मोरंग भाग जाते थे। कोठी के बगीचे में पचासों छोटे-बड़े तम्बू और खामियाने तान दिये जाते थे। पचास सिपाही चार हाथी मोटरसाईकिल खानसामा बावर्ची नाई और धोबी। पाँच पाँच की बैलगाड़ियों पर जीमने के सामान लदकर आते थे।

इलाके-भर के बदमाश और टेढ़े लोगों की फेहरिस्त तहसीलदार पहले ही बनाकर रखते थे। सुमरितदास मोटे असामियों को चुपचाप एकान्त में ले जाकर खबर सुना देता था—तुम्हारा नाम तो फेहरिस्त में सबसे ऊपर है!

ऐं? सबसे ऊपर? सुनने वाले पर मानो वज्र गिर पड़ता था। जैसे भी हो नाम तो कटाना ही होगा!

फेहरिस्त बनाने के समय तहसीलदार साहब सुमरितदास की भी राय लेते थे। सुमरितदास साल-भर की घटनाएँ याद करते हुए सिखाता था—"हाँ अनन्त पर्व के दिन रतजीत घूस आने के लिए गया था तो घूमरटोली के सतकौड़ी से झूठ बोलकर बर्तन वापस कर दिया था—बैस घूस पाई। घुमरटोली के फरजंद गिरी ने करैला नहीं दिया था। तहसीलदार साहब ऐसे लोगों के नाम याद करते जिन्होंने राज के अफसरों में पक्षाही देने से इनकार किया डाकिल-हाजिर करवाकर तहसीलदार का मजदूरना हड़प गया किन लोगों को पैसे की गर्मी हो गई है, कौन राह चलते ऐंठकर चलते हैं और पंचायत में उनके सिपाहियों के विरुद्ध किन लोगों ने गवाहियाँ दी थीं।

इफ-साहब अखाना-बसूली से ज्यादा महत्व देते थे राज के रोब को। राज का रोब ही असल चीज है। उनका कहना था—"हमारा स्टेट में एक भी बदमाश को अब नहीं देखने माँगटा। तुम हमारा टेहीलदार को खुश रोखा। हमारा असला खुश? टब साला का बच्चा सच्चा?

"चेटर मांइड ।"

"माय बाप !" हाथ जोड़े एक अर्धनग्न आदमी थर-थर काँपता हुआ खड़ा हुआ ।

"तुम मुकदमा में गुआही क्यों नेई दिया ?

"माय-बाप !"

"हूँ माय-बाप का बच्चा ! सिपाय चाबुक देगा।

सपाक ! सपाक ! सपाक् ! कोड़े बरसने लगते !

"सि । तुम चेटरी आय ? राजपट आय ? तुम जमाय टेसीलदार से नेई जीट सकेगा । हम तुमको बेज्जट करेगा । बदमाय ।"

और इसके बाद साल-भर तक इलाके में अमन-चैन का राज । तहसीलदार साहब के डर से लोग थर-थर काँपते रहते थे । लेकिन अब ? जमाना बदला ही नहीं है, साल उलट गया है ।

सिवजी ने बहुत कोशिश पैरवी करके हरलालसिंह को तहसीलदारी दिला दी है । मैनेजर साहब को पूरे चार सौ रुपये की सलामी दी गई है । सुना है, यही बस्ता लेते समय ही ठीक पड़ गई है । अब नये तहसीलदार की तहसीलदारी कैसी चलती है, देखना है ।

राजपूतटोली का बच्चा-बच्चा खुश है । शिवशंकरसिंह सबों से कहते हैं, "हरलालसिंह एक किलास और पढ़ लेता तो मनेजरी करी थी

काली कुर्ती वाले संयोजकजी बौद्धिक क्लास में समझा रहे हैं—"जिस तरह यह तहसीलदारी कायस्थों के हाथ से राजपूतों के हाथ में आई है, उसी तरह सारे आर्यावर्त के राजकाज का भार हिन्दुओं के हाथ में आएगा । और उस दिन आर्यावर्त के कोने-कोने में हिन्दू-राज की पताका लहराएगी ।"

जोतखीजी सलाह देते हैं—"बिना लछमी की पूजा किये बही-बस्ता में हाथ नहीं लगाया जाय । शुक्रवार को शुभ दिन है । कार्यारम्भ यात्रा गृहनिर्माण आदि ।"

बालदेवजी को बार-बार अपने सपने की बात याद आती है—बिशाल सभा हरलालसिंह माला पहना रहा है लछमी को ।

कॉमरेड कालीचरण और बासुदेव अपनी पार्टी के मेम्बरों से कहते हैं "पुराने तहसीलदार यदि नागनाथ थे तो यह नया तहसीलदार साँपनाथ है । दोनों में कोई फर्क नहीं । दोनों ही आखिर जमींदार के लठबुतके हैं । सोशलिस्ट पार्टी के सिकेटरी साहब ने कहा है लोग संघर्ष के लिए तैयार रहें

बावनदास के लिए यह गाँव नया है गाँव के लोग नये हैं । वह अभी चुप है । न जाने क्यों, उसका जी नहीं लगता है ।

चर्चा शेल्टर में सिर्फ चर्चा-कर्चा ही नहीं बूढ़े लोगों को रात में पढ़ाया भी जाता है। औरतों और बच्चों को मास्टरनीजी पढ़ाती हैं और बूढ़ों को मास्टरजी। बूढ़ा विरंचीबाबू दस दिनों से पढ़ने आता है, लेकिन 'क' के बदले 'ब' से ही ककहरा शुरू करता है 'ब ब क ख'। मास्टर जी हैरान हैं क्या सचमुच ही बूढ़ा तोता पीछ नहीं मानता ?

सत्ताईस

डॉक्टर की दिलचस्पी का एक नया अध्याय शुरू हुआ है। उसने प्रेम प्यार और स्नेह को बायोलॉजी के सिद्धान्तों से ही हमेशा मापने की कोशिश की थी। वह हँसकर कहा करता "दिल नाम की कोई चीज आदमी के शरीर में है, हमें नहीं मालूम। पता नहीं आदमी 'लंग्स' को दिल कहता है या 'हार्ट' को। जो भी हो 'हार्ट' 'लंग्स' या 'लीवर' का प्रेम से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अब वह यह मानने को तैयार है कि आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाड़कर जिसे हम नहीं पा सकते। वह 'हार्ट' नहीं वह अजब अजोबर जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है लेकिन जिसकी दवा 'ऐंड्रिजिन' नहीं। उस दर्द को मिटा दो आदमी जानवर हो जायेगा। दिल वह मन्दिर है जिसमें आदमी के अन्दर का देवता वास करता है।

बचपन से ही वह अपने जन्म की कहानी को कभी भूल नहीं सका। प्रत्येक इतिहास पर गौरव करने वाले युग में पले हुए हर व्यक्ति को अपने खानदान की ऐसी कहानी चाहिए जिसके उजाले से वह दुनिया में चकाचौंध पैदा कर दे। लेकिन डॉक्टर के वंश-इतिहास पर काली रोशनाई पुती हुई है—जेल की सेंसर की हुई चिट्ठियों की तरह। काली रोशनाई से किसी हिस्से को इस तरह पोत दिया जाता है कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि उस हिस्से में कभी कुछ लिखा हुआ था। जन्म देने वाली माँ ने भी जिसे दूर कर दिया। अँधेरे में एक अभागिन माँ दिल का दर्द दबाए और आँचल में अपने नवजात शिशु को छिपाए खड़ी है। एक काली और भयावनी छाया आकर हाथ बढ़ाती है माँ अन्तिम बार अपने कलेजे के टुकड़े को रक्त के पिण्ड को एक पलक निहारती है, चूमती है। भयावनी छाया उसके हाथ से शिशु को छीन लेती है। माँ दाँतों से ओंठ दबाए खड़ी रह जाती है।

डॉक्टर ने अपनी माँ के स्नेह को अँधेरे में खड़ी 'सल्हुटेड' तस्वीर-सी माँ के दुलार की कीमत को, समझने की चेष्टा की है। वह गला टीपकर मार भी तो सकती थी। खटमल को मसलने के लिए अँगुलियों पर जितना जोर डालना पड़ता है, उस पाँच वर्ष्टे की उम्र के शिशु की जीवन-लीला को समाप्त करने के लिए उतने-से जोर की ही आवश्यकता थी। माँ ऐसा नहीं कर सकी। शायद उसने चेष्टा की होगी। बच्चे पर एक-दो बार उँगलियाँ गई होंगी। सोया हुआ शिशु मुस्करा पड़ा होगा और वह उसे सहलाने लगी होगी। उसने अपनी बेबस लाचार और अभागिनी माँ के मन में उठनेवाले तूफान के झकोरे की कल्पना की है। यह अपनी माँ के पवित्र स्नेह का अपराजित प्यार का जीता-जागता प्रमाण है!

किसी भी अभागिन माँ की कहानी सुनते ही वह मन-ही-मन उसकी भक्ति करने लगता है। पतिता निर्वासित और समाज की दृष्टि में सबसे नीच माँ की गोद में वह क्षण भर के लिए अपना सिर रखने के लिए व्याकुल हो जाता है। किसी स्त्री को प्रेमिका के रूप में कभी देखने की चेष्टा उसने नहीं की। वह मन ही-मन बीमार हो गया था। एक जवान आदमी को शारीरिक सुख नहीं मिले तो वह निश्चय ही बीमार है, अथवा 'एब्नॉर्मल' है।

डाक्टर ने एक नये मोड़ पर मुड़कर देखा दुनिया कितनी सुन्दर है!

वह औरत-कत्याव करना चाहता है। मनुष्य के जीवन को क्षय करने वाले रोगों के मूल का पता लगाकर नई दवा का आविष्कार करेगा। रोग के कीड़े नष्ट हो जाएँगे इन्सान स्वस्थ हो जायेगा। दुनिया-भर के मेडिकल कॉलिजों में उसके नाम की चर्चा होगी। 'प्रशान्त-मेथड' 'प्रशान्त रिऐक्शन'। डब्लू आर० की तरह पी आर० कहेंगे लोग। इसके बाद! 'टेस्ट-ट्यूब बेबी' किसे माँ कहेगा? तब शायद माँ एक हास्यास्पद शब्द बनकर रह जायेगा। जानते हो पहले माँ हुआ करती थी? एक अर्वाचीन से भी कुछ आगे लड़की 'टेली-फाके' के द्वारा अमेरिकन पेन्ट्री का घर बैठे स्वाद लेती हुई मुड़कर कहेगी—'प्रीटेस्ट ट्यूब एज! सि-सि! म्वाँ! ट्यूब म्वाँ!

'माँ! माँ वसुन्धरा धरती माता! माँ अपने पुत्र को नहीं मार सकी लेकिन पुत्र अपनी माँ को गला टीपकर मार देगा। हरम् श्यामम्।

भारतमाता ग्रामवासिनी!
खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला-सा आँचल!

मैला आँचल! लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! खेतों की सुनहली

बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के ढोर खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में कमर भर सुनहले पानी में सारे गाँव के ढोर क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरपेंठी का जंगल कोठी का आम कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के नक्शे! डॉक्टर का सभी चीजें नई लगती हैं। कोसल की कुक्ष में डॉक्टर के दिल में अभी हूक पैदा नहीं की। किन्तु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकने वाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

सब दिन बोले कोयला भोर सिवरतवा चा चा
ईतिल फीवलिया मानु बोलय आधी रतिया हो रामा जाँ जाँ
सूतल पिया के जगावे हो रामा जाँ जाँ

किसी के पिया की नींद न टूट जाये! सहरी नींद में सोये हुए पिया के सिर हाथे पंखा झलती हुई धानी को डर है पिया की नींद न खुल जाये सपना न टूट जाये!

डॉक्टर भी किसी की पुकार करती मोठी बल्लियों के सहारे सो जाना चाहता है सहरी नींद में खो जाना चाहता है। जिन्दगी की जिस डगर पर वह बेतहाशा दौड़ रहा था उसके अगल-बगल आस-पास कहीं क्षणभर सुस्ताने के लिए कोई छाँव नहीं मिली। उसने किसी पेड़ की डाली की शीतल छाया की कल्पना भी नहीं की थी। जीवन की इस नई पगडण्डी पर पाँव रखते ही उसे बड़े जोरों की थकावट मालूम हो रही है। वह राह की खूबसूरती पर मुग्ध होकर छाँव में पड़ा नहीं रह सकेगा। मंजिल तक पहुँचने का वह कितना उबड़खाबड़ रास्ता है जो राही को मंजिल तक पहुँचने की प्रेरणा देता है। वह क्षण-भर सुस्ताने के लिए उधार छाया चाहता है। प्यार!

सूतल पिया के जगावे हो रामा!

पिया जब घर आती है पिया को विदाई दी। पिया को आना है। हिमालय की चोटी को उषा की प्रथम किरण ने छूकर स्वर्णिम कर दिया। आम के बागों में कोयल-कोयली दाहिनम और बुलबुल के सम्मिलित सुर में संगीत-गान गाए! खेतों से गीत की कड़ियाँ पुरवैया के सहारे उड़ती आती हैं और डॉक्टर के दिल में हलचल मचा जाती है। नहीं की कटनी हो रही है। कमाई हुई रबी की प्रथम की सोंधी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है।

'डॉक्टर साहब!

क्या है?

"जरा चलिए! मेरी बहन को कै हो रही है।"

"पेट भी चलता है ?"

"जी !"

डॉक्टर सुरत तैयार होकर चल देता है। पास के ही गाँव में आना है। डॉक्टर्पिया होगा। लेकिन 'सेलाइन ऐपरेटस' भी हो लेना अच्छा होगा।

"सीध बार पेट चला है ?"

बिछावन पर पड़ी हुई युवती पीली पड़ गई है। उसके हाथ-पाँव अकड़ रहे हैं। पेशाब बन्द है। हैजा ही है। डॉक्टर 'सेलाइन ऐपरेटस' ठीक करता है। स्पिरिट स्टोव जलाता है। मार्फीन-सेलाइन की बोतल निकालता है। बूढ़ा बाप हाथ जोड़कर कुछ कहना चाहता है और आखिर कह ही डालता है, "डॉक्टर साहब यह जो अकसीन दे रहे हैं इसका कितना होगा ?"

छोटे अकसीन का फीस तो दो रुपया है। इतने बड़ अकसीन का तो जरूर पचास रुपया होगा !

"क्यों ? पचास रुपया" डॉक्टर मुस्कराता है।

'तो रहने दीजिए। कोई दवा ही दे दीजिए।

'दवा से कोई फायदा नहीं होगा।

"लेकिन मेरे पास इतने रुपये कहाँ हैं ?"

"बैल बेच डालो" डॉक्टर पहले की तरह मुस्कराते हुए सेलाइन देने की तैयारी कर रहा है।

"डॉक्टर बाबू, बैल बेच दूँगा तो खेती कैसे करूँगा ? बाल-बच्चे भूखों मर जाएँगे। लड़की की बीमारी है।"

'क्या मतलब ?

"हुजूर, लड़की की जाति बिना दवा-दारू के ही आराम हो जाती है !"

लड़की की जाति बिना दवा-दारू के ही आराम हो जाती है ! लेकिन बेचारे बूढ़े का इसमें कोई दोष नहीं। सभ्य कहलाने वाले समाज में भी लड़कियाँ दवा की पैदाइश समझी जाती हैं। जंगल-सार !

डिप-डिप डिडिप-डिडिप !

"कल सुबह को इसपिताल में हैजा की सूई दी जायेगी। सभी लोग—बाल-बच्चे बूढ़े-जवान औरत-मर्द—आकर सूई ले लें।" डिप डिप डिडिप ! चाँद का चौकीदार होलहा दे रहा है।

हैजा के पहले रोगी को बचा लिया गया लेकिन पाँच को नहीं बचाया जा सका। डॉक्टर ने डाल दिलवाकर लोगों को सूई लेने की खबर दी लेकिन कोई नहीं आया। कुआँ में दवा डालने के समय लोगों ने एक साथ मिलकर विरोध किया—

"बाबाकी एहने बो ! डॉक्टर कूपों में दवा डालकर सारे गाँव में हैजा फैलाना चाहता है । खूब समझते हैं !

डॉक्टर ने बालदेवजी कालीचरण और वर्चा सेण्टर के लोगों को बुलवा भेजा । सहायता माँगी "यदि लोगों ने सुई नहीं लगवाई और कुओं में दवा नहीं डाली तो एक भी गाँव को बचाना मुश्किल होगा ।"

दोपहर को बालदेवजी कालीचरणजी और वर्चा सेण्टर के मास्टर-मास्टरनी को डॉक्टर साहब के साथ दल बाँधकर निकले और कुओं में दवा डाल दी गई । सुई देने की समस्या जटिल थी । कालीचरण ने कहा 'एक बात ! आज कोठी का हाट है । हाट लगते ही चारों ओर घेर लिया जावे और सबों को जबर्दस्ती सुई दी जावे ! जो लोग बाकी बच रहेंगे उन्हें घर पर पकड़कर दी जावे ।"

डॉक्टर को यह सुझाव अच्छा लगा लेकिन बालदेवजी ने एतराज किया "किसी की इच्छा के विरुद्ध, जोर जबर्दस्ती करना ।

मास्टरनी ! हूँ ! बहुत महिला कांग्रेसी को देखा है मालती सरस्वती देवी सरस्वती उषादेवी सरकादेवी । लेकिन कोई तो इतना करकस नहीं बोलती थी । हूँ ! कालीचरण की ठीक कहते हैं ! जबर्दस्ती करना हिंसावाद नहीं तो और क्या है ?

कालीचरण के दल वालों ने हाट को घेर लिया है । डॉक्टर साहब काम के मेज के नीचे टेबल पर अपना पूरा सामान रखकर तैयार हैं । कालीचरण एक-एक आदमी को पकड़कर लाता है, मास्टरनीजी सिरिंट में बिजोई हुई सुई बाँह पर मल देती हैं और डॉक्टर साहब सुई पड़ा देते हैं । सहयोगदार साहब नाम लिखते जाते हैं । हाट में अफरा मची हुई है । लेकिन भागकर किधर जायेंगे ? चारों ओर मुस्तैद पार्टी का सिपाही खड़ा है ।

"माई गे ! माई गे ! हे बेटा कालो !"

"क्यों रोती क्यों है ?

"हे बेटा !"

सारे देह में मालदा पोतने के समय देह में सुई नहीं पड़ी थी । चलो ! सात सौ पचीस लोगों को सुई दे दी गई है । अब जो लोग घर में

उन्हें कल सुबह ही सूरज उगने के पहले ही दे देनी होगी।

डॉक्टर साहब कहते हैं, "बीमारों की सेवा के लिए स्वयंसेवक चाहिए।"

कालीचरण अपने दल के साठ स्वयंसेवकों के साथ रात को अस्पताल में हाजिर हो जायेगा।

चर्खा सेण्टर की मास्टरनीजी बड़ी निडर हैं। वह भी सेवा करने के लिए अपना नाम लिखाती हैं।

बावनदास हँसकर कहता है, 'मुझे देखकर तो रोगी लोग डर जायेंगे डॉक्टर साहब मुझे और कोई काम दीजिए!"

बालदेवजी चुप हैं। उनको हैजा का बहुत डर है।

अट्ठाईस

डॉक्टर आदमी नहीं देवता है देवता!

तन्त्रिमाटोली पोलियाटोली कुर्मछपरीटोली और रैदासटोली में सब मिला कर सिर्फ पाँच आदमी नुकसान हुए। घर-घर में एक-दो आदमी बीमार थे लेकिन डॉक्टर देवता है। दिन-रात कभी एक पल चैन से नहीं बैठा। मास्टरनी जी भी देवी हैं। कालीचरण भी बहादुर है। कै और दस्त से भरे बिछावन पर लेटे हुए रोगी की सेवा करना कपड़े धोना दवा डालकर बरफी बनाना आदमी का काम नहीं देवता ही कर सकते हैं। एक पैसा भी फीस नहीं लिया और मुफ्त में रात-रात भर जगकर लोगों का इलाज करते रहे। रेसमडाक कोयरी के इकलौते बेटे को यम के मुँह से छुड़ा लिया। रेसम ने डॉक्टर को खुशी-खुशी एक बाघ बख्शीस दी लेकिन डॉक्टर साहब ने कहा "अपने लड़के को इस बाघ का दूध पिलाओ। दूध बिक्री मत करो। यही हमारा बख्शीस है।"

बावनदास भी अजगैबी आदमी है। रात-भर नीम के पेड़ के नीचे बैठकर खंजड़ी बजाकर गाते रहते थे—'मालिक सीताराम सोच मत काहे करो! सेताराम! सेताराम! बन्दे महावरम्। मालिक सीताराम!

मपावनी रात में जब कि आदमी अपनी छाया से डरते थे बावन का गीत डरे हुए लोगों को बल देता था 'मालिक सीताराम सोच मत काहे करो।

निर्बल के बल राम!

बाह्मणटोली में तीन आदमी मरे। और जोतखीजी की स्त्री जो इसपी

बीमारी से मरी। अच्छा सटक मया था। कायस्थटोली संथालटोली और यादवटोली में एक भी आदमी बीमार नहीं हुआ। राजपूतटोली में पाँच-सात आदमी को रोग ने पकड़ा, लेकिन डॉक्टर साहब ने सभी को बचा लिया। पन्द्रह दिनों के बाद कमला ने डॉक्टर की सूरत देखी है।

कमला ने मन-ही-मन कितनी बातें पढ़ रखी थीं। वह रूठी रहेगी बोलेगी नहीं। पन्द्रह दिनों में एक बार भी तो आते! रहने दीजिए, यही होता न कि रोग का भूत मुझे खा जाता। मैं मर जाती। आपका क्या बिगड़ता? चलीं डॉक्टर की माशूकनीजी को भी! रात भर खूब नाच कराकर पिलाती थी न?

लेकिन डॉक्टर को देखते ही वह सब कुछ भूल गई। डॉक्टर का चेहरा एकदम काला हो गया है। आँखें धँस गई हैं। प्यारू ठीक ही कहता था 'डॉक्टर साहब दुनिया भर को आराम कर रहे हैं, लेकिन खुद बीमार होते जा रहे हैं। खाना-पीना तो एकदम कम हो गया है। कमला चाहती है कि माँ थोड़ी देर के लिए डॉक्टर को अकेला छोड़ दे। आज वह डॉक्टर से लिपट जायेगी।

"कहिए हैजा डॉक्टर साहब!" कमली हँसते हुए डॉक्टर के पास जाती है। "हैजा डाक्टर? सुनिए लड़की की बात बाप! मैं पूछती हूँ तुमसे कि तुम दिन-दिन क्या होती जा रही हो? माँ डाँटते हुए कहती है।

"वाह रे! रामपुर के बदमाशवार लोग उस दिन आकर बाबूजी से पूछ रहे थे कि हैजा डॉक्टर कहाँ रहता है। सुना था नहीं? लोग इन्हें हैजा डॉक्टर ही कहते हैं।" कमला खिलखिलाकर हँसती है।

माँ हँसते हुए चली जाती है। डॉक्टर मुस्कराते हुए कहता है, "लोग हैजा डॉक्टर कहते हैं, लेकिन तुमको तो कहना चाहिए बेहोशी डॉक्टर!"

"अहा-हा! बेहोशी डॉक्टर की सूरत तो आज पन्द्रह दिनों बाद दूध के चाँद की तरह देखने को मिली है और बात बनाते हैं!" कमली मुँह फुलाती है।

"नहीं कमला, इस बीच मुझे बराबर यही डर लगा रहता था कि यदि तुमने कुछ बदपरही पैदा की तो क्या होगा।"

"तो मैं जान-बूझकर बेहोश होती हूँ क्यों?"

"नहीं —।

बेहोशी डॉक्टर आता है।

क्या मैं —

"हूँ !"

"डॉक्टर साहब इतने दिनों बाद आये हैं, चाय बना देती तो ठीक नहीं, बैठकर झगड़ा कर रही है, माँ अन्दर से ही कहती है।

कमला दाँत से जीभ को दबाते हुए उठ जाती है—माँ सब कुछ यही की याद।

डॉक्टर ने इस बार आसपास के पन्द्रह गाँवों का परिचय प्राप्त किया है अथाह इन्सानों को देखा है, बीमार और निराश्रय लोगों की आँखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे मलेरिया-ग्रसित किसानों की अन्धेरी और बेडौल मजदूरों की झोपड़ियों में जाने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। रोगियों को देखकर उठते समय सीके पर टँगी हुई काली मिट्टी की हाँडियों से उसका सिर टकराया है। सात महीने के बच्चे को बबूआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है 'धरौंदी गन्दगी और अज्ञानता से भरी हुई दुनिया में भी सुन्दरता जन्म लेती है। किशोर-किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने। कमला नदी के बहाव में खिले हुए कमल के फूलों की तरह जिन्दगी के शोर में ये बड़े खुशबूदार बड़े मनोहर और सुन्दर दिखाई पड़ते हैं, किन्तु ज्यों ही सूरज की गर्मी तेज हुई ये मुरझा जाते हैं। शाम होने से पहले ही पंखड़ियाँ झड़ जाती हैं! कश्मीर के कमल और पूर्णिया के कमल में शायद यही फर्क है। और कमला तो रजकमल!

"मैं तुम्हें रजकमल कहूँगा।"

"और मैं तुम्हें प्रशान्त महासागर कहूँगी" कमला ने आज अचानक ही 'तुम' कह दिया।

"प्रशान्त महासागर में रजकमल नहीं खिलता मैं कमला नदी का बहता ही होना पसन्द करूँगा" डॉक्टर हँसता है।

कमला की बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें एक बार ऊपर उठकर झुक गईं।

"तुमने मुझे आज तक अपना अस्पताल क्यों नहीं दिखलाया? तुम्हारे चूहे, खरगोश तितार और मेंढक"

"माँ और बाबूजी तुम्हें अस्पताल आने देंगे?"

"क्यों नहीं?"

"तो आज ही चलो अभी।"

कमला डॉक्टर के साथ अस्पताल की ओर जा रही है। पैंड का सूरज पश्चिम की ओर निष्प्राण-सा पूर्णिमा के उगते हुए चाँद-सा सा मालूम हो रहा है। दिन भर धू-धू कर जलने वाली धरित्री हवा फिर गई है।

बीमारी से मरी। बच्चा बदल गया था। कायस्थटोली धंधालटोली और बाभनटोली में एक भी आदमी बीमार नहीं हुआ। राजपूतटोली में पाँच-सात आदमी को रोग ने पकड़ा लेकिन डॉक्टर साहब ने सभी को बचा लिया। पन्द्रह दिनों के बाद कमला ने डॉक्टर की सूरत देखी है।

कमला ने मन-ही-मन कितनी बातें गढ़ रखी थी। वह कहीं खेलेगी, बोलेगी नहीं। पन्द्रह दिनों में एक बार भी तो आते! कहने दीजिए, यही होता न कि रोग का छूत मुझे लग जाता। मैं मर जाती। आपका क्या बिगड़ता? चलो डॉक्टर की मास्टरनीजी को भी! रात-भर जूझ आज बनाकर खिलाती थी न?

लेकिन डॉक्टर को देखते ही वह सब कुछ भूल गई। डॉक्टर का चेहरा एकदम सफेद हो गया है। आँखें धँस गई हैं। पास बैठा एक आदमी कहता था "डॉक्टर साहब दुनिया-भर को आराम कर रहे हैं, लेकिन खुद बीमार होते जा रहे हैं। खाना-पीना तो एकदम कम हो गया है। कमला चाहती है कि माँ थोड़ी देर के लिए डॉक्टर को अकेला छोड़ दे। आज वह डॉक्टर से लिपट जायेगी।

"कहिए हैजा डॉक्टर साहब!" कमला हँसते हुए डॉक्टर के पास जाती है। "हैजा डाक्टर? सुनिए लड़की की बात जरा! मैं पूछती हूँ तुमसे कि तुम दिन-दिन क्या होती जा रही हो?" माँ डाँटते हुए कहती है।

"वाह रे! रामपुर के बटेश्वार लोग उस दिन आकर बाबूजी से पूछ रहे थे कि हैजा डॉक्टर कहाँ रहता है। सुना था नहीं? लोग इन्हें हैजा डॉक्टर ही कहते हैं।" कमला खिलखिलाकर हँसती है।

माँ हँसते हुए चली जाती है। डॉक्टर मुस्कराते हुए कहता है "लोग हैजा डॉक्टर कहते हैं लेकिन तुमको तो कहना चाहिए बेहोशी डॉक्टर!"

"अहा-हा! बेहोशी डॉक्टर की सूरत तो आज पन्द्रह दिनों बाद दूध के चाँद की तरह देखने को मिली है और बात बनाते हैं!" कमला मुँह फुलाती है।

"नहीं कमला इस बीच मुझे बताकर यहीं डर लगा रहता था कि यदि तुमने कुछ बड़बड़ी पैया की तो क्या होगा।"

"तो मैं जान-बूझकर बेहोश होती हूँ क्यों?

"हाँ जान-बूझकर।"

"क्यों?"

"क्योंकि बेहोश होने से ही बेहोशी डॉक्टर आता है।

"छूः! डॉक्टर आवे न आवे मेरी बला से!"

"अच्छी बात है तो मैं चला।"

"हूं !"

"डॉक्टर साहब इतने दिनों बाद आये हैं, चाय बना देती हो तो वहीं बैठकर झगड़ा कर रही है, मां अन्दर से ही कहती है।

कमला दांत से जीभ को दबाते हुए उठ भागती है—मां सब सुन रही थी शायद।

डॉक्टर ने इस बार आसपास के पन्द्रह गांवों का परिचय प्राप्त किया है यमादूर इन्सानों को देखा है, बीमार और विपन्न लोगों की आंखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे न पर्याप्त किसानों की अन्दर हवेली और खेतमीन मजदूरों की झोपड़ियों में आने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। रोगियों को देखकर उठते समय सींके पर टंगी हुई खाली मिट्टी की हांडियों से उसका सिर टकराया है। आठ महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है परीक्षी बन्दरी और अहाजत से भरी हुई दुनिया में भी सुन्दरता जन्म लेती है। किशोर-किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने। कमला नदी के पहड़ा में खिले हुए कमल के फूलों की तरह जिन्दगी के बीच में वे बड़े सुमावने बड़े मनोहर और सुन्दर दिखाई पड़ते हैं किन्तु ज्यों ही सूरज की गर्मी तेज हुई वे कुम्हला जाते हैं। शाम होने से पहले ही पंखड़ियां झड़ जाती हैं। कश्मीर के कमल और पूर्णिया के कमल में शायद यही फर्क है। और कमला तो राजकमल!

"मैं तुम्हें राजकमल कहूंगा।

"और मैं तुम्हें प्रशान्त महासागर कहूंगी" कमला ने आज अनजाने ही 'तुम' कह दिया।

"प्रशान्त महासागर में राजकमल नहीं खिलता, मैं कमला नदी का पहड़ा ही होना पसन्द करूंगा," डॉक्टर हंसता है।

कमला की बड़ी-बड़ी आंखों की पलकें एक बार ऊपर उठकर झुक गईं।

"तुमने मुझे आज तक अपना अस्पताल क्यों नहीं दिखलाया? तुम्हारे चूहे, खरगोश बिमार और मेंढक—"

"मां और बाबूजी तुम्हें अस्पताल आने देंगे?"

"क्यों नहीं?"

"तो आज ही चलो अभी।"

कमला डॉक्टर के साथ अस्पताल की ओर जा रही है। चैत का सूरज पश्चिम की ओर निष्प्राण-सा पूर्णिमा के उगते हुए चांद-का सा मालूम हो रहा है। दिन भर धू-धू कर जलने वाली धरित्री हवा फिर गई है।

बीमारी से मरी। बच्चा सटक गया था। कायस्थटोली संथालटोली और यादवटोली में एक भी आदमी बीमार नहीं हुआ। राजपूतटोली में पाँच-सात आदमी को रोग ने पकड़ा, लेकिन डॉक्टर साहब ने सभी को बचा लिया। पन्द्रह दिनों के बाद कमला ने डॉक्टर की सूरत देखी है।

कमला ने मन-ही-मन कितनी बातें गढ़ रखी थीं। वह रूठी रहेगी, बोलेगी नहीं। 'पन्द्रह दिनों में एक बार भी तो आते! रहने दीजिए, यही होता न कि रोग का भूत मुझे लग जाता। मैं मर जाती। आपका क्या बिगड़ता? चली डॉक्टर की मास्टरनीजी जो थी! 'रात-भर खूब घाम बनाकर पिलाती थी न?

लेकिन डॉक्टर को देखते ही वह सब कुछ भूल गई। डॉक्टर का चेहरा एकदम काला हो गया है। आँखें धँस गई हैं। प्यारू ठीक ही कहता था "डॉक्टर साहब दुनिया-भर को आराम कर रहे हैं, लेकिन खुद बीमार होते जा रहे हैं। खाना-पीना तो एकदम कम हो गया है। 'कमला चाहती है कि माँ थोड़ी देर के लिए डॉक्टर को अकेला छोड़ दे। आज वह डॉक्टर से लिपट जायेगी।

"कहिए हैजा डॉक्टर साहब!" कमली हँसते हुए डॉक्टर के पास जाती है। "हैजा डाक्टर? सुनिए लड़की की बात बाप! मैं पूछती हूँ तुमसे कि तुम दिन-दिन क्या होती जा रही हो? माँ डाँटते हुए कहती है।

"वाह रे! रामपुर के बटेसरवार लोग उस दिन आकर बाबूजी से पूछ रहे थे कि हैजा डॉक्टर कहाँ रहता है। सुना था नहीं? लोग इन्हें हैजा डॉक्टर ही कहते हैं।" कमला खिलखिलाकर हँसती है।

माँ हँसते हुए चली जाती है। डॉक्टर मुस्कराते हुए कहता है, "लोग हैजा डॉक्टर कहते हैं, लेकिन तुमको तो कहना चाहिए बेहोशी डॉक्टर!"

"अहा-हा! बेहोशी डॉक्टर की सूरत तो आज पन्द्रह दिनों बाद चाँद के चाँद की तरह देखने को मिली है और बात बनाते हैं! कमली मुँह फुलाती है।

"नहीं कमला इस बीच मुझे बराबर यही डर लगा रहता था कि यदि तुमने कुछ गड़बड़ी पैदा की तो क्या होगा।"

"तो मैं जान-बूझकर बेहोश होती हूँ क्यों?"

"हाँ जान-बूझकर।

"क्यों?"

"क्योंकि बेहोश होने से ही बेहोशी डॉक्टर आता है।

"छूँ! डॉक्टर आवे न आवे मेरी बला से!"

"अच्छी बात है, तो मैं चला।"

"हूँ !"

"डॉक्टर साहब इतने दिनों बाद आये हैं, चाय बना देती, तो तो नहीं, बैठकर झगड़ा कर रही है," माँ अन्दर से ही कहती है।

कमला दाँत से नीम को दबाते हुए उठ जाती है—माँ सब सुन रही थी शायद।

डॉक्टर ने इस बार आसपास के पाँच गाँवों का परिचय प्राप्त किया है भयातुर इन्सानों को देखा है, बीमार और निराश लोगों की आँखों की भाषा को समझने की चेष्टा की है। उसे मलेरिया-ग्रसित किसानों की अन्दर धँसी हुई और बेबसीन मजदूरों की झोपड़ियों में आने का सौभाग्य या दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है। पीड़ितों को देखकर उठते समय छोके पर टँगी हुई खाली मिट्टी की हाँडियों से उसका सिर टकराया है। सात महीने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पलते देखा है। उसने देखा है गरीबी बदबूदी और बदहाली से भरी हुई दुनिया में भी सुन्दरता जन्म लेती है। किसान-किशोरियों और युवतियों के चेहरे पर एक विशेषता देखी है उसने। कमला नदी के पड़ोसों में खिले हुए कमल के फूलों की तरह जिन्दगी के और में ये बड़े लुभावने बड़े मनोहर और सुन्दर दिखाई पड़ते हैं किन्तु ज्यों ही सूरज की गर्मी तेज हुई ये कुम्हला जाते हैं। शाम होने से पहले ही पंखड़ियाँ झड़ जाती हैं! कश्मीर के कमल और पूर्णिया के कमल में शायद यही फर्क है। और कमला तो एक कमल!

"मैं तुम्हें एक कमल कहूँगा।"

"और मैं तुम्हें प्रशान्त महासागर कहूँगी" कमला ने आज अनजाने ही 'तुम' कह दिया।

"प्रशान्त महासागर में एक कमल नहीं खिलता मैं कमला नदी का पहला ही हेमन्त पसन्द करूँगा," डॉक्टर हँसता है।

कमला की बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें एक बार ऊपर उठकर झुक गईं।

"तुमने मुझे आज तक अपना अस्पताल क्यों नहीं दिखलाया? तुम्हारे चूहे, खरगोश सियार और नेवले —"

"माँ और बाबूजी तुम्हें अस्पताल आने देंगे?"

"क्यों नहीं?"

"तो आज ही चलो अभी।"

कमला डॉक्टर के साथ अस्पताल की ओर जा रही है। चैत का सूरज पश्चिम की ओर निष्प्राण-सा, पूर्णिया के उठते हुए चाँद-सा सा मालूम हो रहा है। दिन भर धू-धू कर जलने वाली पछिया हवा थिर गई है।

गाँव के पनघट पर स्त्रियों की भीड़ आँखें फाड़कर इन दोनों को देखती है, कपड़े बन्द हो जाते हैं, पानी भरना बन्द हो जाता है। नजर से ओझल होने के बाद फिर सबों के मुँह से अपनी-अपनी राय निकलती है। 'कमली अब आराम हो गई। डाक्टर साहब ने इसको बचा लिया। 'दोनों की जोड़ी कैसी अच्छी है। सतरंगा मैगजीन का एक किताब लाया है, उसमें ऐसी ही एक जोड़ी की छापी है ठीक ऐसी ही। 'डॉक्टर भी कायस्त है क्या? कौन जात है? क्या जाने बाबा इलाज करते-करते कहीं! क्या बकती है—सिर की गर्मी शाम को मैदान की हवा में ठंडी होती है, जानती नहीं? मौसी ने जब चुम्बनजोड़ी देखी तो उसके हाथ स्वयं ही आँचल के खूँट पर चले गए। आँचल पसारकर मन-ही-मन वह बोली "दुहाई कमला मैया!"

गणेश पास ही मुट्ठी बाँध रहा था। वह जोर-जोर से चिल्लाया

पूरब है आहेब बाबा
पश्चिम छै मेम
आहेब बाबे चिटिक-पिटिक
चिक-चिक हँछे मेम।

कमला और डाक्टर ने उचट कर देखा। गणेश ताली बजा कर हँस रहा था "देखो मामी आहेब मेम।"

दोनों ने हँसते हुए मौसी को प्रणाम किया। गणेश भागकर मामी के आँचल में छिप जाता है। कमला चिल्ला कर कहती है, 'अच्छा ठहरिये गोबरगणेश जी! अभी लौटती हूँ तो कान पकड़ कर बाँध दिखाऊँगी।"

बहलीवाला साहेब रास्ते में ही मिले। हँसते हुए बोले "बाय बायद यहाँ पायलपन सवार हुआ था। अच्छी बात है, दुबह शाम की हवा में बहुत पुण्य है।"

सभी एक ही साथ हँस पड़े।

कोठी के बाग में गुलमुहर की बड़ी-बड़ी डालियाँ लाल-लाल फूलों से लदी हुई, हवा के हल्के झोंकों में झिल-मिल रही थी। कमलबाग के पीछे फूल नवबहू की पीली ओढ़नी की याद दिला रहे थे। मोहन-मँझा शाम की हवा में पायलपन बिखेर रही थी। सिरीष के फूलों की पँखुड़ियाँ मंथर-आलोक की तरह झड़ रही थी। 'मार्टिन ने बड़े यत्न से फूल लगाए थे। बाग लगाते समय उसने ऐसी ही शामों की कल्पना की होगी—बाँहों में पड़ी हुई मेरी के साथ होठों की लाली को और भी प्राणमय बनाने के लिए। पानी पटाने वाले मालियों पर वह झल्लाते हुए बोला होगा—इको! एक भी पाछ टूटने पर पचास बेंट देगा।

चैत की गोधूली में अपनी सारी तेजी खोकर सूरज ने श्याम सलोनी संध्या के आँचल में अपना मुँह छिपा लिया था। दूर तक फैली हुई ताड़ों की पंक्तियाँ कुछ मटमैली कुछ सिन्दूरी-सी पृष्ठभूमि में पर्वत श्रेणी करके सूरज को अंतस गहराई में डूबते हुए देख रही थी। गाय और बैलों के साथ घर लौटते हुए चरवाहे सावित्री-नाच का गीत गा रहे थे

आहे सखी बहू फुलवारी देखे है
देखिबो सुन्दर रूप
नाना रचना फूल अनूप बहू फुलवारी देखे है।

गुलमुहर के डाल-डाल फूल खिल गए और अमलतास की पीली ओढ़नी न जाने कब सरककर गिर पड़ी। किन्तु योजन-गंधा अब भी पावक बना रही है। डाक्टर देवता नहीं आदमी बनना चाहता है।

एक जोड़ी निर्मल आँखों की पलकें ऊपर की ओर उठीं और फिर झुक गईं।

उनतीस

कल 'सिरवा' पर्व है।

कल पड़मान में 'मछमरी' होगी—मछमरी अर्थात् मछली का शिकार। आज चैत संक्रान्ति है। कल पहली वैशाख साल का पहला दिन। कल सभी गाँव के लोग सामूहिक रूप से मछली का शिकार करेंगे। छोटे-बड़े अमीर गरीब सभी टापी और जाल लेकर सुबह ही निकलेंगे। आज दोपहर को सतू खाएँगे। सतुआनी पर्व है आज। आज रात की बनी हुई चीजें कल खाएँगे। कल चूल्हा नहीं जलेगा। बारहों मास चूल्हा जलाने के लिए यह आज कसम है कि वर्ष के प्रथम दिन में मूसिबाह नहीं किया जाये। इस वर्ष की पकी हुई चीज उस वर्ष में खाएँगे।

सारे मेरीगंज के मछली मारने वालों का सरदार है काशीचरण। परम्परा उसने के समय ही निकलना होगा। बारह कोस जमीन तय करना होगा। इस काशीचरण ने ऐलान कर दिया है जुलूस बनाकर चलना होगा लाठ लेकर साथ। लाठ भी लगाते चलना होगा। जमींदार फैजबख्श अली ने इस बार पड़मान नदी के 'जलकर' को खास में रखा है। उसके

बमकों ने कहा है कि मछली नहीं मारने देंगे मजेटरी मँगाकर तैनात रखेंगे। देखना है मजेटरी को !

नये तहसीलदार बाबू हरगौरीसिंह के यहाँ क्या खाता खुलेगा। खान को सत्यनारायण की पूजा होगी। डॉक्टर को भी निमंत्रण है।

तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद ने तहसीलदारी छोड़ दी है तो क्या क्या खाता भी न करेंगे ? उनके यहाँ भी सत्यनारायण व्रत की कथा होगी। डॉक्टर साहब को निमंत्रण है।

पीछी ने होली में डॉक्टर को नहीं बिलाया था। इस बार डॉक्टर को नहीं बिलाएगी।

मठ पर भी नया खाता होता है। इस बार नये महंथ रामदास जी के हाथ से खाता खुलेगा। इसीलिए विशेष आयोजन है। बीजक पाठ, साहब भजनावली ध्यान और अन्त में वैष्णव भोजन। बालदेवजी और धावनदास को विशेष निमंत्रण है। मछली वालिन ने मंडारी के मार्फत कहला भेजा है "बालदेवजी जरूर आवें। पाँव में वैष्णव है ही और कौन !

बेचारे सुमरितदास अब नये तहसीलदार का कारपरदाज है। वह कहता फिरता है, 'हरगौरी बाबू हीरा आदमी है। साफ कायथ-बच्चा हमी पर फेंककर निरिचन्त ! देखिए तो हम दिहाँता समझाते हैं कि बाबू साहेब ! यही-बस्ता सेमाहा और कर्जा किसी दूसरे को छूने नहीं देना चाहिए। लेकिन हरगौरी बाबू हीरा आदमी है। विसनाथपरसाद तो एक नम्बर के मक्खीचूस और सकी आदमी हैं। कायस्थ और राजपूत का कलेजा बराबर हो भला !

हाँ कैसरेसी हुए हैं ! सुमरितदास से कौन बात छिपी हुई है ? अब तो गाँव का चाल-चलन एकदम बिगड़ जावेगा। बजार बेटी को एक परदेसी बजार के साथ हँसी-अलबरी करने की घूमने-फिरने की आजादी दे दी है विसनाथपरसाद ने। गाँव का चाल-चलन नहीं बिगड़े तो सुमरितदास का नाम बदल देना।

नये तहसीलदार बाबू हरगौरीसिंह के यहाँ रात में एक भी रैयत नहीं आया। पुरुवाह में जो सलामी मिलती है, वह रकम जमींदार की होती है लेकिन खाता खुलने के दिन की सलामी तो तहसीलदार की खास आमदनी है। सुमरितदास ने आकर खबर दी—"सभी रैयत विसनाथपरसाद के यहाँ गये थे। देह ही नये सलामी में पड़े थे। मछली मारकर लौटते समय रास्ते में रैयतों ने निश्चिन्त किया था कि नये तहसीलदार के यहाँ नहीं जाएँगे। कुरमा का बेटा बलिया सीटरी करता है। बाप काट खाता था पास और

बेटा का नाम दुरजोधन ! अभी खटमलटोली का विरंचिया कहता था कि रैयतों का बेट जो जरेगा वही असल जमींदार है । नये तहसीलदार ने क्या एक चुरकी धान भी दिया है ? 'खास्तर बचन कबो झूठ नहीं होता' राई एवं कलमीदई चूता मार पंचितरम ! समझे तहसीलदार साहब राह और काँटों को काँटीवाले जूते से बस में किया जाता है ।"

बालदेवजी का काम छूट गया ।

कपड़े चीनी और किरासन तेल की पुर्जी अब तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद देंगे । बालदेव जी को क्यों छुट्टा दिया ? शायद उनका विकेट पकड़ा गया । पाप कितने दिनों तक छिपेगा ? बेलाबन में जो परमेश्वरदिंघ की जमीन मौजा की है, तो किस रुपये से ? वह बालदेव जी की ही जमीन है । बेलाबन के घर में जाकर देखा आज भी बाँठ-के-बाँठ कपड़ा पड़ा हुआ है टीन-का-टीन तेल है । बेलाबन के सभी बच्चे सम्बन्धियों के यहाँ कपड़ा बचे हैं । यह बात कितने दिनों तक छिपी रहेगी ? सुनते हैं कि कंमरेड ने अपना कौंड़िया बहाल किया है । कंमरेड का कौंड़िया तो ऊपर से ही किसी बात का पता लगाता था कंमरेड के कौंड़िया को हाँडी के भात का भी पता रहता है ।

स्त्री की मृत्यु के बाद जोतखीजी बहुत गमगुम रहते हैं । डाक्टर को कितना कहा कि कोई दवा देकर रावनाराएण की माँ को उबारिए लेकिन कौन सुनता है ! बस एक ही जवाब । बच्चा को पेट काटकर निकालना होगा । शिव हो ! शिव हो ! पराई स्त्री को बेपद करने की बात कैसे उसके मुँह से निकली ? पारबती की माँ ने बदला ले लिया । पाँच साल पहले पंचायत में जोतखीजी ने कहा था कि पारबती की माँ को मैला ढोलकर दिलाया जाये । विश्वनाथप्रसाद ने पारबती की माँ का पक्ष लिया था नहीं तो उसी बार उसका नयी 'पुच नम्बर' लेप हो जाता । इस बार पारबती की माँ ने बदला चुका लिया । अच्छा ! ब्राह्मण का शाप निष्फल नहीं होगा । देखना देखना ! इस कलियुग में भी असल ब्राह्मण रहता है देखना !

अरे ! वह जमाना चला गया अब राजपूत और खटमलटोली के लोग बात-बात में लात-घूसा चलाते थे । याद नहीं है ? एक बार रहमू पासवान का सुअर चोड़ी पर चढ़कर आ रहा था । गाँव के अन्दर यदि आता तो एक बात भी थी । गाँव के बाहर ही सिंघजी ने चोड़ी पर से नीचे गिराकर जूते से मारना शुरू कर दिया था—'साला दुसाध चोड़ी पर चढ़ेगा ! अब वह जमाना नहीं है । गांधीजी का जमाना है । क्या तहसीलदार हुआ है तो क्या ? हमारा क्या बिगाड़ लेगा ? न जमीन है इस गाँव में नहीं उस

गांव में रहें, बराबर है। 'धमकी देते हैं कि फूंके से रैट करेंगे। अच्छा! अच्छा!

दुर्गों से पीड़ित दक्खिन ओर उपेक्षित लोगों को कालीचरण की बातें बड़ी अच्छी लगती हैं। ऐसा लगता है, कोई घाव पर ठंडा लेप लगा रहा हो। लेकिन कालीचरण कहता है—"मैं आप लोगों के दिल में आग लगाना चाहता हूँ। सोये हुए को जगाना चाहता हूँ। सोशलिस्ट पार्टी आपकी पार्टी है, गरीबों की मजदूरों की पार्टी है। सोशलिस्ट पार्टी चाहती है कि आप अपने हकों को पहचानें। आप भी आदमी हैं, आपको आदमी का सभी हक मिलना चाहिए। मैं आप लोगों को मीठी बातों में भुलाना नहीं चाहता। यह कांग्रेस का काम है। मैं आग लगाना चाहता हूँ।"

कालीचरण आग उगलता है लेकिन सुनने वालों का चलता हुआ कलेजा ठंडा हो जाता है। 'जमीन जोतने वालों की! पूंजीवाद का नाश!

बालदेवलाल फिर एक फहरम लाया है। मंत्री जी ने भेज दिया है। इस बार पटना का छापा फहरम है, पूर्णिया का नहीं। पटना का फहरम कच्चा नहीं हो सकता। 'इस फहरम पर अपना नाम बापू बाप का नाम जमीन का खाता नम्बर, खसरा नम्बर लिखकर पूर्णिया कचहरी में दे दो 'रूम ४० के हाकिम को। जमीन पक्की हो जायेगी। सच? हाँ अंगूठे का टीप देना होगा। 'और जिन लोगों के पर्चा डेप्टर में दखलदार करना ठीक किया है उन्हें भी टीप देना होगा?

बालदेवजी क्या करें? खेलावन भैया कुछ समझते ही नहीं। रोज कहते हैं "बालदेव कमला किनारे वाली जमीन में फलदार पासवान के बाबा का नाम कायमी बटैयादार की दुरुस्त से दर्ज है। फलदार से कहकर सपूर्ती लिखा दो। 'लेकिन बालदेव भी क्या करें? चौधरीजी को वह तब दिन से गुरु की तरह मानता आ रहा है? कभी किसी काम में हरोंदी नहीं होने दिया। इतना चौअन्निया मेम्बर बनाकर दिया। गांव में चर्खा सेन्टर खुलवा दिया लेकिन जिला कमेटी के मेम्बर सहसौल्यार साहब हो गए। बालदेव को कोई खबर नहीं दी गई। कपड़े की मेम्बरी भी नहीं रही। सीमक कमजूर के समय के बेल पाने का यही रसीद मिला है। कालीचरण की बातें वाले ठीक कहते हैं, "कांग्रेस अमीरों की पार्टी है। 'लेकिन यह कालीचरण की बातों में तो नहीं आ सकता। कालीचरण की आँखें जलने लगी। रात-रात-भर जागकर कालीचरण को जेहल का किस्सा तीसरी का किस्सा जमाहिरलाल का किस्सा सुनाया। कालीचरण उसका

चेला है। वह आखिर चेला की पाटी में आयेगा ? नहीं-ऐसा नहीं हो सकता ! लेकिन मैया कुछ नहीं समझते हैं। पासवानटोली में जब उसकी पैट ना कलक उसकी बात नहीं मानेगा। उसका सीधर कालीचरन है। तहसील-दार साहब को तो लोग डर से सीधर मानते हैं।

नये तहसीलदार साहब भी फ्रेहरिस्त तैयार कर रहे हैं। सुमरितदास सबों का नाम लिखा रहा है—"सबसे पहले लिखिए बिरंचिया का नाम। सोलमा सुखाय किरपा कोयरी ये सब देनदार कलम हैं। अब लिखिए—झोपड़िया कलम। हाँ जिन लोगों को अपनी झोंपड़ी के सिवा कुछ भी नहीं। बस यह फिरिस्त मनेजर साहेब को दे दीजिएगा और कहिएगा कि चेला लेकर बस्ती इलाके में आवें नहीं तो सारा सर्किल खराब हो जायेगा।

लक्ष्मी दासिन के दिल में वासुदेव जी ने घर कर लिया है। जाड़ा ही के दिन आये थे। एकदम सूख गए हैं वासुदेवजी। लक्ष्मी कितना समझाती है कि काम-काज छोड़कर कुछ दिन आराम कीजिए, लेकिन कौन सुनता है ? पहले जान तब जहान। अब शरीर ही नहीं रहेगा तो परमारथ का कारज कैसे होगा ? शरीर ही तीरथ है। कितना कहने पर, सतगुरु साहेब की कसम धराने पर यह मन्जूर किया है कि एक बेला रोज मठ पर आया करेंगे। धाम के सतसंग में बैठेंगे। मन्धारी से कह दिया है दो सेर दूध की मलाई रोज कटोरे में घुराकर रख दिया करेगा। रामदास वासुदेव का आना पसन्द नहीं करता है। जैसे भी हो वासुदेवजी के शरीर की सेवा करेगी लक्ष्मी। अब वासुदेव जी के आने में जरा भी देर होती है तो लक्ष्मी का दिल धड़कने लगता है मन चंचल हो जाता है। सतगुरु साहेब ने कहा है

ई मन चंचल ई मन चोर,
ई मन गुरु ठयाहार
मन मन करत सुर मर मुनि
मन के कस दुवार।

लक्ष्मी का मन चंचल है, पर चोर नहीं। वासुदेवजी चोरी से उसके मन में नहीं आये हैं। मन के कस दुवार है, वासुदेव जी एक ही साथ कस दुवार से उसके मन में पैठ आये हैं एक कस वासुदेव जी।

तीस

अखिल भारतीय मेडिकल गजट में डॉ० प्रशान्त मैलेरियोलॉजिस्ट के रिसर्च की उमाही रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। गजट के सम्पादक-मण्डल में भारत के पाँच डॉक्टर हैं। इस रिपोर्ट पर उन लोगों ने अपना-अपना नोट दिया है। मद्रास के डॉक्टर टी० रामास्वामी एम० एस-सी० डी० टी० एम० (कैंब०) पी० एच-डी० (एडिन) एफ० आर० एस० ई० (एडिन) ने लिखा है 'हमें विश्वास हो गया कि डॉ० प्रशान्त मैलेरिया और कालाजार के बारे में ऐसे तथ्यों का उद्घाटन करेंगे जिनसे हम अब तक अनभिज्ञ थे। नई दवा तथा नये उपचार की सम्भावनाओं के लिए सारा मेडिकल-संसार उनकी ओर निगाहें लगाए बैठा है।

प्रशान्त की विस्तृत रिपोर्ट में मैलरिया और कालाजार से सम्बन्धित पिट्टी हवा-पानी तथा इसमें पलने वाले प्राणियों पर नई रोशनी डाली गई है। अपनी रिपोर्ट में डॉक्टर ने एक जगह लिखा है

"यहाँ के लोग सुबह को बासी भात खाकर, पाट धोने के लिए गन्दे पड़हों में घुसते हैं और करीब सात बजे तक पानी में रहते हैं। गन्दे पड़हों को देखने से ऐसा लगता है कि पानी के आभ्यंतर वातावरण की जाँच करने पर एक खास से नजारा मच्छड़ के मच्चे अवश्य पाये जायेंगे। किन्तु यहाँ के मच्छड़ गन्दे पड़हों में बहुत-कम अण्डे देते पाये गए हैं। इनका कोई-कोई यूथ तो इतना सफाई-पसन्द होता है कि निर्मल और स्वच्छ तालाबों को छोड़कर और कहीं अण्डे देता ही नहीं। बेचारे खरपोतों को क्या पता कि उनकी चोंच में जो दाने निकल जाते हैं कानों के अन्दर जो घुजघुजाहट होती है, कोमल-से-कोमल घास की पत्तियाँ भी खाने में अच्छी नहीं मालूम होती हैं, वे कालाजार के संक्रमण हैं।"

मनुष्य के शत्रु, कीड़ों-मकोड़ों के बारे में डाक्टर ने लिखा है— "मच्छड़ों को नष्ट करने के उपाय तो हमें बहुत पहले बता दिये गए हैं हम उन्हीं को आज भी आँख मूँदकर दुहरा रहे हैं। जिन कीड़ों को हम नष्ट करना चाहते हैं, उनके बारे में हमारी जानकारी बहुत थोड़ी होनी है। हमें उनकी आदत स्वभाव और व्यवहार के ढंगों के बारे में जानना होगा। एनोफिलीज के भी कई यूथ हैं हर यूथ के असंख्य-असंख्य दंश हैं। किन्तु, किसी यूथ में भी तरह-तरह के छोटे छोटे सब-यूथ होते हैं जिनकी आदतों और प्रजनन ऋतु में विभिन्नता पाई गई है। उनके खाने-पीने पसन्दगी और नापसन्दगी में भी फर्क

है। मैंने एक ही ग्रुप के मच्छड़ को तीन किस्म से अण्डे छोड़ते पाया है और हर ग्रुप में कुछ दल-विशेष हैं जो हवा में अण्डे छोड़ते हैं। इनकी चालाकी और बुद्धिमानी का सबसे दिलचस्प उदाहरण यह है कि एक ही मौसम में एक ही ग्रुप के मच्छड़ हमले के लिए पन्द्रह तरह के तरीके व्यवहार करते हैं। कुछ तो एक दम आदम पलाईप करके ही हमला करते हैं।"

इसके अलावा डॉक्टर ने मैलेरिया और काछाबाजार में रक्त-परिवर्तन पर भी कुछ नई बातें कही हैं।

ममता की चिट्ठी आई है "पटना मेडिकल कॉलेज को इस बात पर गर्व कि बिहार का एकमात्र मैलेरियोलॉजिस्ट डॉ० प्रशान्त उसी की देन है। ममता ने और भी बहुत-सी बातें लिखी हैं। बहुत-सी बातें जिस प्रशान्त करीब करीब भूल गया है या भूल जाना चाहता है। पटना क्लब का नाम पाटलिपुत्र क्लब हो गया है। मिस रेखा सरकार ने बैडमिन्टन में रामेश्वर पाल को हरा दिया।

इन बातों में प्रशान्त को अब कोई दिलचस्पी नहीं लेकिन ममता जब पत्र लिखती है तो वह कुछ भी बाद नहीं देती छोटी-से-छोटी बात का भी जिक्र करती है। पटना मार्केट के सामने जो चाय की दुकान थी उसका बूढ़ा मालिक मर गया। तुम्हें याद है! वही जो तुमको रोज सलाम करके चाय के लिए निमन्त्रित करता था 'कश्मीरी चाय!' प्रशान्त को हँसी आती है। बेचारा ममता! उसे क्या मालूम कि मछली को लेकर पासटू मेंढक से झगड़ा करने में जो आनन्द आता है, वह किसी खेल में नहीं। प्रशान्त कभी स्पोर्ट्समैन नहीं रहा। वह किसी भी खेल का खिलाड़ी नहीं रहा। फिर भी उसे खेलों से बड़ी दिलचस्पी रहती थी। उसने चाय के पत्तों को कभी हाथ से स्पर्श नहीं किया लेकिन साप्ताहिक विश्व स्पोर्ट्स को वह गम्भीरता से पढ़ जाता था। बंगाल का भाषण पढ़ना भले ही भूल जाय कलकत्ता के आई० एफ० ए० के मैचों की रिपोर्ट वह सबसे पहले पढ़ता था। लेकिन अब तो वह खुद खिलाड़ी है। मेंढक का घुर्राना खिलाना पूँछ के रोओं को खड़ाकर हमला करना और हमला करते हुए इसका ख्याल रखना कि चोट नहीं लग जाय नाखून नहीं गड़ जाय। स्पोर्ट्समैन स्पिरिट और किसको कहते हैं?

डॉक्टर ममता श्रीवास्तव! दरभंगा के प्रसिद्ध डॉक्टर कालीप्रसाद श्रीवास्तव की सुपुत्री ममता ने डॉक्टरी पास करने के बाद एक हेल्थयूनिट की स्थापना की है। शहर के करीब मुहल्लों में यूनिट ने अपने सेवा-कार्य का जो परिचय दिया है वह प्रशंसनीय है। पटना की महिला-समाज-सेविकाओं में ममता का नाम सबसे पहले लिया जाता है। गरीब की झोपड़ी से लेकर गवर्नमेण्ट हाउस तक

उसकी पहुँच है। जो उसके निकट सम्पर्क में रह चुके हैं, उनका कहना है कि ममता दीदी दिल-दल मिलाकर सिर्फ चार घण्टे ही आराम करती हैं। दूर से देखने वाले उसके चरित्र पर भी सन्देह करते हैं। उसकी सार्वजनीन मुस्कराहट लोगों को कभी-कभी भ्रम में डाल देती है। और जिन लोगों का काम सिर्फ बैठकर आलोचना करना है, वे कहते हैं कि तरह-तरह के जाल फैलाकर सरकार से रुपया वसूलना और उड़ाना ही ममता देवी का काम है। विकारपूर्ण मस्तिष्क वाले किसी मिनिस्टर का नाम लेकर मुस्करा देते हैं— मिस ममता श्रीवास्तव नहीं विशेष कहो!

डॉक्टर प्रशान्त ममता का सखी है। ममता से उसे प्रेरणा मिली है।

"डॉक्टर! रोज हिप्नोटिज्म बोलकर शिवजी की मूर्ति पर बेलपत्र चढ़ाने के बाद, संक्रामक और भयानक रोगों के फैलने की आशा में कुर्सी पर बैठे रहना अथवा अपने बंगले पर सैकड़ों रोगियों की भीड़ जमा करके रोग की परीक्षा करने के पहले नोटों और वस्त्रों की परीक्षा करना मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों पर शारीरिक की वर्षा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझना और अस्पताल में कराहते हुए करीब रोगियों के रुदन को जिन्दगी का एक संगीत समझकर उपभोग करना ही डॉक्टर का कर्तव्य नहीं।"

ममता को प्रशान्त पर संदेह है। वह समझती है कि घोर देहात में प्रशान्त छटपटा रहा है अपनी मंजिल पर पहुंचा रहा है। इसलिए वह हर पत्र में शहर की सामाजिक जिन्दगी पर कुछ लिख डालती है। एक पत्र में उसने लिखा है, "युद्ध खत्म का युग है। पांच साल पहले बांकीपुर की सड़कों पर, पार्कों और मैदानों में रामपुर कैम्प के गोरे फौजियों ने जिन्दगी के जिन कुत्सित और घीनत्स पहलुओं का प्रदर्शन किया, हमारे समाज के अचेतन मन पर उसकी ऐसी गहरी छाप पड़ी कि आज हर आदमी के अन्दर का भूखा दामी जंगीर हो उठा है। युद्ध के विषैले कीटों ने सारे समाज के मानस को विकृत कर दिया है। काले बाजार के अँधेरे में एक नई दुनिया की सृष्टि हो गई है, जहाँ सूरज नहीं उगता चाँद नहीं चमकता और न सितारे ही जगमगाते हैं। इस दुनिया में माँ-बहन पिता-पुत्र भाई-बहन और स्वामी-स्त्री जैसा कोई सम्बन्ध नहीं। कल एक पत्रिका में विटामिन 'सी' की पूर्ति आठ रुपये में खरीदी है। पांच आने का छोटा-सा ऐम्पूल! मेरे मुहल्ले के महापात्र महना को तुम जरूर जानते होगे उसकी छोटी बेटी फुलमनिया जो सिक्स लेटर में पिछले साल तक दूध पीने जाती थी और ताली बजा-बजाकर नाचती थी उसे तुम भूले नहीं होगे शायद! पन्नों में अखबार में पढ़ी है" है। रामनवमी की शाम को वह रंगीन

साड़ी पहनकर फुरकती हुई राममन्दिर गई थी और रात को दो बजे पुलिस ने 'सिटी' के एक पार्क में उसे कराहते हुए पाया। फुलमतिया का बयान है—टेढ़ीनीम थाने के पास एक मोटरसाड़ी रुक गई और दो आदमियों ने पकड़कर उसे मोटर में बिठा दिया। बड़े-बड़े बाबू लोग थे!

"बंधरबनी रोड से लेकर असोकपथ तक विदेसी सराब की दस दुकानें खुल गई हैं।

"कल सिनिमाहल हॉल में टी० बी० सेनेटोरियम के लिए स्थानीय महिला कॉलेज की छात्राओं ने एक 'चैरिटी शो' का आयोजन किया था। ज्योंही बाबी (बैरिस्टर ग्रामनोहन सिन्हा की पुत्री) स्टेज पर उतरी कि ऊपर की गैलरी से घुमनी-इकन्नी फेंकी जाने लगी और तरह-तरह की अश्लील आवाजें कसी जाने लगीं। पुलिस ने शान्ति कायम करने की चेष्टा की किन्तु उन पर ईंट-पत्थरों की ऐसी वर्षा की गई कि हॉल के सभी दरवाजों और खिड़कियों के कांच टूट गए। बहुत लोग घायल हुए। घायलों में महिलाओं और बच्चों की संख्या ही ज्यादा थी। और सबसे आश्चर्य की बात सुनोगे? कहा जाता है कि सुराजपतियों का लीडर या अमलेश सिन्हा बीणा का चचेरा भाई। ग्रामनोहन बाबू ने, कुछ दिन हुए अपने घर में अमलेश का आना-जाना बन्द कर दिया था। शराब के नशे में अमलेश ने कई बार घर की बीवरानियों के साथ अशोभनीय व्यवहार किया था। इसलिए (उनकी पुत्री और अपनी चचेरी बहन) बीणा के पीछे हाथ धोकर पड़ गया है।"

कोठी के जंगल में संथालिनें लकड़ी काट रही हैं और गा रही हैं। कुछ दिन पहले इसी जंगल में संथालिनों ने एक चीते को कुल्हाड़ी और दाव से मार दिया था। घोरपुक सुनकर बाँस के झोप बना हो गए थे। मरे हुए बाघ को देखकर भी लोगों के रोंगटे खड़े हो गए थे और बहुत तो भाग खड़े हुए थे किन्तु संथालिनें हमेशा की तरह मुसकरा रही थीं। मकई के दानों की तरह सफेद दन्त-पंक्तियाँ और वही सरल मुसकराहट! चीते के अचानक हमले से दो-तीन युवतियाँ साधारण घायल हो गई थीं। उनके होठों पर भी वैसी ही मुसकराहट खेल रही थी। उनके अंगों को छोकर मरहम-पट्टी करते समय डॉक्टर के शरीर में एक बार सिहरन की झुरझुरी दौड़ गई थी और संथालिनें खिलखिलाकर हँस पड़ी थीं हें हें हें! अन्ध पर तेज दवा लगने पर इस तरह हँसना डॉक्टर ने पहली बार देखा सुना।

आषाढ़ की मूसलाधार वृष्टि में धुंध हुए सिरीस और कृष्णहर के फूल! संथालिनें गाती हैं

छोटो-मोटी पुखरी चारकुखिया पिंड रे
पीरोहनी फूटे काले-काल
पातबे तेरी फूल देखी फूलब आवेलब
पातबे तेरी आवा दिन सजिद !

चारों ओर से बँधाए हुए एक छोटे-से पौधरे में पुरइन (कमल) के काले-काले फूल खिले हैं। उस फूल पर तुम मुग्ध हुए हो। मुझे भी देखकर तुम मोहित होते हो। किन्तु यह मोह आधे दिन का ही तो नहीं ?

नहीं नहीं ! आधे दिन के लिए नहीं। प्राणों में घुले हुए रंगों का मोह आधे दिन में ही नहीं टूट सकता।

छब्बीस

मंगलादेवी चर्चा सेक्टर की मास्टरनीजी बीमार हैं।

डॉक्टर ने खूब जाँचकर देखा मलेरिया बुखार नहीं टाइफायड है। चर्चा सेक्टर के दोनों मास्टर सहसीलदार साहब के मुहाल में रहते हैं और मास्टरनीजी मयमान अमला की एक झोंपड़ी में। मयमान अमला ने गाड़ी-बैल रखने के लिए एक झोंपड़ी बनाई थी लेकिन अब अमले साब टीन का मकान देने का वादा है इसलिए इस बार गाड़ी-बैल नहीं खरीदा गया। चर्चा सेक्टर खुलने पर बाँध के लोगों ने अमलाम अमला से कहा—घर तो खाली ही है। मास्टरनीजी के रहने के लिए घर नहीं है ! चर्चा सेक्टर का घर अकेला तो आपका घर खाली कर दिया जायेगा। कोऑपरेटिव के जमाने में अंधेरी लोगों की बात काटना ठीक नहीं। नहीं तो कटिहार में इतनी बड़ी आंधी का ही किसी पत्ता नहीं मिलता !

मंगलादेवी ने हैजा के समय रात-रात-भर जागकर रोगियों की सेवा की और जब वह स्वयं बीमार पड़ी तो उसके पास बैठने वाला भी कोई नहीं। चर्चा सेक्टर के दोनों मास्टर साहब बारी-बारी से एक-एक बेला रसोई दे जाते हैं। रात में बिछावन की माँ आकर सोती है। लेकिन बुढ़ी टमना हुक्का पीती और खाँसती है कि मंगलादेवी के ज्वर की घबड़ाहट और भी तीव्र हो जाती है। बुढ़िया जब सोती है तो इतने जोरों से खर्राटे लेती है कि पास-पड़ोस की नींद खुल जाये। डॉक्टर कहता है—यदि यही हालत रही तो रोगमुक्त होना मुश्किल होगा। पर सब मिला

कर किसी को बुला लेना ठीक होगा।

घर ? यदि घर से कोई आने वाला होता अथवा खबर लेने वाला होता तो मंगलादेवी चर्खा सेण्टर में क्यों मरती होती ? उसे घर छोड़े हुए पाँच साल हो रहे हैं। मंगलादेवी ने दुनिया को अच्छी तरह पहचाना है। आदमी के अन्दर के पशु को उसने बहुत बार करीब से देखा है। विधवा-आश्रम अबला-आश्रम और बड़े बाबुओं के घर माया की जिन्दगी उसने बिताई है। अबला नारी हर जगह अबला ही है। रूप और जवानी ? नहीं यह भी गलत। औरत होना चाहिए, रूप और उम्र की कोई कैद नहीं। एक असहाय औरत देवता के संरक्षण में भी सुखचैन से नहीं सो सकती। मंगलादेवी के लिए जैसा घर वैसा बाहर। उसका कौन है अपना ? कोई नहीं।

'कौन ? कालीचरन बाबू !

"डाक्टर साहब ने कहा है कि इस छावनी में आपकी बीमारी अच्छी नहीं होगी। हम लोगों का कीर्तन वाला घर साफ-सुथरा है हवादार है।

मंगलादेवी यादवटोली के कीर्तन-घर में आ गई है। कीर्तन-घर में ही सोशलिस्ट पार्टी का ऑफिस है। कालीचरण इसे ऑफिस ही कहता है। लेकिन सोशलिस्ट ऑफिस का नाम सुनकर मंगलादेवी घायल नहीं आती।

'दवा पी लीजिए।

"नहीं पिऊँगी।"

"पी लीजिए मास्टरनीजी ! दवा

"काली बाबू एक बात कहूँ ?"

"कहिये !"

'आप मुझे मास्टरनीजी मत कहिए।"

'तब क्या कहूँ ?

'क्यों ? मेरा नाम नहीं है ?

"मंगलादेवी ?

"नहीं।"

"तो ?"

'सिर्फ मंगला।"

"दवा पी लीजिए।"

'मंगला कहिए।"

"मंगला !"

पन्द्रह दिनों से कालीचरण मंगलादेवी की सेवा कर रहा है। दिन में तो

और कोप भी रहते हैं, लेकिन रात में काशीचरन की ड्यूटी रहती है। डॉक्टर कहते हैं, अब कोई खतरा नहीं। कमजोरी है कुछ दिनों में ठीक हो जायेगी।

मंगलादेवी के शरीर में सिर्फ हड्डियाँ बच रही हैं। बाल झड़ रहे हैं। वह खाने के लिए बच्चों की तरह रूठती है, रोती है और बर्तन फेंकती है। खाँसी नहीं मिटेगी। खेना का पानी भी कोई बड़ा मारक पीता है! काशीचरन हाथ में पथ्य का कटोरा लेकर घण्टों खुशामदें करता—लीजिए, इसमें नीबू डाल दिया है। अब खा लीजिए। कल नहीं परसों मात मिलेगा।

काशीचरन का व्रत टूट गया है। उसके पहलवान गुरु ने कहा था—'बहुत! जब तक अखाड़े की मिट्टी देह में पूरी तरह रमे नहीं औरतों से पाँच हाथ दूर रहना। काशीचरन का व्रत टूट गया। पाँच हाथ दूर रहने से मंगलादेवी की सेवा नहीं की जा सकती थी। बिछावन और कपड़े बदलते समय देह पोंछ देने के समय काशीचरन को बुधनी की बात बार बार आती तो थी लेकिन क्या किया जाये!

"काशी कहाँ गया? काशी!"

"क्या है?"

"कहाँ की चिट्ठी है?

"सिकरेटरी साहेब ने लिखा है, सोमवार को बिछा पाटी की रैली है। लेकिन मैं कैसे जाऊँगा?

"क्यों? तुम जाओ। मैं तो अब अच्छी हो गई।

रैली के बाद सेक्रेटरी साहब ने काशीचरन को रोक लिया है—"कॉमरेड आप दो दिन और रह जाइए। सैनिकजी की स्त्री अस्पताल में भर्ती हैं। सैनिकजी पटना गए हैं। परसों आ जायेंगे। अस्पताल में दोनों वेला खाना पहुँचाना है कोई है नहीं।"

सेक्रेटरी साहब की बात को टालना बड़ा कठिन है। कॉमरेड की स्त्री!

काशीचरन को रह-रहकर मंगला की याद आती है। वह राह देख रही होगी। वासुदेव जाकर कहेगा कि दो दिन के बाद आयेंगे। सुनते ही उसका मुँह सूख जायेगा चेहरा फक हो जायेगा। एकदम बच्ची की तरह है मंगला का मुँह! काशीचरन ने बिहसाना और खंतोला भेज दिया है। वह झूठमूठ भी नहीं। वासुदेव क्या समझाएगा? हरीरे की! ये शहर के छोकड़े बड़े बदमाश होते हैं। ठीक पीठ के पास जाकर सैकिल की घण्टी बजायेगा। अ अजी तो सब खाना गिर जाता।

"उल्लू कहीं का! विश्वास एसे ही होता है?" 'उल्लू! काशीचरन के गाल पर मानो किसी ने जोर से एक तमाचा जड़ दिया। उल्लू! उसका सारा

शरीर झिनझिन कर रहा है। सैनिकजी की स्त्री में उसे क्या समझा है ? नौकर ?

"बहूजी मिजाज "

"खबरदार ! बहिनजी मत बोल !"

बबूल की खाट पर जो चमगादड़ जैसी औरत लेटी हुई थी बोली "कौन देस का आदमी है ! आदमी है या भूत ? बात भी नहीं करना जानता है !"

"मरे जानती नहीं हैं, ग्वाला साठ बरस तक ।" सैनिक जी की स्त्री बोलीं।

कालीचरन पूरा नहीं सुन सका। उसका सिर चकराने लगा। सैनिकजी भी तो ग्वाला ही हैं ! कालीचरन की आखों के आगे सरसों के फूल जैसी चीजें उड़ने लगीं। यदि किसी मर्द ने ये बातें कही होतीं तो आज खून हो जाता खून। कालीचरन की कनपट्टी गर्म हो गई है। मंगलादेवी भी तो औरत ही है। हुँ ! कहाँ मंगला और कहाँ यह भूतनी ! गले की आवाज एकदम 'खिखिर' की तरह है। खेंक खेंक। बातें करती है तो लगता है मानो दाँत काटने के लिए दौड़ रही है। शायद यह भी कोई रोग ही है !

रौतहट स्टेशन पर गाड़ी से उतरकर कालीचरन अस्सी-बस्सी भर छींट रहा है। , उसे देखते ही मंगला खुशी से खिल जायेगी। संतोला सूख गया होगा बिहाना पड़ा होगा। दोनों ओर का रेल-भाड़ा बचाकर कालीचरन ने एक पैकिट बिस्कुट खरीद लिया है। डॉक्टर साहब ने मंगला को बिस्कुट खाने के लिए कहा है। कालीचरन ने कभी बिस्कुट नहीं खाया है। शायद इसमें मुर्गी का अण्डा रहता है। वह रह-रहकर बिस्कुट के डब्बे को छूकर देखता है। इसके अन्दर 'कुड़कुड़' क्या बोलता है ? कहीं अण्डा फूटकर !

"सीताराम ! सीताराम ! मैं हिन्दू कालीजी !"

"ऐं ? ओ बावनदासजी हम तो चमक गए। यहाँ क्यों पड़े हैं ?"

"आप तो इस तरह आँख मूँदकर सरेसा[1] घोड़े की तरह चल रहे हैं कि !"

पंक्ति आमुन के पेड़ की छाया में बावनदास लेटा हुआ था। छाया में आने पर कालीचरन को मालूम हुआ कि धूप कितनी तेज है।

"हम तो रात की गाड़ी से ही उतरे। कल रहा ४० का पैंतरा हो गया।"

"हो गया ? क्या हुआ ?

---

१ लोमड़ी। २ तेज दौड़नेवाले घोड़े की जाति।

"अरे होगा क्या ? सबों की दरखास खारिज हो गई। हम पहले ही जानते थे। कल गाँव के सभी रैयत आये थे। फैसला सुनकर सभी रोने लगे। अब जमींदार जमीन भी छुड़ा लेगा।"

"जमीन छुड़ा लेगा ? नहीं उस दिन हम लोगों की रैली में परस्ताव पास हो गया। जमीदार लोग रैयतों को जमीन से बेदखल नहीं कर सकते। इसके लिए पार्टी संघर्ष करेगी।"

"काकीबाबू ! परस्ताव-वरस्ताव से कुछ नहीं होता है।" बावनदास के होंठों पर भेद-भरी मुस्कान दौड़ जाती है।

'आप बैठिए दासजी हमको जाप करना है।"

"हाँ आप जाइए। हम आपके ध्यान पर जा भी नहीं सकेंगे।"

काकीचरन चलते-चलते सोच रहा है सब ठीक हुआ है। यदि रैयत की दरखास मंजूर हो जाती तो सभी लोग कांग्रेस में चले जाते। अब संघर्ष में सभी सोशलिस्ट पार्टी में ही रहेंगे।

"क्या है ? बिस्कुट !" मंगलादेवी प्यार-भरी झिड़की देती है। 'किसने कहा फिजूल पैसा खर्च करने को ? यह देखो तुम्हारा सत्तरा और बदाना पड़ा हुआ है। मैं नहीं जानती।"

"डॉक्टर साहब ने कहा था "

"डॉक्टर साहब ने कहा था !" मंगला बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहती है, "डॉक्टर साहब ने कहा था कि खूब भूखे रहकर सत्तरा बेदाना और बिस्कुट खरीदकर खाना ?"

काकीचरन को सैनिकजी की स्त्री की याद आती है। उस्तू ! साठ साल तक नाबालिग !

"ला तो मंगला !"

"पहले तुम एक बिस्कुट खाओ।"

बिस्कुट मीठा कुरकुरा और इतना सुवास वाला होता है ? इसमें दूध चीनी और माखन रहता है शायद नहीं ?

बत्तीस

बैसाख और जेठ महीने में शाम को 'तड़बन्ना' में जिन्दगी का आ सिर्फ तीन आने सबकी मिल्कियत है।

चने की घुघनी मूढ़ी और प्याज और मुफेद झाग से भरी हुई मलगी! खट-मिट्ठी, झकर चिलिपी और बैरंचिलिपी ताड़ी के स्वाद अलग-अलग होते हैं। बलगी पीकर जिसके पित्तमरड़ ही होश दुरुस्त रख सकते हैं। जिसको गर्मी की शिकायत है, वह बहुर-रतिया पीकर देखे। कलेजा ठण्डा हो जायेगा पेशाब में जरा भी जलन नहीं रहेगी। कफ प्रकृति वालों को खट्टा पीनी चाहिए सब-भर देह गर्म रहता है।

साल-भर के झगड़ों के फैसले तड़बन्ना की बैठक में ही होते हैं और मिट्टी के चुक्कड़ों की तरह रिश्ते भी यहीं टूटते हैं। शादी-ब्याह के लिए दूसरे-दूसरे की जोड़ियाँ भी यहीं बैठकर मिलाई जाती हैं और किसी की बीवी को ममा से आने का प्रोग्राम भी यहीं बनता है।

जगदेवा पासमान, दुखारू, खलिफर और सुनरा ताड़ी पी रहे हैं। सोमा जट आज आने वाला है। रौतहट के हाट में उसने कहा था एतवार को तड़बन्ना में आएँगे। सोमा जट हाल ही में जेल से छूटा हुआ है। नामी डकैत है लेकिन अब सोशलिस्ट पार्टी का मेम्बर बनना चाहता है। सुनरा ने कालीचरन से पूछा और कालीचरन ने जिला सिक्रेटरी साहब से पूछा। सिक्रेटरी साहब ने कहा साल-भर तक उनके चालचलन को देखकर तब पार्टी का मेम्बर बनाया जायेगा। उस पर नजर रखना होगा।

नजर क्या रखना होगा बीच-बीच में सिक्रेटरी साहब को आकर बतलाना होगा—सोमा का चाल-चलन एकदम सुधर गया है। कालीचरन को विश्वास नहीं होता। सोमा यदि पार्टी में आ जाये तो सारे इलाके के बड़े ऐब ठीक हो जायँ। पार्टी में आ जाने से थाना-पुलिस क्या करेगा! सिक्रेटरी साहब क्या दारोगा साहब से कम हैं? देखते हो नहीं जब मालगन देने जाते हैं तो जमादिरवाले को भी पानी-पानी कर देते हैं। मजाल है दारोगा सिपाहिटर की कि पार्टी के सिकाफ मुँह खोले? सेल है! 'साल पताका' अलबार में पुरुख 'गजट छापी' हो जायेगा 'दारोगा का जुलुम'!

'खलिफर करमकार को तो पार्टी से निकाल दिया है। सीमेण्ट में बहुत पैसा गोलमाल कर दिया। हिसाब-पत्तर कुछ भी नहीं दिया तो सबको मिलेगा नहीं? पार्टी का बन्दूक-पेस्तौल भी नहीं दिया। खलिफर सिंघजी

साहब कालीचरणजी से प्रायविट में बोले हैं, किसी तरह उससे बन्दूक-पेस्तौल ऊपर करो। सरकार को जमा देना है। इसीलिए कालीचरणजी उससे हेल-मेल कर रहे हैं। "यह बात एकदम गुप्त है। खबरदार, कहीं बोलना नहीं खलिफा! हाँ नहीं तो जानते हो? किरानी पाटी की बात खोलने की क्या सजा मिलती है? आयें! कोय पूछे तो कहना चाहिए कि

"क्या पाटी को अब बन्दूक पेस्तौल का काम नहीं है?"

"नहीं।" सुन्दर मुस्कराता है। अर्थात् इतनी बड़ी तुम लोग इसी बातों को जान लेना चाहते हो? अभी कुछ दिन और मेम्बरी करो। जब तुम्हारा कानफरम[1] हो जावेगा तब सारी बातें जानोगे। नये मेम्बरों का काम करना होता है। यहाँ सुना और वहाँ उगल दिया। कानफरम होने दो।

कामरेड सोमा? आओ! तुम्हारी ही बात हो रही थी? आसरा में बैठे-बैठे दो लबनी ताड़ी खतम हो गई।" सुन्दर हँसता है।

सुन्दर आजकल हमेशा शहर का पंजाबी कुर्ता पहने रहता है। पंजाबी के बगल में दो इंच की ऊँची पट्टी लगी हुई है। इसको 'सोशलिस्ट-काट' कुर्ता कहते हैं सोशलिस्ट को छोड़कर और कोई नहीं पहन सकता। सौंव के मेम्बरों में सिर्फ तीन मेम्बर ही ऐसा कुर्ता पहनते हैं—कामी वासुदेव और सुन्दर। बाकी मेम्बरों ने जीवन में कभी बंडी भी नहीं पहनी है। लेकिन बिना सोशलिस्ट-काट कुर्ता पहने कोई कैसे जानेगा कि सोशलिस्ट है किरानी है! एक कुर्ते में सात रुपये खर्च होते हैं। वासुदेव आज-कल बीड़ी नहीं पीता मोटरमार-सिकरेट पीता है। सिक्रेटरी साहब सैनिकजी बिलवारीजी मास्टर साहब सभी बड़े-बड़े पीकर सिकरेट पीते हैं। सोशलिस्ट पार्टी के मेम्बर को बीड़ी नहीं सिकरेट पीना चाहिए।

आज की बैठकी का पूरा खर्चा सोमा ही देगा। इसलिए हाथ खींचकर चुल्हड़ करने की जरूरत नहीं। डालो चलो। एक लबनी दो लबनी तीन लबनी!

'चर्खा सेन्टर वाले कह रहे हैं अबसे साल से ताड़ी का पूड़ बनेगा। कोई ताड़ी नहीं पी सकेगा। इस साल पी लो जितना भी चाहे।

सोमा का शरीर कालीचरण से भी ज्यादा सुगम्ब है। पुलिस-दारोगा की मार से हड्डियाँ टूटकर मिल[2] गई हैं। मिरहवाली हड्डी बड़ी मजबूत होती है। कालीचरण के देह में हाथीदाँत का कड़ापन है और सोमा के चेहरे पर लोहे की कठोरता। कालीचरण की आँखों में पानी है और सोमा की आँखें बिल्ली की तरह चमकती हैं।

---

१ कन्फर्म। २ गठियार हो जाना।

"कौन हरमोरी ? शिवशक्करसिंह का बेटा ? बहसीजबरा हुआ है ? काशीचरनजी हुकुम दें तो एक ही रात में उसकी हड्डी-पसली एक कर दें।" सोमा मुँह में भरी हुई ताड़ी की झाग को पोंछते हुए कहता है।

'कामरेड ! अब मूँछ कटाना होगा। पार्टी का मेम्बर होने से मूँछ नहीं रखना होगा," सुन्दर कहता है।

"कटा लेंगे लेकिन काशीचरनजी हुकुम दें तो !"

"अच्छा अच्छा कामरेड अभी ठहरो। संघर्ष होने वाला है। परसताव पास हो गया है। तब देखेंगे तुम्हारी बहादुरी !"

"बलदेवा को बाँध से गया नहीं सकते हो तुम लोग ? सुनते हैं कि मठ की कोठारिन से खूब हेल-मेल हो गया है। काशीचरनजी हुकुम दें तो एक ही दिन में उसको बालूचपट्टी का रास्ता दिखला दें।"

"अरे, बालदेवजी तो मुर्दा हो गए मुर्दा ! अब उनको कौन पूछता है ! उनको एक बच्चा भी अब मुँह नहीं लगाता है। कँपरेड में भी उनकी बदनामी हो गई है। यह तो हम लोगों के बल पर ही कूदते थे। कोठारिन तो सतर चूहा खाई हुई है। बालदेवजी को उसके पैर में पड़ने तो दो। हम लोग यही चाहते हैं। हाँ समझे ? अबकी डैक्टर पर भी अब अपना ही कब्जा समझो। मान्टरनीजी बिना काशीचरन से पूछे पानी भी नहीं पीती हैं। कुछ दिन में यह भी कामरेड हो जायेंगी। एक बोलबाला है, सो देह घिसे का बात्सी कर ही क्या सकता है ?"

धार उतरी लंबा ताड़ी आज हो रही है। सूरज डूबने के समय जो उतरी पेड़ से उतारी जाती है, उसकी लाली तुरत ही आँख में उतर आती है। मधा के माने है और भी थोड़ा पीने की चाहिए ! और एक लबनी !

"अरे बेचारे डॉक्टर के पास पैसा कहाँ ? सुनते हैं तो हजार करता है। एक पैसा भी तो नहीं छूता है।"

"डॉक्टर के पास पैसा नहीं ? क्या कहते हो ? कोथनपुर के डॉक्टर ने पोस्टा मकान बना लिया है। बीरछमंड के डॉक्टर ने तीन सौ बीघे की पतनी खरीदी है। सिरवा धरैया का डॉक्टर इकैती करता है, सरकार है इकैती का। कैसा डॉक्टर है तुम्हारे बाँध का ?"

"हरकिशोर के हरमू डेली ने मजबूत पैसा कमाया है। पैसा भेंहकता है।"

"महमदिया के साहुकचन्द को बन्दूक का लैसन मिल गया है और सोझा का बस्ता कलकत्ते से ले आया है।"

"अरे, किसमे बंदूक और तिजोरी वाली को देखा है ! बस्तम बर्दा से

ही तो सारे इलाके का हम मछली की तरह सूनकर पाते रहे हैं। यदि एक लाख भी बन्दूक हाथ लग जाय तो साठे भूपतसिंह की कचहरी के सिपाही पहरेदारों को गा दस क।

जो कभी नहीं गाता है, वह भी मघा होने पर गाने लगता है और सुन्दर तो कीर्तनियाँ है सुराजी कीर्तन भी गाता है और किरांती-गीत भी। मघा होने पर किरांती-गीत खूब जमता है।

अरे जिन्दगी है किरान्ती से किरान्ती म बिताबे जा।
दुनियाँ के पूंजीवाद को दुनियाँ से मिटाये जा!
सनिपरा सबकी का ओझा कर सबका बजाता है, और मुँह से बाज बोलता है।

बचे के चकचुम मर्द के साबा
दुनियाँ के गरीबा का पैसा जिसने चूस लिया
अरे हाँ पैसा जिसने चूस लिया
हाँ जी पैसा जिसने चूस लिया
उसकी हड्डी हड्डी से पैसा फिर चुकाये जा!
हँस के बोली बाप जा!
हँस के बोली बाये बा!

"वाह वाह! क्या बात है! इन्किलाब है जिन्दाबाद है। जरा खड़ा होकर बतीसा बता के[1] कमर लचका के सुन्दर भाई!

सुन्दर खड़ा होकर नाचने लगता है—जिन्दगी है किरांती से किरांती में!

बचे के चकचुम मर्द के साबा

कालीचरण ने आज शाम को बैठक बुलाई थी। ऊपर से सबसे बड़े लीडर आ रहे हैं पूर्णियाँ। पंजी के लिए चन्दा वसूलना है। सिकेटरी साहेब कह रहे थे सबसे बड़े लीडरजी पूर्णियाँ आने के लिए एकदम तैयार नहीं हो रहे थे। बहुत कहने-सुनने पर, सारे जिले से दस हजार रुपये की थैली पर राजी हुए हैं। कालीचरण को तीन सौ रुपये वसूल कर देना है। इस बार की रसीद-बही पर सबसे बड़े लीडर की छापी है।

लेकिन तुम सोच रहे थे कहाँ? ओ! आसमान बाम! बड़ी देर हो गई। ऐसा करने से पार्टी का काम कैसे चलेगा? बोलो कौन कितना रुपैया वसूल करेगा। तीन सौ रुपैया दस दिन म ही वसूल कर देना है।

---

१ नाच दिखलाकर।

"बस तीन सौ ? कोई बात नहीं हो जायेगा।
"बस दिन क्या पाँच ही दिन में हो जायेगा।"
"तीन सौ रुपये की क्या बात है ?
"इतकिमाव बिल्कावाल है !

तेंतीस

मलेरिया !

"चाँद के मंगल की अब कोई उमेद नहीं।"

हरदीरी तहसीलदार दुर्गा के आहत की तरह चुरोता है। "साले सब ! चुपचाप दस ४० का दर्खास देकर समझते थे कि जमीन नकदी हो गई। अब समझो। बौना और अलदेवा से जमीन को। सब साले से जमीन सुधा लेने के लिए कहा है मैनेजर साहेब ने। सो जमीन ! राम नाम का लूट है ! अरे, कँवरेती एज है तो क्या जमीदारों को बोलकर पी जायेगा ?"

सुमरितदास बेचारा की नींद नकली नहीं। सुबह से ही बक-बक करता आ रहा है। छतमाटोली में पासवानटोली में और कोयरीटोले में घूम-घूम कर वह लोगों को सुना रहा है—"मैनेजर साहेब ने परवाना में क्या लिखा है मालूम ? क्या तहसीलदार तो एकदम भड़क गया था। मैंने कितना समझाया—तहसीलदार, आप एकदम चुपचाप रहिए। जिन लोगों को दरखास देना है, देने दीजिए। जिस दिन मुकदमे की तारीख होगी उससे एक दिन पहले हम आपको एक नोटस भेज देंगे। वही हुआ। जमींदारी दकील तो घुसकर उछलने लगा। चाहे जो भी कहो तहसीलदार बिलाकपरसाद ने कभी कोई नोटस हमसे छिपाकर नहीं रखा। 'मैनेजर साहेब ने क्या लिखा है, मालूम है ? सुमरितदास को एक बार सरकिल कचहरी में भेज दो। सुस्सिम-सुस्सिम क्या करेगा ?"

"सुमरितदास ! बुझाने में यदि इम्मान बचानी है तो चरा होश-हवास दुरुस रखकर बोला करो। समझे ?" काशीचरन की आँखें लाल-लाल हैं। सुबह से ही वह सुमरितदास को खोज रहा है। मोतमिरा पानी के बिलाक बुझा बस में ही अर-पर[1] परोपगंडा कर रहा है।

---

१ मनगढ़न्त।

"समझे ? हाँ। पीछे यह मत कहना कि सोशलिस्ट पार्टी के लोगों को बड़े-छोटे का विचार नहीं।

"हम क्या बोले हैं ? पूछो इन्हीं लोगों से पूछो ! बोलो जी बुलचरन।

सुस्सिलिस्ट पार्टी।"

"सुस्सिलिस्ट मत कहिए सोशलिस्ट कहिए।" बात तो सही मुँह से निकलती ही नहीं है और मुँसियाती बघारते हैं। जमींदार के सहसीलदार से और अपने मैनेजर से भी जाकर कह दो रैयतों से जमीन छुड़ाना हँसी-ठट्ठा नहीं। पार्टी के एक्सट्टी में परसताव पास हो चुका है संघर्ष होगा संघर्ष ! समझे ?"

कालीचरण वहाँ ऐंठता हुआ चला गया। कहीं साँप को घुस्सी में ऐंठते देखा है न ठीक उसी तरह ! सुमरितदास को कँपकँपी कम आती है। बासपास बैठे हुए लोगों की भी चुकपुकी तेज हो जाती है। अभी तो ऐसा लगता था कि जुलुम हो जायेगा। अलबत्त देह बनाया है कलिया कालीचरण ने। देखकर डर लगता है। सुस्सि सुस्सि सोशलिस्ट पार्टी में जाकर तो और भी तेजी से बल-बलकर रहा है। संघर्ष क्या होगा ?

डा डिग्गा डा डिग्गा !

संथालटोली में दो दिनों से दिन-रात मादल बजता रहता है। डा डिग्गा डा डिग्गा ! औरतें गाती हैं। नाचती हैं—झुमुर-झुमुर ! बरखास्त नामंजूर हो गई। जमींदार जमीन लौटा देगा। कोठी के बंगले में आगुन और सूअर में बहुत फल लगे हैं इस बार। बंजली सूअर के बच्चे भी किलबिल कर रहे हैं। हल के फाल को तोड़कर तीर बनाओ। कोहा लेहना है। रे ! हाय रे हाय ! डा डिग्गा डा डिग्गा !

कालीचरण ने कहा है—संघर्ष करेंगे। संघर्ष क्या ? परसताव क्या ?

रिन रिन-ता-रिन-ता !

डा डिग्गा डा डिग्गा !

खेत में पाट के डाल पौधों को देखकर जी कलप रहा है। बात की हरी-हरी नई नेत में निकल आई है। माटी का मोह नहीं छूटता। बचना पर्व[1] की रात में पूने को बड़े में फूल लगाया था उसे नहीं भूला है। परती का मोह भी नहीं छूट रहा। प्यारे हमारे दादा परदादा-मुरैनियों के जेल में मर-खप गए। मकई के बाल की तरह उनके बाल भूरे हो गए होंगे। हमारे बच्चों के बाल सुतिया मकई के दानों की तरह चमकेंगे। उनसे कहना धरती माता के प्यार की जंजीर में हम

---

१ संथालों का एक प्रसिद्ध पर्व।

बँध बए। रे! हाय रे हाय! रिम-रिम-झा-पिन ता! डा डिम्मा डा डिम्मा!

"यदि जमीन पर कोई आवे तो गर्दन काट लो!"

तहसीलदार हरगौरीसिंह ने रैयतों के बाप जमीन बन्दोबस्ती का ऐलान कर दिया है। बस एक सौ रुपये बीघा सलामी देकर कोई भी रैयत जमीन की बन्दोबस्ती के लिए दरखास्त दे सकता है। अरे, तुम लोग बेवकूफ हो। ये जमीन एक साल पहले ही नीलाम होकर खास हो गई हैं। पुराने तहसीलदार ने ही सारी कार्रवाई की थी। नीलाम होकर खास हुई जमीन पर दफा ४ की दरखास्त करने से मकदी कैसे होगी? हाँ नये बन्दोबस्त लेने वालों को जमा बाँध देने। यह तो हमारे हाथ की बात है। इसके लिए कचहरी की दौड़-धूप करने की क्या जरूरत? अरे सुखानदास मुकदमा में कितना खर्चा हुआ तुम लोगों का जरा इन लोगों को बता दो। हाँ कँवरेसी और सोसलिस्ट पाटी वालों की चुपकी भी ओढ़ना। सुना? हरेक तारीख में चन्दा वसूल कर पैरवीकार मेतावी लोगों को देना पड़ता था—दस रुपये नकद सिकरेट और पान की बात तो छोड़ ही दीजिए! यही पेशा है भाई इन लोगों का। हाँ जिसकी जमीन नीलाम हो गई है, वह यदि जमीन पर आवे तो उसकी गर्दन उड़ा दो। राज से मदद मिलेगी।

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट! ०

गाम-घर बाछा-बाछी और भैंस के पाड़ा की बिक्री धड़ाधड़ हो रही है। दूसरे सूद पर भी रुपया कर्ज लेकर जमीन मिल जावे तो फ़ायदा ही है। पाट का भाव पचास रुपया है उधर पचास भी जा सकता है, सौ भी हो सकता है। धान सोने के भाव बिक रहा है। जमीन! जिसके पास जमीन नहीं वह आदमी नहीं जानवर है। जानवर घास खाता है, लेकिन आदमी तो घास खाकर नहीं रह सकता! मरे! छोड़ो भी कँवरेस और सुसलिस्ट पाटी की बात को। दरखास नामंजूर हो गई। जमीन बन्दोबस्ती

बाँध के मंथन की अब कोई उम्मीद नहीं।

हर टोले के लोग आपस में ही लड़ेंगे क्या? कोयरीटोले के बजू महतो की जमीन खासी का मझिला लड़का महतो बन्दोबस्ती ले रहा है। सोबरन की जमीन पर उसका चचा रामेसर नजर लगाए बैठा है। सोबरन की जमीन सोना उगलती है। यादवटोली के सभी रैयतों की नीलाम हुई जमीन खेलावनसिंह यादव ले रहे हैं। संथालों की जमीन राजपूतटोले के लोग ले रहे हैं। सुमरितदास कहते हैं, यह बात सुपुत है। किसी से कहना मत कि संथालों की जमीन खुद तहसीलदार साहब ले रहे हैं। लेकिन अपने नाम से तो नहीं ले सकते। इसीलिए दूसरों के

करवेगा ? क्या पहनावेगा ? फुलिया ने खलासी को छोड़ दिया है। खलासी को लोलसीवाम की एक पतुरिया से मुहब्बत राज वाड़ी पीकर वहीं पड़ा रहता था। तलब मिलने के दिन वह पतुरिया खलासी का पीछा नहीं छोड़ती थी। तलब का एक पैसा इधर-उधर हुआ कि पैर की चट्टी खोलकर हाथ में ले लेती थी। आखिर फुलिया कितना बर्दाश करती। टीसन के पैटमान जी नहीं रहते तो फुलिया की इज्जत भी नहीं बचती। फुलिया अब पैटमानजी के यहाँ रहती है। खलासी एक दिन पैटमान से लड़ाई करने आया। टीसन मास्टर बाबू ने कहा कि यदि खलासी टीसन के हाता में आवे तो पकड़कर पीटो। उसी दिन खलासी जो घुस दबाकर भागा तो फिर खाँसी भी नहीं करने आया कभी। पैटमानजी आन के छत्री है —तंत्रिमा छत्री नहीं असल बुंदेला छत्री पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गए हैं पत्थर का नकली दाँत लगाते हैं। कहने को नकली दाँत है मगर असली दाँत से भी बढ़कर है। चना-मुट्टा और अमरूद सब कुछ चबाकर खाते हैं पैटमानजी। पचीस साल पहले हांगाम मुलुक में चाह पीते और पान-जर्दा खाते-खाते दाँत टूट गए हैं, उमेर तो अभी कुछ भी नहीं है। दस बरस से 'बेवा' थे मन के लायक स्त्री मिली ही नहीं। पैटमानजी ने मौंहपूछास के लिए एक पुरानी नीली कमीज भेज दी है। कमीज पहनने पर मौंहगू की पहचानने में गलती हो जाती है। ठीक रेलवे का मादमी ! बहिया के लिए नई साड़ी भेज दी है। एक बिलकुल काली किनारी है। इस बार के भाटा में असली 'सन्तीपुरी साड़ी' मिलेगी तो फुलिया को भेज देगा। फुलिया कहती है इस बार माँ को भी साथ ले आयेगी।

फुलिया का भाग ! रमपियरिया की माँ कहती है—"रमिया भी अब बिहाने के जोग हो गई। बिना बाप की बेटी है ! जब से तुम ससुराल गई हो रोज एक बार तुम्हारा जिकर करती है रमिया—'फुलिया दीदी कब आवेगी ? इस बार फुलिया दीदी आवेगी तो साथ में मैं भी जाऊँगी। यदि ऊपर कोई घर नजर में आवे तो रमिया को भी अपने साथ ले जाओ फूलो बेटी ! यहाँ कोयरीटोले के छोकड़े दिन-दिन बिगड़ते जा रहे हैं।

सहदेव मिसर पर तंत्रिमाटोली का कुत्ता भी भूँकता है ! बहुत दिनों के बाद यह तंत्रिमाटोली में आया है—फुलिया के मकान पर। दस दिन रहेगी फिर चली जायेगी। फुलिया अब जात-समाज से नहीं डरती। यह तंत्रिमा छत्री नहीं यह असल बुन्देला छत्री की स्त्री है। आँचल में अपने से पका कर लाती है। माँ का छाया भी नहीं खाती !

वह तो मेहमान होकर आई है। उसके जी में जो आवे वह करेगी। कोई

कुछ नहीं बोल सकता। वह सहदेव मिसर को बैठने के लिए चटाई देती है। एक काँच की छोटी-सी परिया में सुपारी सौंफ और बालचीनी के टुकड़े बढ़ा देती है। तो फुलिया भूली नहीं है उसे ? वाह ! सहर का पानी चढ़ने पर बाहर तो एकदम बदल गया है पर भीतर वैसा का तैसा। काजल वाली आँखें और भी बड़ी मालूम होती हैं। अँगिया और नक्सा कोर की सफेद साड़ी। सहदेव मिसर डरते-डरते कहता है—

"फुलिया !"

"क्या ?" फुलिया मुस्कराती है।

सहदेव मिसर का चेहरा एकदम लाल हो रहा है। कान लाल हो गए हैं। नाक के पास वाला सिरा धकधक कर रहा है—"फुलिया ! जबसे तुम गई मैंने कमीइस टोले में पैर नहीं दिया।"

"रहने दो ! महलोटटोले में नहीं जाते थे ? पनबतिया के यहाँ कौन जाता था ? झूठ मत बोलो। फुलिया हँसती है।

"नहीं फुलो !"

ढिबरी की रोशनी में सहदेव मिसर फुलिया की आँखों की नई भाषा को पढ़ता है। हवा के झोंके से ढिबरी बुझ जाती है। फुलिया बाहों में महकौआ[1] तेल लगाती है। अँगिया के नीचे वाली छोटी चौकी में रम्बड़[2] जमा रहता है शायद। फुलिया के देह से अब काम की गन्ध नहीं निकलती है। सौंफ बालचीनी खाने से मुँह गमकता है। सहर की बात निराली है। सहर की हवा लगते ही आदमी बदल जाता है। तहसीलदार की बेटी तो कभी सहर गई भी नहीं। जाति की बन्दिश और पंचायत के फैसले को तो सबसे पहले पंच लोगों ने ही तोड़ा है। तंत्रिमाटोली का छड़ीदार है मोहन और उचितदास जिसे बाल से बेबास देखेगा छड़ी से पीठ की चमड़ी खींच लेगा। मोहन की स्त्री रामलखनसिंह के बेटे से फँसी हुई है और उचितदास की बेटी कोयरीटोले के सरन महतो से। पंचायत का फैसला ज्यादा-से-ज्यादा दस दिनों तक मान्य रह सकता है। पुश्त पुश्तैनी से जो रीति-रेवाज बाँध में चला आ रहा है उसको एक बार ही बदल देना आसान नहीं। जिसके पास जमीन-जमीन है पास में पैसा है वह भी तो अपने यहाँ का चाल-चलन नहीं सुधार सकते। आबूटोली के किस घर की बात छिपी हुई है। पंच लोग पंचायत में बैठकर फैसला कर सकते हैं, उसमें कुछ

---

१ सुगन्धित। २ रबर।

सकता तो नहीं है। लेकिन पंचायत के फैसले से चूल्हा तो नहीं सुलग सकता ? पंचों को क्या मालूम कि एक मन धान में कितना चावल होता है ! शास्त्र में कहा है, 'जोरू जमीन जोर का नहीं तो किसी और का। और देह के जोर से आजकल तब कुछ नहीं होता। जिसके पास पैसा है वही बोलता बिसर[1] पहलवान है। वही सबसे बड़ा जोरावर है।

तहसीलदार साहब की बेटी शाम से ही आधे पहर रात तक डागडर बाबू के घर में बैठी रहती है चाँदनी रात में कोठी के बगीचे में डागडर के हाथ में हाथ डालकर घूमती है। तहसीलदार साहब को कोई कहने की हिम्मत कर सकता है कि उनकी बेटी का चाल-चलन बिगड़ गया है ? तहसीलदार हरबंससिंह अपनी जात भतेरी बहन से पैदा हुआ है। बालदेवजी कोठारिन से लटपटा गए हैं। कालीचरन ने मदर्सा स्कूल की मास्टरनीजी को अपने घर में रख लिया है। उन लोगों को कोई कुछ कहे तो ? 'जितना कानून और पंचायत है सब गरीबों के लिए ही ? हुँ !

जमीन के लिए बाँध में नई दलबन्दी हुई है। जिन लोगों की जमीन नीलाम हुई है, दखलें खारिज हुई हैं वे एक तरफ हैं। जिन्होंने नई बन्दोबस्ती ली है अथवा जमींदार से बाकी बाँध की है, मुचुर्का लिखकर दे दी है या जो जमीन बन्दोबस्त लेना चाहते हैं, वे सभी दूसरी तरफ हैं। गरीबों और मजदूरों के टोलों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। बेलाबन के हलवाहों को कालीचरन ने हल जोतने से मना कर दिया है। तहसीलदार हरबंससिंह का नाई धोबी और मोची बन्द करने के लिए कालीचरन घर-घर घूमकर भाषण देता है। बाँध से सारे पुराने बाँध टूट गए हैं, मानों बाढ़ का नया पानी आया हो।

गरीबों और मजदूरों की आँखें कालीचरन ने खोल दी हैं। सैकड़ों बीघे जमीन वाले किसानों के पास पैसे हैं, पैसे से गरीबों को खरीदकर, गरीबों के बल पर गरीबों के जरिये ही छुरी चलाते हैं। 'होशियार ! जिन लोगों ने नई बन्दोबस्ती ली है वे गरीबों की रोटी मारने वाले हैं !

कालीचरन ने चमाटोली में बात का दिया ?

बात क्या है ? बात दो ही हैं एक गरीब और दूसरी अमीर। 'बेलाबन की रेवा यादवों की ही जमीन हड़प रहा है। 'देख को माँस खोलकर, बाँध में डिरिक दो बात है।

अमीर-गरीब !

---

१ बिबिसाक्षा एक प्रसिद्ध पहलवान

तहसीलदार हरबौरीसिंह काली टोपी वाले नौजवानों से कहते हैं, "इस बार मोर्चे पर जाना पड़ेगा। हिन्दू राज कायम करने के लिए पहले पाँव में ही लोहा लेना पड़ेगा।"

संयोजकजी आजकल महीने में दो बार बर मनीआर्डर भेजते हैं। संयोजक जी को कहेंगे उसे काली टोपी वाले नौजवान प्राण रहते नहीं काट सकते हैं। आप और पानी में डूब सकते हैं इसी को कहते हैं अनुशासन!

बावनदास जिला कांग्रेस के नेताओं को खबर देने गया है—'पाँव में जुलुम हो रहा है।

पैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के सामने विकट समस्या उपस्थित है। नई बस्ती वाले किसान रोज उनके यहाँ आते हैं। मामला-मुकदमा उठने पर विश्वनाथबाबू की सहायता की जरूरत होगी। बेजमीन लोग अपनी पार्टीबन्दी कर रहे हैं, जमीन वालों को भी भेदभाव भुलाकर-अगड़ा-पिछड़ा को भूलकर एक हो जाना चाहिए।

तहसीलदार हरबौरीसिंह दिन रात विश्वनाथ बाबू के घर पर ही रहते हैं।

'काका! इस बार इनका क्या कीजिए! क्या आप यही चाहते हैं कि नाई, बारी और चमार के सामने हम हाथ जोड़कर गिड़गिड़ावें? कल से ही रामकिरपाल काका के मुहाल में धान कटी पड़ी है। चमार लोगों ने उठाने से इनकार कर दिया है। जीवेसरा चमार को लीडर आपने ही बनाया है।

'राजपूत टोले के लोगों को देखिए, दाढ़ी कितनी बड़ी-बड़ी हो गई है। नाइयों ने काम करना बन्द कर दिया है। आपके हाथ में सबों की चुटिया है। आप एक बार कह दें तो सबों की नानी मर जाये।"

कालीचरन आकर कहता है 'विश्वनाथ मामा आप कांग्रेस के लीडर हैं। हमें बार देखना है कि कांग्रेस गरीबों की पार्टी है या अमीरों की। आज तक मैंने आपको देवता की तरह माना है। लेकिन गरीबों के खिलाफ कदम बढ़ाइएगा तो हम भी मजबूर होकर।"

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद क्या करें क्या नहीं करें, कुछ समझ नहीं पा रहे हैं।

बावनदास पूर्णिया से लौट रहा है।

यह क्या भइ, जुलुम हो रहा है चुनाव। उसने पूर्णिया में देखा जुलुम हो रहा है।

कचहरी में जिले-भर के किसान पेट बाँधकर पड़े हुए हैं। दफा ४० की दरखास्तें दायर हो गई हैं, 'लोअर कोर्ट से। अपील करनी है। 'अपील? लोको पैसा देखो तमाशा। क्या कहते हो? पैसा नहीं है! तो हो चुकी अपील। पास में नगदनारायण हो तो नकदी कराने आओ।

कानून और कचहरी कम्पाउण्ड में चलने वाले कीट-पतंग भी पैसा माँगते हैं।

जिला कांग्रेस कमिटि में जुलुम हो रहा है। जिला कांग्रेस के सभापति का चुनाव होने वाला है। चार उम्मीदवार हैं, दो असल और दो नकलसल[1]। राजपूत और भूमिहार में मुकाबिला है। जिले-भर के सेठों और जमींदारों की मोटर गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। एक दूसरे के गड़े मुर्दे उखाड़े जा रहे हैं। कटिहार कॉटन मिल वाले सेठजी भूमिहार पार्टी में हैं और फॉरबिसगंज जूट मिल वाले राजपूतों की ओर। पैसे का तमाशा कोई यहाँ आकर देखे!

बावनदास सोचता है अब लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी टोपी पर लिखवा लें—भूमिहार, राजपूत कायस्थ यादव हरिजन! कौन कार्यकर्ता किस पार्टी का है समझ में नहीं आता।

"जुलुम हो रहा है?"

"जी हाँ जुलुम हो रहा है।

"देखिए बावनदासजी बात यह है कि ९५ सैकड़े लोगों ने तो वक्त और मूल्य बाबा किया होगा इसमें कोई सन्देह नहीं। सही और वास्तविक हक वाले बाकी रैयत भी इन्हीं झूठे दावे करने वालों के कारण बेमौत मर गए। इसमें कानून का क्या दोष है? लोगों का नैतिक पतन हो गया है। देखिए, इस बार जिला कमिटी में इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास होने वाला है।"

"देखकर किसानों से क्या कहेंगे?"

'क्या कहिएगा? कहिए कि जमींदारी प्रथा तो खत्म हो रही है। आज बिहार मंत्रीमण्डल ने ऐलान कर दिया है—जमींदारी प्रथा को खत्म करने के लिए बिहार सरकार कटिबद्ध है!"

बावनदास किसानों से क्या कहेगा?

जमींदारी प्रथा खत्म हो जायेगी? तब ये नकलसी जमींदार लोग क्या करेंगे? सब मिल खोलेंगे दावत। इसीलिए आप हरेक छोटे-बड़ कौवर के साथ

---

१ डम्मी कैण्डिडेट।

एक मारवाड़ी घूमता है। भावनदास को याद आती है पाँच महीने के पहले की बात! पुर्णिया टीसन में तीलसाड़ी के संथर बाबू ने अपने साथ के दस काम कर्ताओं को पूरी-मिठाई का जलपान कराया और पैसा दिया तीलसाड़ी हाट के मारवाड़ी चोखमल जुहारचन्द के बेटे ने। 'हाँ जी साधो जी! तुम्हीं लोग तो देश के असल सेवक हो। जेहल में खिचड़ी खाते-खाते जिन्दगी बिता दी। सारे इलाके के कार्यकर्ता को खिलाया और एक-एक सेर मिठाई भी खरीद दी।

'चोखमल जुहारचन्द का बेटा मालचन्द मरखिया सबडिविजन कांग्रेस का खजांची है। साठ रुपये जोड़ी खादी की धोती पहनता है। चर्खासंघ के बाद कितना खादिर करते हैं!

'जुल्म हो गया।

"क्या हुआ?"

"जमींदारी परथा खतम।

'जुल्म बात!"

यहाँ के लोग सुख-संवाद सुनकर भी कहते हैं—जुल्म बात! जुलम हँसी जुल्म खुशी! 'बंगला के भीषण सुन्दर' की तरह।

"जुल्म बात!"

"क्या है?

"भावनदास ने जमींदारी परथा खतम कर दिया। कॉमरेड वासुदेव दौड़ता हुआ आकर काछीचरण को खबर देता है।

'भावनदास ने?

"नहीं। भावनदास खबर लेकर आया है। कांग्रेस के मन्त्रीजी ने जमींदारी का नाश कर दिया है।"

"अब तक 'लाल पताका अखबार में यह खबर छापी नहीं हो इस पर विश्वास मत करो कॉमरेड! यह सब कांग्रेसी चाई है। खैर, मैं कल ही सिकरेटरी साहेब से पूछ आता हूँ। तुम लोगों ने मेम्बरी का पैसा जमा नहीं किया आफिस में। सब कॉमरेड को खबर दे दो। इस बार आखिरी तारीख है, इसके बाद 'लाल पताका' में नाम निकल जायगा।"

"खलिचरण ने तो मेम्बरी के पैसे से सोसलिस्ट-कट कुर्ता बना लिया है। कहता है, सत-पटुआ होने पर पैसा जमा कर देंगे।

"जुल्म बात है। मेम्बरी के पैसे से कुर्ता? नहीं उससे कहो पैसा जमा करना होगा।"

तहसीलदार हरगौरी और महसीलदार विश्वनाथप्रसाद अब एक पान का

दो टुक करके बात है। सच ? सच नहीं तो क्या ? बेचारे पुरोहितवाड सबों से कहता फिरता है 'कसम और कानून की बात जहाँ आएगी वहाँ लाठी-भाला चलाने वाले क्या करेंगे ?' तहसीलदार विलासपरसाद पुराने तहसीलदार हैं। राज पारबंगा के नीमक पानी से ही तन पुष्ट हुआ है। कायस्थ नमकहरामी नहीं कर सकता कभी। कांग्रेसी हुए हैं तो क्या अपने पैसे को भूल जाएँगे ?

संथाल्टोली में माहल बज रहा है—

सोनो रो रूप रूपे रो रूप
सोनो रा रूप लेका बातेन मेलाय
बातेन विसोय रे सोना मुन्दोम
बातेन उईहय जीवीरी लोकतिय।

डा डिम्बा डा डिम्बा ! रि रि-ता-थिन ता !

सोने और चाँदी के बीच मेरे प्रियतम का रूप सोने की तरह है। माने की अँगूठी को देखकर अपने प्रियतम की याद आती है।

संथाल परगना के आदिवासी मधाला को सोने की झलक लगी है या नहीं कौन जाने ! लेकिन यहाँ के संथाल माने और चाँदी में क्या फर्क है जानते हैं ?

जमींदारी प्रथा खतम हो गई। अब जमींदार जमीन से बेदखल नहीं कर सकता। हमने उन्हें जमीन में बहाल कर दिया। जो जोतेगा जमीन उसकी है। जो जितना जोत सके जिसकी जमीन मिल जाओ बोझा काटो। अब बाँटन का भी झमट नहीं। धरती माता का प्यार झूठा नहीं। फिर खेत में जिन्दगी झूमेगी। आषाढ़ के बादल बजा रहे हैं माहल बिजली भाँज रही है। तुम भी नाचो। नाचो ! नाचो रे ! माहल बजाओ जोर-जोर से। पँचायत[1] का नशा आज नहीं उतरेगा जब तक पूर्णिमा का चाँद नहीं डूब जाये चले बादलों में नाचना बन्द नहीं होगा। चाँदनी की तरह प्रियतमा की मुस्कराहट बाँसुरी-सी मीठी बोली तीर की तरह दिल पर घाव करती है। मेरे कलेजे पर फूला से भरा हुआ सिर रख दो प्रिये !

डा डिम्बा रि रि ता थिन !

---

१ संथालों के घर में बनी हुई शराब।

छत्तीस

डॉक्टर पर यहाँ की मिट्टी का मोह सवार हो गया। उसे लगता है मानो वह युग-युग से इस धरती को पहचानता है। यह अपनी मिट्टी है। नदी-तालाब पेड़-पौधे जंगल-मैदान जीव जानवर, कीड़े-मकोड़े सभी में वह एक विशेषता देखता है। बमारस और पटना में भी गुलमुहर की डालियाँ लाल-फूला से लद जाती थीं। नेपाल की तराई में पहाड़ियों पर पलाश और अमलतास को भी गले मिलकर फूलते देखा है, लेकिन इन फूलों के रंगों में उसे पहली बार जादू लगा है।

कोरलमोहर —गुलमुहर—कृष्णचूड़ा। गुलमुहर का कृष्णचूड़ा नाम यहाँ कितना मौजूँ लगता है। काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुन्दर लगते होंगे।

आम से लदे हुए पेड़ों को देखने के पहले उसकी आँखें इन्सान के उन टिकोलों पर पड़ती हैं, जिन्हें आमों की पुठलियों के भूत पूरे की रोटी पर जिन्दा रहना है और ऐसे इन्सान? भूखे अतृप्त इन्सानों की आत्मा कभी भ्रष्ट नहीं हो या कभी विद्रोह नहीं करे, ऐसी आशा करनी ही बेवकूफी है। डॉक्टर यहाँ की गरीबी और बेबसी को देखकर आश्चर्यित होता है। यह सन्ताप कितना महान् है जिसके सहारे यह वर्ग जी रहा है? आखिर वह कौनसा कठोर विधान है जिसने हजारों-हजार सुधियों को अनुशासन में बाँध रखा है?

कल से पकड़े हुए दोनों कैदियों को वस्त्र नहीं सोने का चटाई नहीं पुआल भी नहीं! भीगी हुई धरती पर लेटा न्युमोनिया का रोगी मरता नहीं है, जी जाता है! कैसे?

यहाँ विटामिनों की किस्में उनके अल्प-अल्प मूल्य और आवश्यकता पर लम्बी और चौड़ी फेहरिस्त बनाकर बाँटवाने वालों की बुद्धि पर तरस खाने के सिवा क्या चारा है! मच्छरों की तस्वीरें, इससे बचने के उपायों को पोस्टरों पर चित्रित करके अथवा मैजिक लालटेन से तस्वीरें दिखाकर मैलेरिया की किसी पिता को रोकने वाले किस देश के लोग थे? यहाँ तो उन मच्छरों की तस्वीरें देखते ही लोग कहते हैं—"पूर्णिमा जिला का लोग मच्छर के लिए बेकार बदनाम करते हैं देखिए पश्चिम का मच्छर कितना बड़ा है एक हाथ लम्बा देह चार इंच मूँह। बाप रे!"

डी० डी० टी० और मलहरी की बात तो बहुत बड़ी हुई रेह में कड़वा तेल खाना भी स्वर्गीय भाग विधाम म पथ्य है। नेत

समाते हैं स्वर्ग की परियाँ तब फूलेल लेकर पुण्य करने वालों की सेवा करती हैं ! खेतों में पैदा हुई काली मिट्टी की संजीवनी इन्हें जिलाए रहती है। सभ्य "यामला सुजला-सुफला इनकी माँ नहीं ? अब तो शायद धरती पर पैर रखने का भी अधिकार नहीं रहेगा । कानून बनने के पहले ही कानून को बेकार करने के तरीके सह लिये जाते हैं। सूई के छेद से हाथी निकाल लेने की बुद्धि ही आज सही बुद्धि है । और सोच तो बकवास करते हैं बुद्धि-विभ्रम रोग से पीड़ित है । जिसके पास हजारों बीघे जमीन है वह पाँच बीघे जमीन की भूख से छटपटा रहा है । बेजमीन आदमी आदमी नहीं वह तो जानवर है ।

डाक्टर ममता को लिखता है—

"तुम जो भाषा बोलती हो उसे मैं नहीं समझ सकते । तुम इनकी भाषा नहीं समझ सकती । तुम जो पानी हो वे नहीं खा सकते । तुम जो पहनती हो वे नहीं पहन सकते । तुम जैसे सोती हो वैसे नहीं सो सकते । फिर तुम इन्हें आदमी कैसे कहती हो ! कुछ नहीं कर सकते । वह आदमी का डॉक्टर है जानवर का नहीं । 'टेस्ट ट्यूब में आदमी और जानवर के भ्रूण अलग-अलग रखे हुए हैं । दोनों के सिरम की अलग अलग जाँचें करते हैं। डॉक्टर आदमी के भ्रूण वाले ट्यूब को हाथ में लेकर, परा और ऊपर उठाकर, गौर से देखता है। वह जानना चाहता है देखना चाहता है कि इस इन्सान और जानवर की रक्तकणिका में कितना विभेद है कितना सामञ्जस्य है ।

खून से भरे हुए टेस्ट-ट्यूबों में अब कोई आकर्षण नहीं ! क्या करेगा वह संजीवनी बूटी खोजकर ? उसे नहीं चाहिए संजीवनी । मच्छर और हैजे से चिपटाकर मरने में अच्छा है मैलेग्नेंट मैलेरिया से बेहोश होकर मर जाना । तिल-तिल कर घुल-घुलकर मरने के लिए उन्हें जितना बहुत बड़ी क्रूरता होगी सुनते हैं महात्मा गांधी ने कष्ट से तड़पते हुए बछड़े को गोली से मारने की सलाह दी थी । वह नये संसार के लिए इन्सान को स्वच्छ और सुन्दर बनाना चाहता था । यहाँ इन्सान है कहाँ ? अभी पहला काम है जानवर को इन्सान बनाना ।

उसने ममता को लिखा है—

"यहाँ की मिट्टी में बिखरे, लाखों लाख इन्सानों की जिन्दगी के सुनहरे सपनों को बटोरकर, अधूरे अरमानों को बटोरकर, यहाँ के प्राणी के जीवकोष में भर देने की कल्पना मैंने की थी। मैंने कल्पना की थी हजारों स्वस्थ इन्सान हिमालय की कन्दराओं में त्रिवेणी के संगम पर, अरण्य निमूर और सुमकोणी

के संगम पर एक विशाल डैम बनाने के लिए पर्वत तोड़ परिश्रम कर रहे हैं।

जाड़ों एकड़ सन्ध्या धरती कोयी कवलित भरी हुई मिट्टी धरस्त दयामला हो उठेगी। कछन जैसे सफेद बालू-भरे मैदान में पानी रंग की जिन्दगी के बेल लग जायेंगे। मकई के खेतों में घास गाती हुई औरतें बेवजह हँस पड़ेंगी। मोती जैसे सफेद दाँतों की चमक !

डॉक्टर का रिसर्च पूरा हो गया एकदम कम्पलीट। वह बड़ा डॉक्टर हो गया। डॉक्टर ने रोग की जड़ पकड़ ली है।

गरीबी और जहालत—इस रोग के दो कीटाणु हैं।

एनोफिलीज से भी ज्यादा खतरनाक 'कैलपसाई'[1] से भी ज्यादा जहरीले हैं यहाँ के

नहीं। शायद वह कालीचरन की तरह तुलनात्मक उदाहरण दे बैठेगा। कालीचरन किसानों के बीच भाषण दे रहा था "ये पूँजीपति और जमींदार खटमलों और मच्छरों की तरह सोशक हैं। खटमल ! इसीलिए बहुत से मारवाड़ियों के नाम के साथ 'मल' लगा हुआ है और जमींदारों के बच्चे मिस्टर कहलाते हैं। मिस्टर मच्छर !

खड़ी पड़ी दीवार ! यह विदेशी ! इसे गिरने दो ! यह समाज कब तक टिका रह सकता ?

कविवर हंसकुमार तिवारी की कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं—

दुनिया फूस बटोर चुकी है
मैं दो चिनगारी दे दूँगा।

गुलमुहर—आज का फूल ! सारी दुपहरिया जल रही है। लाल ! लाल !

कमल—कमला नदी के बहाव में कमल की अधखुली कलियाँ अपने कोष में नई जिन्दगी के पराग भरकर खिलना ही चाहती हैं।

'जो ! तुम ! कमला ! इतनी रात में ? अकेली आई हो ?"

'डॉक्टर ! बोलो। सब बोलो। मैं डेढ़ घण्टे से खड़ी देख रही हूँ। तुमको क्या हो गया है ? क्या तुम्हें भी डर लगता है ? सिर चकराता है ? देखा रात के पास नर्मी-सी मालूम होती है ? दुनिया घूमती-सी मालूम पड़ती है ? डॉक्टर ! डॉक्टर ! प्यास !"

कमल की भीनी-भीनी खुशबू ! कोमल पंखुड़ियों का कमनीय स्पर्श !

---

१ कालाआजार का मच्छर।

८८

कमला ! आ ! मैं कमला की याद में हूँ ? मुझे नींद न लग जाये । मुझे
उठकर बैठ जाना चाहिए । मेरी मंजिल ।
"कमला चलो तुम्हें पहुँचा दूँ ।
लेटो रहो बेटा !
"ओ ! मौसी ! तुम आ गई ?
प्यास कहता है "कम सुबह से ही सिरफ चाय पीकर हूँ तो सिर नहीं
चकर रहा ?

सैंतीस

तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद के दरवाजे पर पंचायत बैठी है। दोनों तहसीलदार के बगल-बगल में बालदेवजी और कालीचरनजी बैठे हैं । बामन राजपूत के साथ में बैठा है यादव—एक ही ऊँचे मसनद पर । मरे ! जीवेसर मोदी भी उसी कमखत पर बैठा है ? कम अब गाम पर आ रहा है। देखो आज तहसीलदार हरमौरी किस तरह हँस हँसकर कालीचरन से बात कर रहा है—मानो एक प्यारी का बासत है । हाँ ना यादवों को अब जमींदिरनाथ भी अपनी मान लिये है। कौम क्या बोल सकता है ? बाबनदास कौन जात है ? कहाँ है बाबनदास ? पुरैनियाँ गया है ? आज पचायत के दिन उसको रहना चाहिए था । अरे भाई बाहरी आदमी फिर बाहरी आदमी है । उसको इस गाँव से कौन मतलब है ? यहाँ नहीं वहाँ । लेकिन कालीचरन बाबू । डोमन ठाकुर क्या कहता है सुना ।
"ठाकुर (नाई) टोले से और रजकटोले से एक-एक आदमी का ऊँचे सफेद —ने के लिए चुन लिया जाये ।"
ओ ! आओ डोमन भाई ! अपने टोले से किसको पंच बनाते हो ? आओ !
आओ ! और रजकटोले से तो प्यारेलाल है ही। आओ प्यारे ! कालीचरन
को अपने ही पास बिठलाता है ।
'ना बात यह है कि " तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद जी सुपारी कतरते हुए
। है "जमाना बहुत खराब आ रहा है। आ लोग अखबार-वखबार पढ़ते हैं

बिछावन करी।

नहीं जानत है कि कितना खराब जमाना आ रहा है। बगार की तरह अकाल पैदेया। बयास के अकाल के बारे में नहीं जानते ? अरे, चरवाहा सब बाता है, सुने नहीं हो—

बड़ जुलम कइलक अकलवा रे
बंगाला मुलुकवा में।
चार करोड़ आदमी मरल

पूछो कालीचरन से बासदेव भी कहेगा कि बयास के अकाल जैसा अकाल कभी पड़ा ? उम्र रखाबा होने से क्या हुआ ? जो लोग अखबार नहीं पढ़ते हैं, वे दुनिया की बातों से वाकिफ कैसे हो सकते हैं ? मैं ही पहले से यदि कर-कचहरी, कटिहार-पूर्णिया नहीं जाता तो कूपमंडूक रहता। कुएँ का बंग !

देखो सरकार सभी आमदनी से धान वसूल रही है। क्यों ? सरकार को पूरा डर है कि अकाल पैदेया। इसलिए अपने हाथ में कर-बखत के लिए पूरा स्टोक रखना जरूरी है। अरे, तुमको तो तीन आदमी की फिक करनी पड़ती है तो साल-भर बाप-बाप चिल्लाते हो कभी इस अमवास् में पानी मांगते हो सूरज भगवान् से धूप उगाने के लिए कहते हो मौकरी करत हा कर्ज लेते हो ! और जिसको समूचा आरमघरवा हिंदुस्थान की फिक करनी पड़ती है, उसकी क्या हालत होती होगी ? अभी सुराज ही तो सभी बॉडर जेहल से निकले हैं सुराज मिनिस्टरी लिया है। यदि अकाल पड़ गया तो जो सुराज मिलने वाला है वह नहीं मिलगा। यदि मिलेगा भी तो उसकी सारी ताकत तो लोगों को खिलाने में ही खत्म जायगी। इसलिए हम लोगों को बरसी से पाया अन्न उपजाना चाहिए। अभी मान लो कि कर-कचहरी कर-कौजदारी करके तुम खत पर दफा १४४ लगा देते हो फिर १४५ होगा इसके अलावा में धान तो रोपा नहीं जायेगा ! खेत परती रहेगा और अन्न होगा नहीं। इसके बाद मालिक लोगों से ही यदि धान मांगोगे तो कहाँ से देंगे मालिक लोग ? अपने खर्च के लायक धान मालिकों के पास होगा नहीं और सरकार वसूल करेगी लाठी के हाथ से, कानून से। बड़े मालिकों के बखारा में भी चमगादड़ झूलेंगे। "तो हमारा यही कहना है कि सभी भाई आपस में विचार कर, मिलकर देखा कि किस काम में भलाई है !"

अरे ! तो यह पंचायत सिरफ बजमीन वाला को ही डील देने के लिए बैठाई गई है ! "चुप रहो ! तहसीलदार जो कह रहे हैं, नहीं समझ रहे हो उसकी बात कहता है तहसीलदार ! "व्यक्ति आदमी हैं। अरे, आज ही यह कालीचरन और बासदेव आया है न ! पहले तो इन लोगों के कॉच-कान यही थे। इन्हीं के यहाँ बैठकर मजर में सुना था कि नेताजी सिंगापुर में पुष्प विमान पर

तलमाटोला पासवानटोला बालुङ-टुर्मीटोला तथा कायरीटोला की औरतें हर साल ऐसे समय में इन्द्र महाराज को रिझाने के लिए, बादल को सरसाने के लिए, 'जाट-जट्टिन' खेलती हैं।

आज भी 'जाट-जट्टिन' का आयोजन है। कल तो पिछवारीटोले की औरतों ने किया था। बादल का एक टुकड़ा थोड़ी देर के लिए आकर चाँद को ढक गया था। आज पूर्णिमा है। कल से यदि बरखा नहीं हुई तो सारा पक्ष सूखा रहेगा। 'तलमाटोली की औरतों ने बाबूटोला की औरतों को निमन्त्रण दिया —'एक साथ सब मिलकर जाट-जट्टिन खेलें जरूर बरखा होगी। पुजारीटोली और कायस्तटोली के बीच में जो पन्द्रह रसी मैदान खाली है, उसी में औरतें जमा हुई हैं।

जाट के पास हजार-हजार मैसें हैं। वह उन्हें चराने के लिए कोयी के किनारे जाता है। जट्टिन घर में रहती है घूम की ओर वही की बिक्री करती है हिसाब रखती है। 'साल या पति से लड़कर, रूठ कर जट्टिन मैहर चली गई। जाट उसे ढूँढ़ने जा रहा है। जट्टिन बड़ी सुन्दरी थी उसकी सुन्दरता की चारो ओर चर्चा होती थी।

सुमरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी
पातरी बाँस के छाँकिनियाँ हो बाबूजी
गोरी हमार अतिनियाँ हो बाबूजी
चाननी रात के इंजोरिया हो बाबूजी।
मान्ही-मान्ही डेंगवा पातल ठोरवा
छटके जैसन बिजलिया।

इसलिए जाट को बाँध के हरेक मालिक नायक या मण्डल पर सन्देह। जट्टिन मैयर नहीं जा सकेगी किसी ने जरूर उसे अपने घर में रख लिया होगा। 'रास्ते में कितने बाँध हैं, कितनी नदियाँ हैं कितने घाट हैं और बन्दार हैं। वह रास्ते के हर बाँध के मालिक मड़र[1] और नायक के यहाँ जाता है

नायकजी हो नायक हो
पोख देहो किवड़िया हो नायकजी
दूनू देहो जटिनियाँ हो नायकजी

जट्टिन बनी है रमपिसरिया और जाट बनी है कोयरीटोला की मखनी। मखनी ठीक बनने जैसी लगती है।

---

१ मण्डल, मालिक।

'घाट-अट्रिक्शन' अभिनय के साथ और भी सामयिक अभिनय तथा अप-टाइप बीच-बीच में होते हैं। 'फुलिया बनी है डॉक्टर। उसने कमल के फूल को डण्डी को किस तरह जोड़-तोड़कर डॉक्टर के बैठे में झूलने वाला आला बनाया है। खलिफत का नया पैजामा माँग लाई है और बिहुला सास्थाओं के यहाँ से साहबी टोपा और कोट माँग लाई है।

"ए मैम! इसार आता हाए। बोलो क्या होता हाए!"

'हुजूर! बोड़ा सिर दुखता है, बोड़ा आँख भी दुखता है, बोड़ा काम भी दरद करता है और कलेजा भी धुकधुक करता है। सर्दी भी होता है गर्मी भी लगता है। भूख नहीं लगता है और जब भूख लगता है तो खाना नहीं मिलता है।" 'रोपी बनी है बालूकटोले की सुरती। खूब बात बोलती है हा हे हे हे हे!

"अरे बाप रे बाप! ऐसा बेमारि तो कभी नाही देखा। तुम्हारा मैडम देखे। (देखकर) ऊँहू! तुम नेही बचेगा। तुमारा बेमारी को कीड़ा हो गया। 'अक-वैक लगेगा।"

दूसरी रोगिणी आती है—कुमीटोले की तरावली।

"ऐ औरत! तुमको क्या हुआ?"

'हमरा दिल धकधक करता है।"

"अरे बाप! यहाँ तो सबों का दिल धकधक करता हाए। अमारा भी दिल धकधक करने लगा!"

डॉक्टर और रोहिणी दोनों डरते हुए एक दूसरे को बाँहों में पकड़ लेती हैं—दिल धकधक दिल धकधक!

'औरतों की मंडली हँसते-हँसते लोटपोट हो जाती है। मुखियों की खाँसी बजर जाती है। हो हो हो हों हों, बकलों! 'खूब किया!

सबों को 'घाट-अट्रिक्शन' देखने का एकदम हक नहीं है। यदि यह मालूम हो गया कि किसी ने छिपकर भी देखा है तो दूसरे ही दिन पंचायत में बड़ी बावेली बात! 'जिसको भूँड़ नहीं उगी है, वह देख सकता है।

अन्त में औरतें मिलकर हल जोतती हैं। हल और बैल किसी का ले आती हैं और जोतते समय गाँव के बड़े-बूढ़े किसानों को गाली देती हैं—"अरे खिलाय लहसीकन्दरवा! जल्दी पानी का रे! पियास से मर रहे हैं रे!"

"अरे! खिचवा खिरैहिया रे! पानी लाओ रे!"

"अरे रमबीलोना रे! 'पानी का रे!"

'इस गाली को कोई बुरा नहीं मानते। बल्कि किसी बड़े किसान का नाम

एट जाव तो उसे तकलीफ होती है। बहुत दुख होता है।
इस बार डाक्टर को भी गाली दी जाती है—'अरे डक्टरवा रे! अरे
बरसन्तो रे, बस्ती से बोतल में पानी भेके जा रे! "
हो हो हा हा
आसमान में काले बादल घुमड़ रहे हैं। बिजली भी चमक रही है।

अड़तीस

वा दिन से बरसी छाई हुई है। आसमान कभी साफ नहीं होता। दो-तीन घंटों के
लिए बरसा रुकी बूंदा-बांदी हुई फिर फुहिया। एक छाटा-सा सफेद बादल का
टुकड़ा भी यदि नीचे की ओर आ गया तो हरहराकर बरसा होने लगती है। आसाढ़
के बादल !

रात में मेंढकों की टरटराहट के साथ असंख्य कीट-पतंगों की आवाज घुम्म
म एक मद्धिम रागिनी बजा रही है—टर्र! मेंक टर्रर मेंक! सि सि
वि फिर फिर सि किटिर-किटिर! सि टर्र !

कोठरिन सठमी बासिन को नींद नहीं आ रही है चित्त बड़ा चंचल है।
रह-रहकर ऐसा लगता है कि उसके शरीर पर कोई पतंगा घुरघुरा रहा है। वह
रह रहकर उठती है, बिछावन झाड़ती है कपड़े झाड़ती है। अंधियारी सरसर
हट । वह लालटेन की रोशनी तेज कर बीजक लेकर बैठ जाती है—

आना नहिं चूका नहिं
समझि विचार नहीं कोय !
अंधे को अंधा मिला
राह बतावे कोय ?

कौन राह बतावे ? नहीं उसने वासदेवजी को जाना है, अच्छी तरह पहचाना
है। महंथ सेवादासजी कहते थे—'सठमी ! वासदेव साधु पुरुष है।
लेकिन वासदेवजी तो इतने लाजुक हैं कि कभी एकान्त में बात करना चाहो तो
परपर कांपने लगें, चेहरा लाल हो जाये। लाज से या डर से ?
लेकिन बिरहवाण से घायल सठमी का मन सिसक-सिसक कर रह जाता है।

बिरह बाण जिहि लागिया
औषध लवै न ताहि।

सुसकि सुसकि मरिमरि जिये
उठे करहि करहि !

किन्तु बाबदेवजी को क्या पता ! लक्ष्मी क्या करे ?

टर्र-र-मैंक मेक ही ई टिक टिक—सी रि !

नहीं। लक्ष्मी अब नहीं सह सकेगी। वह बाबदेवजी के पास जायेगी। मसहरी नहीं है बाबदेवजी को ! मच्छर काटता होगा। नहीं। वह नहीं जायेगी। वह क्यों जायेगी ?

पानी प्यावत क्या फिरो
घर घर सागर बारि,
तृषावन्त जो होयगा
पीवेगा झख मारि !

रामदास—महंथ रामदास अब लक्ष्मी से बहुत कम बोलते हैं। वे नाम के महंथ हैं। वे कुछ नहीं जानते कुछ नहीं समझते। उन्हें कुछ भी नहीं मालूम। कितनी आमदनी और कितना खर्च होता है—उनको क्या पता ? बीस से ज्यादा तो गिनना नहीं जानते। कौड़ी का हिसाब जानते हैं। रामदासजी समझ गए हैं कि यदि लक्ष्मी मठ को एक दिन के लिए भी छोड़ दे तो रामदास के लिए यहाँ टिका रहना मुश्किल होगा। लक्ष्मी आदू-मलंग जानती है। क्या कामत-पलटन, क्या खेती-बारी और क्या हाकिम-महाजन सभी में वह अव्वल है। महंथ रामदासजी समझ गए हैं कि यदि इज्जत के साथ बैठकर हुक्का-मलाई भोग करना हो तो लक्ष्मी को जरा भी अप्रसन्न नहीं किया जाये। तन का ताप मन को चंचल तो करता है लेकिन क्या किया जाये ! यदि एक बालिश रखने का हुक्म लक्ष्मी दे दे तो !

बड़बड़ाम बड़बड़ आसन घूमड़ा। बिजली चमकी और हड़हड़ाकर बरसा होने लगी।

हो अब दल के बनरोपनी शुरू होगी। जै इन्दर महाराज बरसो, बरसो ! 'लकिन बीचड़' के लिए धान कहाँ से मिलेगा ? आज तो पंचायत में सभी बड़े मालिक लोग बड़ी-बड़ी बात बोलते थे कल ही देखना कैसी बात करते हैं अपने खर्चा के जोग ही धान नहीं है, 'बीहन नहीं है अथवा 'पहले हमको बोने दो'।

बड़बड़ाम मुहूम !

---

१ बीहन धान धान का छोटा पौधा।

"बीहन का धान मालिकों को देना होगा। हमेशा देते आये हैं, इस बार क्यों नहीं देंगे? कालीचरण आफिस में सोये अधसोये और लेटे लोगों से कहता है 'और बार दूना लेते थे बीहन का दूना उस बार सो सब नहीं चलेगा। यदि तहसीलदार मामा ने ऐसा प्रबन्ध नहीं किया तो फिर संघर्ष।"

बिजली चमकती है। बादल झूम-झूमकर बरस रहे हैं।

मंगला अब कालीचरन के आँगन में रहती है। कालीचरन की माँ अन्धी है। कालीचरन की एक बेवा अधेड़ फूफू है। मंगला की मीठी बोली सुनकर कालीचरन की माँ की आँखें सजल हो उठती हैं और फूफू की आँखें लाल! जब-जब बिजली चमकती है, पछरिया घर के ओसारे पर सोई फूफू पुजरिया घर की ओर देखती है। आदमी की छाया? नहीं। बाँस है। पुजरिया घर में कोई मंगला भी नयी है। बादलों के परजने और बिजली के चमकने से उसे बड़ा डर लगता है। बचपन से ही वह बादल बिजली और आँधी से डरती है। और यहाँ की बरसा तो। फिर, बिजली चमकी। ? 'कौन!" मंगला फुसफुसाकर पूछती है, "कौन?"

भीगे हुए पैरों के छाप बिजली की चमक में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

सोनाई बादव अपनी झोंपड़ी में बारहमासा की तान छेड़ देता है

एहि प्रीति कारन सेउ बाँचल
सिया उदेस सिरी राम हे।
सावन हे सखी सबद सुहावन
रिमिझिमि बरसत मेघ हे।

रिमिझिमि बरसत मेघ! कमली को डॉक्टर की याद आ रही है। कहीं खिड़कियाँ खुली न हों। खिड़की के पास ही डॉक्टर सोता है। बिछावन भीग गया होगा। कल से बुखार है। सर्दी लग गई है। न जाने डॉक्टर को क्या हो गया है? कहीं मौसी सचमुच में डायन तो नहीं? डॉक्टर को बादल बड़े अच्छे लगते हैं। कल कह रहा था—'मैं बर्षा में दौड़-दौड़कर नहाना चाहता हूँ।

उररर! उररर! बादल मानो धरती पर उतरकर दौड़ रहे हैं। झहर झहर उररर!

बिरसा मौसी अब सेवा नहीं रह सकता। परसों गाँव वालों ने मिटिन किया है—बाहरी आदमी यदि चढ़ाई करे तो सब मिलकर मुकाबला करेंगे। कालीचरन भी था और बासदेव भी! संथाल बाहरी लोग हैं।

तहसीलदार हरबोरी का सिपाही आज जमीन सब दख रहा था—अमला

अई धान पक गया है। कटैनी क्या ? किस बात में कौन बात बालम ? तो क्या सचमुच मैं संथालों की जमीन छुड़ा लेंगे तहसीलदार ? जमींदारी पर्दा खतम हुई, लेकिन तहसीलदार जमीन से बेदखल कर रहा है। बात समझ में नहीं आ रही है। क्या होगा ? कल ही देखना है। जमीन पर हल लेकर जावेगा तहसीलदार, अई धान काटने जावेगा तब देखा जावेगा। पहले से क्या सोच फिकर ? वह अब बैठा नहीं रह सकता। खेटे-ही-खेटे मादल पर वह हाथ फेरता है—रिं रिं ता त्रिम ता।

धुकधुदुम धुदम धुदुम !
बिजलियाँ चमकती हैं !

धान कीचड़ मिलेगा या नहीं ? बालदेवजी को मच्छर क्यों नहीं काटता ? कालीचरन की फटी मोटी क्यों नहीं और डॉक्टर की खिड़की बन्द है या खुली इसका जवाब तो कल मिलेगा। अभी जो यह सोनाय बादर बारहमासा अलाप रहा है, इसको क्या कहा जाये ? गाँव घर में गाने की चीज नहीं बारहमासा। अजीब है यह सोनाय भी। कुमर बिजैभान या लोरिक नहीं बारहमासा ! खेत में रोपनी करते समय गाने वाला गीत बारहमासा ! धान के खेतों में गाँवों की छप-छप आवाज के साथ यह गीत इतना मनोहर लगता है कि आदमी सब-कुछ भूल जाये। यह सँवाऊ टैक्सी में मादर क्यों बजा रहा है बेचारा और अब यह सोनाय बारहमासा ! गा ही रहा है तो चार कड़ी सुनने दो बाबा ! बेताल का ताल बजा रहे हो ! बरसा की छपछपाहट और बादलों की घुमड़न में मादर की आवाज स्पष्ट नहीं सुनाई पड़ती है यही सच है। हाँ ! सोनाय ने अब अमर बारहमासा शुरू किया है—

अरे फागुन माह रे सबका मोरा होइत
कि पहिरू बसन्ती रंग हे
बाट जनैत-आ कैथिया सँभारि आनू
अँचरा हे पवन झरे हे ए ए ए !

डॉक्टर अब गाँव की भाषा समझता ही नहीं बोलता भी है। ग्राम्य गीतों को सुनकर वह फेम हिप्नो मिथना भी भूल जाता है। गीतों का अर्थ शायद वह ज्यादा समझता है। सोनाय से भी ज्यादा ? अँचरा हे पवन झरे हे ! आँचल उड़ि-उड़ि जाय !

गाँव के और लोग कहेंगे कि रात में रह-रहकर क्यों हँसती थी। आधा बच्चा जग फिर डर-डर ! लेकिन डॉक्टर कहेगा सारी रात बरसा होती रही कभी दूर कभी पास। बिछावन बड़े के तले 'कारबट टीन' के ऊपर बजते घर पर

जो बूँदें पड़ती थी। कोठी के बाग में झरझराहट कभी बन्द नहीं हुई।

तो सुबह हो गई। 'सोमारू अब खेत में बीज बो रहा है। सोमारू अकेला नहीं है सकड़ों कण्ठों में एक-एक विरहिन मैथिला बैठी हुई कूक रही है—

आम के कटहल तूत के बड़हल
सेबुआ अधिक सुरेब।
मास असाढ़ हो रमा। पंथ बनि चहिह,
दूर ही से बरजत मेघ रे मेघे।

बाग में आम-कटहल तूत और बड़हल के बलावा कातनी नीबू की डाली भी झुकी हुई है और दूर से मेघ भी गरजकर कह रहा है—आ पंथी! अभी राह मत चलना। 'लोग दूर के साथी को अपने पास बुलाते हैं, विरह में तड़पते हैं, मेघों के द्वारा सन्देश भेजते हैं और घर आया हुआ परदेसी बाहर लौट जाना चाहता है? नहीं नहीं! 'बिजली की हर चमक पर मैं चौंक-चौंककर रह जाऊँगी। बादल जब गरजते हैं तो कलेजे की धड़कन बढ़ जाती है।

घरे मास आ सा ढ है! गरजे घन
बिजुरी-ई चमके सखि हे ए ए!
मोहे लगी कंथा आवे पर-देसा आ आ
कि उमड़ू कमला माई है!
हे रे! हे रे!

कमला में बाढ़ आ जाये तो कंत घर आयें। इसलिए कमला नदी को उमड़ने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। 'जिनके कंत परदेस से लौट आए हैं उनकी खुशी का क्या पूछना! अल्हड़ रागिनी उन्हीं सौभाग्यवतियों के हृदय के मिलनोल्लास से झूम रही है खेतों में!

मास असाढ़ झड़क बरसाती
घर-घर सखी सब झूलनी झमाती
झूली आवे
झूली आवति मैथलानी
सावन सखि अछि हे मास असाढ़ी
देखो देखो!
देखो-देखो सखि री वृजबाला
कहाँ गये अवधेशकुमार, नन्दलाला
देखो, देखो!

पर का कंत कहीं गाँव में ही रहा न भूल जाये! 'देखो, देखो कहाँ गये?

किसी की मुसली पर झूल तो नहीं रहे ?

"चाय !"

"कौन ? कमला !" डॉक्टर अकबका जाता है।

"हाँ चमकते हो क्यों ? तुमको भी भूत का डर लगता है ! यह मीठी दवा नहीं मीठी चाय है डॉक्टर साहब ! अब चाय पीकर ही जाना है तो आँख मलते ही यह चाय की प्याली सामने रखने की जरूरत है।" कमला पास की कुर्सी पर बैठकर चाय बनाती है। प्यार अदा-अदा मुस्करा रहा है। प्यार को इतना नम्र बहुत कम बार देखा गया है। अब समझें ! यह प्यार नहीं कि हर बात में नहीं कर टाल दिया। चाय बनावें ? तो नहीं। जरदा बनावें ? तो नहीं। खाना परसें ? तो नहीं। अब समझें !

उनतालीस

संथाल लोग यहाँ के नहीं बाहरी आदमी हैं ?

" जरा विचारकर देखो। यही तंत्रिमा का परगना है अच्छा तुम्हीं बताओ जरूर तुम लोग कौन सतमा हो ? मपहिया हो न ? अच्छा कहो तुम्हारे दादा ही पश्चिम से आये और तुम्हारी बेटी तिरहुतिया तंत्रिमा के यहाँ ब्याही गई है। मपहिया चाल-चलन भूल गए, अब तिरहुतिया और मगहिया एक हो गए हो। लेकिन संथालों में भी कुमार हैं, माँझी हैं ! ये लोग अपने को यहाँ के कुमार और माँझी में कभी खपा सके ? नहीं। ये तो हमेशा हम लोगों को ही लोग कहते हैं। गाँव से बाहर रहते हैं। कहो तो भाई किसी संथाल को विदेसिया का गाना या एक कड़ी बैठी ! कभी नहीं पावेगा। इस का बाल हरपित्त नहीं दिखेगा। अब दिखेगा तो 'पैंचाय' ही। समझो ! सोचो !" तहसीलदार साहब दरवाजे पर बैठे हुए बीहन लेने वालों से कहते हैं। "ठेर सी से खमाता लोग हैं। कालीचरन भी भी हैं, वासुदेवजी और बालदेवजी भी हैं।

तहसीलदार साहेब एकदम ठीक कह रहे हैं। नहीं भाई जो भी कहो, तहसीलदार साहेब ही एक आदमी हैं जो कि गाँव की भलाई-बुराई की बात समझते हैं। ठीक कहते हैं तहसीलदार साहेब। एकदम ये 'खालक लोग' हुकुम दे दिये हैं, "कोई बात नहीं। इस बार तुम लोगों को सन्देह क्यों हुआ ? अधियादार लोग तो बीहन के आधिक हकदार हैं। और जो लोग मेरे अधिया नहीं हैं उन्हीं से पूछो

कि किसी साल हमने लौटाया है किसी को ? तब बात यह है कि पिछले साल पैसी उपज हुई थी सो तो देना ही हुआ है। सिर पर पेंडौलाधी[1] कानून का देना अभी बाकी है। बहुत कोशिश-पैरवी करके किसी तरह एक सौ मन करवाया है। हरपौती बाबू का किरपा से तो पाँच सौ मन कम कर दिया था। इससे शायद दारोगा साहेब ने पूछा और इन्होंने बता दिया कि पाँच हजार मन धान होता है। यह तो बाबा कांग्रेस के सिकरेटरी ने कितनी कोशिश करके इसको एक सौ मन बनाया है।"

"अब हरपौती बाबू से पूछ रहे थे कि कहिए बाबू हरपौतीजी ! यदि पाँच सौ मन धान अभी दे देते तो पाँच बालों को बीहन और खर्चा कहाँ से मिलता ? सहसीलदार होने से ही नहीं होता है ।"

ठीक बात ! ठीक बात ! बाबिद कहते हैं सहसीलदार साहेब।

कालीचरन के मन में बहुत से सवाल आते हैं पर वह नहीं पूछेगा। उस दिन सिकरेटरी साहेब ने साफ कह दिया कि 'कौमरेड अभी संघर्ष मत छेड़ो। सबसे पहले अभी अभी किसी एक इलाके में एक एरिया लेकर इसको इसपारीमेन्ट[2] करेंगे तब इसके बाद और इलाके में इसके लिए हुकुम देंगे। सो भी संघर्ष से एक महीना पहले दरखास्त लेना होगा लोगों से, फिर इनकुआएरी फिर ऐंकटूली मिटिंग तब जाकर राय लिखेंगी कि संघर्ष करना चाहिए कि नहीं। मेल-माफत और पंचायत से अभी जो काम चले चलाइए। कुछ दिनों के बाद तो पार्टी एकदम बाबा बोल देगी।'

"हाँ सहसीलदार साहेब ठीक कहते हैं।" कालीचरन भी कहता है। बालदेवजी भी कहते हैं। बौनदास कहाँ है ? पुर्णिया से लौटकर नहीं आया है ?

हरपौती बाबू भी अच्छी तरह समझ गए हैं कि काली टोपी वाले नौजवानों की लाठियों से ज्यादा खतरनाक हथियार है—कानूनी नुस्ख ! सहसीलदार विश्वनाथप्रसाद इसके माहिर हैं। उनसे अभी बैर मोल लेना ठीक नहीं।

सिवजी को हरपौती की सहसीलदारी पर पूरा भरोसा था काली टोपी वाले संथीलजी पर पूरा विश्वास था। लेकिन सहसीलदार विश्वनाथ ने तो कानून की ऐसी लकड़ी लगाई है कि भूमिहार भी मात ! राजपूत का बलकम-बर्छा उसके आगे क्या करेगा ? उम्र से कितना हँसमुख और कितना मीठबोलिया है सहसीलदार विश्वनाथ लेकिन पेट में बिलेती का चक्कर है। राज का नया सरकिल मैनेजर बाँयें वाले जेंघली दबाता है। ऐसा कानूनची आदमी ! कहा इसीलिए तड़ाक से दे दिया। कौमरेड का चीकर हो गया। हर

---

१ पैंदी लेवी कानून। २ एक्सपेरिमेंट।

है। इस से पार पाना मुश्किल है।

हरदीपी ने सिवजी के नाम संथाल्टोली की पचीस एकड़ जमीन बेनामी करवाई है जिसमें से दो एकड़ सिवजी को मिलेगी।

खेलावन ने भी पाँच बीघा संथाल्टोली की बन्दोबस्त की है।

बेचारा का अवर सुमरितलाल कोयरीटोले वालों से कहता है, 'यदि हरदीपी तहसीलदार ने तहसीलदार विसनाथप्रसाद के नाम दो सौ बीघे और मेरे नाम से पचास बीघे की लिखा-पढ़ी नहीं की तो फिर देख लेना! हाँ दारोगा है, खेल नहीं।"

सुमरितलाल बेचारा अब फिर तहसीलदार विसनाथप्रसाद के साथ है। अब तो जैसे हरदीपी तहसीलदार वैसे विसनाथ तहसीलदार। लेकिन घर्त यही है।

संथालों को सब मालूम है।

अभी बालदेवजी भावनदासजी और कालीचरणजी सब एक हो गए। संथाल लोग अच्छी तरह जानते हैं कोई साथ देने वाला नहीं। धरमपुर में देखा नहीं? ऐसा ही हुआ। इसीलिए बड़े-बूढ़े ठीक कह गए हैं—यहाँ के लोगों का विश्वास मत करना। जब जिससे जो फायदा हो ले लेना मगर किसी के साथ मत होना। संथाल सथाल है और दिक्कू दिक्कू[1]। पैंचाव देह को पत्थल की तरह मजबूत बनाता है और पीकर देखो यहाँ का दारू पत्थल को गला देता। इसलिए नहीं। दिक्कू आदमी, मछली का दारू, इसका विश्वास नहीं। अरे, तीर तो है! यही सबसे बड़ा साक्षी है। साक्षी साथ छोड़ सकता है, तीर कभी चूकता नहीं

चुनका मौजी क्या बोलता है? डॉक्टर ने क्या पूछने क्या था? पूछना चाहिए था कालीचरण से बालदेवजी से, तहसीलदार साहब से।

बालदेव और कालीचरण लोगों को बात समझा रहे हैं तहसीलदार से।

"डॉक्टर ने कहा कि तुम लोग ही जमीन के असल मालिक हो। कानून है, जिसने तीन साल तक जमीन को जोता-बोया है, जमीन उसी की होगी।"

"डॉक्टर ने कहा है?"

डॉक्टर ने? चौनियाँ मुसमुर हँसती है—हें हें हें हें! "डॉक्टर हम लोगों का साथ देखना चाहता है। रोज टोकता है। हें हें हें!"

अचानक कोयिया मौसी तीर के मूँठ पर पक्षियों के परों को बाँधते हुए कहता

---

१ संथाल लोग गैर-संथाल को दिक्कू कहते हैं।

है "डॉक्टर ने अरगोस का दाम दिया था दस रुपैया। बारह रुपैया दर्शन बुहा।

'दो सियार के बच्चों का दाम पचास रुपैया। ये सकता है कोई बड़ा आदमी इतना दाम सरकारी आदमी है मगर घुसखोर नहीं।

कालीचरन को एकान्त में कहती है मंगलादेवी। एकदम अलगम करके कहती है "काली तुम मत जाना। संथाल लोग नहीं मानेंगे जरूर तीर चलावेंगे। मैं जानती हूँ। तुम नहीं जानते काली बाबू ये लोग कैसे होते हैं। उनकी मूरखों भ्रम में डालने वाली है। देखने से पता चलेगा कि बहुत सीधे हैं मगर । तुम मत जाना काली तुम्हें मेरे सिर की कसम !"

ठीक ही तो है जो लोग सरपंचा मेम्बर हैं वे क्यों आयेंगे !

'वासुदेव सुनरा और सनिचर भी नहीं आयेगा !

'हाँ प्यारे भी नहीं आयेंगे।

'सोमा कट जावेगा ? 'आने दो वह मेम्बर नहीं है।

बालदेवजी तो ऐसी जगह आयेंगे ही नहीं। जहाँ हिंसा का भय है वे नहीं जा सकते। 'सहसीम्बार साहेब लीडर हुए हैं, पूर आवें या लठैतों को भेजें। हिंसा करें या अहिंसा करें। बालदेवजी तो सिर्फ जबलिया मेम्बर हैं। बावनदास यदि रहता तो अभी अकेले सबको मय सहसीम्बार बिसनाथ के कानून के मात कर देता। लेकिन उसका दिमाग खराब हो गया है। सात दिन हुए चिट्ठी लिखाने गया है, तो लौटा नहीं है। गांधीजी को चिट्ठी देना। गांधीजी को इतनी फुर्सत कहाँ है बाबा जो तुमको जवाब देंगे ? 'लेकिन नहीं बावन ने बहुत बार चिट्ठी लिखवाई है और हर बार जवाब आया है—'भाई बावनदास जी आपका खत मिला। इस बार सतीजी सबको पढ़कर सुना रहे थे—महात्माजी ने बावनदास को परनाम लिखा है। 'बावनदास को महात्मा भी 'भगवान्' कहते थे। 'बावन जरूर अवतारी आदमी है। वह ठीक कहता था —भारतमाता और भी आर-बेजार रो रही है !

"भैया रे भैया ! बाबा हो बाबा ! "

कौन रोती है ? 'रामपियारिया रोती है, उसके भाई मलारी को तीर लग गया ? कहाँ लगा। किसने मारा ? 'संथालों ने ? कहाँ ? लोग आये क्यों जा रहे हैं ?

बाँध में कुत्ते भूँक रहे हैं। कौए काँव-काँव कर रहे हैं। 'जोतखी बाबा ठीक कहते थे—बाँध में भीख-काव लड़ेगा।

"हँसिया ! बलवा ! लाठी निकाल रे !"

"कहाँ हँसिया ?"

"माला निकालो रे !"

"कहाँ हँसिरी ? कैसा बलवा ? क्या बात है ?

"संथाल लोग तहसीलदार बिस्नाथपरसाद के चालीस बीघा बाले बीहन के खेत में बीहन लूट रहे हैं ।"

"नई बन्दोबस्ती वाली जमीन में ?"

"नहीं भाई अपनी खास जमीन में कोठी के पास वाली जमीन में काठी निकालो ।

"बलोरी ने हल्का चिड़ा तीर छोड़ दिया । बाँध में रुपा है तीर । मछू की नदी बह रही है । बेहाल है । इसपिताल में डॉक्टर लाया गया है । संथाल लोग बेखौफ बात का बीचड़ उपाड़ रहे हैं ।"

चलो ! चलो ! मारो ! साला संथाल ! बाहरी आदमी ! जान आदे तो जाये । तहसीलदार बिस्नाथपरसाद की ही जमीन पर बाबा किया है ? चलो रे ।

भौं भौं भूं ऊँ ऊँ ! कुत्ते परेशान हैं भूँकते भूँकते ।

रिंग रिंग रिंग रिंग !

डा डा डा डा डा डा

संथालों के हिंग्वा और मादक एक स्वर में बोल उठे—रिंग रिंग रिंग रिंग रिंग ! डा डा डा डा !

माझ रिंग रिंग डा घिन डा अपवा डा डिम्बा डा डिम्बा नहीं सिर्फ रिंग रिंग रिंग रिंग डा डा डा डा ! यह खेत में बजा रहा है संथालिनों को सचेत कर रहा है, तुम लोग भी तैयार रहो डा डा डा डा ! संथालिनें जवाब देतीं—रिं रिं रिं रिं ! अर्थात् तैयार हैं बूढ़े से फल खाने में कम कितनी देर लगे ! तैयार हैं !

"जै काली माई की जै !" दो सौ गलों की आवाज सुनकर कालीथान के बड़पाकड़ पर बैठे हुए कौए एक ही साथ काँव-काँव कर उड़ते हैं । कुत्ते और भी जोर से भूँकने लगते हैं ।

"जै ! काली माई की जै !"

"महात्मा गांधी की जै !

"इनकिलाब जिन्दाबाद !"

"भारतमाता की जै !

"सोशलिस्ट पाटी जिन्दाबाद !

"संग हिन्दू एक का !"

"हिन्दू राज की जै !"

"तहसीलदार बिलासपरसाद की जै !"

"बालदेवजी की जै !"

चेर को चारों ओर से ! भागने न पावें ! हो हो हो हो हो !

अब मारा नहीं । छिछे हो हो हो हो !

"चेर । चेर । मारो । हो हो हो !"

"तीर चला रहा है । छेट जाओ । तीर चलाओ !

"मारो ! पुलेटा चलाओ ।"

"बिरसा मांझी भागा जा रहा है, मारो भाला !

'बिरसा पानी में गिर पड़ा—डूब ! भाला लग गया ।

'मुखानू को क्या हुआ । तीर लग गया कलेजे में ?

संथालिनें भी तीर चलाती हैं ?

बच्चे भी ?

"बिरसा मांझी गिर पड़ल रे !" हा हा हा हा हा !

'रि रि रि रि ! "गिरने दो । तुम भी गिरो ?!"

बैठ के तीर चला मोलिया !

"मुखी मुरमू गिरल रे !" हा हा हा हा !

"गिरने दो ! तुम भी गिरो !" रि रि !

"जपारी बेटा ठीक निशाना लगा बेटा । हरमोरी तहसीलदार के कलेजे पर ! हाँ ! वाह बेटा !"

'हा हा हा हा !" 'हरमोरी तहसीलदार गिरल रे !"

"गिरने दो! रि रि रि रि !

'तहसीलदार ? हरमोरी तहसीलदार गिर पड़ा ? 'मारो मत । ऐ ! सुनो ! तुम लोगों को अपना माँ-बहन की कसम गुरु-देवता की कसम काली किरिया ! जो भागे वह दोषला ! संथालों के तीर खतम हो रहे हैं । अब चेर के मारो । मैपलशाह को सँभालो । चलो ! ई काली माई की जै !

"मारो भाला ! अरे बच्चा नहीं है इसी ने तहसीलदार को मारा है ।

"वाह बहादुर ! ठीक है । 'अब सभालो पुलेटा उस बूढ़े को साला हिम्मत बता रहा है !"

"भाग रहा है । साले सब भाग रहे हैं । चेरो ! भागने न पावें ! संथालिनें पाट के खेत में छिपी हुई हैं । घर लो ।

'एकदम 'छिपी' ! आजादी है, जो भी में आवे करो ! पूरी आजाद

बच्ची को मिले। आजादी है। पाट का खेत है। कोई परवाह नहीं है। चाहे हो या काला पानी, छोड़ो मत।

संथालिनें भी रोती हैं, दर्द से छटपटाती हैं? चिल्ला-चिल्लाकर रोती है या पानी है?

दुहरथम मचा हुआ है पाट के खेतों में कोठी के कंपाउंड में। कहाँ दो सौ आदमी और कहाँ दो दर्जन संथाल और दर्जन संथालिनें! सब ठंडा। सब ठंडा?

संथालटोली के चार आदमी ठंडे हुए, सात घायल हुए और एक लड़के की हालत खराब है। संथालिनें पुहरे दर्द से कराह रही हैं।

तहसीलदार की हँसिली में दस ठंडे हुए, बारह बुरी तरह जख्मी हुए और तीस आदमी को मामूली चोट लगा है।

संथालटोली को लूट लिया गया। तहसीलदार हरमौरी की हालत बहुत खराब है, शायद नहीं बचेंगे।

चालीस

जोतखी चीक कहते थे—माघ में चौक-काग उड़ेंगे और पुलिस दरोगा बस्ती में घुसेगा।

पुलिस-दरोगा हथियार और मजिस्ट्री चार हवागाड़ी में भरकर आए हैं। दुहाई माँ काली!

इसपी कलक्टर, हाकिम अभी आने वाला है।

लहास! लहास! बाप रे—कौन कहता था कि अंगरेज बहादुर का अब राज नहीं रहेगा?

"तहसीलदार हरमौरी भी मर गए? ऐं! कोई घर से मत निकलो। पाखाना पेसाब सब घर के ही अन्दर करो। घर से निकले कि गिरिफ्त कर लेगा। दुहाई काली माई!"

"बलदेवजी को दारोगा साहेब ने बुलाया है? कलिया काशीचरण जो को भी? देखें ये दोनों तो किसी से डरने वाला नहीं है, क्या होता है? वो सीधर तो है।"

'भो! आप ही यहाँ के सीधर हैं?" दारोगा साहब बाबूजेवजी से पूछते

है। इसपिताल के बरामदे पर में दारोगा साहब कचहरी लगाकर बैठे हैं मजिस्ट्री ने संथालों को सिरिफ्क कर दिया है। जखमी पावक और बूढ़े-बच्चों को भी।

सबको गिरफ्तार किया है? नहीं जखमी लोगों की मरहम-पट्टी तो कल ही डॉक्टर साहब ने कर दी है। दो संथाल और चौदह पैर-संथाल बालकों को पुर्णिया के बड़ इसपिताल भेजा गया है। सबों को सहाय भी बढ़ी गई है। सिवजी सिवशंकरसिंह और हरेक टोला से दो-चार आदमी सहाय के साथ गये हैं। न जाने कब सहाय मिले? उँह चीर-फाड़कर मिलेगी! हे भगवान्!

बालदेवजी क्या जवाब दें? लीडर हैं। किसके लीडर? संथालों के या पैर-संथाल के? खखारकर गले को साफ करते हुए बालदेवजी के मुँह से वही पुराना जवाब निकलता है जो उसने हरलोटी को दिया था जिस दिन बलिया पमला गया था।

"नहीं हुजूर! हम तो मूरख और गरीब ठहरे। मूरख आदमी चाहे गरीब आदमी कभी लीडर हुआ है हुजूर?"

दारोगा साहब बालदेवजी को पास की कुर्सी पर बैठने को कहते हैं, "अरे हम आपका जानते हैं बालदेवजी बैठिए?

बालदेव और सुन्दर एक दूसरे का मुँह देखता है। कालीचरणजी को कुछ पूछा भी नहीं? क्या तहकीकदार साहब सेंमाल लेते हैं।

"दारोगा साहब यही हैं कालीचरण बाबू यहाँ के सोसलिस्टों के लीडर! बहादुर हैं! लेकिन सिर्फ बहादुर ही नहीं सयज भी हैं!"

"ओ हो! कालीचरणजी हैं? आइए साहब आप लोग तो साहब क्या कहते हैं आ न करवाए।" दारोगा साहब मुँह में पान-जर्दा डालते हुए कहते हैं, "लेकिन यहाँ तो सुना कि आप लोगों ने बड़े विमान से काम लिया है। हमको तो सुबह आने ही सारी बातों का पता चल गया। साउथ करने के कारिंद! वाह! बैठिए।"

कालीचरण बैठते हुए कहता "देखिए दारोगा साहब यदि आपस की पंचायत से सारी बातों का फैसला हो जाये तो हम लोगों को पावक कुत्ते ने नहीं काटा है जो "

"आपस की पंचायत से? यह सूनी केस ?" दारोगा साहब का पान भरा मुँह एकदम बोल हो जाता है।

"नहीं यह नहीं यही आधी बटवारी का सवाल!"

"ओ!" दारोगा साहब ने पीक की कुल्ली फेंकते हुए कहा "ओ! तो ठीक है! अरे भाई ही है सोशलिस्ट पार्टी वाले हैं। कहिए तो, या काम पंचायत

न या चार आदमी का गाय में कटी हाथ यह क्या कहते हैं, तुक-कनून से हो सकता है ?

"हिंसा के रास्ते पर ना हरगिज माना ही नहीं चाहिए," बालदेवजी बहुत गम्भीर होकर कहते हैं।

"क्या कहते हैं !" दारोगा साहब बालदेवजी की बात में टीप का काम लगा देते हैं, "क्या कहन है ! दारोगा साहब बात करते समय हाथ खूब चमकाते हैं और कभी भी मारते हैं।

बालदेव और सुनहरा एक दूसरे को देखते हैं—बालदेवजी जानते ही क्या हैं जो बोलेंगे। देखा कालीचरणजी ने कैसा झगड़ाकर जवाब दे दिया !

"हिंसा अहिंसा का सवाल नहीं है बालदेवजी असल है बुद्धि ! यहीं पर हमारी पार्टी के कोई और कॉमरेड रहते तो हो सकता है, दूसरी बात होती। बुद्धि की बात है। कालीचरण बालदेवजी को जवाब देता है।

कालीचरण और बालदेवजी ने दारोगाजी को दिखला दिया कि बुद्धि है ! उधर देखकर मत मूझिए दारोगा साहब अब यह बात नहीं है।

"अच्छा तो बालदेव बाबू अब यह मकदमा हुआ तो क्या कहते हैं, आप क्या ब ? दारोगा साहब पूछते हैं।

बालदेवजी फिर झखारते हैं—ह ह जी ! हुजूर ! हम तो मठ पर ब। जी बात यह है कि हम वैष्णव हैं। उस दिन हमको मुकदमी कंठी देन बाब बे। सुबह तो बात दिखाने में ही कट गई। पिछले पहर को हम जैसे ही कंठी लेकर उठे कि खतमाटाली की रमनियरिया रानी हुई गई।"

"यो ! आपका पहले से कुछ पता नहीं था ?" दारोगा साहब गंभीर होकर पूछते हैं।

"जी ! इनको क्या किसी का पता नहीं। खेलावनसिंह यादव हिम्मत से काम लेते हैं। आखिर, दारोगा साहब के लिए इतना खाने का इन्तजाम भी तो यही कर रहे हैं। यह दारोगा साहब से क्या यही बोलेंगे ? सहमीलदार साहब कुछ नहीं बोलते हैं।

"यो ! खेलावनजी ! आइए, बैठिए !"

"ठीक है। हम यहीं हैं। अब हुजूर अपनी दिशा जाये ! उधर इन्तजाम हो जायेगा।" खेलावन जी कहते हैं।

सिर्फ यहीं के बोलों और ही बुद्धि आते नहीं। और लोग भी बुद्धि रखते हैं।

"हुजूर ! हमारा लड़का अभी रहता तो हुजूर से अभी अंग्रेजी में बतिया

लेता। रमैन जैसी एक किताब है आस, मोटी उसी में देख कर यह आप से अंग्रेजी में बतिया लेता।" खेलावनसिंह यादव कहते हैं।

"अच्छा ? आपका लड़का अंग्रेजी बोल लेता है ?

"हाँ डागडर बाबू से बराबर अंग्रेजी में ही बोल लेता है।

"मोकदमा का राय भी पढ़ लेता है," बालदेव जी कहते हैं।

"एक किलास में पढ़ता है," कालीचरणजी कहते हैं।

"अच्छा आप कहाँ तक पढ़े हैं कालीचरण जी ? कोई स्कूल में नहीं ? वाह साहब क्या कहते हैं, आपकी बोली सुनकर तो कोई नहीं कह सकता कि आप जाहिल अो ! पढ़-लिख लेते हैं, अखबार भी पढ़ लेते हैं ? वाह ! रमैन भी पढ़ते हैं ? महाभारत भी ? अो क्या कहते हैं कि ।"

"बालदेव भी 'अकबार' पढ़ता है," खेलावनसिंह यादव कहते हैं "अकबार तो हम लोग भी पढ़ लेते हैं। लेकिन बहुत झूठ बात लिखता है अकबार में। उस बार लिखा था कि एक औरत को सो कुछ दिनों के बाद मर्द हो गई। कहिए भला !"

"अच्छा तो कालीचरण जी आप कहाँ थे जब यह मकदमा हुआ ?" दारोगा साहब कमर के बेल्ट को खोलते हुए कहते हैं।

अगमू चौकीदार को डर होता है, कहीं दारोगाजी पेटी खोलकर मारना न शुरू कर दें बालदेव और कालीचरणजी को। जहाँ दारोगाजी पेटी खोलते हैं कि अगमू का चेहरा फक हो जाता है। नहीं ऐसा नहीं कर सकते हैं दारोगाजी।

"जी मैं तो उसी दिन सुबह को धान बिलाकर, ठीक बारह बजे दिन में ही पुरैनियाँ चला गया था। सहसीखवार-हरजी सहसीखवार बिसनाथचरनलाल जी जानते हैं।"

"अो ! आप पुरैनियाँ गये थे। दारोगा साहब एक लम्बी साँस छोड़ते हैं।

"अच्छा तो अब उस पहर को काम कीजिएगा दारोगा साहब !" सहसीखवार साहब कहते।

"नहीं सहसीखवार साहब ! एस० पी० आने वाले हैं। हमको अभी सब काम खतम कर रखना है। पचाहो का इजहार ।"

"जो कुछ असल पचाही दो-तीन लीजिए। और सब बाद में। अरे काली बाबू बालदेव बाबू तुम लोग तो जो सच्ची बात है, वही कहोगे। कोई झूठी पचाही तो नहीं। लिख लीजिए इन दोनों के बयान दस्तखत करना दोनों जानते हैं।

"आप लोगों का क्या ख्याल है ? दारोगा साहब धीरे से पूछते हैं।

'हाँ दसखत करना भी क्या है ? कालीचरण कहता है।

'कालीचरणजी हाथ जोड़कर दस्तखत करते हैं और बालदेवजी बड़े 'प रे म' से आस्ते-आस्ते लिखते हैं। 'माई बालदेवजी सचमुच में साधु हैं।

"बलदेव ?" दारोगा साहब कहते हैं, "बालदेवजी बरा 'ब' में एक लाठी लगा दीजिए और 'ल' के ऊपर, क्या कहते हैं एकबलदार-सी। 'और बाकलम खुद !

"दारोगा साहब बालदेवजी नाम में भी लाठी-डण्डा नहीं लगाते हैं। हिसाबाद ।" कालीचरण मुस्कराकर खड़ा हो जाता है।

दारोगा साहब ठठाकर हँस पड़ते हैं। इसके बाद सभी लोग हँस पड़ते हैं।

अकस्मात बवाल किया कालीचरणजी ने। 'दारोगा साहब पानी-पानी हो गए।

'देखो ! बुद्धि है या नहीं ?

इकतालीस

नौ आसामी का चालान कर दिया।

नौ संथालों के अलावा जो लोग घायल होकर हसपिताल में पड़े हैं वे लोग भी विरिफ्ट हैं। पुर्णियाँ हसपिताल में बन्दूक वाले मजेस्टरी का पहरा है।

बैर-संथालों में कोई विरिफ्ट नहीं हुआ। लेकिन यह मत समझो कि मुफ्त में यह काम हुआ है। 'दारोगा साहब कहने लगे कि खेलावनजी आपके बारे में एस० पी० साहब को सन्देह हो गया है कि आपने सभी यादवों को हँसिली में जाने के लिए जाकर हुक्म दिया होगा। 'खेलावनजी की हालत खराब हो गई। यह तो तहसीलदार भाई थे तो पाँच हजार पर बात टूट गई। नहीं तो 'नहीं तो अभी बड़े घर की हवा खाते रहते खेलावनजी। सिंघजी पर में नहीं थे सिवशंकरसिंह भी नहीं। अब सिंघजी लोगों के मन में क्या है सो कौन जाने ? 'दारोगा भी तो राजपूत ही है। आदमी के मन का कुछ ठिकाना नहीं कब क्या करे। 'मुफ्त में सबकी वर्दन नहीं छूटी है। पाँच हजार !

तहसीलदार विश्वास को कुछ कहा कि नहीं ? 'सुमरितदास बेतार का भाज तीन दिनों से पेट में सूस हो गया है, नहीं तो सब बात कह जाता।

अरे ! बहुत दिना जियबे सुमरितदास जी ! बहुत उमर है !

"तो हमारा उमेर तुम लोग क्या लगाते हो ?

"यही चालीस ।

"चालीस नहीं पैंतीस । आमुन का सिरका बिना पानी के पी गए थ इसीलिए दाँत सब सड़ गए ।

"अच्छा सुमरितदासजी कुछ पता है कि ?

'अरे ! यह मत समझो कि सुमरितदास तूल म घर में पड़ा हुआ था। राम सरोखे बैठ के सबका भोजपत्र ख । पूछो क्या जानना चाहते हो ?"

"क्या तहसीलदार साहेब को भी सँघा गया है ?

"तहसीलदार बिस्नापदरसाद को इतना बेवकूफ नहीं समझता। वह दारोगा तो यह तहसीलदार। तुम कौआ तो हम कैथ पानी कहानी नहीं सुने हो ?

"तहसीलदार हरखौरी बेचारा

"अति संघर्ष करे जो कोउ अनल प्रकट चन्दन ते होई ! सियावर रामचन्द्र की जै !

"लेकिन राजपूतटोले को तो इसपी साहेब भी नहीं छोड़ सकते हैं। जानते हो इसपी साहब क्या कहते थे ? यह समझ म नहीं आता है कि तहसीलदार बिस्नापदरसाद की जमीन से बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरखौरी सिंह क्यों गये ! जरूर कोई बात है ! सिंहजी का एक चरन लबगा।

"गवाही में किन लोगों का नाम है ?

"अरे, गवाही क्या ? बोलो तुम्ही ईमान-धरम से कि बंधान लाल ने जोर जबर्दस्ती किया है या नहीं ?"

"इसम क्या सन्देह !

'तो गवाही के लिए का" बात नहीं। अकिल गाँव की तकदीर चमकी है। इतना बड़ा केस कभी हाथ नहीं लगता। इसम जो गवाही देने आयगा उसको तो छीन-छीन खिलाने वाले रहेंगे। तीनों एक ही केस में लगी हैं। समझे ?

सरकार ! मेरा नाम नहीं लेना। हाँ ! और संग भी तो फैसला नहीं हुआ है। हमको क्या देते हैं साब ? जिसका कागज-पत्तर लिखा-पढ़ी होगी सब तो सुमरितदास के मत्थे पड़ेगा। अकिल इस बार महो। पहले फैसला कर लें।"

"संघा का में किस-किसकी गवाही हुई ?

"मर गवाहगाही में पचास आदमी कहाँ से लगी तो आसामी है। बड़का मौसी का बारह साल का बेटा भी। दारोगाजी ने जब पूछा कि बताओ क्या

बीचड़ लट रहू थ ता बिरसा ने जवाब दिया कि हुंस लगाया है। इसके बाद दारोगाजी ने झाड़-झपट के पूछा तो बिरसा के बाद सबों ने सुरत कबूल कर लिया कि बीचड़ तहसीलदार बिलासपरसाद का है। औरतो और बच्चो ने भी कहा —तहसीलदार का बीचड़ है। तब ? उलाहता या जबर्दस्ती क्यों तुम लाव ? तो जवाब दिया कि जमीदारी परथा खतम हो गई, लेकिन हमारे गाँव के जमीदारा ने मिलकर हमारी जमीन छीना ली है—। इसीलिए लूट लिया।"

"हा हा हा हा ! साफ जवाब ? जमीन छीना लिया तो बीचड़ लूट लिया ! हा हा हा ! सच ? काली किरिया ! ऐसा ही जवाब दिया ?"

"नही तो तुम समझते हो कि सुपरिटेडेंट झठ कहता है ? अरे, यदि सवाल ने ऐसा जवाब नही दिया होता तो क्या समझते हो तुम लोग अभी घर म बैठकर हा-हा-ही-ही करते ? अभी बेहूलखाना मे कोल्हू पेड़ते रहते। समझे ! दारोगा जी ने भी सोचा कि आम खाते पोपडा जो मिले सो आम ! इसीलिए न कहा कि तहसीलदार इतना बेकूफ नही। तब दारोगाजी का इलाका है आ ऊपरी झाड़-झपड़ पान-सुपाड़ी वसूल सकें। इसम तहसीलदार साहेब क्या कर सकते है ? सिपजी को पाँच हजार और शिवसकररसिंह को भी जमना ही पड़ेगा। डाक्टर ने भी कुछ पूछा है दारोगा साहेब से। पता नही अंग्रेजी म क्या शिमशाम बात हुई। इधर साहेब से भी डागदर साहेब अंग्रेजी म ही बोल रहे थ। आदमी काबिल है यह डागदर ! हरेक लहास के बारे म क्या लिखा है, जानते हो ? लिखा है कि सवाल की मार स मालूम होता है और घाव के मुँह देख कर मालूम होता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए ही इस पर हमला किया है। और, इधर वालो का लहास को लिया ।

लहास ?

"लहास ! लाश ! पुलिस-दारोगा मसेटरी ! मार जहम ! काम-पानी ! सही फाँसी ! सचमुच ! यदि तहसीलदार बिलासपरसाद नही होते तो आज फाँसी ! कामीदरम के आफिस में आग मे और आग का पता लग जायगा ।

सोशलिस्ट पार्टी के आफिस में भीड़ लगी हुई है। कार्यालय म कहा है आज मुगाजी सोशलिस्ट और जयबाल कीर्तन एक साथ गाय जायगे। सबसे पहले पुराने जमाने का कीर्तन नारदी भटियानी कीर्तन होगा। अब लोगों के गले म अब भी आवू है !

आजू म दिवस श्याम कदमी क ठैयाँ
आवत माइलाखाल बंशी बजैयाँ !

पीतवसन मकराकृत कुण्डल !

यही मारवी है ! मृदंग कैसा बजता है—धिनक-तिनक ! धिनक-तिनक !

"अब किरतनी कीर्तन । क्या रे जमुनवा बहुत पुराना हो गया । यह रुलाने वाला कीर्तन मत बजाइए कालीचरनजी !

बम फोड़ दिया फटाक से मस्ताना भगतसिंह !

हूँ ! वाह रे मुनरा ! क्या सँभाला है ! वाह ! भारत का वीर लड़ाका था मस्ताना भगतसिंह ! सिंह ? भगतसिंह कौन जात था ?

मस्ताना भगतसिंह जानते हो ? कालीचरनजी कहते थे पाँच बार फाँसी की रस्सी खींचा । दस-दस आदमी एक-एक ओर लटक गए । खींचते खींचते रहे और उधर भगतसिंह के मुँह से निकलता जाता था—इनकिलाब जिन्दाबाद ।

"इनकिलाब जिन्दाबाद ?

धै ! धै !

हाँ भाय कौन इतना जोर से मारा जमा रहा है ? मामा जट ?

अरे बाप ! तीन दिन से एकदम सपता था ! एकदम सपना ! लेकिन जानते हो हँसेरी में सबसे ज्यादा मार किसने किया था ? चार को सोमा ने अकेले पिटाया है । हाँ खबरदार ! तहसीलदार साहेब ने मना किया है, सोमा का नाम कोई नहीं ले । बाती है ! लेकिन देखते हैं इधर सुधर रहा है । कालीचरन की सुधार देंगे ।

अब एक सुराजी कीर्तन होना चाहिए । हाँ भाई ! सब सम्पत की बै बोला ! गाँव के देवताओं के परताप से काली माय की कृपा से महात्माजी की दया से और किरतनी इनकिलास जिन्दाबाद से गाँव में साँप बाघ-बाघ बच गए । सभी कीर्तन होना चाहिए ।

भारत का डंका लंका में
बजवाया वीर जमाहिर ने !

रामबहली महतो भी हरमुनिया बजाता है । कहाँ गोपा ? सिरिफ बाँस पड़े हैं सामने बाल । गाम के समय यह सुराजी की तरफ हो जाता है ।

भारत का डंका लंका में

बालदेवजी कहाँ है ? सुना कि बालदेवजी साथ हो रहे हैं । क्या कहा ? कहाँ पर किसका नाम जाप करते ? महात्माजी का या सतगुरु का ?

वर्षा खतम भी मास्टरनीजी कितना सुना गई है ! अरे बाप ! सिरिफ

कालीचरणजी म ही हँसकर बोलती है। कालीचरणजी आज कुर्ता म गाल-नाम क्या समाये हुए है ? मुसम्मिट पाटी का माहर है ? देखा कालीचरन की मोहर वाले लीडर हो गए है। रामदेवजी को बावनदास को या तहसीलदार साहब को मोहर है ? मास्टरनीजी उसमें क्या लगा रही है ? फूल ? वाह ! अब और बना ! फूलमोहर छाप सिकरेट ! डाक्टर साहब का नौकर कहाँ आया है ! ऐ ! चुप रहो ! चुप रहो ! आंती आंती !

'कालीचरणजी को डॉक्टर बाबू बुलाते हैं" प्यादा मंगलादेवी से कहता है।"

"अ उजा ! काली ! डॉक्टर बाबू को निमन्त्रण नहीं दिया ? तहसील-दार साहेब लेम्पावनजी वगैरह तो कचहरी गये है। डॉक्टर साहेब तो थे। आओ बुला रहे है।"

क्या बात है ? जरूर कोई बात है। सुमरितदास बेनार कहाँ है ?

एक बार बोलिए प्रेम से
काली माई की जै !
महात्मा गांधी की जै !
सोसलिट पाटी की जै !
इनकिलाब !

"कालीचरणजी !

"जी !"

"एक बात कहूँ ! बुरा मत मानिएगा। हरदीरी बाबू की माँ रो रही है और दूसरे टोले में भी औरतें रो रही है। आप लोग कीर्तन कर रहे है यह अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे लगता है कि आज के कीर्तन में आपके भगवान भी दुखी होंगे।"

"हम लोग भगवान को नहीं मानते कॉमरेड वासुदेव ने बीच में ही टोक दिया।

'तुम चुप रहो ! कालीचरन कहता है "हर जगह मत टपका करो। सब चुप है। हरदीरी की माँ सब भी रो रही है—राजा बेटा रे ! बेटा रे !

कालीचरन की आँखें भी सजल हो जाती है। बचपन में ही वह हरदीरी के साथ खेला-कूदा था। पूँजीवादी हो या बुर्जुआ आखिर वह बचपन का साथी था। वह आज नहीं है। उसकी माँ रो रही है। यह हरदीरी की माँ नहीं रो रही है—निर्फ 'माँ' रो रही है !

गिरफ्तारी ! क्यों गिरफ्तार किया ? कैसे गिरफ्तार हुआ ? और किन लोगों पर वारण्ट है ? तहसीलदार बिसनाथ पर भी ? 'तहसीलदार साहेब आ रहे हैं। मौका दो रे !"

तहसीलदार को देखते ही शिवशंकरसिंह फिर धरती पर लोट गए और जोर-जोर से रोने लगे—"बिसनाथ भैया ! कलेजा टूक-टूक हो रहा है। भैया हो ! कलेजा "

तहसीलदार साहब समझाते हैं—"शिवशंकरसिंह रोइए मत ! यह रोना तो जिन्दगी-भर के लिए मिला है। एक दिन रोने से दिल ठंडा नहीं होगा। लेकिन अभी रोने का समय नहीं। मालूम होता है मुकदमा खराब हो गया। सिंहजी के गिरफ्तार होने का मतलब ही है कि मुकदमा खराब हो गया। मद किसके सिर पर कौन आफत है कौन जाने ! जूनी केस है ! उठिए, आपसे प्राइवेट में एक बात करना है।

शिवशंकरसिंह तुरत उठकर खड़े हो गए और तहसीलदार साहब के साथ दरवाजे से जरा दूर चले गए। सुमरितदास भी प्राइवेट सुनेगा ? तब ठीक है, असल बात का पता अभी तुरत लग जायेगा।

दरवाजे पर खड़े सभी एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं—अब किसके सिर पर क्या आफत है, कौन जाने ! हे भगवान् !

"परनाम जोतखी काका !

जोतखी काका के साथ लेखनाथ भी आया है। जोतखीजी पास के खाली मोढ़े पर बैठ जाते हैं। लेखनाथ भी तहसीलदार साहब के प्राइवेट में जाकर शरीक हो जाता है। जोतखीजी पौमी भाषण में लोगों से कहते हैं—"तुम लोग यहाँ खड़े होकर क्या कर रहे हो ?" उनके कहने का ढंग ही ऐसा था जिसके मान निकलते थे—'तुम लोगों की जान बलाई हुई है क्या ? यहाँ से जितना जल्दी हो सके, खिसक जाओ ! वर्ना क्या ठिकाना !

सब जल्दी से मौका देखकर उठ खड़े होते हैं। जोतखीजी कहते हैं—"यहीं चले आइए तहसीलदार ! सभी चले गए।"

" लेकिन बात यह है कि एसपी ने तो यह मोक्ष पकड़ा है—तहसीलदार बिसनाथ की जमीन का बीहन बचाने के लिए तहसीलदार हरवीरी क्यों बना था ?" तहसीलदार साहब कहते हैं।

"रामकिरपाल भैया तो हैं नहीं। हम आपको क्या कहें ? लेकिन मोकदमा तो आपका ही है। बाजिबन सजा तो आपको ही देना चाहिए।" शिवशंकर सिंह खिसियाकर कहते हैं।

जोतखीजी कुछ कहने के लिए अकुलाते हैं, लेकिन सुमरितदास बेतार बीच में ही जवाब देता है—"सिवसक्करसिंह मोकदमा तहसीलदार बिसनाथ का नहीं तहसीलदार हरबोंगी का है। पुछिए कैसे ? तो बात यह है कि असल में यह सब 'खुरजार' बेरहली-नीलामी तो हरबोंगी बाबू ने ही शुरू किया था। हमसे ज्यादे कौन जानेगा ? तहसीलदारी कारबार को आप क्या समझिएगा ? यदि बेरहली और नई बन्दोबस्ती की बात नहीं उठती तो गाँव में यह लँकाकाण्ड नहीं होता। पहले तो तहसीलदार हरबोंगी ने ही सुरू किया। तहसीलदार बिसनाथ उनके मददगार हुए तो इन्हीं की जमीन पर संथालों ने धावा कर दिया। अब बताइए कि असल में यह मोकदमा किसका हुआ ? असल बात हम जानते हैं दारोगा को रम हजार देना ही होगा।"

रोहाबन कहता है—'तहसीलदार जब जैसे भी हो, सब कोई समझ करके गाँव के इस गरह को हटाइए।"

'रमकिरपाल भैया हैं नहीं हम क्या कहेंगे ? सिवसक्करसिंह बस यही एक जवाब देते हैं।

बहुत देर के बाद जोतखीजी कहते हैं "जो भी हो न्याय बात तो यही है कि बिसनाथ बाबू इस मुकदमे में अभी पूरी पैरवी करें।"

अन्त में यही तय हुआ कि सबसे पहले रामकिरपालसिंहजी को अस्पताल पर पहुँचाया जाये। इसके बाद सब मिलकर जो मालिक हो, सोचें। जो खर्चा होगा सिंहजी लोगों को देना होगा।

जोतखीजी ने मुस्कराते हुए कहा 'आज 'दोसाध्टि' लोग खोज खबर करने गये। एक भी आदमी थाना में नहीं गया। अब लोग थाना का अर्थ समझ रहे हैं !

'हूँ कोई बात हो तो फुल्ल से थाना। हम कहते थे न गाँव में एक दिन चीत-काण्ड होगा !"

'जोतखी काका थाना-पुलिस को दोस मत दीजिए।" कालीचरण अलग में अँधेरे में खड़ा था।

"आओ काली !" तहसीलदार साहब हँसते हुए कहते हैं 'तुम लोगों को थानाही देखी होगी सो जानते हो न ? दारोगाजी को भी। तुम्हीं दोनों वीरों की बदमाशी पर सारी बात है।"

कालीचरण ने घोड़े पर बैठते हुए कहा, 'थानाही देखी होगी तो देखे। जो बात जानते हैं वह कहने में क्या है ! दारोगा हो एसपी हो चाहे मजिस्टर-कलक्टर हो। सच्ची बात कहने में हिचकना क्या है !

"मालिक बात ! मालिक बात !" जोतखीजी को छोड़कर बाकी सभी कहते

है—"वाजिब बात !"

तहसीलदार साहब का नौकर रतनजीत दौड़ता-हाँफता आता है "कमली दैया फिर !"

"तो यहाँ क्या है ? डाक्टर के यहाँ जाओ !" तहसीलदार साहब झुंझलाते हुए उठते हैं। 'मफ्तखोर आने क्या क्या करते हैं डाक्टर लोग ! इतने दिन हो गए, बीमारी सीरियस आज से आज ही भी नहीं हुई !

तो असल बात खुल गई ! मामले मुकदमे की सोमड़ो आने वाठ का है तो कालीचरण और वासुदेव के हाथ में है !

'शिव हो ! शिव हो !" बीरसी काका उठते हुए कहते हैं "काली बाबू कल जरा अपना हाथ दिखाना तो ! देखें तुम्हारे हाथ की रेखा क्या कहती है। जन्म-दिन और महीना याद है ?"

बोतलीजी के पेट में डर समा गया है—कालीचरण और वासुदेव के ही हाथ में जब सब-कुछ है तो वह किसका नाम बतला दें वह गिरिफ्त हो जायेगा——गुरु। और कालीचरण कालीचरण ही क्यों वासुदेव भी उन पर मन-ही-मन नाराज हैं। वासुदेव का तो उतना डर नहीं मगर कालिमा 'शिव हो ! शिव हो !

तेतालीस

लक्ष्मी दासिन आज मन के सभी दुआर खोल देती। एक नया दुआर !

"वासुदेवजी !

"जी !"

"रामदास फिर बीए पास हुआ है। कल मंझारी से कह रहा था लक्ष्मी से कहो एक दासी रखने की आज्ञा दे। कहिए तो भला !"

वासुदेवजी क्या जवाब दें ? दासी रखना धरम के खिलाफ है यह उनका नहीं मालूम। दो-तीन महीने ही हुए, उन्होंने कण्ठी ली है। मठ के नियम धरम नेम-धरम के बारे में वे क्या कह सकते हैं ! लेकिन मठाधीश सेवादास ने भी तो।

लक्ष्मी कहती है—'आप उसे समझाइए वासुदेवजी ! यह बीए क्या

है। आजकल तहमाटोली में आना-जाना शुरू कर दिया है। भगवान भगत ने कुछ हिसाब किया है, रमपियरिया की माँ को चार सेर चावल दिलवा दिया है रामदास ने। मैंने पूछा तो बोला—'मठ का पुराना नौकरान है भूख से मरेंगे ये लोग ? जब दिन भर बैठकर सिरिफ बीजक बाँचनेवाला दूध-मलाई खाता है तो । लछमी कहते-कहते रुक जाती है।

बामदेवजी आजकल कुछ 'मतिभ्रम्न' हो गए हैं। सीधी बात भी समझ में नहीं आती। कुछ नहीं समझते हैं। कितने सीधे-सूधे हैं!

मठ पर रहना उसको पसन्द नहीं। लछमी बासदेव की ओर देखती है।

"तो हम चले जाते हैं। यदि हमारे रहने से मठ का नियम भंग होता है तो हम चले जाते हैं।

'कहाँ जाइएगा ?

"धनलक्ष्मीपट्टी।"

लछमी का कलेजा धड़क उठता है—धक ! इधर कई दिनों से बासदेवजी बहुत उदास रहते हैं। खाना-पीना भी बहुत कम हो गया है। कहीं घूमने फिरने भी नहीं जाते। आसन पर पड़े बीजक पाठ करते रहते हैं। तहसीलदार साहब कह गए हैं—'बासदेव की गवाही पर ही मुकदमे की सारी बात है। बासदेवजी सुनकर बोले गवाही के लिए हम कचहरी में नहीं चढ़ सकते। महतमाजी कहिन है—लगइ न जाहु कचहरिया बेइमनवाँ के ठाट जहाँ। आज मठ सूना है आज ही लछमी सब कुछ कह देगी बासदेवजी से।

'आप धनलक्ष्मीपट्टी चले जाइएगा और मैं ?

"आप ?"

लछमी बासदेव की आँखों में आँखें डालकर देखती है। लछमी जब-जब इस तरह देखती है बासदेव न जाने कहाँ खो जाता है! एक मनोहर सुगन्ध हवा में फैल जाती है। पवित्र सुगन्ध! बीजक से कैसी सुगन्धी निकलती है।

"हाँ! मैं कहाँ जाऊँगी ? मेरा क्या होगा ? महंथ की दासी बनकर ही मैं मठ पर रह सकती हूँ।" लछमी की आँखें भर आती हैं।

"नहीं लछमी तुम रामदास की दासी नहीं। मैं तुम आप ।

'बासदेवजी ! लछमी पगली की तरह बासदेवजी से लिपट जाती है "रक्षा करो बासदेव ! तुम कह दो एक बार—तुम्हें रामदास की दासी नहीं बनने दूँगा ! तुम बोलो—धनलक्ष्मीपट्टी नहीं जाऊँगा। मुझे छोड़कर मत जाओ बासदेव। तुम !

'लछमी ! बासदेवजी लछमी का मेमाप्त हुए रहत हैं 'काई देख लेगा।"

लछमी बालदेवजी के गले से हाथ छुड़ाकर अलग बैठ जाती है। सिर नीचा करके सिसकती है।

बासदेव की सारी देह झन-झन कर रही है। कनपट्टी के पास लगता है तपाये हुए नमक की पोटली है। एक बार आश्रम में उसके कान में दर्द हुआ था। गाँगुली जी ने नमक की पोटली से सेंकने के लिए कहा था। कलेजा धड़-धड़ कर रहा है। लछमी की बाँह ठीक बालदेव के नाक से सट गई थी। लछमी के रोम-रोम से पवित्र सुगन्धी निकलती है। चन्दन की तरह मनोहर शीतल गन्ध निकल रही है। बालदेव का मन इस सुगन्ध में हेलडूब[1] कर रहा है। वह लछमी को छोड़कर बलनपट्टी में कैसे रह सकेगा? रूपमती मायजी लछमी!

"महतमाजी के पंथ को मत छोड़िए बालदेवजी! महतमाजी अवतारी पुरुष हैं। माजकल उदास क्यों रहते हैं? महतमाजी पर भरोसा रखिए। जिस नैन से महतमाजी का दरसन किया है उसमें पाप को मत पैसने दीजिए। जिस कान से महतमाजी के उपदेस को सरवन किया है उसमें माया की मीठी बोली को मत जाने दीजिए। महतमाजी सतगुरु के समत हैं। लछमी आँखें मूँदकर ध्यान की आसनी पर बैठी है। सफेद मलमल की साड़ी पर बिखरे हुए लम्बे-लम्बे काले बाल! और गोरा मुख-मण्डल! ध्यान-आसन पर इस तरह बैठकर उपदेस देने वाली यह लछमी कोई और है! बालदेवजी के हाथ स्वयं ही जुड़ जाते हैं।

लछमी की पवित्र आत्मा की बाणी फिर मुखरित होती है— 'दुनिया के दोस-गुन को देखने के पहले अपनी काया की ओर निहारो! मन मैला तन सूचरो उल्टी जग की रीत! पहले मन को साफ करो। मन पवित्र नहीं इसलिए यह दुखी होता है निरास होता है। तुम पंथ पर उदास होकर क्यों बैठ रहे हो? डरते क्यों हो?"

चलते चलते पग थका
नगर रहा नौ कोस
बीचहि में डेरा परा
रहहु कौन का दोस!

---

१ डूबना उतराना।

बालदेव का कहना है, खुद भारतमाता बात रही है। यही रूप है! ठीक यही रूप है जिनके पैर सूत से लबपथ हैं। जिनके बाल बिखरे हुए हैं। आवन दास कहता था भारतमाता आर-बजार रो रही है। नहीं माँ रो नहीं रही। अब पथ बता रही है। उचित पंथ पर अनुचित करम करने वालों को चेता रही है। बालदास 'भरम' गया है। और तब बालदेव महतमाजी के पंथ पर निडर और उदास होकर चल रहा है।

"भारतमाता की जै! महतमा जी की जै! भारतमाता भारतमाता!"

महंथ रामदास बहुत देर से कमल पाड़ की आड़ में खड़े होकर देख-सुन रहे थे। ध्यान-आसन पर बैठी हुई लक्ष्मी उपदेश दे रही है और बालदेव जी हाथ जोड़ एक टक से लक्ष्मी को देख रहे हैं। अचानक बालदेवजी लक्ष्मी के चरण पकड़कर हल्ला करने लगे—भारतमाता की जै!

"भंडारी! भंडारी!" महंथ रामदास पिछवाड़े की ओर भागते हुए चिल्लाते हैं 'भंडारी! बालदेव पगला गया! दौड़ो!"

मठ पर तुरत भीड़ जम गई। डॉक्टर साहब तहसीलदार साहब कालीचरण और रामाधारसिंह यादव भी आये हैं। बालदेव की बूढ़ी मौसी बीच-बीच में आकर 'राम राम की सुरतुर'[1] करती है, किन्तु एक ही साथ इतने बोल उठते हैं कि वह चुप हो जाती है और बारी-बारी से सब के मुँह की ओर देखती है। कुछ देर के बाद ही वह फिर सुर करती है—"बाबू रे!"

'ए बूढ़ी! ठहर! चुप!"

डॉक्टर साहब बालदेव के बाँह में रबर की पट्टी बाँधकर, मुट्ठी से एक छोटे से पेंच को दबाते हैं। "ओ! इसी मशीन से तो तहसीलदार की बेटी कमली का भी जाँच होता है! ओ!

बालदेवजी रह रहकर बाँहें ऐंठकर, हाथ छुड़ाकर उठ खड़े होते हैं "आप लोग क्या समझते हैं मैं पागल हो गया हूँ? कभी नहीं हरगिज नहीं। हमको बालदेव कहते हैं? इस गाँव में क्या था? कोई जानता भी था इस गाँव का नाम? इसको हौल इण्डिया में मशहूर कौन किया? हमको छोड़ दीजिए। हम महतमाजी के पंथ से नहीं हट सकते।"

भीड़ में कोई कहता है—"मठ पर रहने से भाँजा पीने की आदत लग ही जाती है।"

"कौन कहता है हम भाँजा पीते हैं? दाह-भाँजा-भाँग की दुकान में

---

१ तंबाकू।

पिकेन्नि किया है हम और हम गाँजा पीयेंगे ? छि छि ! हम महतमाजी के पंथ को कभी छोड़ नहीं सकते। साच्छी हैं महतमाजी !"

बालदेव की बुढ़िया मौसी जब नहीं मानती। वह गा-गाकर रोती है—"डायडर ने तहसीलदार की बेटी कमला की बेमारी को उतारकर बालदेव पर चढ़ा दिया है। यह भले आदमी का काम नहीं। तहसीलदार की बेटी अभी तक कुमारी है। हे भगवान्! अब बालदेव का बिहा नहीं होगा! हैया रे हैया!

"बालदेवजी! लक्ष्मी कहती है, चित्त को शान्त कीजिए।

"ओ! लक्ष्मी! लक्ष्मी दासिन! साहेब बचयी! ठीक है कोई बात नहीं। हम पर कभी-कभी महतमाजी का भर[1] होता है। चुन्नी गुसाईं को तो रोज भार का होता है।" बालदेवजी चुपचाप बैठ जाते हैं।

'डाक्टर साहेब! बालदेवजी इधर कई दिनों से बहुत उदास रहा करते थे। रात में नींद पता नहीं आती थी या नहीं। एक सप्ताह पहले एक दिन बोखार लगा था। बोखार की पीसी गोली एक ही साथ सात ठो खा गए।

"पीसी गोली? सातों एक ही बार? डाक्टर आश्चर्य से पूछता है।

"जी! बोखार की पीसी गोली खाने के लिए मिसरी की न! उसी में से सात ठो एक ही बार खा गए। बोले कि रोज कौन खाये! एक ही साथ सात दिनों का खोराक से लेते हैं!

डाक्टर ठठाकर हँस पड़ता है 'कितना बढ़िया हिसाब है। बालदेवजी दस दिनों तक बोतल का सर्बत पीजिए। ठीक हो जायेगा। कुछ नहीं है दवा की गर्मी ही है।

रामकिरपालसिंह कहते हैं, 'बिहदाना अनार संतोला का रस तो ठंडा होता है गरमी को साफी करेगा। जेहल में हम सिरिफ बिहदाना संतोला खाकर रहते थे। दो बिहदाना मेरे पास अभी भी है।

बालदेव और कालीचरण के बयान पर ही सब कुछ है—जिसको चाहे फँसा दें चाहे बचा दें। खुद दारोगा साहब कहते थे कि बालदेव की गवाही की बहुत कीमत है!

लेखावनसिंह यादव आजकल कालीचरण का आगा-पीछा सूद करते हैं। पार्टी ऑफिस के बगल में एक झोंपड़ा खड़ा बनवा देंगे सुनते हैं साथी निवास घर! अँगना घर जिला पार्टी ऑफिस में है। मीटिंग के दिन जितने साथी आते

---

१ देवी-देवता का सवार होना।

है उसी घर में रहत है। जो सिकरेटरी होगा वह ऑफिस घर म रहेगा। काशीचरन ने बेमावनसिंह से कहा तो वे तुरन्त तैयार हो गए।

ओझजी काका ने काशीचरन का हाथ देखा है—"बूब गरुछतरबली हैं काशीचरन ! राजसभा म जस है। बटा-बेटी भी है। धन भी है। मगर एक बरह बड़ा 'जम्बड़' है ।

सिंहजी बालदेवजी का बिहसाना-संतोला पाने के लिए मना रहे हैं— सो सो बालदेव ! बड़ा पूर्त्तीकारी जीव है। बवा की गरमी दूर हो जायेगी।

बवाही ने बालदेवजी की आई हुई कीमत को फिर बहुत तेजदर कर दिया है।

बालदेवजी कहत हैं 'महतमाजी का रस्ता हम कभी छोड़ नहीं सकते। समझ न जाहु कपहरिया रसलवा के ठाठ जहाँ।"

लेकिन बालदेवजी को तो कुछ भी नहीं कहना पड़ेगा। उनसे पूछा जायेगा कि यह दसखत आपका ही है ? ये कहेंगे कि—हाँ। बस और कुछ कहना भी नहीं है। दसखत तो बालदेवजी ने किया था। यह तो झूठ बात नहीं। काशीचरन ने भी किया था।

चाहे जैसे भी हो बालदेवजी को बवाही के लिए राजी करना ही होगा नहीं तो सारे बाँध पर आफत है। कोठारिन लछमी बासिम को तहसीलदार साहब समझाकर कह दें तो बात बैठ जायगी।

चवालीस

इधर कुछ दिनों से डाक्टर मौती के यहाँ ज्यादा देर तक बैठने लगा है। मौती के यहाँ जब तक रहता है ऐसा लगता है मानो वह शीतल छाया के नीचे हो। काम म जी नहीं लगता है। ऐसा लगता है उसका सारा उत्साह स्पिरिट की तरह उड़ गया। क्या होगा मानव विज्ञान करके ? मान लिया कि उसने कामला-आजार की एक रामबाण औषधि का अनुसंधान कर लिया अमृत की एक छोटी शीशी उसे हाथ लग गई। किन्तु इसके बाद ? इसके बाद जो होता आया है, होगा। आखिर पाँच आने का एक ऐम्पुल पचास रुपये तक बिकेगा। यहाँ तक उसका पहुँच नहीं होगी ! और यहाँ का आदमी जीकर करेगा क्या ? एक जिन्दगी ? पशु से भी नीचे के मनुष्य। पशु से भी ज्यादा बेकार हैं ये।

पट ! यही इनकी बड़ी कमजोरी है। मौजूदा सामाजिक न्याय-विधान ने इन्हें अपने सैकड़ों बाजूओं म जकड़कर ऐसा लाचार कर रखा है कि ये चूं तक नहीं कर सकते। फिर भी ये जीना चाहते हैं। यह उन्हें बचाना चाहता है। क्या होगा ?

मौसी कहती है 'बेटा तुम भागवत गीता नहीं पढ़ते ?

डॉक्टर मौसी की ओर अकचकाकर देखता है। जब म उसने 'गीता रहस्य' पढ़ने की चेष्टा की थी। ममता भी हमेशा 'गीता' तथा 'राम-कृष्ण कथामृत' गोदी में लिए फिरती है। शायद समझती भी हो। ममता ने कई बार कहा है—'फुरसत के समय गीता जरूर पढ़ो, सही समझा कुछ ढूंढो। कुछ-न-कुछ जरूर मिलेगा। यह गीता पढ़ेगा !

"डॉक्टर साहेब ! जय हिंद !"

"आओ कालीचरन ! क्या हाल है ? तुम भी पूर्णिया गये थे न ?"

"जी। अभी तुरत आ ही रहा हूँ। उम्मीद है, पाँच के छमी लोग छूट जायेंगे। हम लोगों को तो सतो बाबू वकील ने बिरुह में बहुत तोड़ना चाहा मगर उनको भी मालूम हो गया। बालदेवजी की बात हम नहीं जानते लेकिन सुना है वह भी खूब डट कर अपील दीहिन है। हमसे कहा कि आप पढ़ना-लिखना नहीं जानते आप दसखत करना नहीं जानते। मैंने कहा मैं पढ़ना-लिखना भी जानता हूँ और दसखत करना भी जानता हूँ। दारोगा साहेब के सामने भी दसखत किया था। आप कहिए तो आपको भी दिखा दूँ। हाकिम ने कहा कि आप अपना दस-खत दीजिहये। हमको भी क्या बसमा की जरूरत है? फटाक से दिखिहद दो दिया!

"लेकिन जिस कागज पर तुम लोगों ने दस्तखत किया था उसमें क्या लिखा हुआ था?" डॉक्टर पूछता है।

'क्या लिखा हुआ था? सो तो सा था नहीं पढ़ा। दारोगा साहेब ने तो अंगरेजी में लिखा था। सरकारी कागज पर कोई खिलाफ बात थोड़ा लिखेगा!"

"हो-हो-हो-हो!" डॉक्टर ठठाकर हँस पड़ता है। "और बालदेवजी ने भी यही कहा होगा!"

"हाँ लेकिन इसमें हँसने की क्या बात है?" कालीचरन जरा क्या होकर कहता है।

"हाँ भाई हँसने की बात नहीं। बात रोने की है कालीचरन! मुझे तो कुछ बोलना नहीं चाहिए लेकिन ! मन समझता कि संथालों

की जमीन छुड़ाकर ही जमीदार सन्तोष कर लेगा। अब गाँव के किसानों की बारी आयेगी। और तुमको तथा वासुदेवजी को ही उन्होंने अपना पहला हथियार बनाकर इस्तेमाल किया है। यह रोने की बात नहीं? डॉक्टर एक ही साँस में सब कह गया।

"लेकिन लेकिन आपने भी तो लिख दिया है कि संथालों की मार को देखकर पता चलता है कि किसी ने अपनी जान बचाने के लिए इन पर हमला किया है?" कालीचरन समझ गया है।

"यह किसने कहा तुमसे?" डॉक्टर आश्चर्य से मुँह फाड़ते हुए कहता है "ऐसा कहीं लिखा जाता है? मैंने तो सिर्फ जख्म के बारे में लिखा है। संथाल अथवा गैर-संथाल मैं नहीं जानता। मैं तो रोग और घावों की जाति के बारे में ही जानता हूँ। डॉक्टर उत्तेजित होकर कहता ही जाता है "काली तुम लोगों ने अच्छा नहीं किया। लेकिन तुम लोगों को दोष भी तो नहीं दे सकता हूँ।"

"तहसीलदार साहेब तो आपको खूब मानत है।" कालीचरन सीधी बात करना जानता है "कमली दीदी कमली दी दी

"क्या मतलब?" डॉक्टर बीच में ही टोक देता है।

'क्या कहना चाहता है' मौसी घबड़ी है कमली दीदी खूब मानती है। उसकी माँ भी इज्जत-आबरू करती है। यही न?"

"हाँ।" कालीचरन को मानो सहारा मिलता है।

"तो क्या हुआ? तहसीलदार साहब गाँव के रईस हैं। मुझसे उम्र में बड़े हैं। कमला की बीमारी के चलते मुझे कुछ ज्यादा आना-जाना पड़ता है। वे मुझे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उन लोगों की इज्जत करता हूँ। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं तहसीलदार साहब के अन्याय का भी समर्थन करूँगा अथवा चुप रहूँगा।"

कमला बहुत देर तक मौसी के आँगन में खड़ी होकर सुन रही थी। डॉक्टर की अन्तिम बातों को सुनकर उसका कलेजा धक-धक करने लगता है। वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। उस पर घटनाओं की प्रतिक्रिया बड़ी तीव्र गति से होती है। नाटकीय ढंग से वह प्रवेश करती है।

"इसीलिए आप आजकल मेरे यहाँ नहीं आते। इसीलिए आपने उस दिन कहला भेजा था कि तहसीलदार साहब कमली का घटना से आपें यहाँ इलाज नहीं होगा। क्यों?"

सभी एक ही साथ चमक उठते हैं। मौसी हँसकर कहती है, "तू आज

लड़ने के लिए कमर कसकर आई है? पगली! बैठ!"

डॉक्टर कमला की ओर टकटकी लगाकर देख रहा है—चेहरा लाल हो गया है कमला का। आँखें डबडबाई हुई हैं। बदन के पास की एक शिरा अति से फड़क रही है। डॉक्टर ने बहुत बड़ा अन्याय किया है। रक्त का दबाव बढ़कर बढ़ गया होगा। कमला के ओठ फड़क रहे हैं थरथरा रहे हैं। वह रो पड़ती है—'मौसी!

"कमला! डॉक्टर धीरे से कहता है 'तुमने तो कुछ समझा-बूझा नहीं और लगी आकर बरसने। मैं तो कालीचरण को समझा रहा था कि यदि मैं किसी राजनीतिक पार्टी में होता तो ऐसा नहीं करता।

डॉक्टर ने वातावरण को हल्का बनाने की पूरी कोशिश की। लेकिन अच्छा होता यदि कमला उससे रूठी रहती। इसी दिन के इन्तजार में वह था। आज कमला को पूर्ण स्वस्थ बनाया जा सकता था। लेकिन अब वह चूक गया। अब परिणाम के लिए तैयार रहना है।

जब तक डॉक्टर बोलता रहा कमली चुपचाप सुनती रही। अचानक उसके मुख-मण्डल पर छाए बादल फट गए। एक हल्की मुस्कराहट उसके ओठों पर धीरे-धीरे जगने लगी नाक के बगल की नीली रेखा धीरे-धीरे खिल रही है, मानो कमल की पखुड़ियाँ धीरे-धीरे खुल रही हों!

मौसी चुपचाप कभी कमला की ओर, कभी डॉक्टर की ओर देखती है। उसके ओठों पर भी मन्द मुस्कराहट खिची हुई है।

"प्याक मेरे यहाँ दो बार खोज गया है। लायक आज भी कोई अपराध माफ गया है।" कमली मौन भंग करती बोली। उसकी बोली सहज हो गई है।

कालीचरण कमला के चेहरे पर कुछ देखकर चमक उठता है। उससे बातें करते-करते कभी-कभी मंजुला के चेहरे पर भी ऐसे ही भाव आ जाते हैं। इसी तरह घुल-घुलकर बोलती है। वह डॉक्टर की ओर देखता है फिर उठ खड़ा होता है अच्छा तो बैठिए डॉक्टर साहब! हम अभी चलते हैं। फिर कल भेंट करेंगे।

मौसी भी उठकर जाते हुए कहती है "तुम लोग चाय तो जरूर पीओगे!"

कुछ देर तक दोनों चुप रहते हैं। कमला पास में पड़ी सीकों की बनी हुई एक फूलडलिया को उठाकर उसकी बुनावट देखने लगती है। डॉक्टर मुस्कराते हुए पूछता है "एक बात पूछूँ कमला बुरा तो न मानोगी? अपने बाप की शिकायत कोई नहीं बरदाश्त कर सकता है, क्यों?

"कैसे बरदाश्त कर सकता है कोई?

"मुझे क्या मालूम? मुझे मुझको अपने बाप की याद नहीं।"

कमला मुस्कराती आती है। कहती है "विवाह के गीत में एक जगह शिवजी पार्वती के पिता की टोकरी-भर शिकायत करते हैं—

एक बेर मैली मोर तोहरो नैहरवा से
बहठे से देलक पुकार,
कोदो के खिचुड़ी रँधाओल मैना साजू !

"हा-हा-हा-हा!

"हा-हा-हा-हा!" दोनों एक ही साथ हँस पड़ते हैं। मानो पंछी का एक जोड़ा एक ही साथ डिंग खोलकर किलक पड़ा हो। नर और मादी के पवित्र आकर्षण की रुपहली डोरी लपक रही है। नर आगे बढ़ता मादी को खींच लेता है।

बड़ी-बड़ी मद-भरी आँखों की जोड़ी ने मुस्कराकर पूछा "आप मेरी शिकायत बरदाश्त कर सकते हैं?"

"रात तो कर रहा हूँ।" दो लापरवाह आँखों ने मानो घुटकी ली "कमली दवा नहीं पीती है। कमली रात में देर तक बैठकर पढ़ती है। कमली पगली है। पगली है कमली। तू पगली है! तू मेरी पगली है! पागल-पगली

अवरक मधु जब चाखल काहु,
तोहर सपथ हम किछु नहि आनि!

दूसरा खण्ड

सुराज मिल गया ?

"अभी मिला नहीं है, पन्द्रह तारीख को मिलेगा। पचास दिना की देर नहीं समझे हरदा में ही मिल जायेगा। दिल्ली में बातचीत हो गई। हिन्दू लोग हिन्दुस्थान में मुसलमान लोग पाकिस्थान में चले जायेंगे।" बावनदासजी फिर एक खबर ले आए हैं। ताजा खबर!

'रुपया ४० की लोटस की तरह मूठ-मूठ कोई फाहरम ता नहीं लाया है बावनदास? 'मूठ नहीं सच बात है! डाकदर बाबू के बेटार में भी बोला है, सुनते हैं।

'तहसीलदार साहेब मौज खिलाएंगे उस दिन सुमरितदास बेटार घर-घर खबर फैला रहा है। 'सब इसमिट' अभी-अभी हुम पक्का करके आ रहे हैं। पूरी जिलेबी हलुआ दही और चीनी!"

"वै हो! वै हो!"

"महतमा गांधी की जै!"

महंथ साहेब के भंडारा से भी बड़ा भोज होगा। तीन मेर[1] माल होगा —बलवाही विदेसिया कमला और महमदिया की नौटंकी कम्पनी। कालीचरन का सुमीरन कीरतन भी होगा। पूर्णिया से अंगरेजी बाजा आएगा। अरे! अंगरेजी बाजा नहीं जानते? रौतहट मेला में सरकस के साथ म बजत नहीं सुना है—मेकर मेकर में में! 'चमराहा-सेंकरपुर का बिसापद। बलपड़ा की बलवाही औरही-हिंसना का अठिमाकी मकर्रै'। सुख मारदी पाने हैं औरही बाजे। कोयलू गोलबाहा और सीतानाथ बाबू मुकर्रम! सीतानाथ बाबू का गला बड़ारी में भी कितना तेज है!

'मुसम्मात्रों का हिस्सा सुराज पाकिस्थान में चला जायगा? एकदम काटकर हिस्सा लेगा?

'हां अब हिन्दू मुसलमान भाई भाई है तो भैयारी हिस्सा ता एकदम आधा आधा के हिसाब से ही मिलेगा।"

---

१ एडिशनेट। २ दल। ३ अठियाली कीर्तन। ४ नारदी सुर।

'बावनदास ने सुराज का काठ देखा है या अखबार से ही बोल रहा है। चलो पूछें।"

बावनदास कहता है—'अरे सुराज क्या कद्दू-कोंहड़ा है जो काटकर बेंटेगा?"

" तब सुनरजी कीरतन में जो कहा है कि जब तक फल सुराज नहीं पावें बापीजी चरखा चलावें मोहन हो! बापीजी चरखा चलावें "

"कीर्तन की बात छोड़ो। सुराज माने " बावनदास जी समझाते हैं, 'सुराज माने अपना राज मारवाड़ी का राज। अब अंगरेज लोग यहाँ राज नहीं कर सकते। ए अंगरेजो! मारप छोड़ो' क्या कहा था बापी जी ने? इसीलिए।"

'अपने बाँट का तो राज तहसीलदार साहेब को ही मिलेगा। राज पार अंपा के तहसीलदार हरपौरी तो अब हैं नहीं।

बालदेवजी का दिमाग बहुत शान्त हो गया है। जिस दिन उन्होंने परसाद उठाया[1] उसी दिन से माथा ठंडा हो गया। सप्तमी तीन चार दिन तक सप्तसंग करती रही। आखिर बालदेवजी हार गए। बालदेवजी अब गृहस्थ नहीं रहे साधू हो गए। माघमकर करवाकर बालदेवजी का मुँह ठीक सोलह पटनियाँ आम की तरह हो गया है।

" साहेब बंदगी बालदेवजी!

साहेब बंदगी! जय हिंद! बालदेवजी आजकल साहेब बंदगी और जय हिंद दोनों एक साथ मत्थी करके बोलते हैं।

"जय हिंद कौमरेड बालदेवजी! कालीचरन मुट्ठी बाँधकर कहता है—कौमरेड!

"नहीं। हम कौमरेड नहीं हैं।" बालदेवजी नाक सिकोड़ते हुए कहा "हमको कौमरेड क्यों कहते हो?

"कौमरेड कोई गाली नहीं बालदेवजी! कौमरेड माने साथी। जो भी देस का काम करे, पब्लिक का काम करे, वह कौमरेड है कालीचरन हँसते हुए कहता है।

'तुम नहीं जानते बालदेवजी चिढ़कर कहते हैं 'तुम तो आज आए हो हम मन् ठीक से ही जानते हैं। ठीक-भौंठ काटकर, मुर्गी का अंडा खिलाकर कौमरेड बनाया जाता है। कम्फ-जाल में कितने लोगों को कौमरेड

---

१ वैरागी धर्म स्वीकार करना। २ और कर्म।

होते देखा है। मोजफ्फरपुर के एक सोशलिस्ट नेता थे। उनका काम ही यही था—लोगों की ठीक-मौक काटना। अब में कैंची रख रहते थे। जाति के बामन थे। 'और हमको कौमरेड का माने सिखावे हो तुम?

लगता है बालदेवजी फिर बनकेंगे।

सबों ने एकमत होकर कहा 'हाँ कालीचरन बाबू, यह गलती तुमसे हो गई। आज तुम कीअर हो गए हो खुशी की बात है लेकिन हो तो तुम बालदेवजी के ही चेला! तुम मानो या नहीं मानो बात यानिब है!"

कालीचरन लजा जाता है। 'तब उस दिन सिकरेटरी साहेब जो कह रहे थे बाप-बेटा दोनों कौमरेड हो सकता है? 'बाप' सुनने में ही गलती हो गई। 'वह अपनी गलती मान लेता है—'हाँ अभिमन्यु-बध नाटक में अरजुन ने द्रुनाचारज के पैर पर झूम का तीर मारा था।"

वाह रे कालीचरन! अब बात समझता है! पहले तो बात समझने के पहले ही लड़ाई कर लेता था।

बालदेवजी भी हँसते हैं। कहते हैं 'सुराज उतसव के लिए तुम लोगों की पाटी की ओर से क्या हुकुम आया है?"

'ठीक है। सुराज क्या अकेले कौंगरेस को ही मिला है?

"सुराज उतसव के दिन रहोगे या नहीं?" बालदेवजी पूछते हैं।

"जरूर! उस दिन हाथी पर भारतमाता की मुरती बैठाकर जुलूस निकलेगा" कालीचरन गर्व से छाती फुलाकर कहता है। "अपने गाँव का जुलूस कटहा थाना में क्या हीन इण्डिया में फस्ट होगा। मुरती का ओडर दे दिया है।"

बालदेवजी की आँखों के सामने भारतमाता के विभिन्न रूप आ रहे हैं—
—माँ कपमती मायजी और लछमी।

'लछमी को हाथी पर नहीं बैठाया जा सकता है? 'भारतमाता का रूप? आजकल लछमी भी घड़ा, पहनती है, चर्खा कातती है। महीन सूत कातना तो वह पहले से ही जानती है।

जै! भारतमाता की जै!

दो

मुकदमा में भी सुराज मिल गया।

सभी संथालों को आमुल हौज[1] हो गया। धूमधाम से सेसन केस चला। संथालों की ओर से भी पटना से बारिस्टर आया था। बारिस्टर का खर्चा संथालिनों ने गहना बेचकर दिया था। बारिस्टर पर भी बारिस्टर हैं। यदि इस मुकदमा में तहसीलदार साहेब जैसे कानूनची आदमी नहीं जमते तो इस जूनी केस से खिदमतकरसिंह, रामकिरपालसिंह और बेलाबनसिंह तो हरगिस नहीं छूटते। खर्चा? अरे भाई! जान है तो जहान है। जब फाँसी ही हो जाती तो जमीन-जमीन रुपैया-पैसा क्या काम देता?

रामकिरपालसिंह ने संथाल टोली की नई बन्दोबस्ती वाली जमीन में से दस एकड़ तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद को लिख दी है। हाँ सुमरितदास बेचारे को भी चार कट्ठा जमीन मिली है। बेलाबनसिंह यादव को भी देन हो गया है। देन कैसे नहीं होता भाई पास में जितना कच्चा रुपैया था वह तो बन्धेजा साहब के पान-सुपाड़ी में चला गया। पुराना पटुआ हाथ से पहले ही निकल गया था। इसीलिए करीब डेढ़ हजार हपफेर पैचा हो गया है। तहसीलदार साहेब ने कहा रायत बनाने की क्या जरूरत है जब सन-पटुआ बिके तो दे देना।

मुकदमा उत्सव भी सुराज उत्सव के दिन होगा? हाँ सुराज उत्सव दिन में मुकदमा उत्सव रात में।

तहसीलदार साहब ने कहा है महमदिया की नौटंकी कम्पनी जितना में हो एक सौ दो सौ जो से अगर सट्टा करा लेना। सुमरितदास कहते हैं—"इसमें कनकसन है, पीछे बतावेंगे।"

महमदिया वाले भी पूरी तैयारी कर रहे हैं। नकसी से बाईजी मँगाया है चन्दा करके। नौटंकी के कम्पनी हैं मिठलरैन बाबू। लछमी महारानी ने उनको खूब निहारा है अपनी आँखों से ही निहारा है।

इस इलाके के मँझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूँजी हो गई, तम्बाकू पान पाट और सिंघी का बाध एक साल चढ़ गया पर में शादी-गमी नहीं हुई तो वह तुरन्त टनमना[2] जाते हैं। यदि मालिक जवान हो तो तुरत औन-पौन करने लगता है। हरमुनिया पर्दा शामियाना

---

१ आजीवन कारावास। २ मालिक। ३ तुमहाल हो जाना।

आखिर सैट पंच-सैट, पहाड़िया घोड़ा खम्पनी टेबल-कुर्सी बैंच खरीदकर घर लदा देता है। इससे भी जब परमी कम नहीं होती है तब बन्दूक के सैसन के लिए आफिसरों को डाली देना शुरू करता है। 'साल बाम मला के समय रात-रात-भर मुजरा सुनता है और दिन भर आफिसरों के साथ कचहरी में घूमता है। बन्दूक के सैसन के बाद नौटंकी कम्पनी बोलता है। इससे भी मगज ठण्डा नहीं होता तो कोई सूनी देख होकर समापयन्ति[1]। महमदिया के नित्तलरैन बाबू नौटंकी के कंपनी हैं। तहसीलदार साहब ने कहा है महमदिया की नौटंकी कम्पनी का सट्टा लिखा जाना चाहिए।

'बड़ा मारी कनफ्यूजन है जी इसमें! सुमरितदास बेतार कब तक पेट में बात रखे 'एकदम प्राइविट मप है। महमदिया वाला को क्यों बुलाया जा रहा है समझे नहीं? नौटंकी की बाई जी के बिलौज पर टका साटा जायगा। अब समझे कुछ?

संथाल कोम इस सुराज उत्सव में नाचेंगे। 'कहीं नाचने के समय तीर चला दें तब? नहीं नहीं डागदर साहेब बोलते थे कि संथालिनें खुद आकर कह गई है—नाचबो। तहसीलदार साहेब को भी इसमें एतराज नहीं होना चाहिए। 'माई जो भी कहो संथाली नाच देखते समय होश गुम हो जाता है। जूड़े में सादे फूलों के गुच्छे कसमकस देह उजले दाँत की पाँती की चमक! सफेद आँचल! जब झुमुर-झुमुर कर नाचने लगती है तो मन करता है नाच में उतर पड़ें।

दा डिगा दा डिगा!
दिं दिं ता दिन ता!

आज से ही वे परैक्टिस कर रहे हैं। लेकिन माँदर और डिगा की बोली सुनकर डर लगता है। हँसिरी के दिन तो ऐसा लगता था कि जमराज नगाड़ा बजा रहा है और जमदूत सब उसी ताल पर नाचकर तोड़ मचा रहे हैं।

---

१ समाप्त।

तीन

"खबरदार! परम जिलेबी मत खाना!"

आजकल सुमरितबास बेतार का बोलबाला है। हमेशा एक नई खबर! आजकल किसी भी टोले के नौजवान से भेंट होते ही वह खिड़ से हँसकर एक स्लिपी कर देता है 'खबरदार! परम जिलेबी मत खाना।

"माने?

'माने सुनोगे? परम जिलेबी का तासीर बड़ा गरम होता है। सर्दी से नाक बन्द हो सिर दुख रहा हो परम जिलेबी खा लो! नाक से नाक चुअ जायगी। इतना जल्दी असर करता है! 'आज हम डामडरी में जरा बिनाय[1] की दवा लाने के लिए गये थे। जानते हो? डामडर बाबू ने फुलिया—अरे वही मोहमूदास की बेटी फुलिया—का क्या कहा है? फुलिया को गरमी की बेमारी हो गई है। चेहरे पर फुसरी-फुसरी[2] गा हो गया है। डामडर ने कहा कि परैतिमा आओ। इसीलिए नौजवान लोगों से कहते हैं कि खबरदार! परम जिलेबी मत खाना।"

लेकिन बासजी! नौजवानों से पहले बूढ़ों की सँभालिए।

"चुप चुप! सभी बेपर्दे हो जायेंगे।

सुमरितबास बेतार जब खिड़ से हँसता है तो उसके दाँत मसूड़े दिखाई पड़ते हैं। साल हँसी-हँसता है बेतार! बेतार फिर खिड़ से हँसकर कहता है 'और कुछ मालूम है? महंथ रामदासजी रमपिसरिया को डासिन रखने। कोठारिन ने हुकुम दे दिया है। 'बालदेव तो कोठारिन के पीछे पैरवी ही हो गया।

कालीचरण का चेहरा अचानक उतर जाता है। 'अब मँगनी के बारे में तो कुछ नहीं बोलेगा बेतार? लेकिन बेतार जानता है कि कहाँ कैसी बात करनी चाहिए। बाद में उससे जीतना मुश्किल है।

चर्खा सेण्टर के मास्टरों और मास्टरनी में लड़ाई पक्की हो गई है। दुन दुनजी इस्तीफा देकर चले गए। दूसरे मास्टर साहब को सूल उखड़ गया देश चले गए। अब अकेली मंगलादेवी यहाँ चर्खा सेण्टर के नाम पर घर-घर में घूमती हैं बातें करती हैं गांधीजी की जयाहिरलाल की और सुराज की कालीचरण कहता है "हाथी पर भारतमाता की मूरती के पास बैठकर

---

१ खाद। २ दाने-दाने।

मुरक्कब[1] बुलाने के लिए मंगलादेवी को ही कहना चाहिए।

बालदेवजी तहसीलदार साहब से कहते हैं "लेकिन यदि अपने पाँव में औरत नहीं रहे तब बाहरी औरत से कहना चाहिए। यदि पाँव में ही मिल जाय! कमली दीदी ही क्यों न बैठेंगी ?

"नहीं कमली की बीमारी का बड़ा डर है। कब क्या हो जाये!"

'तब कोठारिनी जी से कहा जाय। सब तो लड़ाई पहुंचती है। खूब मेम-टेम भी करती है। रोज स्नान के बाद भरतमाजी की छाती पर फूल चढ़ाती है।"

क्यों मजा! मंगलादेवी का हाथी का बड़ा डर। हाथी को देखते ही उसका सब शरीर केले की भालर की तरह थर-थर काँपने लगता है। कालीचरन ने कितना समझाया-बुझाया 'अभय-मरोसा' दिया मगर तैयार नहीं हुई। आखिर में कहने लगी कालीचरन यदि साथ में रहे तब तो वह हाथी पर चढ़ सकती है। लेकिन कालीचरन को लाज हो गई, सामन। बोला —"छत!"

पुतरिया मा मनचला बात सोचता है। इधर-उधर देखकर मटकी[2] मारकर देह हाथ फैलाकर कहता है—"मंगलादेवीजी जब सीता सिंगार पहन कर निकलती हैं तो लगता है कि मोकनी हथिनी झूमती चली आ रही है।"

"हा हो हो हो! हा हा की की!

मीजोय! औ औ!

डॉक्टर साहब की घड़ी में ठीक दोपहर रात का 'टैम' देखकर टीन के करनाल में मुँह सटाकर कालीचरन ने हुक्का किया 'औ औ ए औ औ!"

इसके बाद जीजवानों ने दुहराया—"मारब आ पा ह!"

मठ पर घँघड़ी झिनक उठी—झिन झिन झिन झिनिक! बालदेवजी ने भावावेश में चौकीदार की तरह हाँक लगाई—"ह ह ह ह ह ह! भारत आजाद हो गया। ह ह ह ह ह हो य! महतमा गाँधी की जै!"

रि रि ता धिन ता!

धा धिमा!

संथाल टोली में भाँदर और धिमा बजना उठते हैं।

तू ऊ ऊ ऊ! मौसी शंख फूँकती है—तू ऊ ऊ ऊ!

साथ भाइल बलिहन कटिहार की चाँपों बड़ी-बड़ी सिलो के भीपे एक

---

१ चौकीदार। २ पलटी। ३ कमली। ४ अजान हथिनी।

साथ बज रहे हैं—'भौ औ भौं पू ऊ ऊ !" आवाज एकदम साफ सुनाई पड़ती है।

'दिल्ली' में बाँटबखरा करके सुराज मिल गया। मैं! मैं! इस रामपुर पाकिस्तान में रहूंगा या हिन्दुस्थान में? पाकिस्तान में? अभी पाकिस्तान में मारे खुशी के मलाकर गोड़ काट रहा होता। खैर, गोड़ ने क्या बिगाड़ा है? बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। बस ममसमान भी होते तो पाकिस्तान लेकर ही छोड़ता!

चार

भौ औ प! औ भौ!

कालीचरन का बक्सा बैठ गया। नारा लगाते समय माँझी की तरह गले से आवाज निकलती है—कोसी झाझे सोये सोये! सुबह से कॉमरेड वासुदेव और कॉमरेड सोमा जट बारी-बारी से नारा लगा रहे हैं। नारा बन्द नहीं हो सकी रहे—'अष्टयाम कीर्तन' की तरह! सुराज-उतसव जब तक खतम नहीं हो नारा बन्द नहीं हो!

टन टनाक्, टन टनाक्! सजाई हुई मोकनी हुचिनी बज रही है।

डम डम डमाँव डमाँव! कीर्तनियों का घड़ीपर बोल रहा है।

पू ऊ ऊ पू पू पू! घंटलाद।

भौं भा पौं! भा पा पौं! अमरेजी बाजा।

तक तक तक तक धिनाक धिनाक! अमहरा का झालखाक[1] बजा।

पी पी पी ई ई ई पी पी पी ! झालखोल वालों की पीपही बज रही है।

चाँदी बनियाँ साबिलो बरात ओ हा
एक लाख हाथी साबिलो दुई लाख घोड़ा
चार लाख पैदल दुलहा बाला लछिमर।

पीपही पर बिहुला नाच का बरात वाला गीत बजा रहा है।

पू पू पू पू पू पुपु पुपु! करताल[2] बोलता है।

हि हि हि हि हि हि हि! पहड़िया घोड़ा हिनहिनाया। किसका घोड़ा है?

---

१ एक तरह का बाजा। २ खंजरी जैसा। ३ सिंघा बाजा।

बरमनाथ बाबू का या हरि बाबू का ?

भारत में आयल सुराज
चल सखी देखन को

यह नया सुराज कीर्तन किसने जोड़ा है ? वाह ! एकदम ताजा माल है। सुनो सुनो !

कवि जे चढ़िय आयल
भारत माता
कवि जे चढ़ल सुराज
चलु सखी देखन को !
कवि जे चढ़िये आवेल
वीर जमाहिर
कवि पर गंधी महराज ! चल सखी
हाथी चढ़ल आवे भारत माता
डोली में बैठल सुराज ! चलु सखी देखन का
घोड़ा चढ़िये आवे वीर जमाहिर
पै द ल गंधी महराज ! चलु सखी देखन को !

वाह ! खूब कीर्तन जोड़ा है उधाड़ू दास ने ! उधाड़ दास को नहीं चीन्हते हो ? बारा मानिकपुर में घर है। वह भी सतलीस में ही सुराजी में है।

कू कू ! मोटकी हाथी ठीक ताल पर कैसा कूदती है ! वाह !

अलबत सजाया है हाथी को फिरंगबाल ने ! ठीक कपाल पर पुरैन[1] का फूल बनाया है—फुलखड़ी से। कितना रंग-टीप किया है। भारतमाता की मूरती तो ठीक पुरपा माई की मुरती जैसी लगती है ! लछमी सरस्वती पारबती-औरा और भारतमाता सब सगी बहन हैं। ओ। इसलिए ! बाल-देवजी देखते हैं—साड़ा खद्दर की साड़ी ! गले में फूल की माला ! खम्ब खम्बे घाटे बाल बिखरे हुए पीठ पर ! ठीक भारतमाता के ठोर पर कैसी हँसी है कोंगरिस वैसी ही हँसी हँस रही है और धीरे-धीरे मुरछल डुला रही है।

पिन तक तक तक तार पिनाधिन ! मठियाजी कीर्तन का बोल बोल रहा है—ताक धिनाधिन तिरक तिरक !

हाँ रे मोरी रे ए ए ए ! हाँ माँ माँ

---

१ कमल। २ जेल।

माँ आँ आँ मारो हे!
बहु कस्टे सू रा च पैका रे
मारऽअऽऽ खलास ओ रे
कोटि कोटि छइला पोयेछा
दिलो बो सि बान आ रे
हाँ रे मोगी रे ए ए ए! हाँ माँ माँ!

आएहो-हिंगना का मकतिया है बाब। खेल नहीं! सीतानाथ बाबू ने पूजा बोली[1] में कैसा मठियाही कीर्तन जोड़ा है देखो। सीतानाथ बाबू ने जोड़ा है कि उनका छोटका बड़ा महेश्वर ने? महेश्वर बाबू भी गीत खूब जोड़ते हैं सुना है।

झरक झरक झर झर्र र र र! एकपुरिया ढोल तो सब बाजा को मात कर देता है। सभी बाजा का 'सोप' लिया है।

डमाक डिमाक डिम! एकपुरिया ढोल के साथ एक छोटी ढोलकी बोलती है।

माँ आ च! आ आ!
"महतमा गांधी की जै!"
"जमाहिरलाल नहरू की जै!
'रजिमर बाबू की जै!
"जयपरकास जिन्दाबाद!
"यह आजादी झूठी है!
'देस की जनता भूखी है। 'यह नया लारा कौन लगाता है!
"ऐ! ऐ! नहीं हुआ।
"सुन लो पहले!
"आजादी झूठी। मारो साले को! कौन बोला!"
"जरूर गाँव का नहीं बाहरी आदमी है।
"ऐ ऐ! बाजा बन्द करो!"
"हटो! हटो!"
"ऐ कालीचरन! ऐ बासुद !
"बासदेव! शान्ती करो!
अरे! बात क्या हुई?

---

१ बंगला बोली पूरब की बोली।

"हर बात में ऐसे ही कोई 'लेकिन' लगायेगा य लोग ?"

"सुनिए तहसीलदार साहेब ! बात यह हुई कि" बालदेवजी भाव फिर बनके हैं 'बात यह हुई कि बाबू कालीचरण के पेट में रहता है कुछ और, और कहता है कुछ और ! हम इससे पहले ही पूछ लिये थे कि तुम्हारी पार्टी की ओर से क्या हुकुम हुआ है सुराज उत्सव के बारे में। तो बोला कि सुराज क्या सिरिफ कंग्रेसी को मिला है ! अभी देखिए, सुम-काम करके अब हम लोग जुलूस निकाला है तो बाहरी आदमी को मेंगाकर के हम लोगों के उत्सव को भंग कर रहा है। यह कैसी बात ! अरे भाई, हियना औरही का सोसलिस्ट है तो हियना औरही में जाकर अपने पांव का ढोल बजावे। यहां कांग्रेसियों को बोलने का क्या जरूरत था ? अपना मुंह है—बस बजा दिया ढोल—यह आजादी झूठी है !"

ठीक बात ! वाजिब बात ! जनता एक ही साथ कहती है।

"आर्ये सर्वे सोर्ये —" कालीचरण क्या कहता है, समझा भी नहीं जाता है।

"अरे हां हां गल्ती हो गई !" कॉमरेड वासुदेव समझा रहा है। मानो कालीचरणजी की बात को जोर-जोर से सुना रहा है—"अरे गल्ती हो गई। यह नहीं जानता था। चमड़े की जीभ है, लटपटा गई। कालीचरणजी का इसमें कोई दोष नहीं !

यहां के सोसलिस्ट पार्टी वाला को भी यह बात अच्छी नहीं लगती है। दूसरे गांव से आकर यहां नारा लगाने की क्या जरूरत थी ? कालीचरणजी का गला बन्द था तो वासुदेव और सामा तो नारा लगा ही रहे थे। बीच में कुटमली छांट कर सब बड़बड़ा दिया।

'अच्छा ! अच्छा ! माफ कर दो !"

"हां हां छाड़ा ! आज सुराज का दिन है।

टन् टनाक टन टनाक ! मौकमी हविनी फिर चली। जुलूस आप बढ़ा ! सभी ढोल-बाजे एक ही साथ बजने लगे। डिम् डिम् झर झर पी ओ यू ऊ तक तक धिन।

धा धों धू धू—ताक धिन धिन !

कूई कू ! कूई कू ! मोक्षमी हविनी ताल पर कूदती है।

बालदेवजी फिर बनके हैं क्या ? हाथ - ंग लेकर सब हाथी के भाव-भाव नाच रहे हैं। झण्ड को इस तरह मांजते हैं मानो गांट साहेब रेलगाड़ी को सजी दिखला रहे हों ! हां भाई, सुराज का असल हकदार है

तेरंगा झण्डा। पहले के जमाने में तलवार से लड़ाई होती थी इसलिए लोग हाथ में तलवार लेकर नाचते थे। युद्ध की लड़ाई का हथियार अच्छा है। इसलिए अच्छा नचा रहे हैं बालदेवजी। उसके हैं नहीं। जिसका जो हथियार!

फिर्र र र धन धन धड़ाम धा धड़ाम धा! गोदकी का नगाड़ा बोल रहा है।

"आज तो दिन से ही खाते-खाते मन अब गया है। ऊपर बेरी तो आगे में जगह नहीं मिलेगी। चलो बस्ती!

फिर्र र र धन धन धड़ाम धा धड़ाम धा!

मरे किस्सा होता सुख अब सुनहु पंच भगवानों की
बांधी महतम वीर जमाहिर करे सदा कल्यानों की!

फिर्र र धन धन धड़ाम धा धड़ाम धा!

"कौन बेला होगा? क्या कहा? मस्ताना भगतसिंह! वाह! बड़ी आकर रंग जीत किया। दिन से पूछते थे तो बोलता था कि सुल्ताना डाकू का पाठ होगा।

जिसका जो हथियार! भगतसिंह का पाठ खूब लिखकरैस बाबू लिखे हैं। बाहिने हाथ में पिस्तौल है और बायें हाथ में बेल के बराबर गोल क्या है? बम! अरे बाप! हाँ जिसका जो हथियार! भगतसिंह का हथियार तो बम-पिस्तौल ही था।

फिर्र र धन धन धड़ाम धा!

अजी बेटा हम मारबे बतन आरब का
हमें डर नहीं फाँसी सूली का!

फिर्र र फिर फिर धड़ाम धड़ाम धड़ाम!

भगतसिंह नाच रहा है। एक हाथ में बम और दूसरे में पिस्तौल। नाचकर स्टेट[1] के एक कोने से दूसरे कोने पर आता है। खूब नगाड़ा बजाता है नगड़ची! ठीक पन्नालाल कम्पनी के तरह! इटहरा का नकलची है। और कौन ऐसा साफ हाथ बजावेगा! सिर्फ ताल काटने के समय जरा डर लगता है। ताल काटने के समय धड़ाम धा धड़ाम धा ताल पर भगतसिंह बम वाले हाथ को दो बार पश्चिम की ओर झमकाता है मानो बम फेंक रहा हो। और जब-जब वह ऐसा करता है आम में बैठ सभी लोग जरा घबरा कर हट

---

१ स्टेज।

एक-दूसरे की पीठ के पीछे मुंह छिपा लेते हैं। कौन ठिकाना कहीं इधर ही फेंक दे तब? कभी मकड़ी तलवार से देह नहीं कटता है क्या? तब नकली बम हो चाहे असली हाथ से छूट जाने पर कुछ-न-कुछ धमेज तो करेगा! अरे नकली की बाई जी कहाँ है? उसको सामने लाओ! झोली में क्या छिपाकर रखा है? ताली बजाओ, तब निकलेगी।

"आ गई! ऐ, देखो नकली की बाईजी को!"

"आकर चुपचाप खड़ी काहे हो गई?"

"गला से तो जरूर पकड़ी जायेगी। खाने तो दो जरा!

"रोदन-सौदर लगाकर खूबसूरत लगती है। दिन में देखना अपरी की पेंदी की तरह।

'हो हो हो! साला दुखरिया बात बनाने जानता है।"

बाई जी शुरू करती है

आवी के चुनरिया रंग दे छापेदार रे रंगरेजवा
बहुत दिनन से सावन का मन हमार रे रंगरेजवा!

धम धड़ाम धड़ धड़ाम!

"नाचती है तो नाच, दाँत विचकाकर हँसती क्यों है?"

'ए राम! दाँत और ठोर तो एकदम काला भुजुंग है!"

"अजी दाँत नहीं काबली अनार के दाने हैं दाने?"

हो हो! हो हो! वाह ठीक कहा दुखरिया ने!

बाईजी गा रही है

कहीं पे छापो पंची महतमा
चर्खा मस्त चलाते हैं
कहीं पे छापो वीर जमाहिर
जल के भीतर जाते हैं।
अँचरा पे छापो झंडा तेरंगा
बाँका सहरवार रे रंगरेजवा!

किर् रि रि रि रि धड़क धड़क-धड़क-धड़म वा धड़म वा!

अजी अँगिया पर छापो।

ऐ! ऐ! वाह! हो—हो! वाह वाह!

"साटो इसके बिलोज पर टका!" एक आवाज आती है।

"कहाँ साटो?"

"अरे टका मत बोलो मिडिल बोलो मिडिल। देहाती की तरह काहे

बात करते हो। चाँदी की चकती को 'मिडिल' कहते हैं।"

'सुनो मंगलसिंह फिर काहे स्टेट पर आया?

'प्यारे भाइयो आप लोग हल्ला मत कीजिए । अब एक बाता होगा —'मोरा बाँका सिपैहिया टट्टू से गिरा जाय'।"

"अरे सचकर काहे झाड़ता है? बजाओ नगाड़ा। रात-भर का सट्टा है। तेरी सिपैहिया की ऐसी-तैसी! खेला सुरू करो!"

'हाँ ये लोग तो यही चाहते हैं कि इसी तरह रिंग-रिंग में ही रात काट दें। साधो!"

"ए! पंचबैट में हवा दो! भुकभुका रहा है!"

"हवा क्या देना आँधी आ रही है। पानी भी बरसेगा।"

फिर धन धन धड़ाम या धड़ाम या! नगाड़ा बनबनाया।

गुड़ गुड़म! आसमान में बादल घुमड़े।

फटाक! पटाखा फूटा।

अजी मंगलसिंह है नामी इनमें सरदार
अजी करना है उसको गिरिफ्तार!

फिर फिर धन धन धड़ाम या!

मारो साले को! यही साला सब असल बेदबुरोहित है, पहचान रखो।

'मारो! मारो! रे मार साले को!"

'हो हा! हो हो!" आँधी आ रही है सावन । गाय-बैलों को घर से निकालकर बाहर करना होगा। कुम्हड़ा में आग छोड़कर ही जलावन खोज आती है। बहुत खराब भावत है। आग रखती है हुक्का पीने के लिए। ऐ चलो । बाँस-फूस के घर का क्या ठिकाना! आँधी आई, उड़ा के गई। बरखा हुई तो टपकने लगी और चिमनी भी कभी उड़ी तो सोहा! चला। क्या देखेंगे अब नाच! कटिहार की पतुरिया माल का उठा आया है और कहता है कि नचनी की है। चलो!

गुड़गुड़ म! गुड़गुड़ म!

कमला को डॉक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया है! तीन बजे रात में ही संथाली नाच देखने अस्पताल आई थी कमली! नाच खत्म हो क्या शाम हो कर ऊपर नौटंकी कब शुरू हुई, कब खत्म हुई, आपस दोनों में से कोई नहीं बता सकता। जब बादल गरज बिजलियाँ चमकीं और हर हराकर वर्षा शुरू हुई तो कमली को डॉक्टर ने अपनी बाँहों में जकड़ लिया।

कमली ने बाँहें छुड़ाने की एक हल्की चेष्टा की।

बिजली चमकी।

पुड़गुड़ म! पुड़गुड़ म!

रि रि ता धिन ता!

डिग्गा डा डिग्गा!

संथाली नाच के मांदर और डिग्गा के ताल पर दोनों की पुकबुकी चल रही है। छम्म छम् आज कमली इस इलाके में पहने जाने वाले सभी किस्म के गहनों से लदी है। बाँक हँसुली बाजू कँपना मनन्त चूर, झाँझनी अर्थात झुनुक-झुनुक बजने वाली बेड़ियाँ जिसे 'झाँझनी-कड़ा' कहते हैं! और चूर तो देह के सिहरन पर भी खनकते हैं—दुन दुन!

दुन दुन!

छम् छम्!

मुदमुदम!

छम्म छम्! छम्म छम्!

दुन दुन!

डाँक्टर! डाक्टर! ओ! प्रशान्त महासागर!

राजकमल!

पाँच

बावनदास को अब अपने पर भी परतीत नहीं होता है। बालदेवजी कहते हैं—चित्त चंचल हो गया है बौनदास का और थोड़ा 'भरम' भी गया है। बस सिरिफ गांधीजी पर भरोसा है बावन को। बापू सब पारख मार्केंगे! बहुत-बहुत कठिन परीक्षा में बापू अकेले सब को सँभाल लेंगे। बै! बाबा! बापू!

लेकिन उसके दिल में न जाने क्या समा गया है कि हर बात का परतख रूप ही पहले देखना है। सन्देहात्मक दृष्टिकोण से ही वह सारी दुनिया को परखता है। बापू ने चिट्ठी का जवाब दिया है

"भगवान् बावनदासजी। आप ही धीरज छोड़ देंगे तो मनखपों का क्या होगा? बापू के प्रणाम!"

बावन कड़ेसी हँसते हुए कहता है "गंधुलीजी! बापू को देखिए। अब हम क्या करें? मन में सन्देह होता है, दिल उदास हो जाता है। फिर आदमी को अपने काम पर भी विसवास कैसे हो? बापू से पूछते हैं तो खिल्ली में ही टाल देते हैं। लिखते हैं कि आप धीरज छोड़ दीजिएगा। अरे! छोड़िया रे! जनम-जनम धक्का करके ठगा कभी रामअवतार तो कभी किसना औतार और "

"कभी बावन अवतार!" बंधुलीजी चट से कह देते हैं।

"धत्! आप भी तो 'हो-हो-हो!" बहुत दिनों के बाद आज ही बावन ऐसा दिल खोलकर हँसा है।

बावनदास जब दिल खोलकर हँसता है तो उसकी आँखें खुद-ब-खुद बन्द हो जाती हैं, और तब ऐसा लगता है मानो एक बड़ा-सा सेलुलाइड का खिलौना हिल रहा हो। बावन अवतार!

रावन अवतार! यह चलित्तर रावन का औतार बनकर आया है भाई सुने हो या नहीं हुसनमंज के हरखू तेली के घर में डकैती हो गई!

'आँय! कब? पुरुब उतसव की रात में ही? बन्दूक वाले थे? बवेल तो नहीं हुआ कोई? 'हो खून? एँ?

सुमरितबास बेतार अभी पुरब कछियारे से आया है।

"बात यह है कि हुसनमंज के हरखू तेली की कंजूसी के बारे में तो सभी जानते ही हो! चलित्तर करमकार, या भगवान् जाने कौन था सो एक दिन ठीक दोपहर को उसके दरवाजे पर आया। पानी पीने के लिए माँगा तो सुनते हैं कि पैसा माँगा। लेकिन सहुआइन कहती है, दूकान पर बरुपान करके हाथ-मुँह पोंछ के आने लगा तो हम पैसा माँगा। सोचा कि तुम्हारे यहाँ एक गिलास पानी पियेंगे तो पैसा माँगोगी? भाई, हम भी सुनती-उड़ती बात कहते हैं खाँटी हाल एक-दो दिन में खुद मीट हो जायगा। सुनते हैं कि पुरुब उतसव की रात में एक दर्जन लोगों को लेकर, पहड़िया घोड़ा पर सवार होकर आ गया। आते ही बोला—कहाँ सहुआइन! पूड़ी बनाओ!

'नहीं बनाएगी कैसे? हाथ में रैफल-बन्दूक लेकर दो-दो आदमी सहुआइन के अगल-बगल में एकदम तैयार। हरखू साह को चारों ओर से घेरकर चौकी पर बैठाया और कहा कि रमैन पढ़ो। बाद में दो आदमी चले गए, लोगों से कहा कि हम लोग हरखू साह की लड़की को देखने आये हैं। सुबह होते होते सब काम फिनिस! जहाँ-जहाँ मिट्टी के नीचे गड़ा गाड़कर रखा था सब खोद लिया। एक जगह खोदकर गिनता था और हिसाब करके कहता

था—'नहीं और है। बताओ बुड्ढे! नहीं तो चढ़ावो इसको सूली पर, डालो ऊपर से किरासन तेल। सहुआइन तो रात भर पूड़ी छानती रही और मिठाई बनाती रही। सुनते हैं, सहुआइन बीच-बीच में कहती थी—'ऐ बेटा! तीरथ करे खातिर कुछ रख भी है, कुछ छोड़ बिहुड़ ।' उसको एक हजार रुपैया दे दिया। 'हरखू साह को कहा कि तुम आठ साल से एक ही धोती पहन रहे हो, तुमको रुपये की क्या जरूरत है? 'जनाना लोगों को देह पर हाथ भी नहीं दिया, सुनते हैं! मगर जाते-जाते दो खून कर दिया।"

सुमरितदास बात करते-करते चारों ओर देखते हैं। क्यों? कहते कहते रुक क्यों जाते हैं? आज फिर से हँसते भी नहीं हैं। मुँह बड़ा चटपटाया हुआ देखते हैं। क्या बात है? ऐसा तो कभी नहीं देखा? 'सुनते हैं सुनते हैं' की झड़ी लगाये हुए हैं। आखिर असल बात क्या है?

"अरे दासजी! कोई प्राइवेट बात?"

'नहीं प्राइवेट बात कुछ नहीं है! 'बंपा हो रहा है। सुनते हैं कि किसी फलकत्ता नहली पटना सब जगह हिन्दू-मुसलमान में लड़ाई हो रही है। घाँव-के-घाँव साफ! 'आप क्षमा देते हैं।" सुमरितदास हाथ में लोटा लेकर दिसा-मैदान की ओर चले जाते हैं।

'बालदेव अनसन करेंगे। क्यों क्या बात हुई इस बार? बालदेव जी कहते हैं, "पियारे भाइयो! हम अभी डाक्टर साहेब के बेतार में खबर सुनकर आ रहे हैं। अँधेर हो गया। एकदम सब पगला गए हैं, मालूम होता है। गांधीजी खिलाफत के जमाना से ही कह रहे हैं—हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई हैं। तैयारीजी भी गीत में आज से पचास-बीस साल पहले कहिन हैं

अरे, चमके मन्दिरवा में चाँद
मसजिदवा में बंसी बजे!
मिली रहू हिन्दू-मुसलमान
मान-अपमान तजो!

" 'सो, गांधीजी की बात काटकर जो लोग यह सब अँधेर कर रहे हैं वे भी एक दिन अपनी गलती मान लेंगे। 'गांधी जी अनसन करेंगे सायद। 'आजकल नूर्बाखाली गये हैं। अभी बावनदास आया है पुरैनियाँ से। बोलता है कि गांधी जी ने रामसाज बाबू को नूर्बाखाली बुलाया है। गांधीजी ने सिवनाथ चौधरीजी को चिट्ठी दिया कि सतीस में गांधी आसरम में जो आदमी पुरैनियाँ से आया था उसको नूर्बाखाली भेज दो। रमै। प्रेमा।

'रामजस बाबू जब गा-गाकर रमैन पढ़ने लगते हैं तो सुनने वालों की आँखों से यह खून ही लोर बनकर टपकने लगता है।"

बोधनी काका आजकल बहुत चुप रहते हैं। फिर भी इतनी बड़ी-बड़ी घटनाओं पर वह कुछ नहीं बोलें यह कैसे हो सकता है? उनकी राय है कि यह सब सिर्फ सुराज का नतीजा है। जिस बालक के जन्म लेते ही माँ को पखा पात हो गया और दूसरे दिन घर में आग लग गई, वह आगे चलकर और क्या-क्या करेगा देख लेना। कलियुग तो अब समाप्ति पर है। ऐसे-ऐसे ही लड़ झगड़कर सब खेप हो जायेंगे।

अब लोग सोशलिस्ट पार्टी ऑफिस में भी दरखास-फरियाद लेकर आते हैं। चुमरतीं मिसी रोता हुआ आया है। सुमरितदास ने उससे पाँच रुपैया छीन लिया है। "काली बाबू! जुलुम अब गरीब लोग कैसे रहेंगे?

"अच्छा-अच्छा! आज शाम को यहीं पार्टी आफिस में रहिए। रात में हम आपकी पंचैती कर देंगे। कालीचरण विश्वास दिलाता है।

'कॉमरेड वासुदेव! सुमरितदास को बुला लाओ तो।" शाम को कालीचरण मुद्रा बनाये हुए हैं।

मच् मच् मच्! वासुदेव कल पुरैनियाँ से लौटा है। भाटा कम्पनी का जूता खरीदा है चौबीस रुपये में। चलने के समय मच् मच बोलता है। रात में भी आँख पर धूप-छाँहा काला चश्मा लगाकर, पैजामा-कुर्ता पहनकर, जूता मचमचाकर चलने के समय घोड़ा लदा जैसा लगता है। परेड करते हुए चलने का मजा आ जाता है। वासुदेव स्टेशन पर पान-बीड़ी-सिकरेट वालों की तरह बात को ऐंठकर आवाज गयरी करके पुकारता है—"सो म रे ट ई स!"

सुमरितदास की पिन्ही चमक गई होगी! वासुदेव मन-ही-मन हँसता है—"स् यो म रे ट ईस!"

एक छोटी-सी छपरी में फिर छिपेंगे बाबजी! वासुदेव ने पहले ही देख लिया है। वह उसे हाथ पकड़कर बैठाता है। सुमरितदास थर-थर काँप रहे हैं। 'ह जो र, दुहाई!"

"बेकार, घबराइट है!" वासुदेव हँसते हुए कहता है।

"को कौन बा वासुदेव? हेन्! हम समझे कि दारोगा साहेब हैं। वाह! खूब रूपया! अलबत बोली सीखे हो बाबू! होनी ही चाहिए। देस-बिदेस घूमते हो तुम लोग। किसने बुलाया है? कालीचरन ने? अच्छा एक बात बहुत दिन से पूछते-पूछते भूल जाते हैं। कहो तो तुम्हारी पार्टी में भी दो पार्टी है क्या?

"काहे ?"

"पहले बताओ तो सुमरितदास फिक् से हँसता है।

"नहीं पहले आप बताइए" वासुदेव कम जिद्दी नहीं।

"यही कालीचरन एक दिन बोल रहा था कि सिकरेटरी साहेब वासुदेव पर बिसवास नहीं करते हैं। हम बाबू कि वासुदेव में तो कोई डिफ्ट नहीं था बाबा कि बाबूजी आप क्या जानिएगा भीतरी बात। इसीलिए पूछते हैं कि "

"अरे हाँ-हाँ बाबजी, हम समझ गए। असल में कालीचरन है धरम पुरीजी की पाटी का। धरमपुरीजी भी सोसलिस्ट पाटी में ही हैं मगर हमारा सकरेटरी साहब के सामने वह कुछ नहीं हैं। एकदम ठंडा सभाव का आदमी है। सभी से हँस-हँसकर बातचीत कोंग्रेसिया के साथ बैठाकर दुकान में यही चूल्हा पाते हैं। अब सोचिए कि यह फलहार करने वाला आदमी इस किरानी पाटी में कैसे ? आप ही सोचिए बाबूजी !"

"ओ! ओ ओ! यह बात है? सुमरितदास गम्भीर होकर कहता है—"बाजिब बात है।"

"हाँ और यह कालीचरनजी उन्हीं की पाटी में है। फिर फिस-फिसाकर कहा "मंगलादेवी के साथ आजकल ऐसा रसलीला होता है कि क्या कहूँ।

"यही सब बात हम सिकरेटरी साहब बाबू। कालीचरन को सिकरेटरी साहेब ने डाँटा है। इसीलिए ऐसा बोलता होगा। देखिए न! इसी बार मेला अगेया सम्मेलन में आने के समय।"

"ओ-ओ-आ। हाँ भाई! हर जगह यह पाटीबंदी ठीक नहीं। लेकिन कोहिर एक हद है। धरमपुरीजी के बारे में तुमने जैसा कहा वैसा आदमी किरानी पाटी में कब रह सकता है? बाजिब बात! असवत बोलता है तुम्हारा सिकरेटरी किसनकान्तजी—धरमापरम! बोलने के समय बाँह जब मरोड़ता है तो लगता है कि । अच्छा हाकिम का परवाना क्यों जारी हुआ है? क्यों गुलाहट है?

"अरे यही घुमरासी मियाँ ने न जाने क्या-क्या कहा है जाकर। बोलता था कि खैया छीन लिया है। वासुदेव ओठ पर काला चश्मा चढ़ाते हुए कहता है" "मुसलमानों का क्या बिस्वास ?"

"समझो जरा !" सुमरितदास फिक् से हँसकर कहता है, 'समझने की बात है !"

"मैं जाकर कह दूँगा कि घर पर नहीं है। कोई सार साहब नहीं है जो

लोग हाथ बाँधे खड़े रहेंगे। हम किसी का परवाह नहीं करते।" वासुदेव पैकेट से सिगरेट निकालकर दिवासलाई के डब्बे पर ठोंकता है— "दिन-भर हम खेतवर झाड़ते रहे हैं सिगरेट मत पिओ अंडा मत खाओ। और भीतरे भीतरे ।" वासुदेव माचिस जलाकर सुलगाने लगता है।

दिवासलाई की रोशनी चश्मे के दोनों शीशों पर चमक उठती है। काले चश्मे पर जलती हुई माचिस! सुमरितदास के सारे देह में एक सिहरन दौड़ जाती है, रोयें खड़े हो जाते हैं। लेकिन वह हँसते हुए कहता है, "डूबकर पानी पिओ एकादशी का बाप भी न जाने।

"हूँ! वासुदेव धुएँ का गुबार छोड़ते हुए खाँसता है।

ताड़ की महक! सुमरितदास की आँखें चमक उठती हैं, "वासुदेव बाबू कुछ नेपलिया माल आया है क्या? चरा हमको भी तो चखाओ!"

"ओल रैट कठ चखावेगा। साठ सलाम!"

मच् मच् मच् मच्।

छः

तंत्रिमाटोली में आज बमाबम[1] पंचायत हो रही है।

बहुत दिनों की बन्दिश है कि पंचायत में कोई भी घर की बोली नहीं बोलेगा। काहे-कूहे, याने कचहरी मोयमाही[2] जितना बोल सको अच्छा है। पंचायत में कोई हटा नहीं सकता। कौअमानों के दल ने रमपियरिया के बासिन होने का घोर विरोध किया है।

"खेल बात है? जात है कि ठट्ठा है? अब जिसका मन हुआ किया की रखैलिन बन गई, बासिन बन गई, रंडी बन गई?" आज परम भी गरम होकर बोलता है।

पंचायत में सबों को बोलने का हक है, इसीलिए बमाबम पंचायत हो रही है।

"कहाँ है रमपियरिया की माय?"

सबों की निगाह टट्टी की आड़ में खड़ी औरतों पर जाती है। रमजूदास

---

१ गरम। २ कचहरी में बोली जाने वाली उर्दू।

की स्त्री ललकारकर गला साफ करती है, "रमपियरिया की माये को क्या कहते हैं ?"

"तुम मत बोलो !"

'बात न बोले बोले मूसा टन !"

"हम बोलेंगे ही ! रमबूदास की स्त्री उठ खड़ी होती है। लगता है आज मारपीट भी होगी।

"कहाँ उचित और मोछे ! छड़ीदार काहे बने हो ?"

"हाँ मारने कहो छड़ा। जो न छड़ी से पीटे वह धोबरा का बेटा !

'रमपियरिया की माये के मुँह में बोली नहीं है तो आज धोबी का भी मुँह सूखा है ! 'रमपियरिया जवान है, उसके जो जी में आवे कर सकती है। पंचायत में तो बड़ा फड़फड़ करते हो बरमू रमपियरिया तो तुम्हारी भतीजी लगेगी न ? बोल बोल दें बात ? 'साप बटे का बाप है जीतन इससे पूछिए कि रमपियरिया के माये के मचान पर दिन रात भूख-पियास भूलकर पेट के बल क्यों पड़ा रहता है ? यही सिलाफ है ? अरे-जवान लहान की बात हो तो कहा जा सकता है कि एक दिन पैर भैंस' गया। इस बुर-बुर बुढ़े की यह चाल !"

"चुप रहो। ऐ ! चुप ! कहाँ जीतन ?

"सिर में तो अब एक भी काला बाल खोजने पर मिलेगा नहीं और यह लैजी ? 'काहे की जीतन क्या कहती है रमपियरिया की माये ?"

जीतन का तोतरहवा' बेटा बरम हो जाता है, "मूँ सम्हाल कय बोलो !"

"मारो ! मा पकड़ो !

"ऐ ! ऐ !"

"जयामो बले में कपड़ा ! मारो झाड़ ऊमर से ! 'साप दिखाता है !"

मोछे और उचितदास छड़ीदार हैं। पंचायत जब गमागम होने लगती है, तब ये दोनों छड़ी हाथ में लेकर नचाते रहते हैं। मोछे और उचितदास जीतन को पकड़कर गले में कपड़ा लगा देते हैं। मेंहदूदास चेचक मुतहरू, मनपू और मोतन बीच-बिचाव करते हैं— मारो मत !"

"सभी बूढ़े एक तरफ हैं" एक मालिन आती है।

सब रमपियरिया की माये के बदले जीतनदास की पंचैती होती है। छिः छिः ! आज से डूब मरने की बात है ! इस बार पाँच ही रुपैया जरिमाना

---

१ बहक जाना। २ तोतला।

हुआ। सस्ता छूट गए!

छीतनराम को पाँच रुपया जुर्माना हुआ है और उसके तानरहवा बेटा को पाँच बार कान पकड़कर उठन-बैठने की सजा। मानो गिनता है—"एक दो तीन चार पाँच—बस!

रमपियरिया की माय का एक साथ सोच देना होगा। महंथ साहब आज रुके हैं ना मात्र। क्या कहती है रमपियरिया की माय? देवी?

तब ठीक है। बोलिए, पंच-परमेश्वर क्या विचार? जो बस का विचार!

इस का विचार ही क्या—रमपियरिया शासन बन सकती है। जाति की बन्दिश में अगर ढील देना से सब गड़बड़ा जाता है। इसी तरह बराबर पंचायत होती रहे तब तो? अभी यह मोड़ तो फोरफट में चला जाता हाथ से।

रमजू की स्त्री रमपियरिया की माय के आँगन में बैठी समझा रही है रमपियरिया को—'अब दूध की छाली और माछमोग देखा जाकर आँख पर चरबी चढ़ जायगी तब मौसी न। पहचानोगी भी नहीं। महंथ से कह देना थोड़ा साड़ी से काम नहीं चलेगा। यही लिखान से बाकी मोजर नहीं होगा।

'कटमर' लेकर छोड़ेंगे।

रमपियरिया हँसती है—"उनका तो कहेंगे करेंगे। मगर कोठारिन

'कैसी पगली है रे! कोठारिन यह कैसी? अब तो कोठारिन तै है। इसी मुँह से मठ पर रहेगी रे? रखमिनियाँ को कम मत समझो। उसका अहर चौका यदि नहीं उखाड़ सकी तब तो तुम्हारा महंथ सब दिन खंजड़ी बजाकर फटकनाथ भिखारी गाता रहेगा। पगली! इसी सूरमुँह से

"सुनती है रे! रमपियरिया! कहाँ गई उठकर? मालिक महंथ आया है। उसकी माँ पुकारती है।

'साहब बलपी हो महंथ! पिछवाड़ में अब काहे छिपे हो? अब तो तुम अपने आदमी हुए इधर आओ! रमजू की स्त्री आँख टीपकर मुस्कराती है।

महंथ साहेब रमपियरिया के साथ बेलाबाड़ी से निकलकर आँगन में आते हैं।

"पीढ़ी दो रे! बैठिए।

---

१ कम्बल, एक गहना। २ विश्वस्त।

"जात बाके तो मात मौन रहे है। हमने ना कहल जिया है। रमपियरिया का माय पिसम फूंकते हुए कहती है।

"लछमी से पूछेंगे महंथ साहेब आँखें नीची करके कहते हैं। रमपियरिया की मायें अब उनकी साथ है। साम के सामने बरा सिहाब से बातें करनी चाहिएँ।

'क्या बोले? रमजू की स्त्री फटे कनस्तर की तरह झनझना उठती है, "लछमी से पूछेंगे? रमपियरिया की मायें! सुनती हो? हम कहा था न उसने तो इनको भेंड़ा बना लिया है। अरे, महंथ साहेब। लछमी कौन होती है जो आप उससे पूछियेगा?

"नहीं वह बोली है !"

'महंथ साहेब बुरा मत मानिएगा माय हिजड़ा है।" रमजू की स्त्री जाने के लिए उठकर खड़ी होती है, "रमपियरिया को लछमिनियाँ की सौदी बनावेंगे महंथ साहेब हम सब समझ गए।"

"नहीं नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। रमपियाड़ी जो कहेगी वही होगा।" रामदासजी के दोनों हाथ जुड़ जाते हैं।

" 'रमपियाड़ी जो कहेगी !" महंथ साहेब हर बात में अब कहते हैं—"जान रमपियाड़ी।"

"रमपियरिया क्या जानती है? लछमी कुढ़ जाती है, "साल-भर तो उसे मठ के नेम-टेम सीखने में ही लग जायगा। हाथ की सभी अँगुलियों का सही-सही गिन भी नहीं सकती है और उसके पास धन मजूरी का हिसाब है। सतगढ़ हो सतगढ़ हो !"

जिस दिन से रमपियरिया मठ पर वासिन होकर आई है, लछमी का मुँह होली की तरह लटका रहता है। 'महंथ रामदास सब-कुछ समझते हैं। रमपियरिया को मजूरों की मजूरी का धान नापने को कहते हैं महंथ साहेब। "नहीं जानती है हिसाब-किताब तो समझा दो। सिखावेगी-पढ़ावेगी तो कुछ नहीं बस धामी बनकर आड़नी रहेगी!

"मैं बनकर आड़नी हूं? सतगुरु हो! मुझे अपने पास बुला लो प्रभु! अरे, अभी उसकी देह में एक मन लाबून घेंसी तब कहीं उसके सरीर में प्याज लहसुन की गंध कम होगी। मोर का उठना सिखाओ। मुँह तो कभी धोती भी नहीं है। बीड़ी पीती है। डोमटोला से आकर नहाती भी नहीं है। जूठे हाथ से बीजक उलटती है। मैं क्या सिखाऊँगी-पढ़ाऊँगी? तुम क्या कहते हो? आँचल में चाबी मन्तरपे बिना कुछ नहीं सीख सकती तो मा न चाबी अपन भण्डार

की। मुझ चाबी लटकाने का शौक नहीं है। जानते हैं सतगुरु!" लछमी हाथ से चाबी का गुच्छा फेंक देती है।

महंथ रामदास देखते हैं, यह तो सिर्फ कोठरी-घर की चाबी है। संदूक की चाबी कहाँ है? "चाबी काहे फेंकती हो? बात-बात में इतना गुस्सा होने से कैसे काम चलेगा?" महंथ साहेब गम्भीर होकर कहते हैं "तुम मेरी घरवाली हो! रमपियाड़ी को रास्ते पर लाना तुम्हारा काम है।"

"देह का मैल भी मैं ही छुड़ाऊँ? कपड़ा मैं ही साफ कर दूँ? बस दिन भी नहीं हुए हैं महीपर[1] की दीवाल पर थूक-बलगम की ढेरी लग गई। बदबूदार बीड़ी के टुकड़ों से घर भरा हुआ है। यह भी मैं ही साफ करूँगी? अब यह मठ नहीं सूअर का खुहार है खुहार।"

"तुमको रमपियाड़ी के देह का मैल छुड़ाने के लिए कहेंगे? हम पागल नहीं हैं। तुम बाबू बालदेव की पर्दन की मैल छुड़ाओ। महंथ रामदास क्यों छोड़ देंगे? सच्ची बात तो लोग अपने बाप के मुँह पर भी कह देते हैं।

"बालदेवजी का नाम मत लो।"

"क्यों नहीं लेंगे? मठ को सूअर का खुहार बनाया कौन?"

"मैंने बनाया है?

"हाँ तुमने बनाया है। मेरा भीतर जल रहा है। बात मत बढ़ाओ!"

"भीतर जलता है तो मारकर ठण्डा कर लो।"

मारपीट का नाम सुनकर बालदेवजी कैसे चुप रहें! हिंसाबाद का डर है! "महंथ साहेब! कोठारिनजी! शान्ती! शान्ती से सब बात कीजिए!"

"अहा-हा! कोठारिन रे कोठारिन!" रमपियरिया को बचपन से ही झगड़ने की तालीम मिली है। वह किवाड़ की आड़ से निकल आती है और हाथ चमका चमकाकर कहती है—"रोज आध पहर रात को कोठारिन की कोठरी खुलती है। संदूक की चाबी कहाँ है? खुहारघर में है क्या? सब तो बैंच-बाँचकर छुट्टी कर दिया।"

लछमी के नथने फड़कने लगते हैं। लगता है किसी ने बाँस की पतली छड़ी से उसकी पीठ पर सपाक से मार दिया। "बारह बजे रात को कोठरी खुलती है! सब बैंच-बाँचकर छुट्टी कर दिया! सतगुरु हो किस पाप का डंड दे रहे हो प्रभु?

"रामदास! अपनी केलसियारी[2] का मुँह बन्द करो नहीं तो अच्छा

---

१ दीवाल और महंथ के रहने का कमरा। २ लोमड़ी की एक जाति।

नहीं होगा। क्या चाहते हो तुम लोग? 'सन्दूक की चाबी के लिए कलेजा ऐंठ रहा है तो ले लो। लक्ष्मी सन्दूक की चाबी भी फेंक देती है।

रमपियरिया मन ही मन से डकर-डकर कर रही है। अकबक बोल सकती है रमपियरिया! डाँसी-सिरचा की तरह वह तेज है। उसकी बातें सुनकर देह झहरने लगता है। बात में भी ऐसा 'आस?

"माई मरे बरदा बैठल खाये दुरंग। दिन-भर बैठकर महतमाजी-महतमाजी कहता है बालदेव कभी एक लोटा पानी भी किसी पेड़ में दे तो समझें कि हाँ! सुबह से साम तक पेना-कलही लेकर महरानी सिंगार-पटार करेगी! यहाँ कोई किसी का नौकर नहीं। 'मेरे देह में मैल है, मन में नहीं। ऊपर से तो चमकौआ साबुन और चम्पा चमेली का तेल लगाती हो—भीतर? राम-राम! रात-भर मुँह में मुँह सटाकर सोने-वाली और मैं मुँह धोकर छुआ तो नहीं हो सकती। 'नाटिन! कसबिन!" रमपियरिया बड़बड़ा रही है।

'रमपियाड़ी! बेसी मत बोलो सिर में दरद हो जायगा।" रामदासजी कहते हैं "ऐसा जानता तो ।

लक्ष्मी खासिन कुछ नहीं बोलती है। चुपचाप टकटकी लगाकर नीबू के पेड़ की ओर देखती है।

रमपियरिया की एक-एक बात तीर की तरह उसके मर्मस्थल में गुँध गई है। 'चमकौआ साबुन और चमेली का तेल? 'महंथ सेवादास ने जबसे यही एक बहुत खराब आदत लगा दी है, बिना साबुन के वह नहा ही नहीं सकती है। मन कबिर ही नहीं होता है बिना साबुन के। केशरंजन तेल तो सिर-दर्द के दिन ही अब लगाती है वह। 'महंथ साहेब जब पुर्णिया कचहरी से लौटते तो शीशी में तेल साबुन किसमिस अखरोट और तरह-तरह का फल-मेवा ले आते थे। कोई भी नई चीज बिकते देखा बस खरीद लिया।

'महंथ सेवादास के साथ सभी तीरथ कर चुका है लक्ष्मी 'क्या इसी नरक-भोग के लिए? उसकी तकदीर ही खराब है। अब मठ में रहना नरकवास है! छि-छि., दस दिन हुए, परसाद जरा भी नहीं बचता है, पानी में मछली की गन्ध पहले ही रोज रुप गई, सो अब पानी पीते ही कै हो जाती है। 'मठ पर आने के समय रमपियरिया की माये ने रोते-अँसुकर मछली खिला दिया था। सतपुरुष हो! 'सब-कुछ करो पंच मत भरस्ट करना गुरु । यह कल ही अलग हो जायगी मठ से। महंथ साहेब उसके नाम से तीस बीघा खेतीन और कलमी आमों का एक बाग लिख गए हैं। उस पर मठ का कोई अधिकार नहीं। 'सब एक सप्ताह में ही सतपुरुष की कृपा से ठीक हो जायेगा।

लक्ष्मी की आँखों के आगे सपनों जैसी एक दुनिया बस रही है। कमली आम के बाग में ठीक बम्बई आम के पेड़ के पास दो खूबसूरत झोंपड़ियाँ हैं। वह चरखा चला रही है, बालदेवजी बीजक बाँच रहे हैं।

"बालदेवजी! अब आसन तोड़िए!"

बालदेवजी लक्ष्मी के चेहरे की ओर मकरमकर[1] देखते हैं। जब-जब वह लक्ष्मी की आँखों में झाँकते हैं उनका चेहरा ठीक ऐसा ही अर्थ-भाव-हीन हो जाता है। 'आसन तोड़ना होगा?

हाँ आसन तोड़ना होगा। यहाँ धरम नहीं बचेगा।" लक्ष्मी की आँखें डबडबा आती हैं।

> आ रे! जोगिया के नाम बसे मति काई
> आहा सन्तो जा रे बस सो जोगिया हो!
> झिम झिमिक झिमिक झिम झिमिक झिमिक।

सात

कमली दिन दिन खूबसूरत होती जा रही है।

मुँह में अब दो रेखाएँ ऐसी उभरती हैं जो उसके मुख-मण्डल को और भी आकर्षक बना देती हैं। आँखों में चंचलता नहीं एक मद है। अचानक देखने पर लगता है कि आँखों में काजल पड़ा है।

"माँ! अब तुम्हारा डॉक्टर खूब बेहोश होने लगा। आज घण्टे से दीवार की ओर एकटक देख रहा है।" कमला अपने कमरे में बाल झाड़ रही है।

माँ डाँटती है, "कमली डॉक्टर साहेब गोल कमरे में बैठे हैं।"

"तो क्या हुआ?"

कई दिनों से माँ चाहती है कि कमली को कहे, इतना हेल-मेल अच्छा नहीं। लेकिन अभी उसकी ओर देखते ही माँ ने जाने क्या देखा कि मोम की तरह गल गई। चूड़ियाँ और कर्ण सुडौल बाँहें लम्बे-लम्बे बाल सुघटित मांसपेशियाँ और आँखों में यह क्या? काँप जाती है माँ। यह क्या रे अभागी? हनुमानिन! आँचल को मैला मत करना बेटी दुहाई! नहीं

---

१ अर्थ-भावहीन दृष्टि से देखना।

नहीं वह भी कैसी है? उसकी बेटी तो 'माँ कमला है वह जो चाहे, करे! माँ के ओठों पर स्वाभाविक मुस्कराहट लौट आती है, "मालूम होता है तुम्हारा रोब उतरकर डॉक्टर ने अपने ऊपर ले लिया है।"

'हो-हो! डॉक्टर अब हँसी बन्द नहीं कर सकता है, "हो-हो!" कमला पर्दे की आड़ से गला मिलाकर इशारे से कहती है, "चुप! आप बीमार हैं। मालूम?

तहसीलदार साहब की लड़ाऊं खटखटाती है। हँसी सुनकर वे भला कोई और काम कर सकते हैं!

डॉक्टर को तहसीलदार साहब के दोनों रूपों के दर्शन हो चुके हैं। जब यह घर-गृहस्थी मामले-मुकदमे लेन-देन लक्ष्मी-घटी वगैरह की बातें करते रहें तो उनका कोई और रूप देखिएगा। घर में आराम से बैठकर दीन-दुनिया की बातें करते समय अथवा रामायण-महाभारत देश-विदेश से लेकर घरेलू चीजों पर टीका करने के समय किसी और तहसीलदार साहब को आप देखिएगा। हास्यप्रिय रसिक और कुशल गृहस्थ! भोला भाला इन्सान।

डॉक्टर को उनके प्रथम रूप से स्नेह मिला है किन्तु दूसरे रूप के इन्तजाम में तो वह फँस ही चुका है।

"क्या बात थी?" तहसीलदार साहब हँसी का टटका स्वाद लेने के लिए पुनः पूछ बैठते हैं—"कमली की माँ! क्या बात थी? ये दोनों नहीं बतावेंगे!"

"अरे, तुम्हारी पगली बेटी के मुँह में जो आता है बक देती है। तुम्हारी बहकाई हुई बेटी अभी कह रही थी कि डाक्टर साहेब अब खूब बहोस हो जाते हैं।"

"अच्छा तब?" तहसीलदार साहब मुस्कराहट को रोकने की मुद्रा बनाकर, चाय के प्याले में चुस्की लेते हुए पूछते हैं "तब फिर?"

माँ हँसी को रोकते हुए कहती है "सो मैंने कहा कि मालूम होता है, तुम्हारा रोब उतारकर उन्होंने अपने ऊपर ले लिया है। डाक्टर साहेब भी सुन रहे थे।

"हा-हा-हा-हा!" तहसीलदार साहब की ऐसी हँसी को कमली कहती है, "बाबा पगलिया' हँसी हँसते हैं।

तहसीलदार साहब भी देखते हैं कमला के स्वभाव में बहुत परिवर्तन हुए

---

१ देर से समझने-बूझने वाली।

है। ऐसी बेटी का बाप चुपचाप बैठा है लाचार है। भगवान्! शंकर भगवान्! कमली पर कृपा-दृष्टि फेरो!

डॉक्टर तहसीलदार साहब की मुस्कती हुई हँसी को गौर से देखता है। यह शायद एक तीखरा रूप है जिसे देखकर पत्थर भी पिघल जावे! कितना कटुल!

'डॉक्टर साहेब! माँ दो फेरों में अलगान के माती है, "कमली रेडियो की डीरी से मटर-पोलाव सीखकर आई है उस दिन!"

"तो यह ऑल-इंडिया रेडियो वाला मामला है! सूक कीजिए डॉक्टर साहब! देखिए कि मटर की घबनी को किस सफाई से मटर-पुलाव बना दिया है।"

'कुछ भी हो, सवाजी पुलाव से तो अच्छा है," डॉक्टर कमला की ओर हँसते हुए देखता है।

"हो-हो-हो-हो!"

हँसी-खुशी के वातावरण में फँसकर डॉक्टर अपने कर्तव्य की अवहेलना तो नहीं कर रहा है? वह कभी-कभी एकबार सोचता है—वह जो कुछ भी कर रहा है, उसके विरोध में हृदय के किसी कोने का तार बेसुरा तो नहीं बज उठता है? नहीं वह जो भी कर रहा है, सही हो या गलत अच्छा लगता है उसे!

प्यास ने कई बार कहा है, आँगन की ओर खुलने वाली खिड़की पर भी पर्दा रहना चाहिए। नंगी-सी लगती है यह खिड़की! डॉक्टर प्यास को इसीलिए इतना प्यार करता है। कमला अब रोज डॉक्टर के यहाँ आती है।

"मौसी कहती थी कहती थी कि तू गलत कर रही है। तुम दोनों गलत कर रहे हो! इसके बाद क्या होगा सोचा है कभी? क्या होगा इसके बाद डॉक्टर? कहो तो!" कमला आम के पत्तों जैसी आँखों से मधु डालते हुए पूछती है।

"कहो तो डॉक्टर, क्या होगा?"

"क्या होगा? जो भी हो बुरा न होगा।

"तुम हमेशा मेरे पास नहीं रह सकते?"

"फिर पागलपन?"

"डॉक्टर तुम जिन तो नहीं?

'जिन? क्या जिन?"

"जिन एक पीर का नाम है। वह कभी-कभी मन मोहने वाला रूप धरकर

कुमारी और बेवा लड़कियों को भरमाता है। गरीब-से-गरीब को धनी बना देना उसकी चुटकी बजाने-भर की बात है। जिस पर बिगड़े, बरबाद कर दे, जिस पर ढरे उसे निहाल कर दे। कमला के बसे की दोनों नई रेखाएँ बनती-बिगड़ती हैं। वह डर तो नहीं रही? वह डॉक्टर को पकड़ लेती है।

"क्यों झूठ-मूठ डरने लगी? बिच्छू की बातें भरे रहती हो दिमाग में!"

"नहीं मुझे डर नहीं लगता है। यदि तुम जिन भी रहो तो मैंने तुमको जीत लिया है।"

"इतना भरोसा?" डॉक्टर कमला की आँखों में चमकते विश्वास का स्पष्ट रूप देख लेता है! कमला वीरेन है! स्वस्थ है कमला!

"तुम बाँहों पर उस दिन कौन-सा जेवर पहनकर आई थी? अब क्यों नहीं पहनती?"

"बाबू! क्यों म्याजिन-जैसी लगती थी न? गोकुल की म्याजिन!" कमला ठठाकर हँस पड़ती है।

इसी को पहलीजा कहते हैं। देखते हो? अभी दोपहर रात का डाकदर का मैंगड़ा नौकर बैट चुकचुकाता हुआ तहसीलदार की बेटी को घर पहुँचाने जाता है। साथी ही क्यों न कर देते हैं? एकदम साहेब-मेम! डॉक्टर साहेब भी कैसे आदमी हैं!

"डॉक्टर साहेब कैसा आदमी है?" अबभू चौकीदार से कटहा थाना के नये दारोगा साहब पूछते हैं।

"हुजूर! अच्छा आदमी है, मगर

"मगर क्या रे? साला आधा बात बोलता है, बदमाश आधा बात पेट में रखता है। साले हमको चीन्ह लो। हम दूसरे जिला के नहीं हमारा घर इसी जिला में है। जानते हो न? हमसे साले बात छिपाते हो? क्या मगर?" नये दारोगा साहब अलबल करते हैं। हवा को भी गाली देते हैं "साला! रात में बदमाश ऐसा हवा बहता था हवलदार साहब की नींद तो बुझिये कि बोल दिया। हवलदार साहब जरा यह फाइल दीजिए तो! देखें क्या क्या सब पूछा है? क्या-क्या पार्टी होता है, साला हम लोगों का जान जाता है।

दारोगा साहब नई उम्र के हैं। कहते हैं कि इस जिले के पहले पाँच दारोगों में से एक हैं। बातें करते समय वह यह कहना नहीं भूलते—"साहब! मैं बाहरी आदमी नहीं इसी जिले का हूँ।" हर मौके पर इसका बड़िया इस्तेमाल

करते हैं—"मैं यदि एक पैसा का भी घूँस लूँ तो इसी जिले में रहेगा। दारोगा साहब बवासीर और पेचिश से परेशान रहते हैं कि बाहर के जितने भी लोग नहीं आवे हैं, उन्हीं के हिस्से का सुख-भोग कर रहे हैं। फारबिसगंज के नक्षत्रमालिया मेला छोटन बाबू बिना कांग्रेस के सिक्रेटरी हुए हैं। लिखा है

'यह डॉक्टर कौमनिस्ट पार्टी का है।

दारोगा साहब ने अस्पताल को चारों ओर से एक दर्जन सिपाहियों से घिरवा रखा है।

"आपका घर असल में कहाँ है?" दारोगा साहब हैरान होकर पूछते हैं।

"बिराटनगर।

"बिराटनगर तो नेपाल में है। आप नेपाली हैं?"

"नहीं।

"तब?"

"आप इतना हैरान क्यों हो रहे हैं, दारोगा साहब? मैं जो कुछ भी कहता हूँ लिखते जाइए।"

"सो लिखते जाइए। वाह! आखिर क्या लिखें?

मैं जो कुछ भी जबाब देता हूँ।"

तहसीलदार साहब पसीने से तरबतर हो रहे हैं। प्याज का मुँह सूख गया है। क्या बात है कुछ पता नहीं चलता। मौसी का कलेजा धड़क रहा है।

लेकिन आश्चर्य! कमली पर इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। डॉक्टर को कुछ नहीं हो सकता। कोई बात नहीं है। कमली को दृढ़ विश्वास है।

दारोगा साहब डॉक्टर को दो बात में ही पहचान गए हैं—'अजीब किस्म का आदमी है यह डॉक्टर!

सुमरितदास बेतार से बात बच्चा-बच्चा पूछता है—"सुमरितदास डागदर साहेब ने क्या किया है जो दारोगा साहेब पकड़ने आए हैं? घूस लेने की शिकायत तो नहीं किया है किसी ने?"

"देखो न जी! बड़ा खराब है यह दुनिया। किसी का बिसवास नहीं।

रमैन में कहा है न—बिस रस भरे कनक घट जैसे! यह डागदर तो सुनते हैं कि जरमन बाला का आदमी है! जोतखीजी ठीक ही कहते थे जरमन बाला का ही भाई बंधु है यह डागदर! यहाँ के लोगों को सुई भोंक कर कमजोर करने का काम करता था। कुर्सी में बसा डालकर सपमुच में हैजा फैलाया

है। बरमन बाबा का एक पार्टी है यहाँ कमसीन 'कौम-मीत पार्टी सुनते हैं उसी पार्टी का आदमी है।"

इस दरोगा की हरकतों पर डॉक्टर को ताज्जुब होता है। बार-बार कहता है, हम इसी जिले के हैं। बेवकूफों की तरह सवाल करता है "आपको बहुत लड़कियोंसे ताल्लुक रहा है?"

"रहा है। कम-से-कम चार सौ लड़कियों के साथ मैं दिन-रात रह चुका हूँ।" डॉक्टर मुस्कराता है।

"चार सौ? दारोगा साहब को जब किसी बात पर अचरज होता है तो उनकी आँखें उल्लू की आँखों की तरह गोल हो जाती हैं "चार चार सौ? बापरे इतनी लड़कियाँ कहाँ से मिलीं!"

"मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में।

"ओ! नहीं मेरे पूछने का मतलब है कि भले घर की लड़कियाँ!"

"क्यों हॉस्पिटल में भले घर की लड़कियाँ नहीं आतीं?"

"मेरा मतलब । खैर, छोड़िए इन बातों को। 'कौमनिस्ट पार्टी' वालों से आपका कैसा रिश्ता है?

"मेरे बहुत से दोस्त कम्यूनिस्ट हैं।

"आपने संथालों को भड़काया समझाया था कि जमीन पर जबर्दस्ती दखल कर लो? संथालों ने अपने बयान में कहा है।"

"संथाल लोग समय-समय पर मुझ से पुराने कागजात पढ़वाने आया करते थे—जबर्मेंट वगैरह ।"

"आप अपनी किताबें दिखला सकते हैं?" दारोगा साहब उठकर किताबों की अलमारी के पास जाते हैं।

'लाला सब डाक्टरी किताबें हैं! 'फिजियोलॉजी यू० एस० एस० आर०। लाल झंडा लेखक बेनीपुरी। लाल चीन लेखक बेनीपुरी

"ये सब तो रूस की किताब है!"

"रूस की नहीं रूस के बारे में।"

"दोनों एक ही बात है।" दारोगा साहब उस किताब को निकालकर उलटते हैं—मानों किताब के पन्ने में बम छिपा हो। बहुत सतर्क होकर पृष्ठ उलटते हैं।

'डायरेक्टर साहेब पिरिफक। 'बुलुम बात! संथालों को डायरेक्टर साहेब ने ही भड़काया था। गाँव में हैजा भी उन्होंने फैलाया था। 'गाँव के लोगों को कमजोर कर दिया। 'हाँ हैजा भी सूई लेने के बाद 'बाद

जी जब काम-धंधा करने लगते हैं तो आँखों के आगे मकड़ीजाली उड़ने लगती है। देखने में कैसा बमभोला था! मालूम होता था देवता है। भीतर ही-भीतर इतना बड़ा मारकू[1] आदमी था सो कौन जाने! पोतकी काका ठीक ही कहते थे।

पीरोरी के यहाँ फारबिसगंज का एक मेहमान आया है। कहता है, उसके गाँव के पास सिक्षया-बरैया में एक डागदर है जो डकैती कराता है। डागदर तो घर-घर में जाता है, अपचार-पछार सब देखता है, दवाँया का बक्सा भी वह देखता है। वह अपने सब बातों को पूरा मकसा बता देता है। घर वाले को सोने की दवा दे देता है, डकैत चोरी-डकैती करवा देता है। गाँव के आस-पास के लोगों को मूई भोंककर डरपोक बना दिया है। जो उसकी बात से बाहर हुआ उसका बैल-गाय कटवा देता है, भैंस चोरी करवा देता है या घर में आग लगवा देता है। कई बार केस-केस[2] उस पर चला लेकिन रुपैया खर्च करके छूट आता है। नाम भी अजीब है—डागदर नटखट परसाद!

'हाँ भाई, किसी का विसवास नहीं।

"सोमा बट रक्स डामर्बज मेला में विरुक्त हो गया।" सोमन मोची कहता है—"अभी मेला से जो लोट आवे हैं, बोल रहे हैं। अब हम अखाड़ा में होस नहीं बजाएँगे।"

आठ

पोतकी काका आजकल बहुत खुश रहते हैं।

गाँव के लोग आजकल दिन में पाँच बार परनाम करते हैं। अलबत्त बरमबिसाली हैं पोतकी काका! कानून में भी यदि कुछ तेज बाकी है तो बामन में ही। ज्योतिस बिद्या हँसी-खेल नहीं। बरमतेज अभी भी है। सोमा यदि कीचड़ में रहे तो उस पर कोई नहीं कूद सकती। परनाम पोतकी काका!

"जीओ बाभी बैनो! क्या बात है?"

"पोतकी काका, हम लुट गए। मेरा सोना बस उड़ गया। हँसते-खेलते

---

१ बदमाश। २ बी० एल० केस०।

चला गया जोतखी काका !" पालियाटोली का हीरू जोतखी काका के पाँव पर लोटकर रोता है।

"ऐं हीरू क्या हुआ ?" जोतखीजी पूछते हैं।

"मेरा बेटा ! मेरा बच्चा जीवानन्द कल ही एक दिन के बुखार में कलेजा छोड़कर चला गया। मेरा सिखाया-पढ़ाया तोता उड़ गया जोतखी काका !" हीरू अब सिर पर हाथ रखकर झुककर बैठा हुआ रो रहा है।

"इतना जल्दी ? कल कौन दिन था—सोमवार ? हूं ! सोम को मरा है न ?"

"हाँ ठीक सूरज डूबने के समय !"

"करमात्मा[1] है। शायद का करमात्मा है। समझे हीरू ? शुक्रवार को अमावस्या है। जिस पर तुमको सन्देह हो उसके पिछवाड़े में बैठ रहना। ठीक दो पहर रात को वह निकलेगी। उसका पीछा करना। वह तुम्हारे बच्चे को खिलाकर, तेल-फुलेल लगाकर, गोदी में लेकर जब बाहर चलेगी तो उस समय यदि उसने बच्चा छीन लो तो फिर उस बच्चे को कोई मार ही नहीं सकता। उसका बल भी चूर हो जायेगा।"

"इसमें और सन्देह की क्या बात है जोतखी काका ! सचमुचही ऐसा ही बराह बात समझती है। पाँच महीना पहले रब्बी चालीस के समय जब सभी लोग दर्खास देने लगे तो हमने भी दे दिया। मेरा साला कचेहरी में मोहर्रिर है। उसके पैरवी से जमीन हमको मयस्सर हो गई। सभी की दरखास नामंजूर हो गई और हमका जमा बाँध दिया। एक दिन पारबती की माँ गई हिस्सा माँगने लगी तो हम कह दिया कि अब बाँटकर नहीं देंगे। हमको मयस्सर हो गया है जमीन—बघा ४० में। बस तुरत आठीसतरह देने लगी। उसकी सभी बीघा जमीन हम जोतते थे। हम यही गोस्सा मन में पालती रही और कल हमको लूट लिया राक्षसनी ने।"

"ऐ हीरू, रोओ मत ! हमरा बात करो ! चुपचाप ! अमावस्या की रात को दो पहर रात को । याद रखना !"

अमावस्या की रात !

पारबती की माँ के पिछवाड़े में मरद भर भर भीम की झाड़ी है। हीरू उसी झाड़ी में बैठकर सैनी चुनता और खाता है। जोरसिंघा गांजे का नया

भी अब काम-धंधा करने लगते हैं तो माँओं के आगे भभकोभनी उड़ने लगती है। देखने में कैसा भभकोला था! मालूम होता था, देवता है। भीतर ही-भीतर इतना बड़ा मारकू[1] आदमी था सो कौन जाने! जोतखी काका ठीक ही कहते थे।

बीनोरी के यहाँ फारबिसगंज का एक मेहमान आया है। कहता है, उसके गाँव के पास सिक्षवा-परैया में एक डाक्टर है जो डकैती कराता है। डाक्टर तो घर-घर में जाता है, अखबार-पत्तर सब देखता है, खैया का बक्सा भी वह देखता है। वह अपने दल वालों को पूरा नक्सा बता देता है। घर वाले को सोने की दवा दे देता है, उधर चोरी-डकैती करवा देता है। गाँव के आस-पास के लोगों को सुई भोंककर बरपोक बना दिया है। जो उसकी बात से बाहर हुआ उसका बैल-गाय करवा देता है, भैंस चोरी करवा देता है या घर में आग लगवा देता है। कई बार बेल-केस[2] उस पर चला लेकिन खैया खर्च करके बीच लाता है। नाम भी अजीब है—डाक्टर नटखट परसाद!

"हाँ भाई, किसी का बिसवास नहीं!

"सोमा जट कल रामपंथ मेला में बिरफ्फ हो गया।" सोमन मोची कहता है—"अभी मेला से जो लोग आये हैं बोल रहे हैं। अब हम अखाड़ा में ढोल नहीं बजाएँगे।

आठ

जोतखी काका आजकल बहुत सुख रहते हैं।

गाँव के लोग आजकल दिन में पाँच बार परनाम करते हैं। जबरत बरसबियाली है जोतखी काका! कम्पुप में भी यदि कुछ तेज बाकी है तो बामन में ही। जोतिस बिद्या हँसी-खेल नहीं। बरमतेज अभी भी है। सोमा यदि कीचड़ में रहे तो उस पर कोई नहीं चल सकती। परनाम जोतखी काका!

"जीओ आओ बैठो! क्या बात है?"

"जोतखी काका हम लुट गए। मेरा सोना कल उड़ गया। हँसते-खेलते

---

१ बदमाश। २ बी० एल० केस०।

चला गया ओतखी काका!" पोतियाटोली का हीरू ओतखी काका के पाँव पर लोटकर रोता है।

"ऐं हीरू क्या हुआ?" ओतखीजी पूछते हैं।

"मेरा बेटा! मेरा बच्चा जीवामन कल ही एक दिन के बुखार में कलेजा तोड़कर चला गया। मेरा सिखाया-पढ़ाया तोता उड़ गया ओतखी काका!" हीरू अब सिर पर हाथ रखकर झुककर बैठा हुआ रो रहा है।

"इतना जल्दी! कल कौन दिन था—सोमवार? हूँ! सीम को मरा है न?"

"हाँ ठीक सूरज डूबने के समय!"

"करमाभी[1] है। बाहुन का करमाभी है। समझे हीरू? बुधवार को अमावस्या है। जिस पर तुमको सन्देह हो उसके पिछवाड़े में बैठ रहना। ठीक दो पहर रात को वह निकलेगी। उसका पीछा करना। वह तुम्हारे बच्चे को चिकारकर, हेल-फुकैल कमाकर, दौरी में लेकर जब आगे चलेगी तो उस समय यदि उसमें बच्चा जीव सो तो फिर उस बच्चे को कोई मार ही नहीं सकता। इस का दाम भी पूरा हो जायेगा।"

"इसमें और सन्देह की क्या बात है ओतखी काका! सचमुचमी एना की बड़ बात सलकनी है। पाँच महीना पहले, दक्ष चालीस के समय यह सभी लोग दरखास देने लगे तो हमने भी दे दिया। मेरा मामा कचहरी में मोहरिर है। उसके पैरवी से जमीन हमको मयस्सर हो गई। सभी की दरखास नामंजूर हो गई और हमका जमा बाँध दिया। एक दिन पारबती की माँ ने हिस्सा माँगने सभी तो हम कह दिया कि अब बाँटकर नहीं देंगे। हमको मरदो हो गया है जमीन—बक्श ८० में। बस पुरुब आहीलखाण देने सभी। उसकी सभी बीघा जमीन हम जोतते थे। बस यही गोस्सा मन में पालती रही और सब हमको कूट दिया राजसभी में।"

"ऐं हीरू रोओ मत! हल्ला मत करो! बुधवार! अमावस्या की रात को, दो पहर रात को। याद रखना!"

अमावस्या की रात!

पारबती की माँ के पिछवाड़े में मरर मरर बाँस की सर्रे हैं। हीरू उसी झाड़ी में बैठकर बीड़ी सुलगा और खाता है। ओतखी—

---

1 करीश्मा।

बड़ा तेज होता है। कार्तिक महीने से ही रात में सीत गिरने लगती है। होरू का देह एकदम ठंडा हो गया है। खैनी खाकर गर्म हो लेता है कहता है—"साली घर में घुटुर-घुटुर कर बोलती है, बाहर नहीं निकलती है। निकलो आज।

कहीं घर में ही तो नहीं लापेगी? यदि बाहर नहीं हो तब? बोलती काका ने भी नहीं बताया।"

मौसी को धाम से परेशान कर रखा है। मलेरिया ने। आज उसकी आँखों से नीर मायब ही गई है। रह रहकर वह ऐसी-ऐसी बात पूछ बैठता है कि मौसी को अच्छी तरह समझा-बूझकर जवाब देना पड़ता है।

"मामा को जेहल में मारता होगा?"

"नहीं रे! तुम्हारा मामा चोर-डकैत नहीं।

"तो फिर, पकड़ा क्यों? जेहल काहे के लिया?

"सरकार की जो मरजी!

"सरकार की जो मरजी! सरकार से तुम क्यों नहीं पूछती?"

"चुप रहो! सो जाओ बेटा!"

"मासी?

"बाबू!"

"हमको बाहर ले चला। पेशाब करेंगे।"

"चलो!"

धत्! किवाड़ खोलती है मौसी। सिवाड़े से भीत की साड़ी हिलती है। होरू बोतल में हाथ ले जाता है, जल्दी-जल्दी बोतल में मुँह लगाकर पीता है। हाँ निकली तो है राजलक्ष्मी! ठीक दो पहर रात है। रम डंडी सिर पर आ गया है। सियार बोल रहे हैं। ठीक दो पहर रात है। कपड़ा क्यों सँभालती है? नदी हो रही है ?

—सटाक्! !

"आ ह !बेटा प ने स!"

"आ ी!"

—सटाक! सटाक! ट सटाक!

"पि पि पि पि पि पि "

"मासी! कबली ीरी! मासी!"

सब शान्ति! मगर जीवानन्द होरू का बेटा कहाँ है? होरू का नशा अचानक टूट गया। डर-डर बहती हुई मूत की धार को देखकर वह थर थर काँपने लगता है। लाठी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है। मूत?

पुलिस-दारोगा जेहल फाँसी-सुल्ली ! हीरू भागता है।

सबसे पहले तहसीलदार साहब हल्ला करते हुए, बन्दूक का दो-तीन फैर करते हैं। धमें-धमें !

सारा गाँव जग गया है। कुत्तों के मारे कुछ सुना भी नहीं जाता है कि हल्ला किधर हुआ क्यों हुआ। क्या है ? क्या है ? सभी अपने आँगन से ही पूछते हैं। क्या है रामदेस ? अरे नामसर, क्या है ? पता नहीं ?

तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं, "अरे कालीचरन ! आवाज पारबती की माँ जैसी लगी। तुम लोग घर से निकलते क्यों नहीं ? लगता है सारे गाँव के लोग मुर्दा हो गए हैं।"

पारबती की माँ ! अरे बाप ! खून से नहा गई है। साँस देखो। मरी है या । हुक-हुक करती है ? तब अभी जान है। और यह मनेस है ? काँपी लगी हुई है। पानी लाओ ! किसका काम है यह ? हे भगवान् ! लाठी है ? तहसीलदार साहेब के जिम्मा लगा तो लाठी ! इसी से पता चल जायेगा।

"भगमू !" तहसीलदार साहब कहते हैं, 'तुम अभी दौड़ जाओ थाना। कल पूर्णिया अस्पताल यदि ठीक समय पर पहुँच जाय "

"नानी नानी ! मामा ! डाक्टर मामा ! दीदी दीदी ! मनेश रोता आता है। कमली आँखों को पोंछते हुए मनेश को अपने घर ले आती है। बुद्धि यदि कम होती मनेश को तो अच्छा था ! कमली के साथ वह आता है।

बातें भी करता है। कमली कहती है, 'भगवान् हम सबों के बाप हैं उन्होंने नानी को अपने पास बुला लिया।

"हाँ में " कमली हिचकी पर मनेश कन्ट्रोल नहीं पा सकता है "नानी ! कमली दीदी ! नानी !"

हाय रे अभागा ! तेरी कमली दीदी किसके पास रोने जाय ? "बाप ! मनेश तुम्हारे मामा आवेंगे ! रोओ मत !"

हीरू पकड़ा गया है। पकड़ावेगा कैसे नहीं भाई ! गाँव में किसकी लाठी को ऐंठ नहीं पहचानता ! हीरू की छट्ठी लाठी तो मशहूर है—हर हँसेरी में उसकी छट्ठी लाठी कमाल कर दिखाती थी न ! रात में ही लोगों ने पहचान लिया अन्दर डर से नहीं बोला कोई ! इसके अलावे उसके दोनों पैर खून में लथपथ ! बोला भी नहीं था। लगता है, मारने के बाद लाश को थोड़ी दूर घसीटने की कोशिश की थी हीरू ने ! सुबह को तो

एकदम बभीट[1] सन हुए पासमां की तरह ! उसे देखकर डर लगता था।

उसकी आँखें बतलाती थी वह अभी और भी कई खून कर सकता है।

मुँह से मार भी बिरता था ! दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया मगर वैसा ही। दारोगा ने दो लात मारी हवलदार ने दो-तीन हण्टर वर्मा सिंह और सिपाही ने तीन चार डमाके जड़े "साला ! बालता काहे नहीं नाम पिताव अपना बाप के जे साथ र ह स न ! होने मुँह का देखऽऽताड़ऽऽ—बच्चा के तरफ देख के बोलऽ ! साला हतियारा कहीं का ! नरक में भी जगह ना मिली सबुरे !"

मगर वह बकता रहा— 'हम अकेले माय।

"सबुर ! ई नीलमाम जैसन औरत के तूं अकेले माय ? बबुक बबुक ..."

"ऐ सिपाहीजी ! छोड़ दीजिए !" छोट दारोगा साहब बड़े भले आदमी हैं। कहते हैं "साले ! यदि फाँसी से बचने के लिए पागल हुए हो तो दो ही दिन की मार में मर जाओगे।

लहास को एकदम ढँककर पालकी में ले जाने का बन्दोबस्त करते हैं दारोगा साहब। एक उँगली भी नहीं दिखाई पड़े। अतर-गुलाब भी छड़का दिया। अरे ! लहास के साथ मनेस भी जायेगा ? साथ में प्याक आ रहा है। पुरैनियाँ सदर की धरमशाला के पास ही मनेस की एक चाची रहती है। वह जब नहीं रहेगी तो अनाथालय में

मौसी चली गई, हमेशा के लिए।

कमली टूटकर रो पड़ती है।

जोतखीजी को लकवा मार गया—अरबांग ! मुँह टेढ़ा हो गया है। एक आँख एकदम पथरा गई है। पैखाना-पेशाब सब बिछावन पर ही होता है। रामनारायण उनके पास अकेले बैठने में डरता है। रामनारायण जानता है सारी बातें। भारवती की माँ की हत्या की रात से ही उनकी हालत खराब हो गई थी। पट पूब चला ! खून का पैखाना होने लगा—एकदम टटका खून। साल साल इसके बाद आँख से लाल पैखे ही निकली लकवा मार गया। भगवान् के इस टटका इन्साफ को देखकर रामनारायण डर गया था। इतनी अक्ली बाप को फलते बहुत कम देखा है। पैखाने में इतना दुर्गन्ध है कि चार कोस आसपास के लोगों को कै हो जाय ! मरफ ओस और किसको कहते हैं।

---

१ अनिच्छुक।

लेकिन जोतखी जी ने कहा था ठीक। सुनते हैं जिस दिन पारबती की माँ के केस में दारोगा साहेब आये उस दिन भी बोले थे, 'अभी क्या हुआ है और भी बाकी है।"

बलवान् आये और क्या-क्या होगा!

ये बाबा 'जिन-पीर' गाँव की रक्षा करो महतमा!

नौ

कोठारिन लक्ष्मी डाक्टर बालदेवजी के साथ मठ से अलग हो गई।

कलम-बाग में बाँस-फूस के तीन सुन्दर बंगले खड़े हो गए हैं। इस इलाके की यह भी एक बड़ी कारीगरी है—बाँस-फूस का बँगला। एक ही घर होता है—बाग का! लेकिन होता है खूब। मेहराब और खाड़ियाँ पूँछकर बना दिया है। फूस तो पहले से ही लगे हुए हैं! बाग की खपसूरती तो अठारह गुना बढ़ गई है। वाह रे कोठारिन! चार सौ रुपये में एक जोड़ा बाछा खरीदकर मँगवाई है—मोठीचूर हाट से। बड़ा तेज है। हल्की-सी बाछा-गाड़ी बनवाई है। बाँस के पोर-पोर को छीलकर उसमें तरह-तरह के रंग लगाये गए हैं। हर बन्धन को और खासकर बत्सा की डोरी को सतरंगे ऊनों में गूँथा है। छोटे छोटे घुंघरू—झाड़ हरे, पीले नीले। बाछों के सर पर पीतल के पाम हैं बगे में कौड़ी की लड़ियाँ और घंटी है। एक ओर मोठी झुनकी भी है। झुन झुन टुन-टुन झुन-झुन टुन-टुन! सुनो, वही! बालदेवजी गोसाईं साहेब की बच्ची सम्पनी निकली! झुन-झुन टुन-टुन!

बालदेवजी अब कितने साफ-सुथरे रहते हैं! बमुना के पानी की तरह खादी की कुर्ती और मिर्जई धप-धप करती है। देह भी थोड़ा साफ हो गया है। लक्ष्मी अपने हाथों से सेवा करती है! मठ पर तो अब दौआ-मैना के 'हू' के साथ आदमी के बच्चों के भी पैखाने मिलकते रहते हैं। रमपियरिया भी साथ दिन-भर पड़ी रहती है साथ में छोटे-छोटे तीन-चार बच्चे रहते हैं। मण्डारी उस दिन आकर कलप रहा था—"डाक्टिन परसाद चित्त से उतर गया है। रोज रात को सपना देखते हैं कि पीने के पानी में मछली छपमला रही है जलपुष हो।"

एक महीने में 'इमपियाड़ी' ने माया के जाल में महंथ रामदास के मंद-

बंध को फाँस लिया है।

महंथ साहब इस जाल से निकल भागने के लिए छटपटा रहे हैं, मगर जाल की गिरहें और उलझती जा रही हैं। कुछ गाली-गलौज और मार-पीट हो गई। महंथ साहब ने रौताइन हटिया से सुबह को एक भरी बाँहा मँगवाया था। रात में सोने के समय रमपियारी ने कहा—"महंथ साहेब बाँहा फुरा गया।

सुनते ही महंथ साहब चिढ़ गए, "ऐं, सुबह को ही न एक-भर खा लिया है मक्कारी ने!"

रमपियरिया महंथ साहब की मर्दानगी देख चुकी है! वह चुप क्यों रहे? दम जमाने के समय होश रहता है कि नहीं। "दिन-भर घोड़ा के घुम की तरह घिनिम मुँह में तो जमा ही रहता है!

"चुप चमारिन! अखाड़ा को भरस्ट कर दिया। सतगुरु हो लछमी ठीक कहती थी!"

इसके बाद रमपियरिया की माये और बच्चों ने मिलकर ऐसा हल्ला मचाया कि बात कुछ समझ में ही न आई! महंथ रामदास चिल्ला रहे हैं चिमटा खनखना रहे हैं और रमपियरिया मा-माकर सर पटककर रो रही है "अरे! तोछरा हाथ में कोढ़ फूट रे कोढ़िया! अरे लछमिनियाँ के खातिर"

'सतगुरु हो! सतगुरु हो! बन्द करो! बन्द करो!

बालदेवजी को पारवती की माँ के खून के बाद से रात को बड़ा डर लगता है। रात भर कलेजा धड़-धड़ करता रहता है। जरा भी कुछ आवाज हुई कि बिछावन पर तड़प उठते हैं। लछमी कहती है—निरमल चित्त पर खराब छाप पड़ने से ऐसा ही होता है। बालदेवजी की आँखें ही बता रही हैं।

झिम झिमिक झिमिक झन झुनुक झुनुक! लछमी आज खूब खँजड़ी बजा रही है। बालदेवजी आसनी पर बैठे हुए हैं। खिड़की के कमरे में चाँदनी का एक टुकड़ा उतर पड़ा है। दीवारगीर की हल्की रोशनी में लछमी की आँखें स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ती हैं।

ज्वाला बिरह बियोग की रही कलेज छा ये
प्रेमी मन मानै नहीं बरतन से अनुछा-ब!

बालदेवजी टकटकी लगाकर लछमी की ओर देख रहे हैं। खँजड़ी बजाकर गाने के समय लगता है कि लछमी की बोटी-बोटी नाच रही है। घुटने के बल बैठी है! इधर सभा नाटक में 'हूर परी मसहूर परी सबुज परी' मंजनी बजाकर जैसा गाती थी उसी तरह। रह-रहकर पारवती की माँ की खून से लथपथ लाश की याद आ जाती है, एक पलक के लिए। बालदेवजी

आँख मूँद लेते हैं। लक्ष्मी के देह से जो सुगन्धी निकलती है, वह आज और तेज हो गई है। लक्ष्मी की आवाज काँप रही है। रो रही है लक्ष्मी? ऐं? पाक पर लोर ढुलक रहे हैं? लक्ष्मी!

"लक्ष्मी! लक्ष्मी! रोओ मत लक्ष्मी!" बालदेवजी की बाँहों में भी इतना बल है? लक्ष्मी को बाँहों में कसे हुए हैं। लक्ष्मी गाती ही जाती है

बृह आँगन बन गये परासे
कि आहो सन्तो हो!
तुम बिनु कन्त बहुत दुख पाये ।

डिमिक डिमिक डिमिक!

रुन झुनुक झुनुक!

एके बृह, एक संग में, हाँ बिरहिन संग कन्त
कब प्रीतम हँसि बोलिहैं जोह रही मैं पंथ!

रुन रुन झुनुक-झुनुक! लाल-लाल चूड़ी हाथ से छूटकर गिर पड़ती है। बालदेवजी के ओठों पर आज पहली बार ऐसी मुस्कराहट देखती है लक्ष्मी। बेहद्दी मख-मख्खस छोटी-छोटी दाढ़ी-मूँछ

बालदेवजी के पाँव के अँगूठों से आँखें सुखाते हुए लक्ष्मी नजर मिलाती है, "सा हे ब ब द भी!"

दस

कॉमरेड वासुदेव और सुन्दरलाल भी निरिफ्क। कैसे नहीं निरिफ्क होगा भाई! एक साल पहले तक किसी ने कभी गंजी भी पहनते नहीं देखा सुनरा को सो इस परमी के मौसम में कोट पैंट, मुसलमन मोजा बूता और चश्मा लगाकर कटिहार जंक्शन के मुसाफिर खाना में बैठने से लोग सन्देह नहीं करेगा? एक डिब्बा सिगरेट खरीदकर दफड़िया कोट तोड़ाल के दोनों। सुनते हैं, खाना खाने में ही दोनों ने करीब करीब सभी जरूरी बातों को सुलझाया और सोचा किया "ए चाहखाना, सुनता है नहीं! देहाती समझ लिया है क्या? चाह खाओ। बिस्कुट खाओगे जी सुन्दर? अरे, बढ़िकाशी बिस्कुट क्या

लामाम भी कटिहार के फेरीवाले कैसा चोई[1] होते हैं सो सबों को मालूम है। उन लोगों ने बहुत बड़-बड़े लोगों को देखा है, पर ऐसा नहीं। सिकमदे को चौकीदी दे दिया 'जाओ, मास्ता कर लो। लड़ाई के जमाना में अमरीकन साहेब लोग इसी तरह सिगरेट और बिसकुट लुटाते थे। बस डी-आर्डी कहीं नहीं है! तुरन्त दोनाको बिरफक कर दिया। भगवान आगे अब और किसका किसका नाम गिनाता है!

जोतखीजी ठीक कहते थे—अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है!

"बासुदेव ने कालीचरन का भी नाम बताया है सुनते हैं।"

"ऐं! कालीचरन है कहाँ?"

"मंगलादेवी को कटिहार रखने गया है।

मंगलादेवी कटिहार चली गई। पाँव का चर्बी सेप्टर टूट गया। कटिहार में मँगला के दूर के रिश्ते के बहनोई रहते हैं। कालीचरन पहुँचाने गया है। पाटी आफिस में सुमेरलालजी बोले "सुनते हैं तुम पर भी वारण्ट है।"

"वारण्ट?

"हाँ बासुदेव और सुनरा ने तुम्हारा भी नाम बताया है जरा होशियारी से घर लौटना।

"बासुदेव! सुनरा! बईमान झूठा!"

कालीचरन अँधेरे में काठी के बाध के पास छिपा हुआ है। जरा रात हो जाये तब घर जायेगा। बासुदेव और सुनरा को सोना ने इतना मारे बढ़ा दिया! उसको ताज्जुब होता है। डकैती के तीन दिन बाद ही कालीचरन को सब पता लग गया था। सिकरेटरी साहब का चुपचाप रहने के लिए पुलिसवाँ गया था, लेकिन सिकरेटरी साहब पटना चले गए थे। सिकरेटरी साहब से सारी बातें कहनी होगी। चलित्तर कर्मकार से हेलमेल बढ़ाने का यही फल है। हम पर विसवास नहीं हुआ उसको तो बासुदेव को चारिज दिये कि चलित्तर से मिलते रहो। बजूक पैसलीक चलित्तर देता है। काली को जेहल का डर नहीं पानी की कितनी बड़ी बदनामी हुई! अरे बाप पटना के बड़े सौदर लोग को कैसे मुँह दिखलावेंगे? सब चौपट कर दिया। कोई आ रहा है सायद!

कोठी-बाध के पास ही अँधेरे में चेथरू से मुलाकात हुई। जड़ी उखाड़ने आया था। उसने बतलाया गाँव में पुलिस-दारोगा कम्पू लेकर आये हैं।

---

१ जानवर।

कालीचरन ने बेचन को दो रुपया दिया माँ का पेट बना! और यह तुम सो एक रुपया!

बड़ी उछाड़मे के बदले बचन गाँव की ओर भागा। फिरारी किरानी को पकड़ा देने वालो को बहुत रुपैया इनाम मिलता है। तुरत ही उसने दारोगा साहब को चुपचाप खबर दी "हम कालीचरन को कोठी के बगीचे में देखा है।"

'दारोगा साहब मलेटरी लेकर जबतक आवें कालीचरन पवन' हो गया।

बेचन कहता है यहीं से पश्चिम की ओर हनहनाता हुआ चला गया पोइपाड़ा की तरह।"

खेलावनसिंह यादव बेचारे को फिर एक चरन लग गया। इधर खेलावन बराबर हेल्पमेट रखता था कालीचरन से। दारोगा साहब ने कहा 'जरूर हथौती का माल आपके यहाँ रहता है। आपने उन लोगों को चौखड़ा घर बनवा दिया है। क्यों?

कहता है खेलावनसिंह यादव का दिन अब घटती पर है। जब चढ़ती पर रहता है किसी का दिन तब वह माटी भी छू देता तो सोना हो जाएगा। दिन बिगड़ने पर चारों ओर से खराब खबरें ही आती हैं। दहसीलदार साहेब का डेढ़ हजार मुहनुआनी बाकी था। कमला किनारे की बन्दोबस्ती वाली जमीन में से दस बीघा मुफ्त रेहन रखकर और भी एक हजार रुपैया तहसीलदार से लिया है खेलावन ने। कल अररिया-बैरगाछी से खबर आई है, सकलदीप लाली का बस भर सोना चुराकर न जाने कहाँ भाग गया है। सुनते हैं मदनपुर मेला में एक ठठेर कंपनी आई थी कलकत्ता से। उसमें एक लैला थी। उसी ने सकलदीप को फँसा लिया है। बचान तड़-तड़ बहू घर में है। सकलदीप के ससुर आमिन बाबू तो बड़े आदमी हैं खोज निकाल लूँगे! खेलावन की स्त्री कहती है "जिन पीर बाबा के बरदा पर घर नहीं है वहाँ एक झोपड़ी बनाने के लिए तीन साल से कह रही थी आखिर नहीं बनाए। कालीचरन की बात पर तुरन्त हो गए, चौखड़ा घर बनवा दिया। दुहाई बाबा जिन पीर! भूल चूक माफ करो। मेरे बच्चा का मति फेर दो महतमा! मिलती और बड़ी चढ़ाऊँगी एक-भर बाँधा दूँगी।

महँगूदास के यहाँ खबासीजी आये हैं! फुलिया के सारे देह में भाग हो गया है। पैटमानजी के पास कई बार सवाद भेजा फुलिया ने। एतवारी बूढ़ा को उस दिन भेजा तो मालूम हुआ पैटमानजी की बदली हो गई बबनाहा

---

१ हुआ।

नेपाल सीमा के पास। चौकी खाट बर्तन सब बेच दिया है पैटमानजी ने। सरकारी नौकरी वाले की जब बदली होती है तो वह सभी चीजें बेच देता है। नई जगह में जाकर नई चीजें मिलती हैं। इसलिए क्या जनाना को भी छोड़ देना कोई? खलासीजी ने सुना तो दौड़े आये हैं! कोई कुछ कहे, खलासी का कोई दोख नहीं। सारा दोख फुलिया का है! जो बेचारा इतना खरच करके तुमसे चुमौना किया वह तुमको अगोर कर बैठा रहेगा तो चूल्हा कैसे जलेगा? खलासी बेचारा दिन भर रेलवे कैंप पर काम करता था और इधर पैटमानजी कैंप फिल्मिर देकर, गाड़ी पास करने के बाद फुलिया के यहाँ आकर बैठ रहते थे। आखिर एक दिन लड़ाई-झगड़ा मारपीट करके फुलिया उनके यहाँ भाग गई। खलासीजी का इसमें क्या कसूर है? पाप मला किसे?

सारा देह गल गया है मगर अभी भी होश नहीं हुआ है फुलिया को। रमपियरिया उसके यहाँ रोज आती है और फुलिया फुसुर-फुसुर करके उसको सिखाती है—साँझ से कोई चीज माँगने का कौन समय है कैसे क्या कहना चाहिए।

खलासीजी कहते हैं "दुनियाँ भर के लोगों की बरमी की बेमारी आराम करें हम और हमारी परवाली इस रोग से मोये? तीन मोजी में ही ठीक हो जायेगी। एक बात है बरमी निकलेगी तो एक अंग को लेकर—आँख नाक, दाँत अंगुली इसमें कोई एक अंग झूठा हो जायेगा?"

"माँझ के बारे में खलासीजी कहते हैं, 'माँझ में बनरजुता लगा है। बन्दर का भूत! माँझ के माँझ इसी तरह साफ हो जाते हैं। कोई बन्दर मरा था हम माँझ में?"

ठीक बात! एकदम ठीक! डाक्टर बाबू तो तीन बन्दर पालते थे। न जाने कौन सूई दिहिन कि दोनों बेचारा कँकाते-कँकाते मर गया। रात भर किल्याया था याद नहीं?"

"ठीक बात! ठीक बात! एह यह डाक्टर ऐसा जुल्मी आदमी था। सारे माँझ को चौपट कर दिया।

"कोई पर्वाह नहीं।" खलासी जी कहते हैं 'हम रात में चलकर पूजा करेंगे, इस टोला का माँझ देंगे। कुछ नहीं होगा।

रमजूदास के मुहाल में चलकर पूजा है खलासी ने 'चावल घूप और बाहुल के फूल से चलकर बनाया है। बीच में माटी का एक बड़ा-सा दीया है और उसमें एक बड़ी-सी बत्ती जल रही है। एक बोतल दारू पीकर खलासीजी बैठे हैं रह-रहकर दीया की जलती बाती को मुँह में ले लेते हैं। 'अरे बाप!

भक्तवत्त ओझा है बलासीजी। मरे! रे! रे! जीभ में सूई बड़ा लिये इस पार से उस पार!

मरे भाजू के ऐनिमे मैया
बड़ा अन्हकाल लागे
दाहिने बाकिन बामें पिचास बोले।
हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ!
डोहाय पीरा पारवती इसर महादेव
मैना जोगिन जो सत से बेसत जाय
अंग मंग फूट बहराय!

—फूट् फूट!

हि-हि-हि-हि !

"अब चाहदे आप लोग 'जोखर'।"

पाँच के 'भकतिया' ओप खुश करते हैं—मचंप पर देवी का गीत 'जोखर'!

खिनिक खिनिक्!

कैहनी के जे आ पे भैया आ मा

बलासीजी दीया की बाती को नचा रहे हैं और मुँह में लेकर बत्ती बुझाते हैं फूँक मारकर मक से फिर दीया जलाते हैं कबूतर को कच्चा ही चबाकर खा रहे हैं। असल ओझा हैं बलासीजी!

ग्यारह

"कमली के बाबू! कमली के बाबू!"

भीड़ में तहसीलदार साहब की नाक बहुत बोलती है—खुर्र खुर्र र—कमला की माँ पलंग के पास खड़ी है। उसके चेहरे पर मन की काली रेखा छाई हुई है—"कमली के बाबू?"

"ऊँ हूँ! क्या है?"

माँ धीरे-से पलंग पर बैठ जाती है। तहसीलदार साहब और भी अकबका जाते हैं, "क्या है?"

"कुछ नहीं" माँ खिसखिसाकर कहती है, "कमला ने कमला ने दो आँचल में दाग लगवा लिया।"

"आँ में ? आँचल में ? तहसीलदार साहब को लगा कि कमला के कपड़े में आग लग गई है। कमला जल रही है।

"हाँ चार महीना !"

तहसीलदार साहब और माँ दोनों एक ही साथ लम्बी साँस छोड़ते हैं।

"हे भगवान् !"

"अब क्या होगा ?

"समझो !"

"कैसे पता चला ?"

'मुझे तो पिछले महीने में ही थोड़ा सन्देह हुआ था। आज पूछने लगी तो चुपचाप टुकुर-टुकुर मुँह देखने लगी। डॉक्टर ने तो खूब इलाज किया! अब मुँह पर कालिख जो लगी है, इसको कौन छुड़ावेगा ?

तहसीलदार साहब का मुँह सूख जाता है। आँखों के आगे भयावने दृश्य एक-एक कर आते-जाते हैं—उनके मुँह में कालिख पुती हुई है और सभी लोग ताली बजाकर हँस रहे हैं, पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।

"मैं पहले ही कहती थी इतना हेल्थ अच्छा नहीं। आम और फूल एक साथ कब तक रहें ? और तुम्हारी दुलारी पर तो मानो जादू कर दिया है डॉक्टर ने। अभी भी कह रही है डॉक्टर ने कहा है ।

"क्या कहा है डॉक्टर ने ? तहसीलदार साहब तिनके का सहारा ढूँढ रहे हैं।

"साफ-साफ कहाँ कहती है कुछ ! कहती है कि डॉक्टर ने कहा है—जो होना मंगल होगा।"

"मंगल ! हुँह ! मंगल ! पापी, सूअर नमकहराम कुत्ता का बच्चा जाना ! अब गले में रस्सी का फन्दा लगाकर मरो कमला की माँ ! क्या करोगी ?"

"लेकिन मैं सच कहकर कह सकती हूँ मेरी बेटी का इसमें कोई दोष नहीं ।" माँ रो पड़ती है, "कमली का कोई कसूर नहीं। डॉक्टर ने धोखा कर उसका सत्यानाश किया है।

कमली माँ अपने बिछावन पर लेटी हुई है। आज उसे बार-बार डॉक्टर की याद आती है। डॉक्टर का हँसना बोलना ठठा-ठठाकर गीली-गीली बातें करना और बाँहों में जकड़कर । उसकी आँखें भर-भर आती हैं। लेकिन डॉक्टर ने कहा है, जो होगा मंगलमय होगा! यदि डॉक्टर को दाबुक हीरा हो जाये तब ? माँ रोती क्या थी ? महाभारत में कुन्ती देख

पानी अहल्या द्रौपदी कौन ऐसी है जिसको ? डॉक्टर ने कहा है, हम दोनों को कोई अलग नहीं कर सकता।

"डॉक्टर ने क्या कहा है ? तहसीलदार साहब सुबह-सुबह चाय पीते समय पूछते हैं, 'दूधो कमला से साफ-साफ डॉक्टर ने क्या कहा है ?"

"कहती है डॉक्टर कहता था हम लोगों को कोई अलग नहीं कर सकता !" माँ धीरे-धीरे इधर-उधर देखकर कहती है।

"सो तो समझा !" तहसीलदार साहब का चेहरा फिर बुझ-सा जाता है, लेकिन खयाल है कि वह तो जेल में है अब क्या सजा होती है, सो कौन जाने ?

'फिर मरद की बात का क्या ठिकाना ? कमला के पास उसकी कोई चिट्ठी-पत्तरी है ?"

तहसीलदार साहब कानूनची आदमी हैं। कागज पर आपके हाथ का 'क' भी लिखा रहे तो उसके वह सारी दस्तावेज ऐसी बना दें कि पटना का इस्पाट[1] भी नहीं पहचान पावे कि असली है या जाली !

"चिट्ठी-पत्तरी यदि होती भी तो वह देती नहीं। वह कह रही थी कि हमको मुकाम-घर में बन्द रखो। लोग तो जानते ही हैं कि कमला बीमार है। तब तक डॉक्टर आ जायेगा। 'लड़की की बातें सुनकर कलेजा फिर नहीं रहता है। कहती थी माँ अपराध के लिए आखिर कोई सजा तो मिलनी ही चाहिए। इसको घर में ही जेहल दे दो !"

"हुह्-हुह् !" तहसीलदार साहब का भी दिल कसक उठता है, "कमला की माँ ! मेरी बेटी अब मेरे सामने नहीं आवेगी ? क्यों ? एक बार उससे बात करना चाहता हूँ। तुम क्या कहती हो ?

उफ् ! कमला के चेहरे पर दिनों-दिन तेज आता जा रहा है। मुख-मण्डल चमक रहा है, लेकिन आज उसकी निगाहें नीची हैं। चुपचाप आकर माँ की आड़ में खड़ी हो जाती है।

"दीदी !

" "

"इधर आओ दीदी ! तुम्हारा कोई कुसूर नहीं बना !"

"बाबूजी मेरी सूरत मत देखिए। मुझे मुकाम-घर में बन्द कर दीजिए।" कमली रो पड़ती है फफक-फफक !

और कोई उपाय भी तो नहीं।

---

१ विशेषज्ञ।

कमला कहती है—"लगता है कि यह डॉक्टर नहीं जिन है एक बार बीरी मौसी ने जिन-पीर की कहानी सुनाई थी।"

"डर तो नहीं लगता ?

"नहीं माँ! डॉक्टर अब मेरे पास हमेशा रहता है। मुझे डर नहीं लगता है। इसीलिए मैं एकान्त में अँधेरे में रहना चाहती हूँ। माँ डॉक्टर का कोई कुसूर नहीं यह सचमुच जिन है।"

सुनते हैं कि जिन जिस पर प्रसन्न हो उसको तुरत कुछ-से-कुछ बना देता है। रुपया-पैसा जमीन-जमीन तुरत ढेर लगा देता है। और जिन जब लेने लगे तो पान के बजार-के-बजार में चूहे लग जायेंगे तम्बाकू पर पत्थर गिर पड़ेगा किसी बड़े सेशन-केस में फँसना होगा। तहसीलदार साहब हिसाब करके देखते हैं डॉक्टर जब से उसके परिवार में घुसा-मिसा है रोज अलाय-बलाय की आमदनी होती ही रहती है। जिस बात से सारे गाँव का नुकसान हुआ उसमें भी लाभ ही रहा तहसीलदार को। मुकदमे में मुस्के फँस गए और इतना बड़ा सेशन केस दूसरों के सिर पर ही सौंप दिया। अपने घर से तो एक पैसा गया ही नहीं ऊपर से पाँच हजार के करीब फायदा ही हुआ। खेलावन रामकिरपालसिंह वगैरह की जमीन मिली सो मुफ्त में ही। कमला ठीक कहती है—डॉक्टर जिन है।

कमली ने एक सप्ताह बहुत मजे में काट दिया। कुछ किताबें पढ़ने को माँगी हैं—"विषवृक्ष इन्दिरा राजसिंह आनन्दमठ देवदास श्रीकान्त रंग भूमि गोदान और हरिमोहन बाबू की कन्यादान। बस अभी इतना ही! डॉक्टर साहब की अलमारी में हैं किताबें। हाँ हाँ लिफाफा दीजिए। प्यार से कहिएगा!"

मकान-घर की ऊपर वाली खिड़कियों से चाँद झाँकता है। अगहन की चाँदनी! चाँद बादलों में छिप जाता है। माँ दुर्गा के आने की सूचना मिल गई है। इस बार देवी किस चीज पर चढ़कर आयेंगी आज से लिखकर पूछना होगा! जगदम्बा हाथी पर आई हाँपी! जिस बार हाथी पर आती है माँ

बारह

जै! दुर्गा माता की जै!

चम्पापुर के कुमार साहब ने इस बार फिर बड़े-बड़े पहलवानों को बुलाया है। कुश्ती शिकार, संगीत और साहित्य सब का एक सम्मिलित पीठ-स्थल रही है चम्पापुर की ड्योढ़ी।

बूढ़े राजा के समय की बात जाने दीजिए। अभी भी कुछ कम नहीं — विश्वकवि रवीन्द्र ने जिस ड्योढ़ी की साहित्य-गोष्ठी में अपनी प्रसिद्ध रचना राजा-रानी की मार्जना की है, जहाँ की संगीत-मण्डली में पूरे एक सप्ताह तक फैयाज खाँ की अमर स्वर-लहरी लहरा चुकी है। बूढ़े राजा ने शिकार पर कई किताबें लिखी हैं।

पंजाबी पहलवान मुस्ताक का चेला 'चाँद' आया है इस बार। अजेया! कालीचरण बलमंडी के पास एक घाँव में है। दूर के रिश्तेदार बहुत चालाक आदमी हैं। उसका नाम बदल दिया है—रुस्तम खाँ! लोगों से कहता है, रुस्तम खाँ तम्बाकू का दलाल है, पूर्वा[1] है। कल चाँद अखाड़े में जाँघिया लगाकर उतरा मगर घुमते हैं कि कोई जोड़ा ही नहीं मिला। कालीचरण ऐंठ जाता है। वह जायेगा जरूर-जरूर!

चम्पापुर मेले का दंगल है बाबू! देखने वालों पर कभी-कभी ऐसा जोश सवार होता है कि आसपास के लोगों में धक्कमधुक्की शुरू हो जाती है। सिपाहीजी लोग छड़ी नहीं चमकाते रहें तो हर साल एक-दो आदमी दबकर मर जायें!

आज भी चाँद जाँघिया लगाकर घूम रहा है। कालीचरण भीड़ में से देखता है, "वाह! बलिहारी दोस्त! शरीर को खूब बनाया है! बलिहारी है दोस्त!"

ऐं! आज भी चाँद का जोड़ा नहीं मिला? जै-जै! दुरगा माई की जै! जोड़ा नहीं मिला! जै!

मेंपों मेंपों में में! पों पों पों!

चटाक चट या! चट या भिड़ या!

"म ज ज जा। आ आजी!" हाफ कमीज और पाजामा फाड़कर चित्ती-चित्ती करते हुए कालीचरन मैदान में उतर पड़ता है।

---

१ पूरब का।

"ऐ! ऐ! पावक है, मारो मारो!"

"नहीं जी! जाँघिया है अन्दर में!"

अरे! वाह! यह तो असल जोड़ा है। कौन है? अखाड़ा में उतरने का ढंग ही कुछ ऐसा है कि सबकी आँखें चमक उठती हैं। सभी की निगाहें आपस में मिलती हैं—हाँ यही है चाँद की जोड़ी!

मण्डलजी नाम-धाम पूछकर अपनी ओर से कुश्ती शुरू करवाने का हुक्म दे रहे हैं सरकार!

सभी बाजे-बाजे अचानक थम गए हैं। क्या हुआ? कुश्ती होगी या नहीं? पहलवान मुस्ताक अली हाथ जोड़कर क्या कह रहा है बड़ कुमार साहेब से? क्या नाम कहा? रुस्तम अली? बोधनी का? मोरंगिया है? नहीं नहीं देसिया ही है। वाह अजबत जोड़ा है!

चटाक् चटवा! चटवा पिड़वा!

"अरे वाह रे उस्ताद! ले-ले-ले बच गया। अरे, यह तो बिजली है—बिजली!" चाँद नाच रहा है। यह पंजाबी पैंतरा है। रुस्तम चुपचाप मुस्करा रहा है 'मंझला उस्ताद! आज की बाजी यदि हार गए तो समझेंगे कि मँगला को सूना बाप हुआ। यदि जीत गए तो यही परीक्षा है मेरी। चाँद को क्या ऐब कपा दिया है उसके दूध ने? इतना पावक होकर टूटता क्यों है? अगली रुस्तम मुस्कराकर एक छोटी पुलकी लेता है चाँद ने अचानक ही फिर हमला किया।

"अ-आ-आ!" भैया यह रुस्तमवाँ भी तो कमाल है! कोई जादू जानता है क्या? हाँ चाँद को मालूम हो गया होगा।

"नहीं जी कहाँ पंजाबी और कहाँ देसिया!"

"कहीं दारोगा साहेब तो देख नहीं रहे हैं? क्या दिखाना! खेल दिखाने का समय नहीं। अखी धैलका हो जाना चाहिए।

"अरे, सा सा रा जा हा हा हा हो हो, धी धी!"

पीछे वाले उचक-उचककर देखते हैं। बाल के पेड़ की एक डाली टूट गई। क्या हुआ? साफ? कौन? डेढ़ गज के एक छोटे से चक्कर में रुस्तम घूमा और चाँद को आसमान दिखा दिया।

"कहाँ गया? रुस्तम कहाँ गया?" बड़ कुमार साहब बाघ-बिछुल होकर पुकार रहे हैं। अखिल का पुजारी खोज रहा है—"रुस्तम! भीड़ को हटाइए। रुस्तम कहाँ गया?"

लगता है जौहरी को कीमती पत्थर हाथ लग गया है। नहीं नहीं

हाथ में आते-आते खो गया। कहाँ गया।

रुस्तम खामोश हो गया।

बहुतों ने कहा—चलित्तर कर्मकार ही नाम बदलकर अखाड़े में उतरा था। चलित्तर का गुनत है लाल-पंजा हनुमानी अण्डा का महातम मिला है—वह कहीं हार नहीं सकता है।

मंजा में साथ फाहरम बाँट हुआ है। लिखा है—'कम्यूनिस्ट पार्टी के आल अण्डा को बुम्मन्दी से होने वाले चलित्तर कर्मकार के ऊपर से वारण्ट हटाओ।

कालीचरण बमभरी के रिश्तेदार के यहाँ से फारबिसगंज की ओर चला जाता है। सिकरेटरी साहब उससे मिलना चाहते हैं। लेकिन वह मिलेगा। सुनते हैं सिकरेटरी साहब ने कहा है कालीचरण पार्टी के मेम्बर नहीं किसान सभा के कुशल मेम्बर है। सिकरेटरी वह सारी बात समझावेगा। उस वक्त वह पार्टी आफिस में था। बरमपुरीजी से भी भेंट नहीं हुई, कम्बे गये हैं। कालीचरण अपनी पूरी सफाई देकर ही हाजिर होगा।

"अरे। तुम! कामी! मैंयसा डरते-डरते सैंमक गई, 'क्या डपटकी मियाँ की तरह सूरत बनाई है! अन्दर आ जाओ। कोई डर नहीं। अकेली हूँ।

कालीचरण मैंयसा से मिलने आया है—अचानक।

कालीचरण को एक पुराने रेलवे क्वार्टर के अन्दर वाले कमरे में बिठाकर मैंयसा लोटा-गिलास लेकर पानी के नल पर चली जाती है। कालीचरण देखता है—वर्षा है पुतली भी है खाट पर कम्बल के ऊपर सफेद साड़ी की चादर है। उसकी माँ का खुमारी है। रात-भर बैलगाड़ी पर क्या ही रह गया है। रंग पर भी ऊपर वाली तहती पर लेटा आया है। लोटा-गिलास चमक करता है। ठण्डा पानी! नीम का शरबत!

मैंयसा गिलास बढ़ाते हुए मुस्कराती है मैं तो डपटकी मियाँ ही कहूँगी। राम अली तो जालबना मिल का बूढ़ा सरदार है।"

कालीचरण हाथ में गिलास लेकर मैंयसा की ओर टकटकी लगाकर देखता है। मैंयसा कितनी दुबली हो गई है! रंग भी जरा चरका हो गया है!

"खबरदार! हेण्डसप्!"

सट खट पट खट!

दारोगा साहब पिस्तौल ताने खड़े हैं। आठ-दस सिपाही बन्दूक की नली को इस तरह ताने हुए हैं मानो फैर कर देंगे।

"दारोगा साहेब! पानी पी लेने दीजिए! मैंयसा को थाना-पुलिस का क्या डर!

"आप तुम कौन हो इसकी? तुम क्या करती हो तुमको भी गिरफ्तार किया जाता है।"

"दारोगा साहब इसको पानी पी लेने दीजिए।"

मँगला अपना सर्टिफिकेट देखने के लिए देती है।

"ओ! आप चर्खा सेण्टर की महिला हैं " दारोगा साहब मँगला के सर्टिफिकेट को देखकर वापिस देते हैं।

"हाँ मेडिसंज में काम करती थी। जान-पहचान थी, एक साथ काम किया था। इसीलिए !"

'लोग लो इस साले की दाढ़ी! तेरी माँ को !"

'आह!" मँगला झट से दरवाजा बन्द कर लेती है।

ऊपर से बन्दूक के कुन्दे पड़ रहे हैं काली के कन्धे पर। वह दरवाजा खोलता हुआ पुलिस-गाड़ी पर जा बैठता है। कार्तिक महीने के कातरी नींद में कितना सुदन्त होता है! सर से खर-खर खून गिर रहा है। लेकिन उसका सारा शरीर सन्तुष्ट है, शून्य है।

दारोगा साहब उसके मुँह में हण्टर डालते हुए कहते हैं—"साला! मर जायेगा मगर नहीं बतलायेगा। सोमा साला भी ठीक ऐसा ही है। अरे! चालिसर करमकार तेरी माँ का भतार है है न?"

कालीचरण के हाथों की हथकड़ी एक बार झनक उठी। मांसल पुट्ठों में एक क्या हर्ष उभर आया आँखों में खून उतर आया। लेकिन नहीं। उसकी बाती बदनाम हो रही है। वह सब कुछ सहेगा।

"मेज दो साले को! वासुदेवा और सुमरा तो वो ही बच्चा में बक-बक उठमने लगा। उन दोनों को क्या है? सरकारी पनाह हो गए हैं। पिटा हो जायेंगे दोनों। मरेगा यही दोनों। डकैती विद मर्डर!"

नींबू का दरवत! डकार अभी भी आ रहा है कालीचरण को!

—मँगला मुझे माफ करना!

तेरह

बालदेवजी रामकिसुन आश्रम बहुत दिनों बाद आये हैं। एकदम बदल गया है आश्रम! लोग भी बदल गए हैं। मोड़ा चालचलन भी बिगड़ गया है

आश्रम का। अब तो लोग मछली और अंडा भी चौका ही में बैठकर खाते हैं। अमीन बाबू सिकरेटरी हुए हैं। कहते हैं, 'मछली-मांस आश्रम में न तो बनाया-पोसा जाता है और न भूम्हे पर पकता ही है। लोग बाहर से पका पकाया ले आते हैं खाते हैं। इसमें हर्ज ही क्या है?

"हरज क्या है? बालदेवजी हक्का-बक्का होकर अमीन बाबू का मुंह देखते हैं, लेकिन पहले तो आश्रम के हाता में भी नहीं आता था।"

"यह जो नया रसोई-घर बना है वह आश्रम की जमीन में नहीं कुबर साह की जमीन में है। आप तो आप जमीन वाले आदमी हो गए, खाता-खतियान नक्शा-परचा देखना तो जरूर सीखे होंगे। आइए, आकर कचहरी में नकल-निकास करवाकर देख लीजिए। समझे!" फारबिसगंज के नवतुरिया नेता छोटन बाबू कहते हैं।

बालदेवजी कटमटाकर उनकी ओर देखते हैं। छोटन फारबिसगंज का यह मुंहजा लौंडा हर बात में फुच-फुच करता है। अमीन बाबू के साथ दिन-रात रहता है न इसलिए मुंहजोर भी हो गया है। भूत तो नम्बर एक का! फारबिसगंज का नाम फरेबगंज करेगा यह, इसमें कोई सन्देह नहीं।

"छोटन बाबू! खाता-खतियान नक्शा-परचा देखकर हम क्या करेंगे। रामकिसून बाबू के जमाने में ।"

"रामकिसून बाबू का जमाना रामकिसून बाबू के साथ चला गया।" छोटन बाबू का टंडेल-मोकटियर[1] मटरू भी बोलता है, "यह कांग्रेस आफिस है, बाबाजी का मठ नहीं।"

बालदेवजी की बकिल गुम हो रही है।

खैनी से सड़ हुए दांतों को निकालकर मटरू हंसता है। फिर मटकी मार कर कहता है" 'कबिराहा' में तो 'सब धन साहेब का' ही होता है। खेंखड़ी बजाना सीखे हैं या नहीं?

"हा हा हा हा! सभी ठठाकर हंस पड़ते हैं।

चमपट्टी का मूबर कहता है—"बालदेव! अब यह अपने गांव में जाओगे तो बतियारी मौज से पकड़कर उठा लिये जाओगे।"

"बालदेव मेरीगंज का एकान्ती मजा छोड़कर गांव क्यों जायगा? मठों में काना बनकर मौज कर रहा है।"

"हा हा हा हा हा हा!"

---

१ किसी मेला का व्यक्तिगत नौकर।

बालदेवजी की आँखों में आँसू आ जाता है। यदि दोरिक सरमा आ जाते तो वह फूटकर रो पड़ता। सरमा ने आते ही कहा—'क्या है क्या है? बालदेवजी को तुम लोग क्यों चिढ़ाते हो?

'चिढ़ाना कहाँ है? हम लोग सतसंग करते हैं। छोटन बाबू हँस कर बोले।

सरमा ने पास की खाली कुर्सी पर बालदेवजी को बैठाते हुए कहा—"बालदेवजी! यहाँ बैठिए, हम जवाब देते हैं। सतसंग की बात कहते हैं छोटनजी! यह बालदेव दोरिक धर्मा सवामासे फगुआ लहटना बीनवास उजाड़ चुन्नीदास पिरबी अमरलखिया छबी गणाराम वगैरह के सतसंग का ही फल है कि आपके जैसे लाल पैदा हुए हैं। अभी पेमरा-नेट साड़ी पर सीडरी सीख रहे हैं भाय! आप क्या जानिएगा कि सात-सात मूआ फाँककर, सौ-सौ माइल पैदल चलकर गाँव-गाँव में कांग्रेस का झंडा किसने फहराया? मोमट में आपने स्कूल में अपने पंचम जारज का फोटो तोड़ दिया हेडमास्टर को ऑफिस में ताला लगाकर बंद कर दिया बस आप लीडर हो गए। यह भेद हम लोगों को मालूम रहता तो हम लोग भी खाली फोटो तोड़ते। गाँव के जमींदार से लेकर थाना के चौकीदार-दफादार जिनके बैरी! कहीं-कहीं गाँव वाले रस्सा बाँधकर हम हुड़काते थे जैसे मुड़ बछिया[1] को लोग सूप और खपरी बजाकर हुड़काते हैं। आप नहीं जानिएगा छोटन बाबू! आपका जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय आपके बाबूजी दारू की दूकानों की ठेकेदारी करते थे। हम लोग उनको पानी सुन चुके हैं। क्या बालदेव! याद है? कहो, डटकर मर्दुआ की बात?

गूदर पुरुस रव बदलना जानता है यह भी तो नीमक कानून के समय से ही लोग टाँग रहा है—'सरमाजी! रिपोरास हाट पर।

'चुप चाण्डाल कहीं का! धर्मा जा मोटन है जिपर चाँद उमर सलाम!

बालदेवजी को सभी मिलकर चिढ़ाना क्या रे! बालदेवजी जरा साफ कपड़ा पहनने लगे हैं परसों पक्का खरीदे हैं पहरा माहरा पहने न जरा जिनका लगता है पास में पैसा है इसीलिए तुम लोगों का कलेजा जल रहा है। चलिए बालदेवजी मोमुर्गीजी के यहाँ हम भी बहुत दिन से नहीं गए हैं।"

"अभी मिटिन जा है बालदेवजी रहा है।

---

१ बिना छिरकाया प्रेत।

"अरे, बाप भी तो बालदेवजी सब दिन एक ही समान रहे गए! मिटिंग में रहकर क्या कीजिएगा। फारबिसगंज वालों का कब्जिया फैसला होने वाला है। खुदय बाबू एक बोड़ा-भाड़ी में भरकर कागज-पत्तर, फाइल-रजिस्टर, बीयर, शिवबूकट[1] और मुकदमों के कागज के आये हैं। उधर फतुलीसिंघ भी एक सौ आदमी को भेंजाकर ले आय है। आज रात-भर खूब घमाघम होगा। फलिए क्या देखिएगा राँड़ो बेटलोकी का तमड़ा!

बालदेवजी दोहिक धर्मा के साथ चले गए तो दूबर ने आँख टीपकर फिस फिसा के कहा "अरे! बागुनीजी के यहाँ जाता है बोड़ो! जा रहा है तिरपित मजार म अभी बालदेवजी को चाट पर चढ़ाएगा। रसगुल्ला खाएगा।

छोटन बाबू कहत है, 'मलीन बाबू से कहना होगा। मेरीमज म अब बालदेव से काम नहीं चलेगा। अपनी डेस्टर को चौपट कर दिया। घर-घर में सोशलिस्ट बरबराने लगे। अभी तो सब डकैती केस मे ऐरेस्ट है। उस बीच का डॉक्टर कौमलिस्ट था वह भी ऐरेस्ट है। उसको तो हमीं ने ऐरेस्ट करवा है। बरहा का नया दारोगा हमारा क्लास फ्रेण्ड है।

"छोड़िए! एक बरमपियामी बचे तो दूसरे कर्पूरगलजी आ रहे हैं। यह तो आजकल और भी काबिल हो गया है।

बासनदासजी आ रहे हैं। आश्रम के बूढ़े कुत्ते बिलेकपी (ब्लैक प्रिंस) ने बासनदास को दूर से ही पहचान लिया है। अशोक वाछ के नीचे वह इसी तरह बैठा रहता है और हर आने-जाने वाले को देखता है। बासनदास को देख के कान खड़ा कर गर्दन उठाकर देखता है। दुम भी हिला रहा है। बालदेवजी ने इस कुत्ते का नाम रखा था—ब्लैक प्रिंस। सोशलिस्ट पार्टी के बिलमारीजी ने लाल पताका में बिमा के एक मारवाड़ी को ब्लैक प्रिंस लिखा था अर्थात् जो ब्लैक करने में मशहूर हो। चूँकि मारवाड़ी एकदम नौजवान था इसलिए प्रिंस लिखा था। मारवाड़ी ने मुकदमा ठोंक दिया था कि लाल पताका के सम्पादक ने उसे कुत्ता कहा है। बिलेकपी ने ठीक पहचाना है। बासनदासजी भी अशोक की छाया में बिलेकपी के पास आकर बैठ गए। अहा हा! प्यार का भूखा बिलेकपी! खुशी से उछल-कूदकर, दौड़कर कभी बासनदास की की साड़ी दाँत से पकड़कर खींचता है कभी लाठी लेकर भागता है! अ हा-हा!

"अ-हा-हा! बिलेकपी रे! बाघ आ रहे हैं। पहले तो रविवार

---

१ बकलिकेट।

कब डॉक्टर से भेंट किये या नहीं? माँ पूछती है।

"हाँ रात में तो सुना ही नहीं सका। बड़ा आदर का काम है। दरखास्त दिया तो पूछा कि डॉक्टर आपके कौन हैं। मैं क्या जवाब दूँ? कहा कोई नहीं। बस मामंजूर कर दिया दरखास्त। किरानी बाबू बड़े भले आदमी थे। वे बोले कि डाक्टर साहब नजरबन्द हैं, इसलिए वे सिर्फ माँ बाप स्त्री और बहन से ही भेंट-मुलाकात कर सकते या मिल सकते हैं। क्या कानून है! बहन को चिट्ठी दे सकते हैं बहनोई को नहीं। स्त्री से भेंट कर सकते हैं लेकिन साथ में ससुर रहे तो वह बेचारा अपने जमाई का मुँह भी नहीं देख सकता!" सहसीलदार साहब मुँह बाकर, बगल की कोठरी में जाते-जाते कहते हैं, "प्यारू वहीं पूर्णिया में ही रहता है। एक होटल में खाता पीता है। जेल के अन्दर से ही डॉक्टर ने बलराम का इन्तिजाम कर दिया है धरमो-समाज मन्दिर में। हर महीने दरबदर करके फिर भेज देता है डॉक्टर। प्यारू और बलेसर के साथ से बलराम भलमन्स बिक देता है। जो भी कहो आदमी बहुत अच्छा है यह डॉक्टर! प्यारू कहता था एक दिन यह पूरब के ठेकेदार के पास अन्दर चला गया। अन्दर जाकर, फाटक के पास ही डॉक्टर साहब से भेंट हो गई। डॉक्टर साहब जेल आफिस में था रहे थे। प्यारू को देखकर भचकचा गए डॉक्टर साहब। फिर कहा, क्यों आये? प्यारू ने कुछ जवाब नहीं दिया तो पूछा मेरीगंज से कब आये हो? कमला कैसी है?"

"ऐं? पूछा? डॉक्टर ने पूछा था? प्यारू ने क्या जवाब दिया?" बलराम की माँ एक ही साँस में उतावली होकर पूछती है, "न जाने क्या बता दिया उसने?

"नहीं प्यारू बेवकूफ नहीं है। जवाब दिया अच्छी है। आपका चिट्ठी दे गई है, रोज सुबह उठकर देखती है।

"अच्छा? कहा उसने? कितना होशियार है प्यारू! मा हा हा! भगवान भी कैसे हैं? कोई नहीं है बेचारे को। तब डाक्टर ने क्या कहा?"

"कहता था हँसते-हँसते [illegible]।" सहसीलदार साहब ने मुँह में पान डाल लिया। [illegible]

[illegible] कमला की [illegible]

म मन करता है कभिन उपन्यास पढ़त समय ऐसा लगता है कि यह देवी-देवता, ऋषी-मुनि की कहानी नहीं जैसे यह हम लोगों के घर-घर की बात हो।

आज दो दिनों से खाना पीने के बाद कमला के गर्भ में पलता हुआ शिशु हाथ-पाँव फड़काता है। आज से यह कुछ कम्ती नहीं है माँ को। लेकिन जब से उसे आम खाने की आदत मिली है कमला का मन किसी दूर देश में खो सा गया है। एक ही साथ बहुत से बच्चों के मुखड़े खिलखिला उठते हैं उसकी आँखों के आगे। बच्चे उसके साथ आँखमिचौनी खेल रहे हैं? कौन है वह? सभी प्यारे! ताजे कमल की तरह खिले हुए। वह किसका हाथ पकड़े? वह एक चंचल बालक को उठाकर गोद में ले लेती है। कितने कोमल हैं उसके हाथ-पैर, कैसी मीठी सम्कराहट! कितना चंचल! मेरा चुलबुला राजा रे!

कमला की छाती से दूध झरने लगता है।

"कमला की माँ! तहसीलदार साहब डोमकिले की कोठरी से पुकारते हैं।

'जरा इधर तो आना कमला की माँ!

डोमकिले पर पैर रखते ही तहसीलदार साहब की बुद्धि, उनके विचार, उनकी बोली-बानी सब बदल जाती है। जबड़े की हड्डियाँ चुक-चुक चलती रहती हैं मानो कोई चीज चबा रहे हों।

'कमला की माँ! मैं सब पोथी समाकर मर जाऊँगा। मुझे नींद नहीं आती है। क्या होगा? कुछ सोचती हो? कोई उपाय? दुखन को भी ये दिन कभी देखने न पड़! तुम तो सब दिन रात बड़ी के पास रहती हो मेरा जी अकेले में घबराता है। तुम्हारी सासिन बड़ी ने ऐसा डँसा है कि " तहसीलदार साहब आवेश में आकर खड़े हो जाते हैं।

"छि! कमला के बाबू! कैसी बातें करते हो?

'चुप रहो तुम! तुम दोनों ने मुझ । हट जाओ!

"कमला के बाबू बैठ जाओ! चिल्लाओ मत लड़की सुन लेगी।

"सुन लेगी! हूँ बड़ी आई साहब की बेटी आई है!"

'कमला के बाबू!"

"बोल!"

बूढ़ी नौकरानी आकर चली गई। चाह पीने के बहाने क्षण भर बाद लौटी।

"चलो!"

कमला अब भी रात होने पर अपने हाथों से खाना बनाकर तहसील

अपने बाप को। कमला कहती है 'बाबा एक सौ प्यालियों के बीच सिर्फ रंग देखकर मेरी बनाई हुई चाय पहचान लेंगे।"

नीचे के कमरे में बैठकर, चाय की प्याली में चुस्की लेते ही तहसीलदार साहब की तनी हुई नसें ढीली पड़ जाती हैं, चेहरा स्वाभाविक हो जाता है।

"खेबिया को रजाई भरवा दो इस बार, नहीं तो बूढ़ी इस जाड़े में गठिया से नहीं उबर सकेगी। तहसीलदार साहब कहते हैं।

"तुम्हारी बेटी तुम्हारे लिए ऊनी मंजी बिन रही है। किताब खोलकर सामने रख लेती है, दोनों हाथों में सलाई लेकर किताब में देख-देखकर जब बिनने लगती है कमला तो लगता है हाथ नहीं मिशीन है।

"सच? अहा! बेचारी ! मेरे जैसे अभागे के घर में जन्म लेकर बचपन से दुख-ही-दुख भोगती आ रही है दीदी मेरी ! कमला की माँ तुमको याद है जब सिर्फ एक साल की थी कमला उसी समय मैंने कहा था कि मेरी बेटी सन्तोष की पुतली बनकर आई है।"

खेबिया हँसती हुई अधूरा स्वेटर ले आती है।

"यही देखो!" माँ हाथ में लेकर दिखलाती है, "अपनी बेटी की कारीगरी देखो।

तहसीलदार साहब मुस्कराते हुए देखते हैं फिर खेबिया को इशारा करते हुए कहते हैं, "यह तो बहुत बड़ा होगा मेरी देह में। मेरे लिए तो इतना छोटा (एक बच्चे के बराबर) चाहिए! इ त ना छोटा!"

"ऊँ!" खेबिया गाल पर हाथ रखकर हँसते हुए कहती है, "बतहा!"[१]

माँ कहती है, "दे आओ! कहना बहुत बढ़िया है।

बहुत पुरानी नौकरानी है खेबिया। कमला की माँ के बचपन की सहेली है यह! साथ-साथ खेली है। बचपन में ही बेवा हुई, चमोला की बात सुनते ही हमेशा रोती रहती और नदी में डूबने जाती। कमला की माँ के साथ यहाँ आई और अब तक है। गठिया के कारण शरीर बहुत कमजोर हो गया है और एक कान से कम सुनती है।

कमला कहती है—खेबिया माई!

"ए! खेबिया माई!"

---

१ पागल।

बूढ़ी रोज पुराकर चूल्ह की लाल मिट्टी के टुकड़े दे माती है कमला को। कितनी सोंधी लगती है चूल्ह की मिट्टी !

माँ सेंदिया माई पूछती थी जमाई कब आयगा ?

तहसीलदार साहब बार्मबिले की छत पर खड़े होकर देख रहे हैं। पश्चिम की ओर डूबते हुए सूरज की लाल रोशनी बरमपुर-मिशिक' के खेतों पर फैली हुई है। रंग धीरे-धीरे बदल रहा है। लाल पुंछता लाल मटमैला ! अब अँधियारी बढ़ी आ रही है। तहसीलदार साहब की ड्योढ़ी बहारदीवारी भी सब अँधेरे में डूब गई।

पन्द्रह

बासदेवजी घोड़ागाड़ी वाले से कहते हैं—"देखो जी आज यदि 'टैम' पकड़ा दो तो आठ आना बकशीस देंगे !"

देखिए, अपने जानते कोशिस तो हम खूब करेंगे ! चल बेटा ! कदम-कदम बढ़ा के। " घोड़ वाला छोकरा भाड़ को चाबुक लगाते हुए गाता है। "समड़ा सुख हुआ है सारे हिन्दुस्तान में हिन्दू मसलमान म मा।"

बासदेवजी को आज मालूम हुआ कि महतमाजी दो महीने से बराबर पटना में थे। रोज प्रार्थना सभा में 'भाषन' देते थे महतमाजी ! आज कल 'दिल्ली' में हैं।

"ऐं ! कौन गाड़ी बिगुल दिया जी ?

"अभी सिगल डौन भी नहीं हुआ है। देरी है।"

"देरी है ? वाह बहादुर !

स्टेशन पर बासदेवजी ने भाड़ा के अलावा एक अठन्नी बकशीस में दिया तो घोड़ागाड़ी वाले छोकरे ने बड़े 'कैश' से हाथ चमका के सलाम किया "सलाम हुजूर !"

किसी अजान स्त्री को देखते ही बासदेवजी को झट से लक्ष्मी की याद आ जाती है। मन-ही-मन सोचते हैं यदि थोड़ी देर मंगलीजी के यहाँ और हो जाती तो आज सरमाजी आने नहीं देते। चलते-चलते सरमाजी ने आखिर दिल्लगी कर ही लिया अच्छा तो बासदेव आओ ! हम बेकूफ हैं जो तुमको रोकेंगे ? तुमको यहाँ रोज नहीं और उधर तुम्हारी कोठारिन किसी से 'सदमैन' करने

२ •

पप ता हुआ। हा हा हा। माफ करना अच्छा तो मैं हिम।

'मैं हिम्म बामदेवजी।

कौन? पलमोजी। कहिए क्या हाल है?

'हम ता अभी आ रए हैं मेरीगंज स। आइए रीजहट टीमन म आपका अभ्यर्थना करनी हुई है। सबे से रोकमनी' करान के लिए आज दस दिन क बाद लौटे हैं। हमार जलामा का गरम हुवा पप पया था। हाड़-फूलकर माथ लल आय है। म हा! आज दस बज हम आपक आसरम के तरफ गप थ एक अरी प्रोजन के लिए। आसरम दखकर मन होता था कि यहीं स नहीं नहीं जाय। आप ता थ नहीं कोठारिनजी थी। साहेब बमयी किया मुआड़ा कमैला लाया। एक नबतुरिया साधूजी इतना बढ़िया गा-गाकर बीजक पढ़ रहे थ कि जी हाता था बैठ रह। अच्छा ता मैं हिम!

नबतुरिया साधू? बागीजी का बिदियारथीजी है। महथ सेवादास क समय से ही मठ पर आता है साल-दो साल क बाद। महथ साहब जान क समय थाती बाल्य शिष्य का हाथ और रह-परछा देल थ। मानी क असल अक्षर चिन्हता है। मठमी से जा बीजक किया था बामदेवजी को वी विद्यिारथीजी ता पिया हुआ था। हम बार आप हैं ता कहल है कि मठ पर जा नहीं लगता है। लेकिन मठमी ता अब मर की बाल्यिन नहीं। एक भर पर का स्मतिथै है।

?ये? नहीं यह अच्छी बात नहीं? मठमी को समझा दना हामा। बाल्यबजी की मौसी राज सुबह ही उनक आसरम क सामन आकर बैठ जाती है और सिर-गिनकर गालियां सुना जाती है भर मधुआ र' एही दिन क लिए पाल-पाल के इतना बड़ा किया था र' मुखिजोसा र' एमिनियां मे तो तुमका धोखा की माटी' खिलाकर बस कर लिया है। मेंढा बनाकर रख लिया है। रे बमराजा जोरबी बमसी की मूरत पर बैस मय पया र।" और, मठमी कभी सर-भर चावल पाव भर दाल अथवा गहूं आल बर्गरह स्वर इस लिए करना है।

एक पहर रात हो गई है। सही बाजा पड़ने लगी है अब। बाल्यबजी बाहर म पान का बंद लल है। लेकिन रात ना गम है। विद्यिारथीजी अर हो हो! स्वर। माता! आदमी दरवर की महफिल है

---

१ स्वागत। २ भूत प्रेत का हवा। ३ बस में करने का एक टोना।

गाड़ीवान ने बैलों को रोकते हुए पुकारा गोसाईंजी ! उठिए, आ गए घर।"

बालदेवजी जग ही हुए हैं। उन्हें ही दूर पड़ की छाया में किसी को आते देखा है। आ! विदियारथीजी अभी आ रहे हैं। इसीलिए बैल भड़के थे।

"साहेब बंदगी! लछमी पैर छूकर साहेब बंदगी करती है।

बालदेवजी मिनमिनाकर कुछ कहते हैं और सीधे अपनी आसनी पर बैठे आते हैं।

"मेरा कम्बल कौन ओढ़ा था? बालदेवजी बिछावन पर पड़े हुए कम्बल को नाक सिकोड़कर देखते हुए पूछते हैं मेरा कम्बल क्या आया था वह?

'कौन?

और कौन? मालूम होता है मपना सेखनी हो! बालदेवजी का भाषा मर्म है।

'रामफल! तुम खाना खा लो! हमको भूख नहीं। हम नहीं खायेंगे। बालदेवजी जोर-जोर कम्बल झाड़ते हुए कहते हैं, दुनियाँ भर का आदमी आकर आसन पर सोएगा!

लछमी कई दिनों से देखती है बालदेवजी बात-बात पर बिगड़ जाते हैं। वह आकर दरवाजे के पास खड़ी हो जाती है आसन झाड़ा हुआ है। विदियारथीजी ना आभार पर बैठे थे।

"क्या? आभार पर क्यों थे? घर में क्या नहीं बैठते हैं विदियारथीजी? सुन घर में जैसा घर वैसा ओसारा।" बालदेवजी के भाव फलक उठते हैं।

विदियारथीजी आते हैं मलमल करने के लिए।

हाँ हाँ! खूब मलमल है। मलमल! हूँ मलमल बालदेव जी पृथा में मुँह सिकोड़ लेते हैं।

न जाने क्या आज मलमल सुनते ही उनके बदन में झरझराहट मचती है। डागदर बाबू ने कहा था—मलमल कर रहे हैं। बालदेव मन्मा ने आखिर कह दिया कौशल्या किसी के साथ मलमल।

"मलमल ही करना है तो उसकी आसनी पर जाकर सो। दिन रात खाली मलमल करती रहना।" बालदेवजी भाग टे। उनके एक अजीब मुद्रा बनाकर हाथ चमकाकर कहते हैं, मलमल!

"गमा गाव लछमी के भी मलमल कहना उचित है गमा ना। दान है?"

"तुम हम को विदियारथी सिखाओ हो? हम सब समझते हैं।

'क्या समझते हैं ?

बाँहें क्यों मरोड़ती हैं लछमी ? 'मारपीट करेंगी क्या ? गुस्सा से थरथर काँपती हैं, "बोलिए ! क्या समझते हैं 'रंडी समझ लिया है क्या ? ठीक ही कहा है, जानवर की मूँड़ी को पोसने से बकरे की फाँसी छुड़ाता है, मगर आदमी की मूँड़ी ।"

'हम तुम्हारे पालतू कुत्ता नहीं। हम अभी चम्पानगर चले जावेंगे अभी !" बालदेवजी उठकर खड़े होते हैं।

'गोस्सा मत होइए गोसाईं साहेब ! करोध पाप को मूल ! जाते-जाते देह में मकलंग[1] छुआकर मत जाइए ।"

बालदेवजी कुछ सोचकर बैठ जाते हैं। लछमी की देह से गन्ध निकलती है। चुपचाप लछमी की ओर देखते हैं वह। लछमी चुपचाप किवाड़ के सहारे खड़ी आँसू पोंछते हुए सिसकती है "मेरी तकदीर ही खराब है !"

लछमी रो रही है ? बालदेवजी का गुस्सा धीरे-धीरे उतर जाता है। वह उठते हैं, लछमी के सर पर हाथ फेरते हुए कहते हैं, 'रोओ मत ! तुम पर क्या सन्देह करेंगे ? रोओ मत ! लेकिन तुमको अब खूब समझना चाहिए कि तुम अब मठ की कोठारिन नहीं मेरी इसतरी हो। लोग क्या कहेंगे ।"

लछमी बालदेवजी के पाँव पर गिर पड़ती है, 'क्षमा प्रभू ! दासी का अपराध ।

"छि छि ! लछमी उठो चलो भूख लगी है।"

सोलह

डॉक्टर मजूमदार है।

अब अस्पताल के एक सेल में उसे रखा गया है। हर सप्ताह कोई न कोई ऑफिसर आकर उसे घण्टों परेशान करता है, तरह-तरह के प्रश्न पूछता है।

बलिस्टर कर्मकार के दल से डॉक्टर का कोई सम्बन्ध प्रमाणित करने के लिए पुलिस जी-तोड़ परिश्रम कर रही है।

"आप जानते हैं बलिस्टर कर्मकार किस पार्टी का मेम्बर है ?"

---

१ कर्मंडल।

"जी नहीं। मैंने चलित्तर कर्मकार का नाम भी नहीं सुना।

'नहीं सुना? जिले-भर के बच्चे तक जानते हैं।

चलित्तर को कौन नहीं जानता! बिहार सरकार की ओर से पन्द्रह हजार इनाम का एलान किया गया है। हर स्टेशन के मुसाफिरखाने में उसकी बड़ी सी तस्वीर लटका दी गई है। पुलिस सी आई डी० और मिलिट्री का एक स्पेशल जत्था उसे गिरफ्तार करने के लिए साल-भर से जिले के कोने-कोने में घूम रहा है। नये एस पी साहब ने प्रतिज्ञा की है, या तो चलित्तर को गिरफ्तार करेंगे अथवा नौकरी छोड़ देंगे। घर-घर में चलित्तर की कहानियाँ होती हैं। नलाजी के सिमापुर में आने के समय यौवन-भर, घाट-बाट लोग तमाशा में लोग जैसी चर्चा करते थे वैसी ही चर्चा चलित्तर की भी होती है।

कटहा के बड़ दारोगा से थाने पर जाकर, भेंट करके बातचीत करके पान खाकर और नमस्ते करके जब उठा तो हँसकर कहा हम ही चलित्तर कर्मकार हैं। दारोगा साहब को घोंघी लग गई। कलक्टर साहेब डाकबिलो रोड से कहीं जा रहे थे उधर धार की नाव बह गई थी। कलक्टर साहब रोक रहे थे कि एक आदमी ने आकर सलाम किया और कहा कि चलिए उस पार पहुँचा देते हैं। कलक्टर साहेब तो मोटर में बैठे ही रहे उस आदमी ने मोटर सहित कलक्टर साहेब को नदी तैरकर पार कर दिया। सिरिफ मोटर का एक पहिया एक हाथ से पकड़े रहा। उस पर जाकर कलक्टर साहेब ने खुश होकर इनाम देने के लिए नाम-धाम पूछा तो बताया—चलित्तर कर्मकार। कलक्टर साहेब के हाथ से कलम छूटकर गिर गई। रोते हुए बच्चे को सुन में माँ डपटती है—आ रे! चलित्तर, पोड़ा नहीं!

और डॉक्टर कहता है कि उसने चलित्तर का नाम भी नहीं सुना! कैसे विश्वास किया जाय? विराटनगर के बड़े हाकिम ने लिखा है डॉक्टर नेपाल की प्रजा नहीं। बंगाल वालों का अभाव आया है, बंगाल से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। तो आखिर कहाँ का आदमी है? पुरानी फाइलों को उलटने से बातें और भी उलझ जाती हैं। अजब संकट है! उधर विधान-सभा में सवाल पूछा गया है—डॉक्टर को क्यों नजरबन्द किया गया है? बड़ी मुश्किल है! एम० पी० साहब बहुत कड़े आदमी हैं। कटहा के छोटे दारोगा को गालियाकर ठीक कर दिया है।

जेल में दाखिल होने के बाद डॉक्टर को लगा इसकी बहुत बड़ी आव श्यकता थी। जेल! अस्पताल का यह सेल! ऑफिसरों का आना-जाना और पूछताछ पन्द्रह-बीस दिनों के बाद ही बन्द हो गई। मांसी जी पन्ना।

सभा में ऐसे प्रवचन करते हैं। वैसिक पत्रों के ये पृष्ठ कभी पुराने नहीं होंगे। इन प्रवचनों पर बहस नहीं की जा सकती है किसी सेल में बैठकर इसका अध्ययन किया जा सकता है। अभी कल कुछ सम्प्रदायवादियों के एक दल ने जमसे का उद्घाटन किया है ग्राम के एक बड़ा जन-जाहिर मेला में। मालूम होता है कालबाजी बहुत दूर तक चली गई है। महात्मा गांधी से भी काली-टोपी स्वयं सेवक दल के लिए प्रार्थना के समय बसूलना हँसी-खेल की बात नहीं! मन में किसी ने कहा था उन्हें फांसा दिया गया है। और तीसरे ही दिन बात स्पष्ट हो गई। गांधीजी ने बयान में कहा इन संस्था के संचालकों ने मेरे पास अपनी संस्था का उद्देश्य लिखाया इसका मतलब हुआ उनकी आत्मा कहती है कि वे असत्य मार्ग पर हैं। फिर कोई सही दिमाग वाला आदमी उन्हें कैसे कहेगा कि वे सही रास्ते पर हैं! मेरीगंज की याद आती है! कमला की वही चिन्ता थी मगर सुना है वह ठीक है। कमला की याद आते ही जेल की सारी कुरूपताएँ सामने आकर खड़ी हो जाती हैं। कालीचरण वासुदेव वगैरह हवेली-केस में फँसकर आये हैं। वासुदेव, सुन्दर और सोमा की बात नहीं जानता लेकिन कालीचरण? विश्वास नहीं होता। कुछ कहा भी नहीं जा सकता है! तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद की अब पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी। लेकिन यह प्रभाव कितने दिनों तक चलेगा? तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद ने एक दिन हँसकर कहा था 'जिस दिन धनी जमींदार सेठ और बिल कायस्थ को लोग राह चलते गाली और पासल समझने लगेंगे उसी दिन उसी दिन असल सुराज हो जायगा। आप कहते हैं कि ऐसा जमाना आवेगा। जब जमाना आवेगा तो हमारी सम्पत्ति छीनी जा चुकेगी ही। और, अभी सम्पत्ति बटोरने पर तो कोई प्रतिबन्ध नहीं। तो फिर बुद्धू क्या हूँ? तहसीलदार साहब भी अजीब आदमी हैं। लेकिन वह जेल से छूटकर मेरीगंज ही जायेगा। और कहाँ जायेगा वह? नेपाल? नेपाल के लोगों ने नेपाल राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना की है। नहीं राजनीति में वह नहीं जायेगा। वह राजनीति के काबिल नहीं। एक बार कमला से बातें करते हुए राजनीति की तुलना डाइन से की थी। डाइन!

मौसी को लोगों ने मार ही डाला! मौसी 'मर्सेडीज' कमला! साल बेसरा करने पर भी उसकी सूरत आँखों के सामने आ जाती है!

"डॉक्टर साहब। असिस्टेन्ट जेलर साहब आये हैं "डाक्टरखाना मन्दिर के सेक्रेटरी आये हैं। आपका लड़का बीमार है। आपसे उसके इलाज के बारे में कुछ सलाह लेने आये हैं। जेलर साहब आपको बुला रहे हैं।"

"चलिए!"

सत्रह

डेढ़ महीना से कालीचरन जेल में है। वासुदेव कुन्दर, अन्देशा सामा और मोलया सब एक ही वक्त में गये हैं। इस बीच एक तारीख की कचहरी व मजिस्टरी इजलास में हाजिरी हुई है। एक बार मिलिट्री आगे और एक बार पीछे। सभी का रुपकड़ी और बेड़ी डालकर कचहरी लाया गया था। उस दिन कालीचरन को निगाह पूर्णिमा की ओर से जितनी दूर जा सकती थी कि बालदेवगंज पर थी। कचहरी की हाजत में पेशाब की गन्ध इतनी तेज क्यों होती है? कालीचरन की निगाह सेकेण्ड्री साहब पर पड़ी उनसे आँखें भी मिलीं। कालीचरन का चेहरा खिल गया। तीन महीनों से जिसकी सूरत आँखों के आगे नाच रही थी। "सेकेण्ड्री साहेब! दुखनकाका सिपाही!" कालीचरन ने चिल्लाकर कहा "जय हिन्द कामरेड!" सेकेण्ड्री साहब ने मुस्कान बनपट्टी इस तरह फेर ली मानो कान के पास मधुमक्खी ने अचानक काट लिया। फिर उसी तरह चश्मा पहने किये आगे बढ़ते गए। कालीचरन का सिपाही ने डाँट दिया "का हो लबुरे! बिना हुक्म के बात मत मनबऽ!" उधर सेकेण्ड्री साहब कटीले तार के घेरे में फँसते-फँसते बचे। "एकमुँहा होकर जो चलेगा वह काँटे में तो जरूर फँसेगा। तिस पर इधर सिपाहीजी ने कालीचरन को डाँटा सुनकर तो खिलखिलाकर हँस पड़ा। लेकिन इसम सिकरेटरी साहब का क्या कसूर! और इसीलिए से सभी अच्छे लोगों को दूर रहना चाहिए। वासुदेव सुनरा सोमा खलिफा वगैरह आखिर बदमाश ही तो हैं! और सिकरेटरी साहेब उन्हें बदमाश समझ रहे हैं। कोई उपाय नहीं।

"कोई उपाय नहीं? लेकिन आज मांस का दिन है। जाड़े के समय सप्ताह में एक बार कैदियों को मांस मिलता है। शाम को बैरक और सारे की खिलाते-खिलाते काफी अँधेरा हो जाता है। अस्पताल के पिछवाड़े से डाक्टर साहेब मांस जोगाड़ करने के लिए चल जाते हैं। आज कोशिश करके देखना चाहिए।

कालीचरन ने फैसला कर लिया है। यदि मौका मिला तो वह जरूर कोशिश करेगा। हाँ वह भागेगा। और कोई उपाय नहीं। उसने सब कुछ समझ लिया है। जेल में भागने की सजा सिर्फ छः महीना है। हथकड़ी और लाल टोपी पहननी पड़ेगी। "लाल कहेंगे लालटोपिया और क्या? लाल रंग खराब तो नहीं। सिकरेटरी साहेब और परमपुरीजी से मिलकर यह बात करना चाहता है। उसके बाद उसे फाँसी-सूली जो भी मिले वह खुशी-खुशी

खेल खेला। पार्टी की इतनी बड़ी बदनामी करके वह भी कर ही क्या करेगा!

वासुदेव सुनरा और सनिचरा तो चोर डकैतों के साथ इस तरह हिलमिल गए हैं कि उन्हें देखकर शक आती है कालीचरन को। वासुदेव ने डॉक्टर मटपटप्रसाद से दोस्ती कर ली है। डॉक्टर मटपट! 'नामी सिरचिम्बी'[1] आदमी है यह डॉक्टर। परसिसगंज की तरफ का है। डकैती केस में आया है। अचरज की बात है! उस डॉक्टर को देखकर किसी को विश्वास ही नहीं होता कि उसने आदमी को मारने के सिवा कभी जिलाने का भी काम किया है। चेहरा ठीक कसाई की तरह है। वासुदेव का उसके साथ भी खूब हेलमेल देखते हैं। रात में जूमा भी खेलता है। वासुदेव कालीचरन से नहीं बोलता है। वह दूसरे खटाल में रहता है। उस दिन बाग-कमान में थोड़ी देर के लिए भेंट हुई। कालीचरन ने सिर्फ इतना ही पूछा 'वासुदेव तुमको यही करना था?' वासुदेव के साथ एक कन्फटिया पाकिटमार था। दोनों एक साथ खिलखिलाकर हँस पड़े। जाते समय वासुदेव ने कहा जिस समय सात सौ रुपैया का पुलिन्दा बाँधकर सिकरेटरी साहब को देने चले थे उस दिन क्यों नहीं पूछा था कि चार दिन के भीतर कहाँ से इतना रुपैया बसूल हुआ? उसी शाम को पानी-टंकी के पास डॉक्टर मटपट ने उसको रोककर कहा था "कालीचरन कोई रास्ता नहीं। तुम यदि चाहो तो तुम्हारा जमानतदार भी होगा और मकदमा में बेदाग छूट भी जाओगे। सोचना! सोचकर देखना! पार्टी वार्टी कोई काम नहीं देगी।

चू! चू! जेल में आकर काली को सैली की याद पड़ गई है। डॉक्टर साहेब अपने गाँव के डॉक्टर से जमादार से उस दिन भेंट-भेंट पर हँसकर कहा था "सिपाहीजी! कालीचरन का जरा ख्याल रखिएगा। देखना है डॉक्टर साहेब! जरूर देखता है! सिर्फ सैली ही नहीं कभी-कभी बीड़ी भी जमादार साहेब दे देते हैं। चू! चू! धूक है ऐसे पैसे पर! डॉक्टर मटपटप्रसाद की बात वह नहीं मानेगा। सोमा ने भी एक बार दवी जबान कहने की कोशिश की थी 'उस्ताद!' 'चुप उस्ताद का बच्चा!' कालीचरन ने डाँट बता दी थी।

उस्ताद! जेल से बाहर, फिरती हालत में चलितर कर्मकार से उसकी भेंट हुई थी। कौन कहता है कि वह बड़ा भारी धनेजा वाला आदमी है! पुलियारवाँ टीसन के पास बरहा-पत्ता के बीच बागडिया की छाया में भेंट हुई

---

१ मारचिरन्दी।

थी। कालीचरण को देखते ही वह अपने साथियों के साथ हाल-हुदियार लेकर खड़ा हो गया था। 'हेल्प! दारोगा साहेब किस तरह चिल्लाए थे उसी तरह चिल्ला उठा था चलित्तर। कालीचरण को हँसी आ गई थी। उसके मुँह से अनजाने ही निकल पड़ा था अरे! हम है उस्ताद! खाली-हाथ पाटी वाला कालीचरण! चलित्तर ने एक बार कहा था 'इस खाली हाथ वाली पाटी से खूब दिन खाली हाथ ही रहोगे! पीछे तो बहुत वहम किया। आखिर में चलित्तर ने कहा था 'तुमने हमको उस्ताद कहा है। बड़े विपत में कभी जरूरत पड़ने पर याद करना। कालीचरण ने हँसकर कहा था उसकी जरूरत नहीं होगी दुबारा उस्ताद कहते-कहते वह रुक गया था। आज भी चलित्तर की वह बात कान में गूँज रही है, देखना है तुम्हारी उस्तादी!

'लेकिन आज वासुदेव और सोमा की मदद लेनी ही होगी। एक बार मिल तो जायें वह पट्टिया लेगा।

गोटी बैठ गई। 'सोमा और वासुदेव को कालीचरण ने पटिया लिया है। अस्पताल के पिछवाड़े में।

ठीक है, अस्पताल के पिछवाड़े में दीवाल की छाया में वासुदेव और सोमा ही है। ठीक है! सोना ने कन्धे की ओर इशारा किया।

'सब ठीक! हतेरे की! कालीचरण गिर पड़ा। तब वासुदेव और सोमा कन्धा से कन्धा भिड़ाकर खड़े हुए। ठीक है! जरा सा जरा सा और! बस चार अंगुल! वासुदेव और सोमा के कन्धों पर कालीचरण जरा उचकता है। दोनों के कन्धों का भार जरा हल्का मालूम होता है। ऐ ठीक है। भागो!"

"भागा! भागा!"

टुटुऊऊ टुटुऊऊ! जेल-अस्पताल के पिछवाड़े से सिपाही सीटी फूँकता है।

टुटुटुटु! बहुत सी सीटियों की मिली हुई आवाज।

धन धन धनाँय धनाँय! जेल फाटक का बड़ा घण्टा घनघना उठा।

कालीचरण पाँच मिनट तक जेल के बाहर, दीवार के पास जमीन पर बेसुध पड़ा रहा। 'सीटी और घण्टे की आवाज ने उसे सजीव कर दिया।

नहीं ज्यादा चोट नहीं आई है। सिर्फ कमर में मोच आ गई है।

धनाँय धनाँय! जेल का घण्टा घनघना रहा है वह भागता है।

कई रं रं र! एक साथ कई बन्दूकें गरज उठीं।

अँधेरे में कुछ सूझता भी तो नहीं। एक घड़ी रात भी गई है

है। आम से परनी पच पच करती है, पैर फिसल जाता है।

मर्र मर्र र र र, सामने बार्जिकल रोड पर पाँच-सात मिस्त्री-कोरियाँ दौड़ रही है।

कालीचरण पाँचू बाबू मकीम के घर के पिछवाड़े की एक झाड़ी में छिपकर हाँफता है। सड़क कैसे टपा जाये? किधर से जाना ठीक होगा? दाहिने मार्च पी हुल्ला शोर करते आते हैं। पास की गली होकर घुड़सवार लोग जा रहे हैं।

कालीचरण तय करता है सामने बाँसवाड़ी पार करके मोदरजी साहेब की पुरानी कोठी की बगल से जाना ही अच्छा होगा। अब देर नहीं करनी चाहिए।

एँ? मोदरजी साहेब की कोठी के पास कालीचरण को ऐसा लगा कि पीछे से कोई टॉर्च मार रहा है। हाँ यह तो टॉर्च की ही रोशनी है।

वह जंगल में घुस जाता है। बस थोड़ी देर यहाँ सम्हलकर, टॉर्च वाले को देखकर, फिर एक छलाँग! एक जूम[1] दौड़ी दिल में ही उसने चुनाकर कपड़े के सूट में बाँध ली थी। बहुत सोच कर अभी उस पर हाथ पड़ गया। मैला लाकर वह झड़बेरी की झाड़ी से निकलकर साफ मैदान की ओर आता है! कहाँ है टॉर्च की रोशनी? बाप! एकदम पास ही! कालीचरण भागता है। टॉर्च की तेज रोशनी उसका पीछा कर रही है और फिर जंगल की निस्तब्धता को भंग करके खरगोश की आवाज गूँज उठती है—छाँ र र र!

जंगल-झाड़ काँट-कुस और झड़ा-झाड़ी को टापता हुआ कालीचरण भाग रहा है। जंगल की मखी पैर छान लेती है मगर वह झाड़ देता है! जाँघ में लगता है खाब लग गई है।

पार्टी ऑफिस के पिछवाड़े में आ पहुँचा जंगल है यहाँ पहुँचकर उसे लगा वह निरापद है। अर! यह तो खाब नहीं! अरे बाप! इतना खून! आधा जिंदा साँप उधेड़ दिया है। खपरा लटक गया है। आ! गोली लगी है शायद! खून बन्द नहीं हो रहा है।

की औज? कामी च र म?" ऑफिस सेक्रेटरी राजकिशोरजी किवाड़ खोलकर सचमुच अवाक हो गए। जीप की नोक पर गोली चली ही नहीं।

एँ? कौन? कालीचरण? सेक्रेटरी साहब भी कूदफाँदकर कमरे से बाहर आते हैं—"ओ कालीचरण! तुम हो? इसीलिए शहर में इतना हल्ला हो रहा है? अब से भाग आये हो?"

---

१ खुराक।

जी! लगता है आँख में गाली लग गई है ।

"तुम्हारे कलेजे पर गोली दागी जानी चाहिए। डकैत! बदमाश!"

"सिकरेटरी साहेब! इसीलिए तो । इसीलिए तो आपके पास आय है । सुन लीजिए! माँ कसम गुरु कसम देवता किरिया! जिस राज उस राज तो हम यहाँ जिला पार्टी ऑफिस में था।"

'राजबल्लीजी! आपको अफीम लग गया है? किवाड़ बन्द कीजिए हटाइए इसे। बाबू, मिहरबानी करके चले जाओ। नहीं तो ।"

"आ आ आ प हल्ला काहे करते हैं। आ आ प अन्दर आइए। राजबल्ली जी मीटिंग भंग करते हैं।

कालीचरण पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है।

मोक्तारी साहेब की कोठी की ओर धड़ाधड़ फायर हो रहे हैं फ्रैं ! !

"साथी राजबल्लीजी! सिकरेटरी साहब को समझा दीजियेगा। मेरा कोई कसूर नहीं।"

कालीचरण हिम्मत है। थोड़ी देर तक खड़े रहने के बाद अब तो चला भी नहीं जा रहा है। वह दोनों पाँवों को बारी-बारी झाड़ता है। सामने कपड़े के पर्दों पर कुछ सरसराकर गिरा। वह धीरे-धीरे फिर कपड़े के अंगरखे में चला जाता है। अब? वह पुरानी धोती के एक खूँट को चीरकर बायें को बाँधते हुए सोचता है—अब?

'अभिनव कर्मकार ने कहा था—'गाँव विपद में खबर करना यार करना।

अभिनव कर्मकार।

अठारह

"भाग! भाग! मजेटरी मजेटरी !"

अरे बाप! लाख पगड़ी बाला पुलिस नहीं है एकदम गोरखा मजेटरी! सुनते हैं बारा मजेटरी में भी उनका चाँप बाला होता है। कोरम मारके कपड़ा तो मारते-मारते जान ही मार देगा। हलसमंज हाट कचहरी वाले बाबू साहब की कचहरी पर सुबह से ही आकर खड़ी है

मोटरगाड़ी—टसमस्स ! मोहरिलजी बोले कि गाँव में रोल[1] देने आया है। रात में कौन देखा ? कोरया मजेटरी ?

अरे, क्या बात है ? कौन झूठमूठ खबर लाया ?

'उठ नहीं ! तनमाटोजी का बबुअन अभी दौड़ता-हाँफता आया है। उसका इमान-धरम और माय का किरिया खिलाकर पूछिए तो !"

"ऐं ! सुनो ! मोटरगाड़ी की आवाज हुई न ?

'हाँ ! पछियारीटोला के पास आ रही है मोटरगाड़ी।

" मायो ! एकदम लाल मखमल रंग की मोटरगाड़ी आ रही है।"

"मायो किधर ? मोटरगाड़ी तो आ गई !

मर्र्र र धड़ धेंक मर्र्र र ! सिलिण्डी खाँसी खींच छोड़कर बसोकर्ही अड़ुआ-साई माय-गोड़ा टपत तहसीलदार साहब के दरवाजे की ओर जाती है।

"कौन ? सुमरितदास बेटा ?

'शिस् ! चुप ! सुमरितदास खिसपिसाकर कहता है, "कलिया जहल से आप गया है। इसीलिए मजेटरी आया है। "खबरदार ! मुसम्मिट पार्टी का नाम भी नहीं लेना। पूछे तो कहना हम लोग कांगरेस में हैं। कालीचरण से कोई रिश्ता मत बताना। समझे ? आज झगड़ा जिसके घर से निकलेगा पुरुष गिरफ्तार हो जावेगा।"

सुमरितदास बजार की देह में इस बुखारी में भी कितना तत्व है ! पुराना पार्टी पीया हुआ बुड्ढा है। कलिया तो अपने साथ अपने बरगद-मठ पर-परोसपिा और गाँव-समाज सब को ले डूबना चाहता है। क्या है, लाठ साल ? खबरदार ! झगड़ा और साल में क्या फरक है ! जहरम-परथा सब जमाओ ! सब फैलेगा !

'खबरदार ! कलिया 'बसकन्तोबाब हो गया है। मुसम्मिट पार्टी और कालीचरण का नाम हरगिस नहीं। जब्बल अपना है समूचे गाँव को 'बूरबा' करेगा।

'ए ! कौन ? कालीचरण की अम्मी माँ हुक्का पीना बन्द कर पूछती है "कौन माय क्या ? सरसतिया परमेसरी सरावती अरे, कौन माय क्या बेटी ?"

"अरे कौन ! तुम्हारे दुखहरन बेटा कालीचरण के बदले माय साथ गाँव बन्हा रहा है।"

---

१ रोलर।

"भाग! भाग! मलेटरी!

पुरवा सिपाहियों ने काली चरन के घर को चारों ओर से घेर लिया है। एस० पी० साहब काली चरन की बूढ़ी माँ से पूछते हैं, 'हूँ कहाँ है तुम्हारी! तेरा कलिया जेल से भाग आया है। सच रोना गाना छोड़कर सीधे-सीधे बता कि वह यहाँ आया है या नहीं?

"मेरा बेटा! वह कभी नहीं दारोगा बाबू! तुसमन क्या हुआ है उसके पीछे हुजूर। आगे सूरज भगवान।

"ठीक-ठीक बताओ! उसके साथ और कौन-कौन उसके साथी-संगी का नाम बताओ।"

"हुजूर! हमारा कुछ भी मालूम।

"अच्छा सब मालूम हो जायेगा। ले चलो बुढ़िया को!

काली चरन की माँ को बड़ेया बुखार आ गया। जैसे ही नेपाली सिपाही ने उसकी कलाई पकड़ी वह ओर-ओर से डिकरने लगी—साँड़े से बागने के समय बैल-भाय जैसे डिकरते हैं उसी तरह।

"ऊ य वाँ वाँ वाँ आँ।"

माघ की संध्या लिपटते हुए गाँव को धीरे-धीरे अपने आँचल में छिपा रही है। असार्थ पशु की आँखों की तरह किसी-किसी घर में ढिबरी मुक-मुका रही है।

पूर के पास आज कौन बैठेगा। सभी अपने-अपने घर के कोने में दुबक हुए हैं। सन्नाटा! और इस सन्नाटे को चीरकर काली चरन की माँ की यह दर्द भरी पुकार गाँव के कोने-कोने में फैली!

"एह! मरे बाप! मालूम होता है बुढ़िया को कीरिच से जबेह कर रहा है। हे भगवन्!"

काली चरन की माँ की डिकराहट में कुछ ऐसी बात थी कि कि एस० पी० साहब का दिल पसीज गया। उन्होंने कहा "छोड़ दो! छोड़ दो बुढ़िया को!

बुढ़िया अचानक चुप हो गई।

बाँस-बरु, बगीचा-बड़ी और अमवारे पिछवारे में दम साधकर छिपे लोगों ने समझा—बुढ़िया को संभवतः जबह कर दिया।

"किसकी बोली है, पहले पहचान लो। टट्टी में कान लगाकर सुनो।"

"मंगरू चौकीदार है। सुमरती साथ भी है।"

"ओ भगमान! ओ भगमान!"

"ऐ भगमान भगत! भगमान भगत बरबाजा खोलो भी! सुमरि-

पास खबास्त है अह ह ह! भगमान भगत! डरल की बात नहीं।

'सिकरेट है सिकरेट? मलटरी साहेब है पैसा देवे है।

पछियारी घर में मलूक के पीछ भगवान भगत दम साधकर घुसक हुए है। आहि र बाबा र बाबा। ई स हमरे नाम कट । ममताइन खिस खिसाकर कहती है अर जा न! कौनो बाप बाबा ना! भगत डांटता है—'अरे चुप!

"अहंह्! क? बासजी? ममताइन खसाकर अन्दर से पूछती है का भेल हो?

"अरे खाली ममताइन! ममतजी कहाँ है

भगवान टीन की टट्टी खोलते हुए देखती है 'बाप र बाप! ई कौन देस के आदमी बा रे देवा! हुँड़ार अइन मुँह बा।

'बासजी! अन्दर आके जे सेब से स जा। बुड़बा र बुखार बा हमरो गिर बथता ।

सुमरितदास टीन की टट्टी का ठनकर अन्दर आता है, 'इस ! तुम साला को समता है कि कलेजा है ही नहीं। झूठ नहीं कहा है बनियां का कलेजा थनिया! 'स्पेसी साहब अभी तुरत सबा को बुला रहे हैं तहसीलदार साहब के दरबाज पर। मिलिट्री है। इसम जा नहीं आयेगा अभी उसको काली चरन की गाड़ी का आदमी समझा आयेगा। खाली पाँच पाकिट असली बैंगामार सिगरेट! कल्पिया अहल से भाग गया।

"ई ई ए क? सुमरती भाई? भगमान भगत काँपते हुए आता है, 'अरे! ई बखार र जान सके छोड़ी! का बात बा?

'बात का बा! सुमरितदास हाथ भमका भमकाकर कहता है चौनी पाँच सर, गरम मसाला आठ आने का चार पाकिट सिगरेट लेकर अभी तुरत तहसीलदार साहेब बुलाये हैं। 'स्पेसी साहब मिलिट्री बुला रहे हैं सबा का। हाँ सिपाही जी को पाँच पाकिट दिया उसका भी पैसा लोग?"

"अरे! हम का हुकुम के बाहर बानी! अभी हम आब आनी। भगत बात बनाते हुए रास्ता लेता है।

'गाड़ीवान मलटरी कहता है "ऊँह! नहीं! हम मुफ्त में नहीं लेगा। पाइ लेगा हम पैसा दीजिए[1] तुरत लगा गाड़ी लेगा? हम बाबू का

---

१ पैसा चुकाकर।

मकैनी नहीं हम इसी दल का हूं। मयन म काह मया

तहसीलदार साहब के दरवाजे पर लोग जमा हो रहे हैं। सपमू चौकीदार और समुल्ला बकरी सबों को हाँकते आ रहे हैं 'ऐय बराओ! अखर फखर काहे करते हो' समझा है काम की दखनी करने के लिए बैलों को हाँककर लाया जा रहा है। बालेश्वरी भी है रामकिरपाल सिंह भी हैं। बहुत दिनों से रामकृपालसिंह पंच-पंचायत या सभा-मीटिंग में नहीं जाते हैं। एकदम असपुस रहते हैं। पचास बीघा जमीन बनाहर, एक लालबन्दी[1] एक ही जमा और खजाना सिर्फ पाँच रुपय! ऐसी जमीन जिसकी बिक जाये या महाजन के यहाँ सूद रेहन लग जाय तो दिन चकनाचूर होगा नहीं? साहबसिंह यादव का कलेजा धड़धड़ कर रहा है—अमहु जमीन रुपैया-पैसा तो पहले ही मुकदमा में पाला हो गया अब एक होगी मैंन है। तहसीलदार की नजर लगी हुई है।

एस० पी० साहब चाय पीकर खड़े हो जाते हैं। मैं मयवाम्! दुहाई कामी माई!

"प्यारे भाइयो! मैंने आप लोगों को एक बहुत बड़े काम में मदद के लिए बुलाया है। आप लोग डरिये नहीं। मैं अदमाशों के लिए महा-अदमाश हूँ और नीच लोगों का नेवर! हाँ हम तो आप लोगों के नौकर हैं।

"जै हो! जै हो! धन्न है धन्न है" लोगों के दल में अब थोड़ी गर्मी आती है।

एस० पी० साहब कहते हैं अभी इस जिले में एक बड़ा भारी उपद्रव उत्पात मचा रहा है। उसका नाम आप लोगों ने अवश्य सुना होगा!

"जी नहीं। हम लोग तो घूमनघुक्कड़ हैं।

"देखिए! झूठ मत बोलिए! अखबार में फोटो छपते हैं? चम्पियन उपेन्द्रनाथ इस गाँव में कभी नहीं आया है"

"हाँ हाँ चम्पियन!

"नहीं सर नहीं आया है।"

देखिए! अच्छा रोशनी और करीब लाओ। देखिए यही है उसका फोटो।"

"हाँ ठीक है। यही है। यही है।"

"अब देखिए। आप लोग सच बोलें कहते थे! जानते हैं अपील से बढ़कर

---

१ होल्डिंग।

होता है कर्मठ का अपेक्षा, आप लोगों ने अपेक्षा का काम किया है।

"नहीं हुजूर, माई-बाप! मालूम नहीं था।

"खैर! सुन लीजिए। चलित्तर कर्मकार का न तो देश से मतलब है, न बॉम्ब से और न समाज से। उसका पेशा है डकैती करना लूटना। वह समाज का दुश्मन देश का दुश्मन है। अभी देखिए, हाल ही में कम्यूनिस्ट पार्टी वालों ने एक पर्चा निकाला है। लिखा है कॉमरेड चलित्तर पर से वारण्ट हटाओ! चलित्तर कर्मकार किसानों और मजदूरों का प्यारा नेता है। अब आप ही बताइए कि कोई हत्यारा और डकैत कैसे किसी का प्यारा नेता हो सकता है! खैर, मेरा भी नाम बजरंगीसिंह है। मैंने ऐसे-ऐसे बहुत से हत्यारों को ठीक किया है, फाँसी पर लटकवाया है। ऐसा आदमी किसी की भी हत्या कर सकता है।

'बाबा! बापीजी मारे गए!" कमली अन्दर हवेली से ही चमगी की तरह चिल्लाती है—"बापीजी!

"क्या हुआ?"

"क्या हुआ?"

तहसीलदार साहब अन्दर हवेली की ओर दौड़ते हैं। सुमरितदास कहता है "हुजूर, तहसीलदार साहेब की बेटी का अबज अरा खराब है।"

"अनर्थ हो गया हुजूर! तहसीलदार साहब दौड़ते हुए आते हैं 'बापीजी मारे गए।"

"ऐं? कहाँ? कैसे?"

"रेडियो में खबर आई है।"

"कहाँ है रेडियो। अन्दर हवेली में? मेहरबानी करके यहाँ पर लाइये।" एस० पी० सिड़पिड़ाते हैं।

"अरे रे रे! डाक्टरबाबू को बुलाओ! बेहोश हो गये।"

तहसीलदार साहब 'पोर्टेबल रेडियो सेट' ले आते हैं 'हुजूर, इसके कब्जे-वाट का भेद हमको मालूम नहीं। डॉक्टर साहब का है।"

"इधर लाइए।" एस पी० साहब खुद ही मीटर ठीक करते हैं।"

"सड़ सड़ हम सब के पिता बापू के पिता की हत्या कर दी गई।

चारों ओर एक एक मनहूस अंधेरा छाया हुआ है हमारी आँखों के आगे अंधेरा है दिल में अंधेरा है। ऐसे मौके पर हम किन लफ्जों में कै के किन शब्दों में आपको ढाढ़स बँधाएँ! वक्त के बारम्ब में सारा मुल्क स्तब्ध है। एक पागल ने बापू की हत्या कर डाली। जाहिर है,

पापक के सिवा कोई ऐसा काम नहीं कर सकता। अब हमें अपना गम और गुस्सा को दबाकर सोचना है ।"

मेहरबी बोल रहे थे सामद।

मेहरबी। जमाहिरमार बोल रहे थे। बीच में एक जगह पढ़ा एकदम मर गया था लगा—रो रहे हैं।

"सुनिए! अब पटेल साहब सरदार पटेल बोल रहे हैं। एस पी साहब का चेहरा एकदम काला हो गया है।

बेचार के खबर में क्या बोला? गांधीजी का हत्यारा पकड़ा जा चुका है? मरे! कैसे नहीं पकड़ावेगा भाई! हाय रे पापी! साला जरूर अंगरेजी देश का आदमी होगा। हत्यारा! मरदा? यह कौन जात है भाई! मार डा! मरे, बामन कभी ऐसा काम नहीं कर सकता जरूर वह साला चंडाल होगा।

एस० पी० साहब हाथ जोड़कर कहते हैं, माइयो! कहा-सुना माफ करेंगे। आप लोग जैसा समझें कर लेकिन देखत हैं न! अरे जिसने एक गरीब बनिया को बाल-बच्चा सहित मार डाला वही हत्यारा गांधी जवाहर, पटेल की सब की हत्या कर सकता है। हत्यारा! हम अभी जाते हैं आप लोग कल शाम को नदी के किनार जल-प्रवाह कीजिएगा। और खबर सब तो रेडियो में आती ही रहेगी महसीमदार साहब हैं, सबका सुना देंगे! अच्छा तो कहते हैं। जय हिन्द!

मर्र र र र र र!

"रघुपति राघव राजाराम पतीत पावन सीताराम ।" बालदेवजी आंख मूंदकर गाना शुरू करते हैं।

आज आकर परसे गाना भी कोई नहीं—कालो वासुदेव सुमरा सनि कथा कोई नहीं। आज से दखड़ रहे हैं बालदेवजी। जरा यहां एक धनी समा ही जाती तो अच्छा होता।

"अरे कोठारिन लछमी बाबिन।

लछमी आई है। साथ में है रामफल पहलवान लालटेन लेकर। बालदेवजी आंखें मूंदकर गा रहे हैं— इसकर मन्या तेरो नाम सबको सन्मति दो भगवान्।"

"जै रघुनन्दन जै घनश्याम जानकी बल्लभ सीताराम!" लछमी दासिन अचला झाड़कर उठती है।

इस बार भीड़ के साथ लोगों ने साथ दिया।

"रघुपति राघव राजा राम !"

बापन ठीक ही कहता था भारतमाता और भी बार-बेजार रो रही है!

बालदेवजी का सारा शरीर सुन्न हो गया है। रास्ते में बालते-बालते गिर पड़ते हैं।

'सीताराम सीताराम जै रघुनन्दन !"

३१ जनवरी ४८ की रात! कमला सोचती है—सारा संसार अभी सब एक ही महा-मानव के लिए रो रहा है। रेडियो पर गीता पाठ हो रहा है। लगता है, गीता के एक-एक श्लोक की सीढ़ी महात्माजी को ऊपर उठाये लिये जा रही है—ऊपर—ऊपर—और ऊपर!

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता शरीरिण।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥

अँधेरे में एक महाप्रकाश! आँखें चौंधिया जाती हैं कमला की! महात्माजी खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं—रोती है क्यों माँ! माँ! रोती क्यों है?"

"मत रोओ बेटी!" माँ समझाती है। "बेटी रोओ मत!" अचानक डॉक्टर की याद आती है—डॉक्टर! डॉक्टर को कौन खाइत बँधाता होगा। मत रोओ डॉक्टर! मत रोओ!

कमला रेडियो की आवाज को और तेज कर देती है

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः!

उन्नीस

जोतखी काका के दरवाजे पर भीड़ लग गई है।

ठीक कहते थे जोतखी काका। अभी क्या हुआ है, अभी और बाकी है। अन्धर-अन्धर खबर फैल गई। ऐसे अपरजानी आदमी की बात काटने का नतीजा सारा बाँव भोग रहा है!

अपनी जड़ी-बूटी से ही जोतखी काका टनमना गए हैं। खुद उठ नहीं सकते बोली साफ नहीं हुई है घिघियाकर, मुँह टेढ़ा करके बोलते हैं,

"छमछमाँछ! छमछमाँछ! माँ माँ!

अर्थात् सर्वनाश! सर्वनाश! हाँ सर्वनाश होगा।

"बोतकी काका आज हुकुम हुआ कि सारा दिन बाँसी-मुँह रह कर साम को कमला के किनारे अलपरवाह करना होगा।" खेलावन यादव अब बोतकी की बात कभी नहीं काट सकता। जोतखीजी ने कहा था अट्ठारह साल की उमेर में सकलदीप को माता-पिता विछोह लिखा हुआ है। एकदम फल पई बात। सकलदीप दो महीने तक बिसनपुर की तरह कलकत्ते में भटकता रहा। समुर पकड़ लाया है। उसका भी परायश्चित करना होगा। होटल में बर्तन माँजता था।

बोतकी जी इशारे से कहते हैं, 'नहीं हरगिज नहीं! ऐसा काम मत करो! बोतकी काका ने क्या कहा? गांधीजी काहे मारे गए। क्या कहते के अच्छा हुआ! बेस! उनका मगज अब सही नहीं है।

दूसरे पहर को जुलूस निकला। बाँस की एक रंथी बनाकर सजाई गई है—काल हरे, पीले कागजों से। एक ओर बालदेवजी ने कन्धा दिया है, दूसरी ओर सुमरितबास बिसनपुर मोची और सकलदीप ने। खेलावन यादव नहीं आया है। सकलदीप को बहुत समझाया बालो दिया—मगर सकलदीप ने तो आकर रंथी में कन्धा ही लगा दिया।

टन टनाँय! बड़ी घण्टा बजता है।

विग्र विरुक्टि विग्रा! विग्रा पा या विग्रा!

आँ रे? काँ च हि बाँस के खाट रे खटोलना

यौन के मकतिया लोगों ने समदाउन शुरू किया। समदाउन की पहली कड़ी ने सब के रोयें को कम्पा दिया सब के सिर सहर उठे और आँखें उमड़ आईं।

और काँचहि बाँस के खाट रे खटोलना
आतैर मूँज के र है डोर!
हाँ रे मोरी रे ए ए ए हाँ माँ रामा रामा!
चार समाजी मिली डोलिया उठोजोल
गई चमक जमुना के ओ र!
हाँ रे मोरी रे ए !

अब कोई अपने को नहीं सँभाल सकता है। सब फफक-फफाकर रो पड़ते हैं। जुलूस आगे बढ़ रहा है। धीरे-धीरे सभी जुलूस में आकर मिल जाते हैं, रोते हुए चलते हैं। बूढ़े रोते हैं बच्चे रोते हैं जवान रो रहे हैं, औरतें रो रही

है। सकलदीप की जबान बहू बहसीब से देखती है। उसके ओठ काँप रहे है। रह रहकर आंठ बरबराते हैं और अन्त में वह अपने को सँभाल नहीं सकती है। वह दौड़ती है जुलूस के पीछे। लेखनसिंह चिल्लाते हैं, "कनियाँ कनियाँ! ऐ कनियाँ!"

हो माँ रे मोर छोरा लागौं हम मैया रे कहरिया से
बड़ी भर डोली बिलमाव!
माई जे रोवय

माँ रो रही है। मारवमाता रो रही है।

रामदास हाथ में घँजड़ी लिये चुपचाप रो रहा है। उसी के पाप से महात्माजी मारे गए हैं। उसने साधु के भलाई को भरस्ट किया है। परसों रमपियरिया की माये गाँव से मछली का सालन माँगकर लाई थी। रमपियरिया रात में उठकर चुराकर खा रही थी। महंथ रामदास ने रंगे हाथ पकड़ लिया था—भलाई मछली की चुट्टा!

रमजूदास की स्त्री छाती पीट-पीटकर रो रही है। छिरा चमार की बारह साल की बेटी रो रही है—बाबा हो! बाबू हो!

बापू!

कमला रेडियो झपोरकर बैठी हुई है। उसकी आँखों से आँसू टप टप कर गिर रहे हैं। माँ आँचल से बेटी के आँसू पोंछती है और कह रही है "वे तो मरकर धारण कर भाव से सीमा दिखाकर चले गए।"

रेडियो से आँखों देखा हाल प्रसारित हो रहा है। अब अब चन्दन की चिता तैयार है। बस अब कुछ ही क्षणों में देखिए, पंडित नेहरू देवदास बापीजी से महात्माजी के सुपुत्र से कुछ कह रहे हैं। नरमुण्ड नरमुण्ड कहीं भी एक तिल रखने की जगह नहीं (कोलाहल की आवाज क्रमशः तेज हो रही है। जय जय!) अपार जन-समुद्र में मानों लहरें आ गई हैं सभी एक बार, अन्तिम बार महामानव की पवित्र चिता को अन्तिम बार देखना चाहते हैं। एम्बुलेंस गाड़ियाँ बहोश लोगों को ला रही हैं! और और आह! अब पश्चिम आकाश में सूर्य अपनी लाली बिखेरकर अस्त हो रहा है और इधर महामानव की चिता में अग्निदिया धरती का सूरज अस्त हो रहा है। क्षिति-जल-पावक पाँच तत्वों का पुतला (गीता-वाणी सुनाई पड़ती है)—ब्रह्मबन्धविनिर्मुक्तता पर परछन्यानामयम्।

"माँ माँ!"

"माँ माँ ...कलका स्पष्ट सुनती है कोई पुकार रहा है। कौन पुकारता है उसे माँ!

"क्या हुआ बेटी?" माँ बाहर से दौड़ी आती है।

"मेरा बच्चा ...मेरा मेरा बेटा !

माँ शांति! धां ...ति !

बीस

"सेतारामऽ! सेतारामऽ!

"ओ बावनदासजी! आइए! अभी मोढ़ा देती है।

"बालदेवजी कहाँ हैं?"

"आइए, साहेब बन्दगी बै हिन्द!" बालदेवजी आ गए।

"बै हिन्द!"

बावनदास को देखकर डर लगता है—एकदम सूखकर काँटा हो गए हैं।

"बाल इतना ज्यादा कैसे पक गया? ओ! आज टोपी नहीं पहने हैं, इसीलिए। आधा भी बदल गई है। बालदेवजी कहते हैं, "आप तो अब यहाँ रहते ही नहीं हैं। उस दिन हम अकेले जिस समय से वोटरों में घुसे उसी समय से लेकर दूसरे दिन जलपरचाह तक सब कुछ किये। किसी तरह सँभाल लिया। सराध के दिन सहसीलदार साहब भोज देने वाले हैं। आमन राजपूत, यादव और हरिजन सभी एक पंगत में बैठकर खायेंगे। अच्छा हुआ आप भी आ गए। अकेले हम ..."

"नहीं बालदेवजी हम रहेंगे नहीं। हम जरूरी काम से जा रहे हैं। सोचा, एक बार आप लोगों से भेंट करते चलें। हम दुरगा ...थान चले जायेंगे।"

"अच्छा ऊपर का हाल-समाचार क्या है सुनाइए!"

"हाल क्या सुनिएगा! अब सुनना-सुनाना क्या है! रामकिसुन आसरम में भी हरिजन भोजन होगा। बिलेकजी कल मर गया। सिवनाथ बाबू आये हैं पटना से। सतीसजी परान्ती[1] सबारथि हो गए हैं वह भी पटना में ही रहेंगे। सब आदमी अब पटना में ही रहेंगे। मेले लोग तो हमेशा

---

१ आन्तीय। २ एस० एस० ए०।

यही रहते हैं। सुराज मिल गया अब क्या है! छोटन बाबू का राज है। एक कोरी बेमान बिलेक मारकेटी के साथ कचेहरी में घूमते रहते हैं। हाकिमों के यहाँ बाँस खिटकाते फिरते हैं। सब चौपट हो गया।" बासनदास कहते-कहते रुक जाता है।

"छोटन बाबू की बात मत पूछिए अब तो घर-बखरा सहित कांपरेसी हो गए हैं।"

"नहीं बासदेव छोटन बाबू जैसे छोटे लोगों की बात जाने दो। यह बेमारी ऊपर से आई है। यह पटनियाँ रोग है। अब तो और धूमधाम से फैलेगा। भूमिहार, रजपूत कैथ, यादव हरिजन सब लड़ रहे हैं। अपने चुनाव में सिर्फ ना मेंबे चुने जायेंगे। किसका आदमी ज्यादे चुना जाये इसी की लड़ाई है। यदि रजपूत पाटी के लोग ज्यादा आये तो सबसे बड़ा मन्तरी भी रजपूत होगा। भरसों बात हो रही थी आसरम में। छोटन बाबू और असीम बाबू बतिया रहे थे—गांधीजी का मसम लेकर ससांकजी आयेंगे। छोटन बाबू बोले जिला का कोन मसम जिला समापति को ही खाना चाहिए। ससांकजी क्यों खा रहे हैं। इसमें बहुत बड़ा रहस[1]।—हा हा हा हा!" बासनदास विचित्र हँसी हँसता है। ऐसी हँसी तो कभी नहीं देखी—बासदेवजी ने भी नहीं।

"काहे? हँसते काहे हैं बासजी?

"हा हा हा हा! अरे, यही असीम बाबू तुरत उठकर बैठ गए बोले आप ठीक कहते हैं छोटन बाबू। गाड़ी तो चली गई। कटिहार जाने से गाड़ी मिल सकती है। तुरत मोटर इस्टार्ट करके दोनों रवाना हो गए। समापति मन्तरी हो राम! राम मिलाये जोड़ी। हा हा! चले बातों हा हा! मसम खाने हा हा। देस को मसम कर देंगे ये लोग! मसमखुर!"

"बासजी मालूम होता है कोई सोसलिट में आपको

"सोसलिस्ट? सोसलिस्ट? क्या बड़ेया सोसलिस हमको? सब पाटी समान। उस पाटी में भी जितने बड़े लोग हैं, मन्तरी बनने के लिए मार कर रहे हैं। सब मेले-मंतरी होना चाहते हैं बासदेव! देस का काम मरीबों का काम चाहे मजूरों का काम जो भी करते हैं, एक ही लोभ से। उस पाटी में बस एक जैपरकास बाबू हैं। हा हा हा! उनको भी एक दोनी मार देना। फिर मसम लेने के लिए समापति-मन्तरी साथे साथ।"

क्या बूढ़ा और क्या पुरुष एक परिधा में से आती है सबकी—"अरे बाम-

---

१ रहस्य।

भोग कर लीजिए। थोड़ा सा है। दूध-दही तो भोग के लिए जमाया जा रहा है।"

बावनदास बगल की झोली का मुँह फैलाते हैं। लक्ष्मी कहती है, "यह क्या? जलपान कीजिए! झोली में क्यों देते हैं?"

लक्ष्मी की आँखें न जाने क्यों सजल हो जाती हैं। इतने दिनों के बाद एक वैष्णव आया और बिना परसा मुठिए चला जायेगा? नहीं यह ऐसा नहीं होने देगी।

"नहीं। बालभोग तो आपको करना ही होगा" लक्ष्मी जिद करती है "दासजी विनती करती हूँ।

बालदेवजी देखते हैं बावनदास को कुछ हो गया है। बड़ा अटर-पटर बोलते हैं। चेहरा भी एकदम बदल गया है आँखें लाल हैं कपड़ा कितना मैला हो गया है। देह जितना कपड़ा कमर में लपेटते हैं सो भी तार-तार हो गया है। हँसते हैं कैसा! यह सोलह-सत्रह साल से बावनदास के साथ हैं, कभी तो ऐसा हँसते नहीं देखा। अलमुनियाँ का लोटा और बाटी नहीं छोड़ते हैं कभी।

जलपान करके हाथ धोते हुए बावनदासजी कहते हैं, "बालदेवजी अब हम चलेंगे। पुरैनिया-मैल की गाड़ी कोदलिया सीसन में आकर पकड़ेंगे। आपसे एक काम है।"

बावनदास झोली से लाल रंग का एक बस्ता निकालते हैं। बस्ता खोलकर कागज का छोटा-सा पुलिन्दा निकालते हैं। 'बालदेवजी! सब महतमाजी के बात हैं। गंधुजीजी ने एक बार कहा था—अकरत पड़े पर हमको दीजिएगा आने के समय याद ही नहीं रहा। आप पुरैनियाँ कब तक जाइएगा। चार-पाँच दिन के बाद? तब ठीक है आप रख लीजिए। गंधुजी को दे दीजिएगा जरूर!"

परम श्रद्धा-भक्ति से सहेजी हुई पवित्र चिट्ठियों को बावनदास एक टक देख रहा है। फिर एक-एक कर अलग-अलग छाँटता है। हवा से एक चिट्ठी उड़कर सिवाबन के नीचे चली गई, बावनदास ने झट से उठाकर सर से सूखा लिया। उसे एक अक्षर का भी बोध नहीं लेकिन वह प्रत्येक चिट्ठी के एक-एक अक्षर पर निगाह डालता है जरूर है कुछ पढ़ रहा हो। आखिरी चिट्ठी खत्म कर वह एक लम्बी साँस लेता है।

बस्ता हाथ में लेकर बावनदास थोड़ी देर तक बेकार ही उसकी डोरी को उँगलियों में लपेटता और खोलता है। फिर एक लम्बी साँस लेकर अचानक ही

खड़ा हो जाता है, "लीजिए सेतारामजी-सेतारामजी !

बालदेवजी बस्ता लेकर लक्ष्मी के हाथ में दे देते हैं 'पीठी-पिटारी में रख दीजिए !"

लक्ष्मी बस्ता लेकर खर से खुलाती है फिर छाती से लगाती है। वह एकटक बावनदास को देख रही है। इस चिरकुट चद्दर की दोहाई से जाड़ा कैसे काटते हैं बावनदासजी ?

"दासजी ! इस चादर से जाड़ा कैसे काटते हैं ? ठहरिए, एक पुराना कम्बल है। ले लीजिए।" लक्ष्मी विनती के सुर में ही कहती है।

"नहीं माई ! बावनदास कंधे से झोली को झटकाते हुए कहता है, "नहीं माई, कम्बल की जरूरत नहीं।"

लक्ष्मी चुप हो जाती है। बावनदासजी को अब कम्बल की जरूरत नहीं। अब उन्हें किसी चीज की जरूरत नहीं। लक्ष्मी मानो सब कुछ समझ जाती है।

धरती फाटे मेघ जल
कपड़ा फाट डोर।
तन फाटे को औषधी
मन फाटे नहीं ठौर।

"अच्छा तो अब जै हिन्द !"

"जै हिन्द !"

बावनदास लड़खड़ा हुआ जा रहा है। सोबरन का कटहा कुत्ता खिट खिटाकर भूँकते हुए उस पर टूटता है। लेकिन बावनदास उधर देखता तक नहीं है। कुत्ता भी आश्चर्य से चुप हो जाता है। जरा-सा गश्त-पश्त भी नहीं किया ? कैसा आदमी है ! कुत्ता बावनदास के पीछे-पीछे दुम हिलाते मिट्टी सूँघते कुछ दूर तक जाता है।

"बावनदास जी का मन एकदम फट गया है," लक्ष्मी कहती है।

बालदेवजी कहते हैं, "अरे मन फटेगा क्या ! थोड़ा दम भी करता है। पंगुनीजी चिट्ठी लेकर क्या करते ? दूसरे की चिट्ठी सबके सोम नहीं पड़ते हैं दोख होता है।"

कोठलिया टीसन पर गाड़ी में बैठकर बावनदास को लगता है, वह कोई तीरथ करने जा रहा है। बहुत दिनों से एकदम मन में लालसा है—एक बार अगरलाबजी जाने की। केदारनाथ बदरिकानाथ वह गया है। उसकी आँखों के आगे अगरलाब का पट—जाता और छड़ी—चिमटे तीर्थ से लौटे हुए बावनदास की भेंट आ खड़ी होती है।

अगरलपिया रौ माय
बाबा रौ बिरोज चढ़िया देस म।

एक यात्री ने कहा "अरे, माघ महीना में कौन अगरलाप से लौटा है भाई!"

दूसरे ने कहा 'जरा जोर से बावन गुसाईं जी!

बावनदास खिड़की से बाहर की ओर देखता है। खेतों में लोग धान काट रहे हैं। नदी में मछली मार रहे हैं, मैस चरा रहे हैं। बावन ने बहुत सफर किया है, सैन स—कलकत्ता कांगरेस कलकत्ता कांगरेस बैजवाड़ा सावर मती आसरम महात्मा गांधीजी की जन्मभूमि काठियावाड़ फिर बम्बै। रेलवे लैन के किनारे काम करते हुए लोगों के मुखड़े विभिन्न प्रदेश के लोगों के मुखड़े उसकी आँखों के सामने इकट्ठा हो जाते हैं। पलड़ा टीसन पर उतरकर एक बार मोहबाबू के यहाँ जाने का विचार था लेकिन मोहबाबू कलकत्ता गए हैं। खाली दीदी और काकी जी भी गई हैं। खाली दीदी ने एक बार बावनश्याम की तस्वीर बनाई थी। 'खाली पस आप वैसे बैठे हैं, बैठे रहिए। एक कागज पर पेन्सिल से तस्वीर बनाने लगी। 'काकीजी ठीक मायेजी की तरह बोलती हैं। मोहबाबू रहते तो बावन को आज बहुत भारी मदद मिलती।

बहुत बड़े आदमी हैं। गोस्सा में जब होते हैं तो किसी को कुछ नहीं बूझते हैं। 'कम्फ अहसन के साहेब को जिनगी भर याद रहेगा। मोहबाबू का बेहद काम हो गया था उस दिन एकदम लाख टका। पिछले साल मोहबाबू और चौधरीजी बम्बै जा रहे थे। बावन भी साथ में था। मोगलसराय टीसन पर गाड़ी में भीड़ देखकर हुआ घुम! इस छोर से उस छोर तक घूम आये मगर कहीं घुसने ही नहीं दिया। चौधरीजी हँसते हुए बोले थोड़ी एक्सट्रा लगेज लगेजेहो। मोहबाबू ने एक डिब्बा के हैण्डिल को जैसे ही पकड़ा कि अन्दर से एक आदमी ने गुस्सा होकर कहा "देखता है नहीं इस पर लिखा हुआ—बंगाल के मेम्बरके वास्ते रिजर्व है।"

मोहबाबू ने भी मुसकुराकर जवाब दिया था—"खूब देखता हूँ। बंगाल में अब आप लोगों से जैसा आदमी चलने लगा है, यह भी देखता है। हाम भी ए० आई० सी० सी० का मेम्बर है, आप भी उसी का मम्बर है, मगर आदमीयत।"

भीतर से किसी ने रसिकता कर की "आदमियत" सुने और कोचा

---

१ कृपया आदमियत का प्रश्न मत उठाइए। बैठिए, हमें भी एक साथ ही त्रिवृति के दर्शन का सौभाग्य मिल रहा है।

होम्बेन मा मोसाय। आसून आपनार तो देखची ऐकेबारे त्रिमूर्ति "

बात भी कुछ ऐसी ही हो गई कि सभी हँस पड़े—चौधरीजी भी नायबबाबू भी और डिब्बे के सभी मेम्बर। हँसने वाली बात नहीं है? चौधरीजी एकदम लम्बा साने चौधरीजी की लम्बाई की बात तो सभी जानते ही हैं। पूरा ऊँचे कद का आदमी भी उनके कंधे के बराबर होता है। और, इधर नायबबाबू ठेट-नाटे कद के! गोल चेहरा चेहरे पर हरदम मुस्कराहट वह भी छोटी-सी! और तीसरा मूर्ति—सेवक बावनदास! विचार कर देखिए—हँसने की बात है या नहीं! चौधरी जी ने ऊपर बेंच पर अपना बिस्तर लम्बा किया था नायबबाबू और बावनदास नीचे।

ऐं? जमड़ा आ गया? सेतारामः सेतारामः!"

जमड़ा स्टेशन पर उतरकर, बावनदास एक बार ऊपर आसमान की ओर देखता है। वह शाम तक पहुँच जायेगा। नहीं नायबबाबू से नहीं भेंट होगी तो अब किससे भेंट करने आये वह।

कमलीमुहीपुर की ओर जा रहा है बावन! कमलीमुहीपुर पाकिस्तान में जाते-जाते बच गया है। एक बार हल्ला हुआ कि हिन्दुस्तान में रहेगा—दूसरी बार हल्ला हुआ कि पाकिस्तान में। सुनते हैं पाकिस्तान वाले कहते थे कि गाँव का नाम इस्लामी है, इसलिए इसको ! क्या बच्चा जैसी बुद्धि!

सेतारामः सेतारामः! बावनदास अपनी-अपनी डेग बढ़ाता है, आज जैसे हो शाम तक उस पहुँचना ही है एक जगह। उस जगह का नाम भी अभी वह अपने मन में नहीं लाएगा।

चलते-चलते वह कभी-कभी रुककर उसाँसें लेता है—बहुत देर तक रोने पर बच्चे जिस तरह उसाँसें लेते हैं, उसी तरह! बावन की झोली में खँजड़ी है। खँजड़ी में सजी हुई सुरती उनकी पत्नि को एक रूप में बाँध रही है—किम किम किम किम! खेतों की मेड़ों पर, मैदान में सड़कों पर, ऊँची-नीची जमीन पर उसके चरण पड़ते हैं। मंजिल करीब है। अब किम किम किम किम! और थोड़ी दूर और आधा कोस! किम किम!

जै महतमाजी! जै बापू! माँ! माँ! बस हो प्रभु! एक परीक्षा से तो पार कर दिया प्रभु! बस यहीं इसी सड़क के नीचे! इसी कच्ची सीढ़ी के पास डाल दो डग रे मन!

नागर नदी के किनारे! नागर को एक बहुत बड़ा पनाह बनाया है, दोनों देश वालों ने। नागर नदी ही सीमा-रेखा है। एक किनारा हिन्दुस्तान दूसरा किनारा पाकिस्तान! इस पार हिन्दुस्तान दूसरी ओर पाकिस्तान।

नावर बारहों मास बहती है, सूखती नहीं कभी। शायद इसीलिए। ! रामदेवी माथा पर आ गया।

माघ की ठिठुरती हुई सर्दी। पछिया हवा भी चलती है। कहता है, आज की रात बदरीनाथ की तरह यहाँ भी बरफ गिरेगी। रामदेवी सिर पर आ गया ! बावन निराश नहीं होता है। जब तक सूरज नहीं उगेगा यह टलेगा नहीं। बात ही कुछ ऐसी है यदि इस रास्ते से नहीं आई गाड़ी तो ! यह दूर, बहुत दूर किसी गाँव की रोशनी को देखता है। दोनों हाथों को मलकर गर्म हो लेता है। हाँ गाड़ियाँ आवेंगी। पचासों गाड़ियाँ ! कपड़े और चीनी और सीमेंट से लदी हुई गाड़ियाँ जिसने खबर दी है उसे —उसका नाम यह जान जाने पर भी नहीं छोड़ेगा। बावन ने गांधी जी की कसम खाई है। बेचारा गरीब उसकी नौकरी चली जावेगी। कटहा के दुलारचन्द कापरा नहीं घुमा कम्पनीवाला जिसकी चूए की दुकान पर मेदीलाल मोना बाबू और बावन ने फारबिसगंज मेला में पिकेटिंग किया था। घूमा भी नहीं एकदम पाकिटकाट लुक्का करता था और मोरंगिया लड़कियों, मोरंगिया दारू-गाँजा का कारबार करता था। आज कटहा थाना कांग्रेस का सिकरेटरी है! उसी की गाड़ियाँ हैं। सुपलाई सिसपिट्टर और कटहा थाना के दारोगा और यहाँ कलीमुद्दीपुर के नाकावाले हवलदार मिलाकर रकम आठ आना और इधर दुलारचन्द कापरा रकम आठ आना। गाड़ियाँ सदर वाला सड़क से नहीं आवेंगी। चोर पैड़ा[1] होकर, चौरवाट होकर पार करेंगी। फिर उधर के व्यापारी को उस पार पहुँचा देना। उधर के हाकिम-हुक्कामों को भी इसी तरह हिस्सा मिलेगा। लाखों रुपया का कारबार है। ये आ गईं। हाँ गाड़ियाँ ! कच्ची सड़क में पहियों की आवाज ! हाँ गाड़ी ही है।

ॐ भगवान्! ॐ महतमाजी! सेतारामः! सेतारामः! बस दो प्रभू! बरीजा में पार करो गुरु! बापू! बापू! माँ माँ! लोगों के अन्दर यह कुछ टटोलता है।

यह लोगों को कन्धे से झटकाकर खड़ा हो जाता है। नदी किनारे कोई पवेरू बोला टिटिहरी। किस! खेजड़ी की झुरकी जरा झनकी।

"भगवान्! महतमाजी! बापू! माँ! मुझे बुला लो अपने पास! क्या करेगा इस दुनिया में रहकर! शरम नहीं बचेगा।"

गाड़ियाँ आ गईं एकदम करीब।

"अरे वा जा जा प रे—मू ऊ त!" अचना गाड़ीवान डरा और दबी आवाज

---

१ चोर रास्ता।

'बावन! रास्ता छोड़ दो। गाड़ी पास होने दो।"

आइए सामने। पास कराइए गाड़ी। आप भी कांग्रेस के मेम्बर हैं और हम भी। जाता खुला हुआ है अपना अपना हिसाब-किताब किसाइए। आज के इस पवित्तर दिन को हम कलंक नहीं लगने देंगे।"

कापरा जानता है, इससे माथा-पच्ची करना बेकार है। वह हवलदार के कान में कुछ कहता है। फिर पुकारता है, 'इसपिरिस जी! कहाँ "

यह इसपिरिस जी कापरा का अपना आदमी है। नाम फर्मी है। एक गाड़ी पर से उतरता है, फिर चुपचाप अगली गाड़ी पर जाकर बैठ जाता है।

"बावनदास मान जाओ!

"हांको भी गाड़ी इसपिरिस जी!"

गाड़ी में जुते हुए दोनों जानवर अचरज से चौंक पड़ते हैं। भड़कते हैं। छिड़ें छिड़ें! नाक से आवाज करके आगे बढ़ने से इन्कार करते हैं। कापरा एक बैल की पूँछ पकड़कर ऐंठता है। हुई पद से बोली मगर बैलों ने लीक छोड़ दिया और गाड़ी को बगल की ओर लेकर भागे।

दूसरी गाड़ी! एक-एक बैल को हवलदार और दूसरे को कापरा पूँछ मरोड़कर आगे बढ़ाते हैं। गाड़ीवान अवाक् होकर हाथ में रास थामे हुए हैं। यह क्या हो रहा है?

बैलगाड़ी पास हो गई। पास हो रही है। बावनदास बीच लीक पर खड़ा है और गाड़ियाँ ऊपर से आर-पार कर रही हैं। बैल भड़के जरूर, मगर।

तीन-चार! चार गाड़ियाँ?

अब बावनदास ठीक बैल के सामने आकर खड़ा होता है। बैल उसे धुत्ता मारकर गिरा देता है। वह लीक पर लुढ़क जाता है। ठीक पहिये के नीचे।

मड़-मड़-मड़!

'बापू! माँ!

गाड़ी पास! कर्र-कर्र-कर्र!

गाड़ियाँ पास हो रही हैं। पचास गाड़ियाँ!

आखिरी गाड़ी जब गुजर गई तो हवलदार और रामबसावनसिंह मिलकर बावन की बिन्दी-बिन्दी लाश सड़क के कीचड़ में सन-पगे खाल को उठाकर चलते हैं। आकर नदी के उस पार, पाकिस्तान में फेंकना होगा। इधर नहीं।

'इसपिरिस नहीं!

हुसारचन्द कपरा बावन की झोली लेकर उनके पीछे-पीछे जाता है।

नदर पार करते समय बावन के बच्चे की तुलसी-माला नागर की बहती हुई धारा में गिर पड़ती है—हैतारामः!

चार बजे भोर को पाकिस्तानी पुलिस ने घाट-गश्त जमाने के समय देखा —लाश!

'अरे! यह तो उस पार के बौने की है। यहाँ कैसे आई? ओ समझ गए। 'उठाओ जी हलीफ और जुम्मन के चलो उस पार!"

बावन की ठंडी लाश झोली-कपड़ा के साथ फिर उठी।

बावन ने दो मजबूर देशों की हिन्दुस्तानी और पाकिस्तान की ईमानदारी को, इन्सानियत को बस दो डेग में ही नाप लिया।

नागर नदी के बीच में पहुँचकर पाकिस्तान के पुलिस अफसर साहब ने कहा—"नदी में ही डाल दो। इसकी झोली को उस पार दरख्त से लटका दो। जल्दी।"

नागर की धारा हठात् कलकला उठी। सिपाही बैंजई को पानी में फेंकते हुए कहता है—"डमरू बजा के रघुपति राघव गाते रहो" छपाक!

इक्कीस

मेरीगंज बाँध के एकमात्र मालिक एकछत्र जमींदार, तहसीलदार बाबू विश्वनाथ मल्लिक का खम्भहार देख लो! जिस बड़े चौखाड़ पर एक पंक्ति में बैठकर, गांधीजी के सराध के दिन लोगों ने सरबखटन भोज खाया उसी को घेरकर खलिहान बनाया है तहसीलदार साहब ने। दस बीघे का घेराव है।

रामकिरपालसिंह अपनी बची-खुची जमीन फसल सहित तहसीलदार के यहाँ सूद-रेहन रखकर तीरथ करने जा रहे हैं—काशी केदारजी जहाँ तक जा सकें। तहसीलदार साहब ने कहा है "बाकी रुपया जहाँ से लिखिएगा, मनीआर्डर से भेजते रहेंगे।"

बाकी जमाना भर खर्चा जाड़े का कपड़ा सकलदीप के प्राविडेन्ट और गठनाउपन-पूजा के लिए डेलावल दो सौ रुपया माँगने गया। तहसीलदार साहब ने साफ जवाब दे दिया—"हाथ में एक पैसा नहीं है।" [illegible] रिछवाड़े की जमीन जिसमें धान करीब-करीब तैयार हो गया था

ता तीन सौ रुपया दिया।

सब मिलाकर पाँच हजार मन से क्या कम होगा धान इस बार!

तंत्रिमा-छत्री टोली कुर्मा छत्रीटोली कुसवाहा-छत्रीटोली धनुपधारी छत्रीटोली और गहलोत-छत्रीटोली के जन-मजदूरों की हाँड़ी माघ महीने में ही टँग गई है। खलिहार में जितना धान हिस्सा होगा उससे चौगुना तो कर्जा है। सब काट लिया जायेगा और इस बार तो अवश्य है पाँव में गुजर नहीं चलेगा। रामावतार यादव पाँच हल चलाते थे इस साल एक ही हल चलायेंगे एक हल अधहरी[1] पर चलेगा। रामकिरपालसिंह ने तो जती-बारी उठा ही दी। बुधिया को लेकर तीरथ चले गए। शिवशंकरसिंह दो हल चलायेंगे। तहसीलदार साहब इस बार ट्रक्टर[2] खरीद रहे हैं। बेचारा कहता था "उसी में सब कुछ होगा—हल चौगी बिधा कोड़कमान काशी-पोरा और बन कटनी भी! आदमी की क्या जरूरत? पानी का पम्पू आयेगा। इन्दर भगवान् की खुशामद की जरूरत नहीं। कमला नदी में पम्पू लगा दिया सिर्फ घसघस कर दिया और हथिया सूँड़ की तरह सब पानी सोखकर खेत पटा देगा।" अब इन्दर भगवान् को ही मूल-नेग भटा रहे हैं तहसीलदार साहेब तो आदमी उनके हुजूर में क्या है? कटिहार में एक जूट मिल और खुला है। तीन जूट मिल?

चलो चलो दो रुपया रोज मजदूरी मिलती है। पाँव में अब क्या रखा है।

एक महतमाजी का भरोसा था उनको भी मार दिया। बालदेवजी से पूछो न महतमाजी की अधहू पर अब कौन आयेंगे। जमाहिरलाल? मगर महतमाजी तो एक ही कोपिन पहनते थे।

बिरंची कहता है 'जहाँ सभी जात भाई का बारहो बरन का जैब सीब का पता जुटा हुआ है उस खलिहार में बरबकत तो उधियाकर होगा।

तहसीलदार साहेब आज कह रहे थे इस बार सभी को अपने हिस्से में से औकाद मुताबिक धान देना होगा—एक कट्ठा आध कट्ठा एक सेर, आध सेर! महतमाजी का चमा हो रहा है।

"महतमाजी का चमा? क्या होगा चमा? मरद तो हो गया।"

"नहीं! रहुआ के करमी बाबू ने दिल्ली में जाकर एक करोड़ या एक लाख पता नहीं एक हजार चार नहीं मगर एक मोर रुपया सुरजी बाबू ने जमाहिरलाल का आकर दिया है। महतमाजी का चमा! सुनते हैं, और भी देंगे।

---

१ आधा हल। २ ट्रैक्टर। ३ इन्द्रभगवान।

"ऐं! कौन हल्ला करता है उधर?

"अरे कौन रमपियरिया है।"

रमपियरिया और रमपियरिया की माँ के गले की आवाज़ सुनी जाती है। मठ पर झगड़ा हो रहा है। आज लगता है मारपीट ज़्यादा हुई है।

"रामदास पुजारी आजकल दिन-भर गाँजा पीता है। एक-न-एक दिन यह भी खून करेगा।"

"साला इन्हीं लोगों के पाप से धरती डलमला रही है। मरखट कर दिया। अब यह मठ है? साक्षात वैकुंठ की मीनाबाज़ार हो गया है। रात एक कोस का कुत्ता-बर्क्षा सब आकर जमा होता है।

तहसीलदार साहब आजकल रात में ऊपर के कोठे पर सुमरितदास के साथ गजल-मत्तर ठीक करते रहते हैं। किसी-किसी दिन सुमरितदास सीढ़ी पर लड़ खड़ाकर गिर जाता है। संथालों के घर में चुलाया हुआ महुआ का दारू बड़ा तेज होता है। संथाई गाँजा रोज आधा कंटर हो जाता है। कभी-कभी तहसीलदार साहब भी नीचे उतर कर खूब हल्ला करते हैं कमला की माँ को कमला को बेटिया बूढ़ी तब को बोली से उड़ा देने की धमकी देते हैं।

एक रात को तो इतना मार कर तहसीलदार साहब कि कमला की माँ डर से छाती पीटने लगी थी। ऐसी खराब-खराब गाली जो जिन्दगी में कभी एक बार भी उनके मुँह से नहीं सुनी गई, कमला की बन्द किवाड़ के सामने आकर ज़ोर-ज़ोर से बकने लगे। कमला दरवाजा खोलकर बाहर आई और बोली "बाबा! मुझे जो सजा देनी हो दो। मगर माँ को गाली मत दो। उनका क्या कसूर?"

कमला को देखते ही तहसीलदार साहब का नशा उतर गया था ऊपर माथे।

उस दिन से माँ कमला को एक मिनट भी अकेली नहीं छोड़ती है। बिसार को देखकर बच्चे वाली बिल्ली की तरह माँ कैसी तेज हो जाती है! कमला की माँ को डर है, तहसीलदार साहब किसी दिन कोई काण्ड करेंगे। एक सप्ताह पहले रात में एक दवा मिलाकर दिया उन्होंने—"कमला को पिला दो। एकदम सफाया हो जायेगी। बड़ी मुश्किल से जोगाड़ किया है।

इस पर कैसे विश्वास किया जाय! न जाने कब क्या कर दें!

गाँव के घर-घर में 'हे भगवान्' की पुकार मची हुई है। सुबह से शाम एक रात कर धान-रुपनी कर जो मजदूरी मिलती है खलिहान पर ही बाकी बोझ ढो जाता है। साईं-बोधी और मोची का खत भी नहीं जुड़ेगा इस बार।

"चलो कटिहार! मिल का भोंपा बजता है रोज, सुनते नहीं?

रहा है—आओ ओ ओ हो हो हो हो !

रात के सन्नाटे में जोतखी काका की खाँसी बड़ी डरावनी सुनाई पड़ती है—खाँ-खाँ। दिन में ठीक दोपहर को ममता याद पर बैठकर कागा जिस तरह बोलता है, ठीक उसी तरह खाँ-खाँ !

'खाएगा ! सबको खा जायेगा। पिशाचनी देवी क्रमशः बढ़ी आ रही है। उसके हजारों नख दाँत निकले हैं, भीम लपलपा रही है। खाएगा खाएगा !

मवार्त विष्णु की तरह सारा गाँव कुहरे में डूबकर हुआ थर-थर काँप रहा है।

"खबरदार—हो म म म म—खबरदार !"

सहसीलदार साब ने खलिहान जोगाने के लिए तीन संथालों को और डयोढ़ी के पहरा के लिए पहाड़िया सिपाहियों को बहाल किया है। एक नाल बन्दूक का लैसन फिर मिला है। 'चक्रितर कर्मकार अब तक पकड़ाता नहीं है, पक्के बालों को रात में नींद नहीं आएगी। पहरे वालों की बोली भी डरावनी मालूम होती है। आजकल कोठी के जंगल में शाम को ही एक रोशनी जलती है—बहुत तेज फिर रात में और फिर भोर को।

बालदेवजी जगे हुए हैं। शाम को पुर्णिया से लौटे हैं। उनको नींद नहीं आ रही है। पुर्णिया जाने के समय लक्ष्मी ने बावनदास का बस्ता गांधीजी की चिट्ठियों वाला बस्ता देते हुए कहा था, लघुशंका करने के समय पॉकिट से निकालकर । गांधुलीजी से वह भेंट करने गया था। गांधुलीजी ने पूछा था "बावनदास ने कुछ दिया है आपको ?

"जी, जैसे नहीं ! बालदेवजी इस जाड़े के मौसम में भी पसीना-पसीना हो गए थे।

न जाने क्यों गांधुलीजी अचानक उदास हो गए।

'बालदेव अब जान रहत इन चिट्ठियों को नहीं दे सकता। इन चिट्ठियों को देखते ही जवाहिरलाल नेहरू जी बावनदास को मैनिस्टर बना देंगे नहीं तो दिल्ली जाकर मुला लेंगे। 'जो भी आज तक जितने लीडर आए सबों ने बावनदास से ही हुँसकर बातें की।

'इस बार मैनिस्टर साहेब आये। बड़-बड़ लीडरों ने भाषाहिया ने, वकीलों मुख्तियारों और जमींदारों ने दरखास करके बरखास दिया, "मगवती बाबू सरकारी वकील को कांग्रेस का मेम्बर बहाल कर लिया जाय।" मगर मैनिस्टर साहब ने बावनदास से पूछा "क्यों बावनदास जी ?" मगवती

बाबू बहाल नहीं हुए। आखिर बावन की ही बात रही। ममवती बाबू ने विधानसभा में सुरपतिया को फाँसी पर लटकाने के लिए खूब बहस किया था।

और ये चिट्ठियाँ! नहीं वह हरगिज नहीं देगा। लछमी को न जाने क्या हो गया है! जिस दिन से बस्ता मिला दोनों वक्त सतसंग के समय सिर झुकाकर सामने रखती थी। रोज चन्दन और फूल चढ़ाती थी इस पर। कभी-कभी चिट्ठियों को खोलकर पढ़ती और रोती। पुर्णियाँ से लौटने पर कुशल-मंगल पूछना तो दूर, पूछ बैठी "गमुलीजी को दे दिया न?"

"हाँ हाँ दे दिया। इतना मा-परतीत था तो मेरे हाथ में दिया ही क्यों था?

बालदेवजी को नींद नहीं आ रही है। बैलगाड़ी पर पुआल के नीचे बस्ता छिपाकर रख दिया है। धूनी तो धू-धू कर जल रही है।

बालदेवजी उठकर बाहर आते हैं।

"होये! खबरदार! पहरू चिल्लाता है।

बालदेवजी धूनी के पास बैठकर लकड़ियों को जरा इधर उधर करते हैं फिर कनखी से लछमी के बिछावन की ओर देखते हैं। धीरे से बस्ता निकालकर खोलते हैं। उनका सारा देह सिहर रहा है। जीभ सूखकर काठ हो गई है मुँह में थूक नहीं है। धूनी की आग लहलहा उठी है, लकड़ियाँ चिट्-चिट् बोलती हैं। बालदेव ने एक चिट्ठी निकाली।

"दुहाई गांधी बाबा! बाबा रे! लछमी बिछावन पर से ही लपटती है—"दुसाई साहेब! छि: छि:! यह क्या कर रहे हैं! सतपुरुष का छिपा करो! बालदेव! पापी हत्यारा!

धूनी की आग लछमी के कपड़े में लग जाती है। "लगने दो आग! मुट्ठी खोलिए! बस्ता दीजिए बालदेवजी! मैं जलकर मर जाऊँगी मगर।"

बालदेवजी की कसी हुई मुट्ठी खुल जाती है। लछमी बस्ते को कलेजे से चिपकाकर खड़ी होती है। कमर से लिपटा हुआ कपड़ा खुद-ब-खुद गिर पड़ता है। बालदेवजी कमण्डल से पानी लेकर छींटते हैं।

"हे भगवान्! सतपुरुष हो! हे गांधीजी! बाबा जै बावनदासजी! हू हू!" लछमी रो रही है।

बरहहीन खड़ी लछमी रो रही है।

लछमी के हाथ-पाँव जल गए हैं, बड़े-बड़े फफोले निकल आये हैं।

बालदेवजी अपनी मसहरी में आकर छिप जाते हैं। लेट कर सोचते हैं अब यहाँ रहना अच्छा नहीं। वह किस मुँह से यहाँ रहेगा?

की ओर अब वह निगाह उठाकर कभी देख नहीं सकेगा। वह पुर्णिया जायेगा, वहीं से पचनपट्टी चला जायगा। वह अब अपने गाँव में रहेगा अपने समाज में अपनी जाति में रहेगा। जाति बहुत बड़ी चीज है। जाति की बात ऐसी है कि सभी बड़े-बड़ लीडर अपनी-अपनी जाति की पार्टी में हैं। यह तो राजनीति है! लक्ष्मी क्या समझेगी? कांग्रेसजी का बरमचारी तो समझता है, अब यही खुट्टा गाड़ेगा। ठीक है। नहीं, वह लक्ष्मी पर जाते-जाते अकलंक लगाकर नहीं जायेगा। वह

"पुसाई साहेब उठिए! सतसंग का समय हो गया!" लक्ष्मी कराहते हुए उठती है। सारा देह अब गया है।

रोज की तरह लक्ष्मी उठती है, उठकर बालदेवजी के बिछावन के पास आती है। मसहरी हटाकर बालदेवजी के बेंगूठों में आँखे लगती है, 'सा हे ब —बजगी!"

बालदेवजी रोते हैं—सिसकियाँ लेकर, "स ब—भी!"

'उठिए पुसाई साहेब!"

बाईस

तीन महीने बाद।

१९४८ साल के अप्रैल की एक सुबह।

इस इलाके में अखतिया पदुआ-मर्दे बोनेवाले किसानों को चाहिए कि सूरज उगने से पहले ही खेत को चार चास कर दें! मुलुकुआ सारा जनमन कर रहा है। कमला नदी के महुदे में उसकी छाया झिलमिला रही है। लगता है, सीम-जमल खिला है।

कन्धे पर हल लिये मरियम बैलों को हाँकता हुआ जा रहा है दिरंगी कोयरीटोला के सोबरन का तीन बीघा खेत मनकुत्ता पर जोतना है। मगर हल खाम टोला पड़ता। उसकी सूरत दियासलाई की डिबिया में जैसे हलवाहे की छाती रहती है—एकदम दुबला-पतला काला-कलूटा कमर में बिल्ली जैसी ही है।

खेसारत अब खर चराता है। तीन बजे रात में बैल चैला चरती है

वह दिन-भर में नहीं करेगी। अब तो उसको अपना[1] रमान भी नहीं है इसीलिए बच्चा की ओर ले जाता है। खेलावन यादव मारकंडेजी का मकई, भैंस चराकर लौट रहा है।

आसमान साफ हो रहा है। सब के चेहरों पर कुछ का प्रकाश पड़ता है —अभागे हुई हैं ऐसे चेहरे!

तहसीलदार साहब का हैंडर लेकर डलेवर साहब निकले—भट भट भट भट!

तहसीलदार साहब डोमंजिल की छत पर खड़े हाथों को पीछे की ओर बाँध टहल रहे हैं। भट भट भट भट भट! छत दरकती है। उसी के साथ पर उनका कलेजा धुकधुका रहा है। कौन आ रहा है? कौन? खेदिया?

"चुप! धीरे से! क्या?

"क्या?" तहसीलदार साहब पूछते हैं।

"छः! बनूहा! नाती भैरहा!" खेदिया हँसती है।

"चुप! जिन्दा है या?

"धैं! धुधुर धुधुर हेरछे!

"उफ! भगवान्! तहसीलदार साहब थरथर काँप रहे हैं।

कमला नदी के उस पार मलपोखर रमजी की ऊसर के उस पार, सेमरलाही के जंगल के उस पार आसमान लाल हो गया है। धनिलाल कोठी के बाग में गुलमोहर की लाल-लाल डालियाँ दमक उठती हैं।

ड्योढ़ी के उस पार बच्चे के रोने की आवाज नहीं जाने पावे! इन्तिजाम हो रहा है। कोई इन्तिजाम जरूरी हो जायेगा। यदि बच्चा जोर से रोये! हैं, बच्चा दी प दो। मार डालो!

दिल्ली में राजघाट पर, बापू की समाधि पर रोज श्रद्धांजलियाँ अर्पित होती हैं। संसार के किसी भी कोने का किसी भी देश का आदमी आता है, वहाँ पहुँचकर अपनी जिन्दगी को सार्थक समझता है।

कालीबुरीपुर में मानर नदी के किनारे, चोरपट्टा के पास साँड़ का पेड़ की डाली से लटकती हुई छह की लोथी को किसी ने शायद टपा दिया है। कौन सेवा? दुखारचन्द कायथ ने एक महीने के बाद आकर देखा डाली तो लटक रही है डाली से। जिस कायथ का कोई भी बरकर देखते ही पहचान लेता—बावनदास की लोथी है। लोथी कायथ ने टपा दी। अपर लोथी का

---

१ बरगाह।

फीता अभी भी आली में झूल रहा है।

किसी दुखिया ने इसे बेपरिया-पीर[1] समझकर मनौती की है अपने आँचल का एक गुँट फाड़कर बाँध दिया है—"मनोकामना पूरी हो तो नया चेपरा चढ़ाऊँगी।" बहुत बड़ी आशा और विश्वास के साथ यह गिरह बाँध रही है। दो चीथड़े।

पूर्णिया अस्पताल के सामने बड़ा पुराना वटवृक्ष है। उसके नीचे सूखी हुई पत्तियाँ हवा में इधर-उधर उड़ रही हैं। वट के बँधाए चबूतरे के पास एक युवती खड़ी है। साथ में है प्याज।

साली देह पर एक पुराना गमछा रखे सिर्फ जाँघिया पहने एक बाहर साहब बार-बार बारिक से निकलकर युवती को देखते हैं गीत गाते हैं—गोरी पतरी कमरिया! और एक बार पूछ ही लेते हैं "आप डॉक्टर साहब की वाइफ हैं?

युवती ने मर्दन हिलाकर कहा—"नहीं!"

बाहर साहब प्याज की ओर देखते हैं। प्याज इस बाहर को जानता है—बड़ा बकूफ है। हमेशा खराब-खराब बात बोलता रहता है। वह मुँह फेर लेता है।

अस्पताल का लोहे-कपाट झनझनाकर खुलता है। युवती के चेहरे पर से प्रतीक्षा की बदली हट जाती है। उसके चेहरे पर हास्य की छोटी-छोटी लहरियाँ पड़ने लगी धीरे-धीरे खिल पड़ती हैं।

डॉक्टर इस तरह मुस्कराता हुआ बड़ा हाथ में छोटा बैग लिए आ रहा है, मानो लैबोरेटरी से छुट्टी पाकर लौटा है।

प्याज का चेहरा देखने लायक हो रहा है। वह अपने अन्दर में उठने वाले खुशी के आवेगों को दबाता है किन्तु उसका मुँह अस्वाभाविक रूप से खिला हुआ है।

"तुम भी किसी जन्म में थी क्या?

"नहीं बाबा! ऐसी किस्मत लेके नहीं आई। अबकी! बाबा विश्वनाथ का प्रसाद है!" युवती रूमाल से मूने बेलपत्तर और फूल निकालकर डॉक्टर प्रशान्त के सिर से छुआती है।

"तब प्याज क्या हाल है? ममता! प्याज से बातचीत हुई है या नहीं?"

---

१ जिस पर को पीर समझकर चीथड़ा चढ़ाते हैं।

"सुबह से और कर क्या रही हूँ! ममता हँसते हुए कहती है, "थोड़ा साड़ी बुलाइए प्यारिलाल सरकार!"

प्यारे हँसता-लँहकाता कचहरी की ओर जाता है।

"तीन बजे रात में पहुँची पूर्णिया स्टेशन। ज्योति-बी तो आजकल यहीं हैं न! उनके डेरे पर गई, सुबह उठकर कलक्टर साहब के बँगले पर गई। वरसी आर्डर साथ में था तुम्हारी रिलीज का। ज्योति-बी ने कहा यदि कलक्टर साहब टूर पर निकल गए तो फिर देर हो जा सकती है! तो अभी कहाँ चलना है?" ममता मुस्कराती है।

"तुम मेरीगंज नहीं चलोगी?

'क्यों नहीं? मैंने पन्द्रह दिन की छुट्टी ले ली है।"

एस० पी० साहब का चपरासी खत लेकर आया है। एस० पी साहब ने डॉक्टर को अपने बँगले पर निमन्त्रित किया है।

तेईस

तहसीलदार साहब अब नीचे नहीं उतरते हैं। ऊपर ही रहते हैं। दिन-भर ताड़ी पीकर रहते हैं रात में संथाल्टोली का महुआ का रस। कभी होश में नहीं रहते हैं। सुमरितदास बजार से रोज पूछते हैं "खाना उपाय?"

"मेरा तो मगज नहीं काम कर रहा है।

'नहीं काम कर रहा है तो लो एक गिलास। पियो साले! यदि कहीं बाले तो देख जो बनूक!

कमला की माँ दरवाजा कभी नहीं खोलती। कुएँ की ओर खुलने वाला दरवाजा कभी-कभी खोलती है। कमरे के अन्धकार में एक कोने में एक छोटा-सा दीप जल रहा है। कमला की गोदी में उसका शिशु कपड़े में लिपटा सो रहा है। कमला कजरौटी में काजल पार रही है।

भर भट भर्र रें

एक स्टेशन वैगन पूर्णिया मरीगंज रोड पर भागी जा रही है।

चलते समय ममता की नजर बचाकर प्यारे ने डॉक्टर के हाथ में एक

लिफाफा दिया है। आगे ड्राइवर की बगल में बैठा हुआ प्यारू कभी-कभी गर्दन घुमाकर पीछे की ओर देखता है। डॉक्टर साहब चिट्ठी पढ़ रहे हैं।

"आपनाथ !"

कमला की चिट्ठी है—एक सप्ताह पहले की चिट्ठी।

'आपनाथ

पता नहीं, समय पर यह पत्र तुमको मिले या नहीं। देर या सवेर, कभी भी मेरी यह चिट्ठी तुम्हें मिल ही जायेगी मुझे पूरा विश्वास है। तुम मेरे पास दौड़े आओगे ! तुम जानते हो अब मुझे डर लगने क्या है। तुम्हारा तुम्हारा कैसे लिखूं ? माँ कहती है, यदि तुम किसी तरह बाबा को लिख दो या मालूम करा दो कि मेरी होने वाली सन्तान के तुम पिता हो तो मैं भी जाऊँ। विश्वास नहीं करती थीं ! बाबूजी अब एकदम पागल हो गये हैं। न जाने कब क्या हो ! तुम्हारी किताबों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। मुझे कितना बड़ा सहारा मिला है तुम्हारी किताबों से ! लेकिन अब एक नई किताब चाहिए जिसके पृष्ठ-पृष्ठ में लिखा हुआ हो—कमला ! विश्वास करो ! डरो मत ! जो होगा मंगलमय होगा ।"

डॉक्टर एक ही साँस में इतना पढ़ गया। इसके बाद उसने ममता की ओर निगाह डाली। पत्र भर की बड़ी ममता साड़ी के हिमकोलों पर मीठी झपकी ले रही है। चोट कब जायेगी !

'और कितनी दूर ?" ममता जागकर पूछती है।

"और एक घंटा" प्यारू कहता है।

डॉक्टर आगे पढ़ता है—" बाबा तुम्हारे बच्चे को मार डालेंगे।

"नहीं ! नहीं !"

उँ ?" ममता पूछती है "क्या है ?"

डॉक्टर ममता के हाथ में पत्र देकर बाहर की ओर देखता है। प्यारू गर्दन उलट-उलटकर डॉक्टर साहब की ओर देखता है।

ममता आँखें मलते हुए पढ़ती है—"आपनाथ ! किसकी चिट्ठी है ? कमला की ?"

ममता पढ़ रही है। डॉक्टर ने एक बार ममता की ओर देखा—ममता की नींद से माती आँखें एक बार चमकती हैं। पत्र खोप करके वह पूछती है, "और कितनी दूर ?

"अब और एक घंटा । कच्चा रास्ता है !"

"और वह मनोज कहाँ है ?"

"उसकी तो एक लम्बी कहानी है। बहसमाज मन्दिर में उसे रखवा दिया था। न जाने कहाँ से उसके एक चाचा अमर हो गए। बहुत बखेड़ा हुआ आदि-धर्म बचाकर उसमा। मैंने भी कह दिया कि जाओ!"

"उससे मैला बरवाता है," प्यारू कहता है। "उसके पीछ का आदमी बराबर कचहरी जाता है न!"

"मैंने मेडिकल चार्ट में तुम्हारी रिपोर्ट दे दी है। एक संक्षिप्त रिपोर्ट है—जंगली जड़ी-बूटी और यहाँ के पौधों में पाचित टोटकों के बारे में—तुम्हारी चिट्ठियों से छाँट करके लिख दिया।"

"लेकिन मैंने तो फैसला कर लिया है रिसर्च सफल होने की सोचना कर दूँगा।

"कोई रिसर्च कभी असफल नहीं होता है डॉक्टर! तुमसे कम-से-कम मिट्टी को तो पहचाना है। मिट्टी और मनुष्य से मुहब्बत। छोटी बात नहीं।"

डॉक्टर ममता की ओर देखता है—एकटक। ममता बाहर की ओर देख रही है—विशाल मैदान! चंपा बरसी! यही है वह मशहूर मैदान —नेपाल से झुक होकर गंगा किनारे तक—सीमान पूर्णिया अंचल। मैदान की सूखी हुई दूबों में बरसातों ने जान डाल दी है—पल्लवित दीखों जैसी लम्बी है दूर से। बहसमा के ताड़ों की चूनरी पर डूबते हुए सूरज की लाली कसक घटमैली हो रही है।

मर्र र र

"मुमरितलाल! अभी ट्रैक्टर क्यों चला रहा है? कहाँ से आ रहा है ड्राइवर से पूछो तो।" तहसीलदार साहब दोमंजिले की छत पर से पुकारते हैं।

"ट्रैक्टर नहीं। मोटर है मोटर!"

"मोटर? कौन है?"

"डाक्टर!"

"कौन डॉक्टर?"

मुमरितलाल दौड़कर छत पर जाता है "अपने डाक्टर साब। साथ में एक जनाना है। प्यारू भी है।"

तहसीलदार साहब हाथ में बन्दूक लेते हैं। मुमरितलाल घर-घर काँपते हुए कहता है—"हुजूर! ऐसा काम मत कीजिए।"

"ऐसा काम नहीं करूँ? तब क्या करूँ?"

प्यारू पुकारता है "मौसी! ओ मौसी!"

"कौन? प्यारू?" माँ दरवाजे की फाँक से कहती है, "क्या है?"

"डाक्टर बाबू!"

"ऐहे ऐहे माँ माँ" सौर-गृह में कमला का नन्हा रोता है, "ऐं हैं ऐं हाँ!"

ममता जल्दी से किवाड़ के पास आकर कहती है, 'किवाड़ खोलो मौसी! मैं हूँ ममता। खोलो तो पहले!"

किवाड़ के पल्ले खुल जाते हैं। ममता सौर-गृह के अन्दर चली जाती है।

डॉक्टर अकेला चुपचाप खड़ा है। सीढ़ी पर खड़ाऊँ की आवाज होती है—भारी-भरकम आवाज! कोई जोर-जोर से पैर पटककर चल रहा है।

"कौन है? डाक्टर?" तहसीलदार साहब चिल्लाते हैं।

"आइए! बैठिए डाक्टर बाबू। सुमरितदास ममूड़े निकालकर हँसता है "आइए!"

"नहीं! सुमरितदास इसको पूछो कहाँ आया है? किसके यहाँ आया है? क्या करने आया है? क्या लेने आया है? पूछो!"

सुमरितदास बेचारा डॉक्टर के पास आकर कनखी और इशारों से समझाता है "मामला जरा ज्यादा हलने लगी है न इसीलिए!"

सौर-गृह के दरवाजे की फाँक से कमला की माँ कहती है, "कमली के बाबू! कैसे हो तुम? जमाई को —"

"जमाई को क्या? अपने जमाई को क्यों नहीं कहती हो? वह मेरा पैर छूकर प्रणाम कहाँ करता है?

डॉक्टर तहसीलदार की परम-भक्ति लेता है।

तहसीलदार साहब अचानक फूट-फूटकर रो पड़ते हैं डाक्टर साहब को बाहों में जकड़कर रोते हैं "मेरा बेटा! बाबू! मेरा बेटा!"

सुमरितदास बेचारे ने रात में ही घर-घर खबर पहुँचा दी—"कमली की शादी तो पहले ही डागदर बाबू से हो गई थी। तुम लोग नित हो! पाँच पंच को बुलाकर जब-जब शादी की बात पक्की हुई, पड़ गया। इसीलिए काशी के पंडितों ने गंधरब-विवाह । गंधरब विवाह की बात किसी को मालूम नहीं होने दी हो तो सबसे पहले बात उसको देखेगा तब और लोग। गए हैं। अब कल छट्ठी के भोज का निमंत्रण देने कल सुबह से ही मानल-बधावा बजेगा।"

"छट्! यह तो किस्सा-कहानी जैसा हो गया! नहीं!"

डाक्टरटोली के पुरोहित देवानन्द झा ने सोचों से

बातों का साथ कुछ माफ है।"

जोतखीजी के कानों में बात पड़ी उन्होंने घृणा से मुँह सिकोड़ लिया।

खलावन यादव ने कहा "पैसा वाला मसरम भी करेगा तो वह धरम ही होगा।"

लेकिन निमंत्रण अस्वीकार करने का हिम्मत किसी में नहीं।

सुबह को बाँध के बमारों में जाकर माथ-नवाकर डोम बजाना शुरू किया। बीरेंद मुँह बाँध-बाँधकर मोहर पाती हुई आने लगी। लेकिन सब के चेहरे पर एक उदासी एक मनहूस काली रेखा खिंची हुई है। मन में रंग नहीं।

तहसीलदार साहब बहुत देर तक अपने कमरे में चुपचाप बैठकर कुछ सोचते हैं फिर बाहर आकर कहते हैं, "सुमरितदास! कोमो से कह दो हरेक परिवार को पाँच बीघा के हर से मैं जमीन दूँगा। सौंज पन्ने पढ़ते में सब कागज-पत्तर ठीक कर लेता हूँ। और संथाल टोली में जाकर कहो वे लोग भी आकर रसीद ले जायें। एक पैसा सलामी या मजरामा कुछ भी नहीं! अरे मैं क्यों दूँगा? दे रहा है नया मालिक! मालिक साहब का हुकुम है, सुनते हो नहीं! जो रहा है वह? वह हुकुम दे रहा है। लौटा दो! दे दो, खेलावन को उसकी जमीन का सब है दो।

डॉक्टर प्रणाम और ममता की आँखें चार होती हैं।

मुँह क्या देखने हो? मुझे पागल समझते हो? ठीक है, पागल क्यों नहीं समझोगे? "योगेश्वर कृष्ण ने अपनी सारी विद्याबुद्धि समाकर कोशिश की मगर दुर्योधन ने साफ कह दिया—सूई की नोक पर जितनी मिट्टी चढ़ती है उतनी भी नहीं दूँगा।" जमीन! धरती! एक बीघा जमीन के लिए हाथकोठ तक मुकदमा लड़ते हैं लोग! और मैं सौ बीघे जमीन दे रहा हूँ। पागल तो तुम लोग हो! अरे, यह जमीन तो उन्हीं किसानों की है नीलाम की हुई, जब की हुई उन्हें वापस दे रहा हूँ। मैं कहता हूँ, एलान कर दो मालिक का हुकुम है!"

जै! जै! जै हो!

बोलिए प्रेम से—महतमाजी की जै!

छिप छिप छिपिप।

छिन छिन ता छिन ता।

ता छिप्पा ता छिप्पा!

घुमुर घुमुर हुर्रे हुर्रे हुर्रे!

हाँ अब सब ठीक है। अब देखा जब चेहरों पर मर्म चमक

पर काली लौट रही है। सैकड़ों जोड़ी आँखें कृषी से चमक उठती हैं, मानो दीप जले हों।

कुमार नीलोत्पल की जय बरही है।

हाँ ममता ने कमला के पुत्र को नाम दिया है—कुमार नीलोत्पल। डॉक्टर ने आज पहली बार अपने पुत्र को गोद में लिया और देखा है। 'दुबला पतला पीले रंग का रक्त-मांस का पिंड!' ममता कहती है, 'पटना के चलो। एक महीने में ही तुम्हारा बेटा लाल हो जायेगा। डॉक्टर ने सैकड़ों 'डिलिवरी' केस किये हैं। किन्तु कुमार नीलोत्पल! कमला का पीला चेहरा लाज से लाल हो गया था। डॉक्टर की गोद में शिशु को देते वक्त उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की पलकें झुकी हुई थीं। उसके ललाट पर सिंदूर का बड़ा-सा टीप चमचमा रहा था। अँधेरे में खड़ी 'सिस्टिन' तस्वीर की पड़ी माँ का हाथ बढ़ाकर एक ममतामयी छाया के हाथ में अपने शिशु को सौंप रही है। अँधेरा! ममतामयी छाया! नहीं नहीं। डॉक्टर ने अपने बाएँ हाथ की उँगलियों से नीलोत्पल के 'हार्ट की धड़कन का अनुभव किया था "अहा! नन्हा सा दिल धुक-धुक कर रहा है।"

सौर-गृह में आज नि के शिशु को सभी उच्च सुन्दर, स्वास्थ्य विद्या बुद्धि और धन सम्पत्ति के लिए मंगल गीत गाये जा रहे हैं। डॉक्टर क्या हुआ है। उसका रिसर्च? ममता कहती है, "असफल नहीं हुआ है। मिट्टी और मनुष्य से इतनी गहरी मुहब्बत किसी 'लेबोरेटरी' में नहीं बनती।"

लेबोरेटरी! विशाल प्रयोगशाला। ऊँची चहारदीवारी में बन्द प्रयोगशाला। साम्राज्य-लोभी शासकों की संगीनों के साये में वैज्ञानिकों के दल खोज कर रहे हैं प्रयोग कर रहे हैं। लंबी खोपड़ियों पर लाल-हरी रोशनी पड़ रही है। मारणास्त्र विध्वंसक और सर्वनाशा शक्तियों के सम्मिश्रण से एक ऐसे बम की रचना हो रही है जो सारी पृथ्वी को हवा के रूप में परिवर्तित कर देगा ऐटम बम कर रहा है मकड़ी के जाल की तरह! चारों ओर एक महा अन्धकार! तब वाष्प! प्रकृति-पुरुष ब्रह्म-पिंड! मिट्टी और मनुष्य के सुप्तचिन्तकों की छोटी-सी टोली अँधेरे में टटोल रही है। अँधेरे में आपस में टकराते हैं।

वेदान्त नास्तिकवाद सापेक्षवाद मानवतावाद! हिंसा से ऊबकर प्रकृति रो रही है। व्याध के तीर से घायल हिरण-बालक-सी मानवता

को पनाह कहाँ मिले? हा हा हा! अट्टहास! प्यालों के अट्टहास से आकाश हिल रहा है। छोटा-सा नन्हा-सा हिरण हाँफ रहा है। छोटे पंछी की तेज धुकधुकी! नीलोत्पल! नहीं नहीं! यह अँधेरा नहीं रहेगा। मानवता के पुजारियों की सम्मिलित वाणी गूँजती है—पवित्र वाणी! उन्हें प्रकाश मिल गया है। तेजोमय! क्षत-विक्षत पृथ्वी के घाव पर शीतल चन्दन लेप रहा है। प्रेम और अहिंसा की साधना सफल हो चुकी है। फिर कैसा भय! विधाता की सृष्टि में मानव ही सबसे बढ़कर शक्तिशाली है। उसको पराजित करना असंभव है, प्रचण्ड शक्ति-शाली बमों से भी नहीं। पागलो! आदमी-आदमी है, गिनीपिग नहीं। सवारि ऊपर मानस सत्य!

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्।
अनेक दिव्याभरण दिव्यानेकोद्यतायुधम्।
दिवि सूर्यसहस्र ।

ममता आ रही है! सुबह हो रही है। कमल के कमरे में रहस्योद्घाटन साहब चर्चा के रहे हैं। डॉक्टर उठकर खिड़कियाँ खोल देता है। मटमैली बंधियारी में कोठी का बाग ठिठका हुआ किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। पुष्प-मुहूर्त, अवकाश और मोक्षलक्ष्मी की नई कलियाँ मुस्कराने को तैयार हैं। नान्ते न मध्यं न पुनस्तवादि ।

"प्रशान्त!" ममता मुस्कराती हुई कमरे में प्रवेश करती है—सुबह को धीरे-धीरे बहनेवाली हवा जैसी। स्नान-स्नाता ममता के भीगे-बिखरे केशपुञ्ज को झटकर छू लेता है।

"अरे बस! औरतों का पीछा नेत्र नहीं छूना चाहिए। बोध होता है पूछती हूँ चाय पिओगे? कुमार साहब का दूध गर्म हो रहा है। ममता है, रात-भर जगे रहे हो। मुस्कुरा कर आ। मैं चाय ले आती हूँ।" ममता मुस्कराती हुई चली जाती है।

बेचारी ममता को जिन्दगी का एकमात्र विलास—चाय! शीला कहती थी एक बार, "ममता-दी चाय पीने का बहाना ढूँढ़ती रहती है। दिन भर में दस-पन्द्रह प्याली ।

चाय की प्याली प्रशान्त के हाथ में देते हुए ममता पूछती है "पढ़ गए महात्माजी की आखिरी वसीयत? मैं तो कहती हूँ, यह वह महा-प्रकाश है, जिसकी रोशनी में दुनिया निर्भय हजारों बरस का सफर तय कर सकती है।"

"ममता! मैं फिर काम शुरू करूँगा—यहीं इसी गाँव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाएँगे।

मैं साधना करूँगा ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले ! कम-से-कम एक ही बीघे के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ ।"

ममता हँसती है—"मन करता है, किसी को आँचल पसारकर आशीर्वाद दूँ—तुम सफल होओ ! मन करता है किसी कर्मयोगी के बढ़े हुए चरणों की धूलि लेकर कहूँ कहकर ममता प्रशान्त के पैरों की ओर हाथ बढ़ाती है।

"ममता !"

"ममता-दी ! को इसे । दूध फेंकता है। कमला अपने शिशु को पोरी में लेकर हँसती हुई आती है।

"दो ! कैसे फेंकता है ? कैसे पिलाती हो ? बोतल दो। ममता आलती-पालती मारकर बैठ जाती है और बच्चे को गोद में ले लेती है। 'तुमने टेलकेट पौडर क्यों किया कमला ? आ हो !

प्रशान्त चुपचाप ममता को देख रहा है। शरत बाबू के उपन्यासों की यह नारी अपने विश्वास पर अडिग होकर आज भी आगे बढ़ रही है रूप बदल दो नाम बदल दो समय बदल दो जगह बदल दो पर यह कभी बदल नहीं सकती।

कमला पूछती है "प्यार भी पटना चलेगा ?

"हाँ ममता संक्षिप्त उत्तर देती है।

"आयें ऐं ऐं नीलू रोता है।

"ना ना । पी का बाबू ! राजा ! सोना मानिक ! नीलू ! रोओ मत ! अब रोने की क्या बात है प्यारे ? ममता हँसती है।

कमलापुर पोस्ट-ऑफिस बेलपत्थर-पीर में किसी ने मामला करके एक चौपड़ा